ताहै वह घर नष्ट होजाताहै और उसकी समस्त जातको कलंक लग जाताहै॥ यह बात सब लोग अच्छी तरह जानतेहैं ज्यादह विस्तारकर लिखना निप्रयोजनहै॥ वास्तवमें जोगृहस्थी अन्याय मार्गमें चलते हैं वे गृहस्थी नहीहैं क्योंकि अन्याय के कारण नही मालूम किस समय अचानचक उनके ऊपर आपत्य आजाय और उनके स्त्री पुत्रादि उनसे छुटजाय और घर बरबाद होजाय॥ हमतो गृहस्थी उनकोही कहतेहैं जो अपने स्त्री पुत्रादि सहित घरमें रहते और न्याय मार्गसे धन उपार्जनकर संतोषसे अपने कुटंबका पालन पोषण करते और पूजा दान परोपकारमें द्रव्य लगा तेहैं॥ पर धन पर स्त्रीकी तरफ स्वप्नमेभी निगाह उठाकर नही देख ते॥ यदि पूर्वोपार्जित अशुभ कर्म के उदयसे दलिद्र आदि दुख आ जाय तबभी अपने धर्मसे नहीचिगें और अन्याय मार्गमें प्राण जातेभी प्रवेश नही करें॥ वे धर्मज्ञ सद गृह स्थ मिष्ट वचनकर अपने कुटंबको संतोष और धीरज दिलातेहैं कि परिवारके लोगो सुनो हमारे कोई अशुभ पाप कर्मके जोगसे यह दुख दलिद्र आय प्राप्त हुआहै सो हम को संतोष और धीरजधर समभा वोंकर भोगना चाहिये। यदि हम इस समय अपने धर्मसे भृष्ट होजाय और अन्याय चोरी आदि कर पर धन कोलेवें तो धन हमारे नही आवे गा किंतु उलटा पापका बंधहोगा जिससे इस जन्ममें निंदा अपमान राजदंड आदि दुख और परलोक में नर्कके दुख भोगनेहोगें इस लि यें आप सब संतोष रखो हम परि श्रमकरतेहैं और न्याय मार्गसे जो कुछ मिलेगा सोलातेहैं यदि एक रोटी मिलेगी तो पहले आप सब भोजन करलों पीछे बचरहे तब एक टुकडा हमें भी देदो नहीं हमको

भूखे सोरहनाभी मंजूरहै परंतु हम को अन्याय मार्गमें प्रवृत्तकरके अपने आत्माको नर्कमे डालना मंजूर नही, हमारा आपका इस देहका संबंधहै यह देह हर तरह आपकी सेवा चाकरीमें तत्परहे जो चाहो सो काम इससे लो हमें इनकार नही परंतु हमारे आत्माका संबंध आपसे नहीहै हम आपके वास्ते पापकर्म अन्याय कभी नही करेगे और आपभी हमारे हितूहो सो खोटी शिक्षा पापमे प्रवृत्त कराने वाली, हमे राजसे दंड दिलाने वाली, हमारी बुराई और अप कीर्ति कराने वाली तथा परंपराय नर्कमे डालने वाली नहीदोगे॥ इस प्रकार धर्म्मात्मा न्यायी पुरुष आपदा कष्ट आयेंभी अपने धर्मको नही त्यागें और अन्याय मार्गमें गमन नही करेहैं वेही धन्यहैं॥ आपदा कष्ट तो जातेरहैहैं और उनका धर्म बनारहैहै और जगतमें उनकी मान बडाई और कीर्ति होवेहै॥ वे राज और पंचोंमे प्रतिष्टा पावेहै और सब उनका आदर और सत्कार करेहैं और जोलोग अन्याय कार्य करलेतेहैं उनकी लोकमें निंदा और अपकीर्ति होतीहै और अन्यायकर उपार्जी लक्ष्मी भीथिर नही रहैहै लक्ष्मीतो पुन्यकी दासीहै न्यायवान धर्म्मात्मा पुरुषके चरण कमलोमे निवास करतीहै उनको छोड कहीं नही जाती॥ अन्याय कर लक्ष्मी उपार्जन करनेवाला एकहै और भोगनेवाले सर्व कुटंबके लोकहैं और जब अन्याय जनित आपदा आजातीहै तब सब कुटंब न्यारा होजाताहै कोई सीरी नही होता सब खडे २ तमाशा देखनेलगतेहैं और राजके आदमी सब कुटंबके देखते देखते उसके हाथोंमे जंजीर डाल पकड करलेजातेहैं कुटंबका कोई साथ नही जाता बल्क अपनी ईमानदारी जतानेको कहने लगतेहैं

कि हम रोज़ २ बार २ समझातेथे कि तुम इस खोटे मार्ग मतचलो अन्याय चोरी ठगाई अच्छे मालमें खोटा मिलाना। चोरोंका माल मोल लेना। कमती तोलना। भूल मारना जालसाजी करना आदि खोटे कार्य्य मतकरो पकडेजाओगे दंडपाओगे सो हमारी एक नही मानी अव आपदा आई तो तुमारी तुमभोगो हम क्या करें जैसी तुमने करनी करीहै वैसी भोगो॥ तुमारी एवज हम जेलखाने नही आवेंगे॥ उनकी एसी वातें सुनकर यादआताहै कि:—दोहा

जिस कुटंवके हेतसें। कीने वहुविध पाप॥ वेसव साथी वीछडे पडयों दुखमें आप॥ मेरी लक्ष्मी खानकों सीरीहुते अनेक। अव इस विपत विलापमें सगो न दीखे एक॥

इस प्रकार अपने पूर्वकृत अन्याय और पापोको यादकर पछतावें और रोवेंहैं परंतु फिर क्या होवेहै॥ अन्यायका फल दुखहै सो अवश्य भोगनाही पडेहै॥ इसी वास्ते विवेकी पुरुषोंको उचितहै कि समस्त अन्याय कार्योंका त्याग करे। और अन्याई मनुष्योंसे प्यार प्रीत संगत कभी नही करे और ना उनसे लेन देन व्यापारादि व्यवहार करैं॥

शेष आगे

जैन महासभा॥

इस समयमें श्रीमती श्री १०८ महाराणी श्रीराज राजेश्वरी एमप्रेस क्वीन विक्टोरिया कैसर हिन्दके एक क्षत्र निसकंटक राज्यमें सर्व प्रजावर्ग आनंदसे अपनी २ बुद्धि और बलवीर्यके अनुसार चारों पुर्षार्थ धर्म अर्थ काम मोक्षके सिद्धकरनेका प्रयत्न कररहेहैं॥ जैसा क्षेम और कुशलका समय धन और धर्म उपार्जन कर इसलोक और परलोक संबंधी सुख प्राप्ति करनेका अवसर हम जैनियोंको

अब सुलब हुआहै वैसा इस क्षेत्र में महाराज चंद्रगुप्तको संजम धारण किये पीछे अबतक नही मिला क्योंकि इस अंतरालमें बहुधा कर राजा और प्रजा जिन धर्मके द्रोही हुये उन्होने अनेक विघ्न और उपद्रव हमारे धर्म और जातिपर किये, परंतु अब सरकार अंगरेज बहादुरके अखंड राज्य शासनमें शेर और बकरी एक धाट पानी पीतेहैं सर्व प्रजावर्ग अपने २ धर्मको अपनी २ श्रद्धा पूर्वक बे खटके और बे रोक टोक पालतेहैं और सर्वके धन धर्म जीतव्यकी रक्षा सरकार बराबर करतेहैं॥

यह सरकार अंगरेज बहादुरके हीप्रचंड पराक्रम और पक्षपात रहित उत्तम राजनीती और न्यायका प्रभाव है कि हम जैनी शहर २ और ग्राम २ में प्रति वर्ष अनेक रथ जात्रा पूजा और प्रतिष्ठा आदि मेले और प्रभावना कर अपने धर्मको निर्विघ्न साध रहेहैं इस कारण हम जिनेंद्र देवसे त्रिकाल मन बचनकायकी शुद्धताकर प्रार्थना करतेहैं कि हमारी माता एमप्रेस क्वीन विक्टोरियाका बिभव और एश्वर्य दिन प्रति दिन अधिक होतारहै और उनके मंत्री धर्मवान और बलवान बनेरहैं॥

भाईयों यह निर्विघ्न धर्म साधन करनेका क्षेत्र और काल हमारे और आपके पुर्वोपार्जित शुभ कर्मने सहजही मिलादियाहै अब हमको धर्म धारणकर अपने और अपने संतानके इहलोक और परलोक सुधारनेका प्रयत्न करनेमें प्रमादी और निरुद्यमी रहना जोग्य नहीहै॥

यद्यपि प्रत्येक मनुष्य आप अकेलाही धर्म धारणकर आत्म कल्याण करसक्ताहै तथापि इस समयके मनुष्योंके बलबीर्य और परिणामोंकी उज्जलता थिरता और दृढता देखनेसे ज्ञात होताहै कि उन्हें

दूसरोंकी सहाइता अति आवश्यक है॥ जैसी धर्म संबंधी सहायता धर्म प्रभावना वात्सल्य और स्थिति करण आदि सदगुणोको बृद्धि और रक्षा संघ सेलीसभा या समूहमें होतीहै वैसी अन्य प्रकार नही हो ती॥ जैन धर्मकी अनादि कालकी आम्नाय और रीतिभी यहींहै कि मुनि अर्जिका श्रावक और श्रावका अपने २ संघमे रहते विद्याध्ययन ज्ञानाभ्यास कर अपने २ संजम और चारित्रका सुगम रीतिसे पा लन और निर्वाह करतेहैं॥ वही मूल संघ अबभी बिद्यमानहैं परंतु समयके फेर फारसै उनमें सिथला चार और अज्ञान प्रवेश करता जाताहै॥ यह बात सबके अनुभव आतीहैं इसलिये इसपर बिस्तारसे वर्णन करना निर्थकहे॥ अब संघ को सुखकी प्राप्तिहो वैसा उपाय करनेका प्रवंध करना उचितहै॥ हमनेभी अपने जैन प्रभाकर नंबर ७ में जैन संघके सुधारके वास्ते "जैन महासभा" होनेकी आवश्य कता दिखाईथी और आशाहै कि हमारे जैनी भाईयोंने उसपर अव श्य बिचार किया होगा परंतु हमें अफसोसहै कि उस जैन महासभा के बिषयमे किसी भाईने अपनी अनुमति प्रकाश नहीं करी और ना किसी भाइ ने उस सभाका सभा सद होना स्वीकार करनेकी कोई चिठ्ठी हमारे पास भेजी॥ यह बडे भूलकी बातहुई और चार महीना मुफ्तगये खैर जोगय सो गये अब हम फिर उस लेखपर आपका ध्यान खीचतेहैं कि आप नंबर ७ को दोबारह पढें और बिचार करें और एक पैसेके पोष्टकार्ड पर अप नी अनुमति लिखकर भेजें॥

हमारे सुननमें आयाहै कि बि यावर (नयानगर) अजमेरसे १६ कोसमें श्रेष्टी श्री चंपालालजीने जो नवीन जिन मंदिर बनवायाहै उस

की प्रतिष्ठा चैत्र सं १९४८ मे होने वालीहै यकीनहै कि इस मेलेमें दूर २ देशोंके जात्री बिद्वान राज्यमान राज्याधिकारी पंच और चौधरी आदि अनेक प्रतिष्ठित और जाति हितेच्छु जैनी भाई पधारेंगे यदि सर्व जैनी भाईयोंकी सम्मतिहो तो इस अवसर पर जैन महासभाका अधिवेशन करके जाति और धर्म की उन्नति करनेका बिचार किया जायतो अति उत्तम बातहो॥

लेकिन यदि आप सर्व भाईयों की रायमें सभाकरना वाजिब सम झाजाय तो उस सभाका प्रबंध अभी से होना चाहिये और उस सभामें योंतो मेलेमें आयेहुये सर्वही भाई सभासद होंगे परंतु विशेषकर जो भाई अपनेको जाति हितेच्छु और मुखिया धर्मके धोरी समझतेहैं वे सभा सदहोना स्वीकार कर कुछ परिश्रमभी अपने ऊपर उठावें तो यह कार्य अच्छा रीतिसे होसकेगा॥

इसलिये हमारी सर्व भाईयोंसे सविनय प्रार्थनाहै कि वे कृपाकर इसपत्रको पढतेही एक चिठ्ठी सभा सदहोना स्वीकार करनेकी भेजें और यहभी लिखें कि जैन महा सभामें किस २ विषयमें विचार और प्रबंध होना चाहिये॥ यदि कमसे कम एकसो भाईयोंकी चिठ्ठी हमारे पास माह सुदी ५ तक पहुंच जायगी तो उन सबकी राय शा मिल करके एक लेख आप सर्व भाईयोंके विचारार्थ माह सुदि १५ के जैन प्रभाकरमें मुद्रित करेंगे और सभाहोनेका बंदोवस्तभी कुछ करें गे॥ और यदि आप इस अवसर को भी मुफ़ गंवावें तो खैर आपकी मरजी हमने तो आपको सचेत कर अपना काम कर दियाहै॥ कृपाकर इस का जवाब तुरंत भेजो॥

जैन विद्यालय॥

हमारी रायमें जाति धर्म और

शुद्ध आचरणकी उन्नति और वृद्धि स्वमतावलंबनी बिद्याकी वृद्धिसे होसक्तीहै इसलिये जैन महासभा के विषे प्रथम इसीका विचार होना चाहिये, और इस कार्यके पूर्ण करनेको एक "जैन विद्यालय" की नींम डालना उचितहै, कि जिस में उच्चश्रेणीकी अंगरेजी, फारसी, हिसाव साहूकारीका कारोबार और कानून आदि लौकिक विद्या जिनकी सहायतासे न्यायमार्ग सहित भली भांत आजीवका उपार्जन होसके और उनके साथही संस्कृत प्राकृत और जैन सिद्धांतभी पढाये जांय जिनसे यह जीव हिताहित का विचारकर अपना आत्म कल्याणकरे॥ जैन विद्यालयके निर्विघ्न निर्वाहके अर्थ एक भंडारकी आवश्यकता होगी और वह भंडार किस प्रकार नियत कियाजाय आदि सर्व बातोंका मसौदा आपके विचारार्थ नीचे लिखतेहैं उसकी एकएक कलम पर ध्यानकरें वाजिब जाने उनको रखें और गैर वाजिब और गलत समझें उन्हें छेकदें तथा और जो कुछ हीनाधिक करना चाहें सोकरैं परंतु इसपर ध्यान देकर विचार अवश्य करैं॥

मसौदा जैन विद्यालय भंडार की नियमावलीका

१ इस भंडारका नाम जैन विद्यालय भंडारहै॥

२ इस भंडारको सरकारी कानूनके माफिक रजिष्टरी करानाचाहिये॥

३ इस भंडारके मालिक सर्व देशोंके जैनी भाईयोंकी तरफसे नियत किईहुई "एकजीक्यूटिव कमेटी" अर्थात "कार्याधिकारी सभा" हो जिसमें १६ सभासद धनवान विद्वान बिबेकी उद्यमी धर्मात्मा जन होवें॥

४ इस कार्याधिकारी सभाके सभासद प्रति वर्ष महा सभासे

नियत कियेजांय॥

५ कार्याधिकारी सभाके अधिकारी॥

१ शिरोमण प्रेसीडेंट
२ प्रति शिरोमण वाईस प्रसीडेंट
२ मंत्री सेक्रीटेरी
१ कोषाध्यक्ष खजानची
१ कार्याध्यक्ष मंत्रीयोंका मददगार जो तनखा पावे और हमेशाह भंडार संबंधी काम करतारहे॥

६ सर्व रुपया भंडारका सरकारी खजानोमें रहे और शिरोमण और मंत्रीके दस्तखती चेक सै दियाजाय

७ रुपयेका हिसाब "शिरोमण कार्याधिकारी सभा जैन विद्यालय भंडारके नामसे रहे॥

८ आमदनी और खर्चके हिसावकी जाचको दो "आडीटर" याने "हिसाब जांच करनेवाले मुनीम" नियत होने चाहियें वे हिसाब जांचकर चिट्ठाबनावें और महा सभामें पेशकरैं और मंजूरी होनेसे छपाकर सर्व देशोंके भाईयोंके पास भेजदेवें॥

९ कार्याधिकारी सभा भंडार और विद्यालयकी सालियाना रिपोर्ट बना महासभाकी मंजूरीसे छपाकर सर्व देशोंमे भेजें॥

१० उघाई निमित्त महासभाके सभासद वा और कोई जोग्य पुरुष जिसै महासभा नियत करैं अपने २ इलाके के समस्त जैनियोंसै कमसे कम "फी तागडी बंध" आदमी एक एक रुपया उघावें और अगर कोई सज्जन धर्मात्मा अपनी रुचिसे ज्यादह देवें तो एन खुशीकी बातहै

११ धनवान पुरुषोको अपनी २ हैसियत मूजब देना चाहिये॥

१२ उघाई का रूपया नकद देना चाहिये॥

१३ भंडारके मूलद्रव्यके खर्च करनेका किसीको कभी भी इखाति

यार नहोगा ॥

१४ पाठशालाका खर्च केवल मूल द्रव्यके व्याजसे होगा ॥

१५ मूल द्रव्यके प्रामेसरी नोट खरीदकर सरकारमें ऑफिशियल टसर्टीके पास जमा रहै ॥

१६ विद्यालय भंडारकी वृद्धिके लिये जैनी भाईयोंको उचित्त होगा कि जब कभी उनके व्याह शादी आदि कारणो कर दान देनेकी इच्छा होय तो पाठशाला भंडारमें अवस्यदेवें ॥

१७ जो भाजी या लेन संपूर्ण बिरादरीमें बांटोजाय वह एक भाजी पाठशाला भंडारमें भी देनी चाहिये ॥

१८ व्याहमें लडकेका बाप रु २) और लडकीका बाप रु १) भंडार में जमा करावें ॥

१९ जब कभी रथ जात्रा प्रतिष्ठा आदि मेलहोवे तो मेलोनीके चिट्ठे के साथ एक चिट्ठा विद्यालय का भी उघावें और भंडारमे जमा करावें ॥

२० भंडारका रूपया पंचायती द्रव्य समझा जावे और निर्मायल द्रव्य नही समझा जाय ॥

२१ जैनी भाईयोंको उचितहै कि भंडारमें जो रूपया जमाकरावे वह अपने निज घर खरचमें से इस भंडारमें देवें क्यों कि यह रूपया जैनी विद्यार्थीयोंके अंग लगेगा इसलियें खैरात खातेका वा निर्मायल रूपया खिलाना जोग्य नहीहै

इस स्थानपर हम यहभी लिखना चाहतेहैं कि अकसर उघाईके चिठ्ठेमें लोग रूपया अपने नामपर जमा तो करदेतेहैं परंतु उसी समय नकद रुपया नहीदेते और पीछैं उस चिट्ठके रुपया वसूल करनेमें बडी दिकत्त और तकलीफ उठानी पडतीहै तौभी रुपया जमा नहीं होता और इस कारण जिन कार्योंके लियें चिठ्ठे कियेजातेहै वे

अपूर्ण रहजातेहैं ॥

हम चाहतेहैं कि जैन पाठशाला भंडारके चिठ्ठेमें पहले दाम दियेजाय और पीछें नाम लिखा जाय जिस भाईके भावजब देनेके हो तब वह नगद देवें कागजमें अपना नाम लिखाकर कर्जदार कोई नबनें ॥ नयेनगरके मेलेके अवसरमें यदि जैन महासभा हुई और सभाकी सम्मातिसे यदि जैन पाठशाला भंडारकी नीम डाली जायगी तो वह रोकडी रुपयेसे डालीजायगी उधारसे नही और जो भाई कि सबसे पहले अपनी हैसियत माफिक नकद रुपया भंडारमे देगा उसका जस और नाम होवेगा ॥

हम जैनी भाईयोको यहभी याद दिलातेहैं कि कायस्थ महाशयोने अपनी जातिय पाठशाला नियत करदीनीहैं ॥

आर्य समाजी भाईयोंने रुपया २ और दो दो रुपया करके लाहोर में दयानंद कालेज भंडारके वास्ते थोडेही दिनोंमें सवालाख रुपया जमा करलियाहै और सिख महाशयभी अपनी जातिय पाठशाला के लियें उघाई कररहेहैं ॥

जैनियोंकोभी जैन पाठशाला की बडा जरूरतहै और यदि जैनी भाई कुछ थोडासा परिश्रम और उद्योग करेंगे तो विद्यालय भंडार बहुत सीघ्र जमा होजायगा क्योंकि जैनी स्वभावही कर दातार और परोपकारी होतेहै ॥ आजतक उनके प्रतिष्ठत धनवान लोग नवीन मंदिर बना मेला प्रतिष्ठा कराकर जिन धर्मकी प्रभावना करनेमें हजारो रुपया खर्च करतेहैं ॥ जब उनको ज्ञान वृद्धि करनेकी आवश्यकता का निश्चय होजायगा तो निसंदेह ज्ञान वृद्धिके लियेभी उदाराचतसे रूपया जरूर खर्च करेंगे ॥ हमारी रायमें इस समय

जैनियोंमें विद्या और ज्ञानकी बहुत हानिमालूम होतीहै और इस विषयमें हमको भरोसाहै कि बहुत से भाई हमारे सहमत होगें अब ज्ञान वृद्धि करनेका उपाय सीघ्र होना जोग्यहै ॥

——०००——

लाला पन्नालालजी बांकली वालने पूछाहै कि इस समय कहां २ पर जैन पाठशाला नियत हैं और उनमें कितने २ विद्यार्थी हैं और कौन २ पुस्तक पढाये जाते है ॥ वाजिबहै कि हरेक शहरके भाई जहां २ पाठशालाहै कृपाकर एक पोष्टकार्डपर अपनी पाठशालाका पूरा हाल लिखकर उनके पास इस पतेसे भेजदें ॥

लाला पंन्नालाल बांकलीवाल
दुर्गापुर ड कखाना
मुगलहाट जिला रंगपुर

चिट्ठीयोंका संक्षेप समाचार

मंगसिर कृष्ण १४ को इंदोरमे सभाहुई और लाला बालमुकंद जी गोधाने कुलोन्नतिके विषयमे व्याख्यान दिया यह व्याख्यान बहुत श्रेष्टथा इस लिये सभा सदोंकी इच्छानुसार सुक्र ५ को दूसरी सभामें श्रावकके आचर्ण विषयमें उक्त लाला साहबने व्याख्यान दिया जिसके सुननेसे सभाको अत्यंत हर्ष और अपने आचर्ण शुद्ध रखनेकी रुचिहुई

पंडित माधवलालजी मोंच कर हल निवासी सभामेंथे और उन्होंने जिन धर्म संबंधी विद्या पढने पढानेके विषयमें बहुत उत्तम उपदेशदीना ॥

——०००——

बनारसमें पोह वदी ११ को भेलूपरमे हर साल मेला होताहै इस सालभी श्रीजीकी नालकी निकली और १० बजे पूजा पाठ हुआ और ३ बजे बाबू स्वर्ग सेन उदैराजके मंदिरजीसे श्रीजीनालकी में सवार होकर पधारे जलूस बहुत

गान बाजा आदि सब सामान सहित आनंदसे पुराने मंदिरजीमें शामको बिराजमान हुये बडा उच्छव और हर्ष हुआ ॥

लाला पंनालालजीने लिखाहै कि जैन प्रभाकर नंबर ८ को सुन कर दो भाईयोंने पांच रुपयेसे ज्यादह जुआ खेलनेका त्याग कियाहै ॥

चंपापुरीमें बिंबप्रतिष्ठा का मेला हुआ ॥

मृगावली राज ग्वालियरसे पूजा और प्रतिष्ठा का मेला हुआ ॥

दिल्लीमें रथ जात्राका मेलाहुआ

मथरामें विद्या वृद्धि, मिवर्द्धनी सभाका जलसा ३१ दिसंबर को हुआ ॥ बहुतसे सभ्य जन पधारेथे ॥

अजमेर

यहांपर पंडित कस्तूरचंदजी साहिब मंदसौर निवासी पधारेथे अफसोसहै कि वे बहुत कम ठहरे इस कारण सभामे व्याख्यान नही कर सके आपकी बुद्धि बडी तीक्ष्ण है ॥ लशकर का संघ गिरनार जी का जात्रा करने गया ॥

बाबू बिहारी लाल जी गया निवासी ने श्रावक के षट आवश्यक पर बहुत सुंदर छोटासा व्याख्यान दीया जिससे सभाको अत्यंत आनंद हुआ ॥

लाला हरसुखजी अजमेरा के पुत्र की विनोरी पहले दिनमें निकलीथी अब बाबू बैजनाथ जी और लाला हजारी मलजीने भी अपनी पुत्रोंकी विनोरी दिनमेंही निकाली आशाहै कि इसी प्रकार रफते २ रातमें विनोरी और बरातका निकलना और अनेक मशालोंका जोडना और आतशबाजी छुटाना जो महान हिंसाके कामहै जैन कुलमेंसे बंद होजांयगे जैनी भाईयोंको इस विषयमें अवश्य ध्यान देना चाहिये ॥

श्री

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन समासंबधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगा लाल अजमेरा नें

प्रकाश कीया

नम्बर १२

मिती माह सुदी १५ संवत १९४७ का

अजमेर

बार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजर के विक्टोरीया प्रेस अजमेर में छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचे प्रार्थनाहै कि वे इसको संपूर्ण पढ़कर अपने पुत्रमित्रोंको पढ़नेके वास्ते देदेवैं और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ कर सुनादें॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संबधी नई वार्ता पत्रमें छापनेको भेजें॥ जो भाई पत्र लेना चाहै हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालें॥

जैन प्रभाकरकी सालयाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर वालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है॥

---

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके उद्देश है ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलोटीकिल वार्ता मतमतांतरका झगडा इसमें नही छपैगा॥

जैपुर जैन पाठशाला में २२५ विद्यार्थी हैं और ७ वर्ग हैं वर्ण माला बालशिक्षा, दर्शन, पूजन, भक्तामरजी, सूतजी, सारस्वत शब्द रूपावली धातुरूपावली, समासचक्र, प्रश्नोतर श्रावका चार, सूतजी के अर्थ रत्न करंड श्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह, सिंदूर प्रकर्ण, चंद्रप्रभकाव्य, लघुकौमुदी दसकुमारकाव्य, परीक्षामुख, न्यायदीपिका, यसस्तिलक काव्य, आदि पुराण राजवार्तिकजी, हिसाब अंक गणित, बीजगणित रेखागणित पढायेजातेहैं॥

जैन प्रभाकरके ग्राहकोंसे प्रार्थनाहै कि कृपाकर पिछले सालकी कीमत और आगेके साल सं १९४८ की कीमत जलदी भेजें॥

जैन महासभाके सहमतमें बहुत चिट्ठीयां आईहैं स्थानाभावसे प्रकाश नहीं करसके॥ मूल्य प्राप्ति अगले पत्रमें लिखेंगे॥

॥ श्रीं ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपत्ति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर १२ } अजमेर माह सुदी १५ संवत् १९४७ { अंक १

॥ एडीटोरियल ॥

संभोग सम्मतिकी उमर बाबत जो सरकार नवीन कानून बनाना चाहतेहैं उससे हम सर्वथा प्रकार प्रतिकूलहैं ॥ एसे कानूनकी, कि जिससे सरकार और प्रजा दोनोंको किसी प्रकारका लाभ नहींहो किंतु जिसके कारण सरकारकी प्रतिज्ञा कि वे प्रजाके धर्म और लौकिक आचर्णों और व्यवहारोंमें किसी प्रकारकी दस्तंदाजी नही करेंगे भंगहानेसे अपकीर्ति होवे, और प्रजाको उनके धर्म और लौकिक आचर्ण और व्यवहारोंमें विघ्न पडनेसे अति तीव्रदुख प्राप्ति होवे; एसे उभय पक्षको हानि और दुखदाई कानूनके बनानेकी कोई आवश्यकता दिखाई नहीं देतीहै इसलिये हमारी सरकारसे सविनय प्रार्थनाहै कि वे कृपाकर इस नवीन दुखदाई कानूनको नहीं बनावेंगे॥ जैन प्रभाकर का नियमहै कि पोलीटीकेल वार्ता मुद्रित नही करे तथापि इस कानूनके बननेसे हमारे धर्म और लौकिक आचर्ण और

व्यवहारोंमें अनेक प्रकारके विघ्न और हमारे ऊपर अनेक प्रकारके कष्ठ आपदा आने हुये दिखाई देते हैं इस लिये यह प्रार्थना सरकारसे करदोनीहै कि हम एसा कानून नहा चाहतेहैं॥

——ooo——

॥ होली ॥

होली क्या पदार्थहै और होली से जैनियोंका क्या संबंधहै और होलीके ख्यालमें जैनियोंको शामिल होना चाहिये कि नहीं इन बातोंका कुछ विचार करना अवश्यहै। हमने शास्त्र द्वारा तथा अपने बडोंसे एसा निश्चय कियाहै कि होली एक लोक मूंढताहै जिसको पापी और निर्लज्ज दुराचारी पुरुषोंने अपने विषय कषाय पुष्ट करनेके लिये स्थापित कियाहै कि जिस होलीके त्योंहार का मिस करके वे लोग वे खटके वे रोक टोक निडर होकर मद्य याने शराब और भांग पीवें और वेश्या दासी कुलटा स्त्रीयोंसे संसर्ग करें और मुहसे जोचाहैं सो बेहूदा गाली या बकते फिरें॥ लोक तो स्वभाव कर हीभोले और विषया शक्त होतेहैं और फिर ऊपरसे मिलगया होली का बहाना तो अन करने काम करने लगगये यहां तक कि आज दिन देखनेमें आताहै कि अच्छे २ इज्जतदार अपना काला मुह करके सूके पापोशका सेग बांध बरूली की माला पहन खरारोहण कर शहरकी गलियोंमें नशेमें चूरहुये फिरतेहैं और मा बहन काकी ताई मामी भोजाई आदि काभी शरम नही करते उनके सामने हाथ पसार पसार मुह फाड २ चिल्ला २ कर अनकहनी गालियां बकते और हंसतेहैं उन निर्लज्जोंको जराभी शरम नही आतीहै॥ यह होली अज्ञानकी बेटी पापकी पत्नी व्यभचार और दुराचारकी माता सील

संजमकी बैरन नर्क पहुंचानेकी बडी पौलीहै ॥ भंग पीनेकी आदत होलीसे होतीहै ॥ माता पिता आदि गुरुजनका अनादर करना और उनको गालियां देना होलीसेही सीखा जाताहै ॥ निश्चय कर होली सर्व पाप और दुराचारोंकी जडहै ॥

होलीसे जैनियोंका कुछ संबंध नहीहै क्योंकि उनके धर्म शास्त्रमें होली एसे नीच त्योहारोंका निषेध कियाहै ॥ जैनियोंका धर्म शास्त्र और कुल आचर्ण आज्ञा देतेहैं कि नशा भंग तमाषू आदिका त्याग करो कुबचन गाली भांडय वचन आदि मतबोलो सीलसंजम पालो गुरुजनकी बिनय करो आदि और होलीके विषे भांग पीना माजून खाना गाली बकना ठठेबाजी करना व्यभचार सेना इंद्रीयोंको बसमें न रखना गुरुजनसे बेशरम होना उनका कहना नही मानना आदि दुराचार स्वयमेव करने पडतेहैं ॥ होलीका आचर्ण श्रावक कुलकी रीतिसे बिलकुल उलटाहै इस लिये जैनियोंका होलीसे किसी प्रकारका संबंधभी नहीहै ॥

होलीके ख्यालमें जैनियोंको शामिलभी नही होना चाहिये ॥ क्योंकि यदि वे होलीके ख्यालमें जावेंगेतो उनको सिरमें खाक डालनी होगी मुह काला करनापडेगा भांग पीनी होगी गालीयां बकनी पडैंगी बेशरम और बे हया होना होगा पर स्त्रीयोंसे मन बचन द्वारा कुसील सेवना पडेगा इत्यादि ॥ जो होलीके ख्यालमें जावेगा वह अपना धर्म गवावेगा और पाप कमावेगा ॥

इसके सिवाय जो श्रावक होलीके ख्यालमें शामिल होतेहैं वे बडे पापके भागी होतेहैं क्योंकि फागुन सुदी अष्टमीसे पूर्णमासी तक अठाईजीके महान पर्वके दिनहैं इन दिनोंमें जिनेंद्रका पूजन करना वृत

और सील संजम धारण कर पाप आश्रव को रोकना चाहिये॥ पर्व के दिनोंका किया हुआ पुन्य और पाप असंख्यात गुणा होकर सुख और दुखका दाता होताहै॥ इस लियें अठाईजीके पर्वके दिनोंमें जैनियोंको उचितहै कि पुन्य रूप क्रिया करैं और पाप-रूप-क्रिया होलीका ख्याल अपने मन बचन कायसे सर्वथा प्रकार त्याग करैं॥

परंतु होला लोक मूढताहै इस राक्षसीके फंदेमेंसे निकलना बहुत कठिन कामहै॥ अच्छे २ पंडित और ज्ञानीभी इसके जालमें सहज ही फंसजातेहैं तब साधरण लोगों की तो क्या कथा इस होली राक्षसीसे रक्षा करनेका एक महा मंत्र हमें मिलाहै सो अपने भाईयोंको बतातेहैं और आशा करतेहैं कि वे इस महा मंत्रका शरण गृहणअवश्य करैंगे॥ वह महा मंत्र यहहै॥

फागुण सुदी पूर्ण मासीके सायं कालको जिन मंदिरमें पूजा करके रात्रि जागरण करैं और भजन और नृत्य करके रात्रि पूर्ण करैं चैत्र बदी १ को प्रभात स्नान कर के जिनेंद्रका पूजन करैं और शास्त्र जीका स्वाध्यान करैं पीछे जब होलीके ख्यालकी धूम बंद होजाय तब अपने घरको जावें एसा करने से होली राक्षसी से बच जायगें॥ जिन मंद्रमें होलीका प्रवेश नहींहै॥

जैन पाठशाला देहली॥

सम्वत १९४७ मिती पोह बदी ९ रविवार तारीख ४ जनवरी सन् १८९१ को दिनके ११ बजे श्रीमान आर किलार्क साहब बहादुर डिप्टी कमिश्नर देहली जैन पाठशालामें पधारे और सब विद्यार्थीयोंको अपनी कृपा दृष्टीसे अवलोकन कर आसन पर सुशोभित हुये उस दिन जैन पाठशालाका मकान अति विचत्र रंग विरंगी धुजा पता

का पर्दा आदीको से सजाया गया था॥ श्रीमान राय मनोहरलालजी साहब जज देहली, श्रीमान राय बहादुर प्यारेलालजी साहब आनरेरी मजिसट्रेट, मुंशी जगन्नाथजी साहब साबिक तहसीलदार, मुंशी इशकलालजी साहब साबिक फौजदार रियासत अलवर, लाला जोहरीलालजी साहब खजानची नेशनेल बेंक, लाला झुन्नूलालजी साहब चौधरी, पंडित मनोहरलालजी साहब, लाला प्यारेलालजी साहब पाथरी वाले, लाला जोतीपरशाद जी साहब आदि बहुत साधर्मी सज्जन एकत्र हुयेथे॥ उस समय प्रथम लाला गोपालदासजी साहब सेक्रेटेरी जैन सभा देहलाने जैन पाठशालाकी कुल व्यवस्था संक्षेपसे साहब बहादुरके सन्मुख निवेदन की फिर पंडित मनोहरलालजीने सिपास नामा पढकर सुनाया फिर माष्टर पोस्तामलजाने सिपास नामा सुनाया फिर पंडित रामदयालजी ने अति मनोहर भाषाके छंद महारानी विक्टोरिया और उक्त साहब बहादुरकी प्रशंसामें पढे॥ वे छंद और सिपास नामें अति सुंदर सुनहरी कागज पर लिखे हुये साहब बहादुरकी भेट किये और उन्होंने हर्ष पूर्वक स्वीकार किये॥ तदनंतर साहब बहादुरने अपने कर कमलों से विद्यार्थीयोंको इनाममें पुस्तक और वेश कीमती चीजें तकसीम की बादमें साहब बहादुरने अपने "स्पीच" व्याख्यानमें फरमाया कि मैं जैन पाठशालाके देखनेसे अत्यंत खुशहुआहूं और जहांतक होसकेगा तहांतकमें पाठशालाकी उन्नतिमें सहायता करूंगा॥ विद्यार्थीयोंको एक दिनकी छुटी हुई और जलसा समाप्त हुआ॥

———ooo———

जिनागम रहस्य सभा जैपुरका वार्षिकोत्छव॥

मिती माह सुदी ७ रविवार

सं १९४७ को जिनागम रहस्य सभाका वार्षिकोच्छ्वथा उस दिन जैपुरके समस्त श्रावग सभामें पधारेथे और लाला रूपचंदजी साहब पंडित लालजीमलजी साहब सहारनपुर निवासी राय बहादुर सेठ मूलचन्द्रजी और मैं छोगालाल एडीटर जैन प्रभाकर अजमेर निवासी आदि बाहरके भाईभी आयेथे॥

प्रथम कंवर फलचंदजी सोगाणीनें सभाका अव्हानन इस प्रकार किया कि आज अत्यत हर्षका समयहै कि आप सकल विद्वज्जन धर्मात्मा सभ्यजन समुदायता प्रगट कर इस श्रीमती जिनागम रहस्य सभाके वार्षिक माहोच्छव को सशोभित कररहेहो और जैसे चात्रिककी अभिलाषा मेघके सीतल मिष्ट निर्मल जलसे तृषा मिटाने की होतीहै वैसे आपभी सर्व सभासद श्रीमती जिनागम रहस्य सभाके अतिललित और मनोहर निर्मल हितकारी धर्म व्याख्यानामृत श्रोत्र अंजुलीसे पान करके पापताप बुझानेको उत्कंठित होरहेहो॥ प्रियवर धर्म कथाके श्रवण करनेसे जो सातिशय पुण्य प्रकृतियोका बंध होताहै सो बचनके अगोचरहै॥ धर्म कथाका लाभ सत्संगतसे होताहै और सत्संग सभाम होताहै॥ यह सभा निज धर्मकी उन्नतिके अर्थ सर्व जैनियोकी सम्मतिसे स्थापित कीहुई सत्संगका मूल साक्षात कल्पवृक्ष समान अनिर्वचनीय सुखकी देनेवालीहै जिसका पूर्व फलतो स्वर्गादि सम्पदाका भोग और उत्तर फल अविनाशी मोक्ष फलकी प्राप्ति है सर्व भाईयों को सेवने जोग्यहै॥

आज इस सभामें जो कार्य होंगे उनकी संक्षेप सूचना निवेदन करताहूं॥

१ पंडित भोलीलालजी सेठी मंगलाचरण कर मनुष्यभवकी दुर्ल

भता खिलाय सत्संगका रूप प्रकट करते हुये वार्षिक रिपोर्ट पढेंगे ॥

२ पंडित मोतीलालजी बांकली वालकृत "धर्म विजय" नाम नवीन नाटकका जैन पाठशालाके विद्यार्थीयोसे वचनद्वारा पढाया जायगा ॥ वह नाटक अत्यंत सुंदर और शिक्षा दायकहै और उसके ये विषयहे॥

१ सूत्रधारका नान्दी पढकर नाटककी प्रतिज्ञा करना, २ बुद्धिका स्थानांतर जाना ३ रक्षकोंके द्वारा बुद्धिको बुलाना ४ बुद्धिका हाजर होकर कार्यका प्रारंभ करना ५ सूत्रधारका धर्मकी प्रसंसा करना ६ धर्मकी प्रसंसा सुनकर अर्थ और कामका सूत्रधारसे झगडना ७ धर्म अर्थ और कामका न्यायाधीशके पास जाना ८ न्यायाधीशका तीनोसे उनका स्वरूप पूछना ९ धर्मके सहाई ज्ञानका कामको समझाना १० कामका रागके द्वारा उन्मत्त होना और आत्माको पंचेन्द्रियोंके विषयोंमें तल्लीन करना ११ आत्माका विषय भोगोंके पूर्णार्थ बिचारना १२ दयाका करुणा भावसे उपदेश द्वारा आत्माको समझाना १३ गूढाचार याने खबर नवीसके द्वारा आत्माका बिहल होनेका समाचार पाना १४ दयाका वैद्यराजको भेजना और वैद्यराजका औषध चिंतवन करना १५ कार्याध्यक्षका सुमतिके मिष्ठवचन रूप औषध देना १६ आत्माका सचेत होकर अपने इष्टदेवका स्तवन करना १७ धर्म अर्थ और कामका न्यायाधीश प्रति आना अर्थ और कामका पराजय और धर्मका विजय पाना ॥

इस नाटकके देखने और सुननेसे सभासदोंको अत्यंत आनंद हुआ और धर्म करनेकी रुचि बिशेषहुई ॥

मुंशी बिरधीचंदजी साहब नायब फौजदार राज जैपुरने धन्यवाद दिया और अंत मंगला चरण करके सभा विसर्जन हुई ॥

बिचार करनेकी बात

मेलाकराने वाले सज्जनोंका मुख्यप्रयोजन धनखर्चकर जिनधर्म की प्रभावना और अपने परणामों की निर्मलता करनेकाहै इसलिये जोजोकारण संक्लेश करने वालेहैं वेसब त्यागने जोग्यहैं॥ उन कारणों मे मुख्यकारण ज्योंनारहै ज्योंनार का सामान इकठा करने में महीनों पहले से तैयारी करनीपडतीहै ईधन आग पानी वगैरह का बहुतही आरंभ होताहै॥ अगर सामान थोडा कराया जाय और जीमनेवाले जात्रीबहुत आंवेंतो उसके हालोंहाल सामानतैयार करनेकी कित्तनी दौडधूप करनी पडतीहै॥ ज्योंनारकेवक्त आंधीमे आनेसे कैसी फिक्र होतीहै॥ सबकाम ठीक २ होने परभी नामवरी पानेका संदेहही रहताहै क्योंकी तरकारामें नोन कमती होनेसैही कईयकलो गबुराई करनेलगजातेहैं॥ अलावह इसके मालिक और उसकेमित्र बंधु और कारिंदोंको मेलेका उच्छव देखनेका अवसरही नहीं मिलता उनका सारा समय और ध्यान ज्योंनारके ही झगडोंमें जाताहै॥

एक दिनमें दस हजार आदमी जिमाना वा दस हजार दिन तक एक आदमी जिमाना एकही बात है इस लिये ज्योनार संबंधी रूपया अगर विद्यालय आदि परोपकारी कार्य्योंमें लगादिया जाय तो दुतर्फी धर्मकी बडी वृद्धि और प्रभावना होवे और रूपया फिजूल खर्चभी नही होवे उसका फाइदा सर्व जैनियोंको चिरकाल तक पंहुचे॥

प्रभावना करनेवाले और मेले में आनेवाले भाईयोंको इसपर बिचार करना जोग्यहै॥

———०००———

लाला रूपचंदजी साहबने जैन पाठशाला जैपुरको रु: १००) दीने

———०००———

जैनेन्द्र व्याकरणके मूल सूत्र यदि किसी भंडारमें होयतो कृपा कर हमे लिखें॥

जैनियोंकी अवनतिके कारण

संपादक जैनप्रभाकर जैजिनेंद्र

मैंनें पत्र नंबर ८ को पढा उस में जैनियोंकी अवनति और न्यून दशा बिद्या धन धर्मकी हानि और उसके कारण और उपाय पर कछ बयान लिखाथा और इस कौमके मनुष्योंको लालची अपस्वार्थी कुटिलस्वभावी कायर कपटी बर्णन कियाहै परंतु इस दसाका मुख्य कारण नहीं लिखा। मेरी समझमें इन कुल बातोंका मुख्य कारण फजूल खर्चीहै और यही रीति हमारी पक्की दुशमनहै जब हिसाब लगाकर देखाजाताहै तो हमारी तमाम उमर की कमाई हमारे खरचों के सामनें बहुत ही कम होती है तो फिर हमारी एसी अवस्था क्यूं नहो दृष्टांत रूपदेखिये कि हर एक पुरुषके चार पांच लडके लडकियां होतीहैं अगर उसकी आमदनी पच्चीस वा तीस रुपये महीना हो तो उसको लडकोंका दसूठन छटी कान छिदाई सगाई व्याह मुकलावा आदि करना पडताहै और इन कुल कार्जोंमें वह अगर बहुतही कंजूसहो तो दोहजार से कम हरगिज नही करसक्ताहै अर्थात् दो लडकोंकी बाबत चार हजार रूपया खर्च हुये इसही प्रकार लडकी की सगाई व्याह मुकलावा तीसरा करना पडताहै॥ भातसे अलग मुकलावे तक एक लडकीके वास्ते रुः १५००) से कम खर्च नहीं होसक्ताहै॥ और लडकी के बच्चोंके वास्ते साथ आगरनी खिचडा छुछक और भात माहरा कईबार देना पडताहै क्योंकि एक २ लडकीके कई २ बालक होतेहैं इस वास्ते एक लडकीके बच्चोंके वास्ते भा एक हजारसे बहुत अधिक खर्च होताहै अर्थात् एक लडकीके वास्ते कुल खर्च २५००) से अधिक होताहै और दोलडकीयोंके वास्ते

५०००) अर्थात् दोलडके और दो लडकीयोंके वास्ते नौ हजार रुपयों से अधिक खर्च करना पडताहै॥ किसी २ देशमें इनरीतोकी जगह और रीतें होंगी परंतु खर्च इससे कम नही होगा अवश्य अधिकही होगा और बुधिजन इसहीप्रकार हिसाब करलेंगे॥ आप हिसाब लगाईये कि यदि वह मनुष्य बिल कुल सूखी रोटी खावें और फटे पुराने कपडे रखे और भूको नंगों के प्रकार रहै तोभी उसके कुनबे का खर्च दस रुपये महीनेसे कम नही होसक्ताहै अर्थात् वह पंदरह १५) रुपयेसे अधिक नही बचा सक्ताहै॥ यदि वह मनुष्य बीस बर्ष की अवस्थासे पचास बर्षकी अव स्था तक २५) पच्चीस रुपया महीना कमातारहै (एसा असंभवहै) तोभी वह १५ ? १२ ? ३० अर्थात् रुपया ५४००) से अधिक नही बचा सक्ताहै और बिवाह शादीमें खर्च करना पडताहै उसको नौ हजार ९०००) रुपया इस हिसाब से उसको ३६००) का घाटा रह ताहै॥ इस टोटके पूरा करनेको उसको अवश्य झूंटा, फरेबी, बेई मान, दगाबाज, लालची, अपस्वा र्थी, कुटिलस्वभावी, लोभी बन्ना पडताहै॥ वह छलकरताहै धोकादे ताहै, मालमारताहै गांठकतरताहै आठपहर साठघडी इसी उधेड बुन में रहताहै कि किसी तरहसे लछ मी आवे और इस टोटके पूरा करने केलिये अच्छेबुरे सब उपाय करताहै ॥ एसी अवस्था में धर्म ध्यान करने या ज्ञानाभ्यास करने या धर्म के वास्ते कुछ द्रव्य खरच करने या पाठशाला औषध शाला नियत करनेमें मदद करनेका उप देश उसके वास्ते बिलकुल निस्फ लहोताहै,॥ उसका ध्यान तो रुपये में लगरहाहै इस सदुपदेशको वह किस कानसे सुने॥ एसी अवस्था

में उसके वास्ते द्रव्यही इष्टदेवहै और द्रव्य कमाना उसका इष्ट धर्म है किसही तरकीबसे द्रव्य हाथ लगे यही उसका ध्यानहै इसी वास्ते शास्त्रका आचार्योंका पंडितों का उपदेश उसको कुछ कार्य कारी नही होनाहै॥ जोलोग कुछ विद्या पढगयेहैं और ज्ञान वानहै वहभी इस झगडे और आफतसे नहीं बचसक्ते क्यूंकि यह बिरादरीकी रीतेंह अगर वह बिरादरीमे रहना चाहेतो इन खर्चोंके जालसे नहीं निकलसक्ता उसको बिरादरीका रीत रस्मके माफिक खर्च अवश्य करनेहो पडेंगे खवाह वह उनको करना चाहै वा न करनाचाहे॥ जब तक यह फिजूल खर्ची दूर नही होती कोई उपदेश या उपाय उन्नति का कार्ज कारी नही होसक्ता है इस वास्तेमें इस कौमके मुखिया लोगो पंचों सरदारों चौधरीयों चुकडायतों धनवानी बिद्वानों और परोपकारीयोंसे सविनय प्रार्थना करताहू कि ऐ इस कौमके मल्लाहो यह किश्ती जिसके तुम चलाने वालेहो भंवरमें पडीहुई गहरे पानी में गोते खारहीहै अब इसके डूबने में कुछ कसर बाकी नही रहीहै अगर अबभी तुमने इसकी खबर नहीली तो फिर पताभी नही लगेगा मगर साथही इसके यहभी तुम याद रखो कि इस बेडेके डूबनेमें तुमभी न बचोगे तुमकोभी साथही डूबना होगा इस वास्ते अगर तुमको अपने भाईयोंकी कुछ परवा नहीहै तो अपना और अपनी संतानकातो बचाव करो और इन कुरीतियोको हटाओ इसका कुल बोझ इसवक्त तुम्हारी गर्दन परहै

प्रश्न यदि मेरा यह लेख विरुद्ध और असत्यहै तो पत्र द्वारा उत्तर दीजिये कि यदि किसी मनुष्य को नौहजार का खर्च और पाचहजार की आमदनी हो अर्थात् उसका

खर्च आमदनी से ज्यादह हो तो वह धर्मात्मा रह सक्ताहै वा नहीं और यदि नहीं रह सक्ताहै तो उस की अधर्मी और बेईमान बिरादरी ने बनाया वा अपने आप बना

कौम का हितार्थी
सूरज भान वकील
देववंद
जिला सहारन पुर

———ooo———

निस्संदेह लाला सूरज भान जी साहव का लिखना सत्यहै कि जबतक मनुष्यको अपनी आमदनी से ज्यादह खरच करना पडेगा तव तक वह धर्म ग्रहण करनेका पात्र नहीं होसक्ताहै क्योंकि वह अपना टोटा पूरा करनेके लिये अनेक प्रकारके अन्याय कर लक्ष्मी उपार्जन करनेकी कोशिश करतारहैगा जैन धर्मकी गृहस्थीयोंके वास्ते सब से पहली शिक्षा यहीहै कि वे न्याय सहित धन उपार्जन करें आमदनी से कम खर्च करें जिससे उनके कषायोंकी मंदता परिणामों की बिशुद्धता दिन २ वृद्धमान रहै और निराकुल होय धर्म ध्यान करें॥ परंतु अफसोसहै कि इस समय झूटी नामवरी पानेके वास्ते इस इस शिक्षापर कोई ध्यान नहीदेता और जातिके अग्रेश्वर पंच और चौधरी जिनका धर्म यहथा कि अपनी जातिके भाईयोंसे फिजूल खर्ची न कराकर उनको धनवान और ईमानदार वनाये रखते वे पंच और चौधरी आगेदेकर ज्यादह २ खर्च करवातेहैं और अपनी तमाम बिरादरी को निर्धन और बेईमान बनातेहैं॥ हमको बडी खुशीहै कि लाला सूरजभानजी साहबने इस विषयको अपने हाथमें लानाहै और फिजूल खर्ची बंदकरनेका उपाय करतेहैं यकीनहै कि और भी समस्त जाति हितेछु भाई सहायता करेंगें और फिजूल खर्ची बंद करेंगें॥

चिठीयोंका संक्षेप समाचार॥

प्रियवर, मैं अपने मित्रकी दूकान पर बैठा उनके मुखसे मनरंजन हितकारी शिक्षा सुनरहाथा कि आपका पत्रवर जैन प्रभाकर नंबर ११ पहुंचा॥ उसमें जैन विद्यालय और उसके भंडारकी नियमावली पढकर अत्यंत आनंद हुआ॥ हम आपके सहमतिहैं॥ मार्ग प्रभावना जैसी विद्याकसे होतीहै वैसा दान तप पूजासे नहीं होना क्योंकि रत्नत्रयका मुख्य कारण विद्याहै जैन विद्यालय अवश्य नियत होना चाहिये॥ विद्यालय भंडारमें एक रूपया फी मर्द देना किसीकोभी कठिन नहीं होगा इसके सिवाय मेरे मित्रनें कहा कि हमारे माडवाडके फलौदी आदि शहरोंमें एसी उमदा रिवाजहै कि जिससे पंचायती रूपया बहुत जल्द सुगम रीतसे रोकडी जमा होजाताहै और पंचोंको कुछ तकलीफ नहीं होतीहै॥ मैंनें पूछा कि वह सुगम रीत क्याहै? उन्होंने उत्तर दिया कि वह यहहै कि मसलन् किसी पुरुष वा स्त्रीकी इच्छा हुई किमें अपनी न्यातमें एक सेर लाडू वा मिसरी बांटू तब वह पंचोंको बुलाकर प्रार्थना करे कि पंचों मेरा इरादा न्यातमें एक सेर मिसरी का लेन बांटनेकाहै आप मंजूरकरो तब पंच हुकमदें कि लेन मंजूरहुई और उसी वक्त पंचायतीका पाना कर सब न्यातके नाम लिखें॥ मंदिरजीको तथा नाई सेवग आदि कर्मानोका लेन तो उसी वक्त देदी जाताहै॥ पंच फिर विचार करेंहै कि यह लेन न्यातमें बटजाय वा इसका रूपया पंचायती खजानेमें जमा करादिया जाय॥ इतनेमें कोई चोधरी कहे कि मिसरी या लाडू जाय तो एक २ डली बालकोंमें ऊठजाय लेन लेवा वालाने कोई बडो लाभ होय नहीं और बांटवा वालाका पूरी रकम खर्च होय इस लियें यदि वह थोक रकम

पंचायती खजानेमें जमा होजाय तो वक्त जरूरतके पंचायतीको बहुत लाभ दायक होवें॥ इसबातको पंच और लेन बांटने वाला सब मंजूर करतेहैं और फिर हिसाब कर के लेनके लाडू या मिसरीके नगद रोकडी रूपया उसी वक्त गिनवा कर लेलेतेंहै और पंचायती खजा नेंमें जमा करदेतेहैं॥ मेरे मित्रने कहा कि इस रीतसे हजारों रूपया जमाहोताहै और पंचायती काममें आताहै॥

मुझको यह रीति बहुत अच्छी मालूम होतीहै यकीनहै कि आप के पाठकगण इसपर बिचार करेगें॥

समरसी

—ooo—

सेठ नेणसुखजी निमाणी नासिकसे लिखेंहै कि वहांपर चैत बदी ९ से १३ तक ओसवाल हित कारणी महा सभा होगी और २ शहरोंके मुखतियार आवेंगे सर्व ओसवाल जाति हितेच्छु कृपाकर पधारें॥

—ooo—

एक जैनी भाईने बडी लंबी चिठी भेजीहै परंतु अपना नाम गाव नही लिखाहै उसमे एक समं चार यहहै कि सेठ चुंनीलालजी छावडा जलगांव वालाने अपने पुत्रके व्याहमें रु: ४००००) खर्च किये चार दिनकी नामवरीके वास्ते यदि कोई धर्मका काममें इतना रूपया खर्च करता तो सेठजीका जस और धर्मका उद्योतहोता जेनीयोको फजूल द्रव्य खर्च करना नही

—ooo—

वियावरमें चैत बदी ११ से सुदी ५ तक बिंब प्रतिष्ठाका मेलाहै॥

अलवरमें फागुन बदी १३ से सुदी २ तक रथ जात्राका मेलाहै

मथरामें माह सुदी ५ से ८ तक श्री जंबूस्वमीजीके मंद्रमें समोसरन की पुजा हुई॥ बीकानेरके जिन मंद्रपर सोनेका कलश चढा टोंक का संग गिरनारजी गय॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासंबधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा नें प्रकाश किया

नम्ब १

मिती चेत्र सुदी १ संबत १९४८ का

अजमेर

बार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजरके विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचे प्रार्थनाहै कि इसको संपूर्ण पढकर अपने पुत्रमित्रोंको पढनेके वास्ते देदेवें और देरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ र सुनादें॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संवधी नई वार्ता पत्रमें पनेको भेजें॥ जो भाई पत्र लेना चाहै हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालें॥

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर लोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका =) है॥

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना ना वैरविरोध मेटना, बिद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके श है ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल वार्ता मतमतांतरका गडा इसमें नहीं छपैगा॥

मूल्य प्राप्ति॥

गिरधारीलालजी १) रिषभदास चिलकाना १) सुरजमानजी १) मरावसिंगजी १) सिय।तरायजी १) कृपारमजी दववथ १) गोरीला जी भैरठ १) मिटनलालजी १) मंगलरमजी नानाता १) लाला हनलालजी १) मित्रसेनजी १) घंमठीलालजी १)रामलालजी १) गलसनजी छावनी अवाला १) सोहनलाल कालका ३) धंनालाल भा औषधालय केकड़ी १) शवामलजी १) प्रभुलालजी १) मुथरा सजी॥

समस्त चिट्ठी रुपया वगैरह लाला छांगालाल कोषा ध्यक्ष जैन भा अजमेरके नाम भेजना चाहीये॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपत्ति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर १ } अजमेर चैत्र सुदी १ संवत् १९४८ { अंक २

अद्भुत रूपकालंकार ॥

आपके पत्र नम्बर १० में जो पत्र "समरसी" के नामसे छपाहै उसके आशयको पुष्ट करनेके हेतु में नीचे लिखा हुआ दृष्टांत देकर आपके पाठकों को यह निश्चय कराताहूं कि जो लोग धर्मके वाहरी अंगमें प्रवृत्तहो उस्के अंतरंग दशाका बिचार बिलकुल छोडदेतेहैं वे धर्म घातकके तुल्य गिने जाने चाहियें॥ और जो उपदेशक अपने किसी लाभकी संभावनाके कारण समाजके लोगोंका चित्त वाहरी दिखावटकी तरफसे फेर उस्के अंतरंग रत्नत्रय सम्यक्त ज्ञान चारित्रकी उज्जलताकी ओर लगानेका उपदेश नहीं देते वे किसी प्रकार अच्छे और शुद्ध उपदेशक नहीं समझे जासक्ते किंतु वे निग्रहस्थानके जोग्यहैं॥ यदि जैनमतको कुछ हानि पहुची, तो मैतो इस हानिका दोष केवल इन्ही उपदेशकों केमाथे आरोपण करूंगा कि जो ठीक समयपर ठीक उपदेश नहीं देते॥ अबमैं अपने रूपकको निवेदन करताहूं॥

कुछ काल व्यतीत हुआ कि मैं एक बडे तीर्थ स्थानपर गया तो वहां पर मैंने अद्भुत तमाशा देखा॥ वहां पर एक बडे मैदान में एक ऊंचे आसनपर एक बुढा मनुष्य बैठा हुआथा वह स्थान सोने और चांदीसे चारों ओर भरा हुआथा॥ उसके मकानोंमें जरबफ्तके परदे लटकतेथे और उस बुढेके बदनपर इतना जेवर लदा हुआथा कि जिसका वर्णन करना मेरी शक्तिसे बाहरहै॥ कपडे उसके बदनपर एकसे एक बहु मोल्यथे और उसके आस पास उसके पुत्र पौत्रादिका समूह इकट्ठाथा कि अजनबी पुरुषको उसके दर्शनभी कठिनतासे होतेथे उसके पुत्र पौत्रादि उसके पूरे भक्तथे॥ वे हाथ जोडे सिर नवाये घंटोतक उसके सामने खडेरहतेथे कोई अपनी भक्ति प्रगट करनेके हेतु यद्यपि वह बुढा आभूषणोंके बोझसे दवा जाताथा तिसपरभी उसे औरभी भारी २ आभूषण पहरातेथे, कोई रूपयोंकी थैलियां उसके ऊपर वरसातेथे॥ कोई अच्छे २ बस्त्र अपनी भक्ति प्रगट करनेके हेतु और पहनातेथे॥ और कोई उसके सामने झांझ मजीरे बजाकर उसके जसगातेथे और कोई पैरोंमें घुघरू बांध कमरपर हाथ धर फिरकैंया ले २ कर खुशीसे नाचतेथे॥ कोई रेशमी छत्रीसे उसकी छाया कररहेथे और कोई खशकी पंखीयोसे उसको हवा करतेथे और कोई उसके पैरोंकी रज अपने मस्तक पर धारणकर अपनेको कृतकृत्य मानतेथे और कोई पैर धोधोकर पीतेथे॥ और पुत्रोसे अधिक पुत्रियांभी उसकी भक्तिमें सदां तत्पर रहतींथीं॥ वे उस बुढेके दर्शन नित्य प्रति भोजन करनेसे पहिले किया करतीथी और अपनी भक्तिके सूचक बस्त्राभरण पहनातीथी और उसके पास बैठी मंगल

बधाई गातीथी॥ मैंने अपनी आं खोंसे देखा कि वह चबूतरा जिस पर वह बुड्ढाबावा बिराजमानथा सब चांदीकी ईंटोंका बना हुआथा उसके इस सुख और बिभवको देख मैं बहुत प्रसन्न चित्तहो उस बुड्ढेसे कहनेलगा "हेबावा आपके समान इस संसारमें कोई सुखी नहीं है॥ धन संपदा आपके पास नित्य प्रति इतनी आतीहै जिसका कुछ पारि माण नहीं॥ आपके पुत्र पौत्र और पुत्रीयां आदि संतानभी इतनी अ धिकहैं कि जिनके देखनेसे आपकी सौभाग्यताका पूर्ण निश्चय होताहै और इससेभी ज्यादह एक परम हर्षकी बात यहहै कि आपकी सं तान आपकी बडी भक्ति और सेवा तन, मन, धनसे नित्य प्रति करते हैं॥ आपसारखा दूसरा कोई भाग्य वान और सुखी पुरुष आजदिन दूसरा नहीं होगा॥

मेरी इस बातको सुन वह बुड्ढा (जबकि में उसकी प्रसन्नताकी आ शा करताथा) एकसाथ हिलकियां भर २ रोने और आंसूका मेह बर सानेलगा॥ यह हाल देख मुझको एसा आश्चर्य हुआ कि बर्णन नहीं होसका॥ मैंने उसे धीरज बंधाकर विनय सहित नम्रीभूतहो पूछा कि बावाजी आपको एसा क्या दुखहै कि जिसके कारण आप एसे फूट २ कर रोतेहो॥ यह सुनकर वह बुड्ढा ठंडी सांस भरकर कहने लगा अरे भाई मुझे बडा दुखहै क्या कहूं कोई सुनने वाला नहीं॥ मैंने कहा कि बावाजी घबराईये नही आप मुझे अपना दुख सुनाईये में आपके दुख दूरकरनेका उपाय करूंगा॥ यह सुनकर वह बुड्ढा कुछ प्रसन्न हुआ और मुझे एकांत स्थानमें लेजाकर कपडे उतार अपना बदन दिखाया तो मुझे और भी अधिक आश्चर्य हुआ॥ वह इतना दुबलाथा कि उसकी एक २ नस चमकतीथी और

में उसकी एक २ पसली गिनसक्ता था॥ शरीरपर चमडाही चमडा रह गयाथा रुधिर मासका नामभी बाकी नहींथा॥ वह एसा कमजोरथा कि जरासे धक्केसे गिरकर मरजाता वह मुझसे कहने लगा कि भाई में इस समय ईश्वरका धन्यवाद करताहूं कि तुमने आज मेरा हाल पूंछा नही तो हजारों आदमी मेरे पास दर्शन करने आतेहै और भेडी चालके अनुसार मुझको देखकर हाथ जोड मेरे अन्य पुत्र पोत्रादि के माफिक अपनी वृत्तिके अनुसार बरण उससे अधिक रुपया जेवर कपडे आदि वस्तु जो मेरे बाहरी दिखावटके लिये बडे लाभकारीहैं भेट चढाकर चलेजातेहैं॥ कोई २ जो अपनेको बहुत बडे भक्त प्रगट करतेहैं वे मुझे पालकीमें बैठाल कर बडी भक्तिसे अपने कंधेपर लिये फिरतेहैं॥ कोई रथमें बैठाल आप खींचे फिरतेहैं॥ कोई जो अपनेको बडे उदार दातार समझतेहैं वह अपना नाम करनेको मेरी संतानको गिंदोड़ा बांटतेहैं कोई लडडू बांटतेहैं और कोई मेरी संतानको पांच सात मिठाई करके जिमाते हैं॥ में उनसे अप्रसन्नतो नहीहूं बरण केवल इतनी बात अवश्य कहूंगा कि वे महा मूर्ख अविवेकीहैं उनको विचार नहीं वे मेरा आवश्यकता पर कुछभी ध्यान नहीं देते और न मेरी पुकार चिल्लाहट को सुनतेहैं उसने कहा कि मेरा इस समय एसा बुरा हाल होरहाहै कि में चार आदमीयोंके सहारे बिन हिलभी नहीं सक्ता॥ और जब कभी कोई मुझसे अपने संशय निवारण के अर्थ प्रश्न करताहै तो अपने पुत्र पौत्रादिकी ओर नजर करनी पडतीहै॥ और जब उनमेंभी उसके लायक कोई दृष्टि नहीं पडता तब अतिही शोक होताहै मे आपतो कमजोरीके कारण उत्तर देही नहीं

सका ॥ इतनी बात सुन मेंने बडा अचंभा प्रगट कर उससे पूंछा कि बाबाजी आपकी इस दशामें पहुच नेका क्या कारणहै तब वह बडा हर्ष प्रगट कर कहने लगा कि तुम सच्चे शुभ चिंतकहो और मुझे आशाहै कि तुम मेरे दुख दूर करने के उपाय ठीक २ मेरे पुत्र पौत्रादि से कराके मुझे चिरस्थाई करदेओगे ॥ वह फिर कहनेलगा कि भाई येलोग कपडा जेवर आदि बाहरी दिखावटकी वस्त मुझे बहुत कुछ भेट करतेहैं। परंतु मेरी क्षुधा निवारणके अर्थ भोजन न आपदेतेहैं और न किसी दूसरेको देनेका उपदेश करतेहैं बल्क कभी कोई भोजन करानेको कहताहै तो नाराज होकर बातको उडादेतेहैं इसी कारण मेरी यह दशा होरहीहै ॥ वे लोग कहतेहैं कि हमारे बाबाजी ने अपनी जवानीमे वडे मीठे २ और पुष्ठरस भोजन कियेहैं वे बडे बलवानहैं उन्हे अब भोजनकी अवश्यकता नही अबतो वह रत्न जडित सिंहासन पर बैठें बहु मोल्य वस्त्राभरण पहरैं आनंद करैं और हम उनके आगे उनके जस बर्णन करैं इसीमें दोनोका कल्याणहै ॥ बेशक मैं अपनी जवानीमें बडाही पुष्ठ और बलवानथा और मैंने बडे २ बीरोंको पछाड गिरायाथा इसी हेतु इतने दिन तक बिन आहार केभी जी रहाहूं परंतु यदि येलोग भोजन नहीं देवेंगे तो मै कबतक जीसकूंगा ॥ और में तुमसे कहता हूं कि यदि ऐसी दशामें मै मरजाऊं तो अवश्य इस अपराधके भागी मेरी संतानमेंसे वेलोग होंगे जो लिखे पढे बुद्धिवानहैं ॥ येलोग बिचारे मूर्ख लोगोको यह उपदेश कदापि नही देते कि मुझे चिरस्थाई बनानेके लियें कपडा जेवर रूपया आदि आवश्यक नहीहै बरण पुष्ठ भोजनका देना बहुतही आवश्यकहै ॥

इतनी बातें सुन मेने उस बुढे की बहुत दिलासाकी और इस बातका वादा किया कि बाबाजी मेंभी आपकी संतानमेंहू इस कारण यह अपना पराम धर्म समझताहू कि आपको चिरस्थाई रखने के विषयमें अपने अन्यभाईयोंको उत्साहित करूंगा यकीनहै कि वे मेरी बिनती सुनकर आपको भोजन पान आदिसे अवश्य पुष्ट करेंगे॥

उस वादेकोमें इस चिट्ठीके द्वारा पूर्ण करनेका प्रारंभ करताहूं॥ भाईयों यह बुढा कोई और नहीं है परंतु आपका पूज्य "जिन धर्म" है॥ इह मत संबंधी विद्या जो भोजनके सदृश उसे पुष्ट और बलवान चिरस्थाई रखतीहै उसके अभाव से मरनेके निकट पहुचगयाहै॥ आप लोग वस्त्र अभूषण याने पूजा प्रतिष्टा रथ यात्रा आदिसे हर समय उसे सजाये रहतेहो परंतु जिन धर्म संबंधी विद्याको उसके निकट नही लेजाते जिस्से कारण उसकी एसी बुरी दशा होरहीहै कि यदि शीघ्र उपाय न करोगे तो अवश्य वह नष्ट होजायगा॥ इस्मेंभी कुछ संदेह नही कि इस्का दोष सब उन जैनियोंकी गर्दन पर होगा जो लिखे पढे बुद्धिवान होनेके कारण अन्य पुरुषोमें अगुआगिने जातेहैं॥ और अंतमें जब यह समय जाता रहैगा तो सिवाय पछतावेके और कुछ हाथ न आवेगा अर्थात् जब बहुतही कमजोर होजाइगा तब फिर भोजनके देनेसेभी आप उसे मृत्युसे न बचा सकोगे, इसी हेतु भाईयों उठो चेतो देरमत करो अपने पूज्य परम इष्ट इसलोक और परलोक संबंधी सर्व सुख संपद कल्याणके देने वाले दुर्गतिसे बचानेवाले "जिन धर्म" की रक्षा और वृद्धि करनेके हेतु धर्म संबंधी विद्याका प्रचार बढानेका उद्योग अवश्य करो॥

रत्नचंद

प्रियवर संपादक श्री जैन प्रभाकर॥

आपके पाचों सवालोंका तात्पर्य यहहै कि जैन धर्म और जैनीयों की अवनति जो इस वर्तमान समयमें प्रत्यक्ष होरहीहै इसको रोकना और उन्नति होनेके उपाय करना और जैनी भाईयोंमें परस्पर मैत्री भाव बढाना॥

यह हमारा श्रेष्ठ जैन धर्म बीर पुरषोंसे धारण कियाजाताहै और बीर पुरषोंके समयमें यह धर्म बडी उन्नतिपरथा, ज्यों २ बीरता नष्टहोतीगई त्यों २ इस धर्मकीभी अवनति होतीगई इस कारण बीरता पराक्रम और पुरुषार्थकी वृद्धि होनेसेही जाति और धर्मकी फिर उन्नति होसक्तीहै॥ परंतु यह तन मन धनकी उन्नातिसे प्राप्तहोतेहैं यातें तन मन धनकी उन्नातिका उपाय करना धर्मकी उन्ननिका कारणहै आप जानतेहैं कि तन मन धनकी उन्नति सर्व उत्तम कार्योंमें अवश्य है और इन तीनोंमें एसा मैत्री भाव और प्रीतिहै कि मानों यह एकही पिताके पुत्रहैं॥ जहां इन तीनोंसे एकका अभाव हुआ तो वह कार्य भी सिद्ध नही होता इसकारण इन तीनोको बढाना अवश्य हुआ॥

तनकी उन्नातिसे हमारा यह प्रयोजनहै कि इसको आरोग्य रखनेके उपाय करना॥ खान पानकी उज्जलता रखनी और शुद्धाचरणमें उत्साह और बीरता उतपन्न करना॥ नगर २ और ग्राम २ में जैनियों कि लियें शुद्ध औषधालय नियत करना दुर्बल दीन अनाथोंकी खान पान वस्त्रादिसे सहायता करना॥ यह कार्य अपने २ नगरकी पंचायती द्रव्यके द्वारा सुलभ होसक्ताहै लडकोंका बाल्या वस्थामें बिबाह नहीं करना कुबिसन और कुचालसे रोकना॥ अकाल और अधिक बिषया लंपटी नही होनेदेना॥ स्नानादिसे शरीर पवित्र रखना स्वच्छ

निर्मल वस्त्र पहरना शुद्ध भोजन पानकरना अधिक आलस्य और निद्रा नलेना आदि जोजो बातें आरोग्यताकी सहायकहैं उनका सेवन करना उचितहै ॥ इसमें कोई महाशय संका करेंगें कि धर्म और तनकी उन्नतिमें क्या संबंधहै उसका उत्तर यहहै कि साधू तो त्यागी है उसको शरीरादिसे कुछ प्रयोजन नहीं परंतु गृहस्थीयोंको शरीरकी थिरतासे धर्ममें चितलगाताहै और शरीरकी नीरोग्यता होनेसे बलवीर्य बुद्धि बढतेहैं और उनसे धर्म ध्यान भले प्रकारहोताहैं ॥ मेरा अभिप्राय यह नहींहै कि शरीर पुष्ट करके इंद्रोयोंके आधीन होकर विषय कषायमें मग्न होजाना किंतु इतना हीहै कि निरोग होनेसे आकुलता नष्टहोताहै और ज्ञान ध्यान विद्या तथा धनकी वृद्धि भले प्रकार होसक्तीहै ॥

जब तनकी उन्नति हुई तो उसके साथ मनकीभी उन्नति अवश्य होगी परंतु मन चंचल होकर कुमार्गमें प्रवेश नही करे इससे पहले उसे विद्याभ्यासमें डाल सुमार्गमे लगाना चाहियें ॥ विद्या ग्रहणकी सामग्री सर्व मनुष्योके पास बराबर नहींहोती इसलियें पंचायती द्रव्यसे नगर २ में पाठशाला नियत होनीचाहियें और विद्यार्थीयोंका भोजन वस्त्रादिसे सन्मान करना इस प्रकार सर्व जैनी भाई विद्या संयुक्त होजांयगे और धनकी वृद्धि होना फिर बहुत सुलभहै क्योंकि आरोग्यता और विद्या संयुक्त मनुष्य निरुद्यमी और आलसी नहीं होगें किंतु साहसी पराक्रमी और उद्यमी होकर धन उपार्जन सिल्प विद्या और वाणिज्यमें लगेंगे ॥ जब यह तीनो याने तन-मन-धनकी उन्नति हुई तो राज्यमान प्रतिष्ठा स्वयमेव होगी इस प्रकार जैनीयोंकी संसारिक उन्नति होगी ॥

अब धर्म उन्नतिपर विचार कर ताहूं ॥ तनकी उन्नतिसे धर्म करनें में उछाह बढेगा मन याने बुद्धि और विद्याकी उन्नतिसे शास्त्र भ्यास करेगा और शास्त्र भ्याससे हेयोपा देया याने कोन वस्तु त्यागने जोग्य और कोन ग्रहण करने जोग्यहै इन को भली भात जानेगा और सम्य क हांसिल करेगा जिससे मुक्ति प्राप्ति होगी तथा वादी प्रति वादी के सामने अपने धर्मकी सच्चाई और उत्तमता स्थापित करके धर्म का प्रकाश करेगा धनकी उन्नतिसे दान पूजा परोप कार करके जिन धर्मकी प्रभावना और उद्योत करे गा इस प्रकार धर्म की बडी उन्नति होगी ॥

बहुतसे भाई यह कहेगे कि यह बाते अपार द्रव्य होनेसे सिद्ध हो सक्तीहें और पंचायतीमे इतना द्रव्य नहींहै इस लियें इनका सिद्ध होना असंभवहै ॥ भाईया जैनी पंचोंके पास अबभी अटूट द्रव्यहै और हजारों रुपया हर साल धर्म प्रभाव नामे खर्च होताहै परंतु निज प्रशं सा वा मान पुष्ठ करनेको और वह भी सिरफ दो दिनके लियें ॥ अफ सोसहै कि इस समयके जैनी उन कार्य्योंपर ध्यान नही धरते जिनसे सर्व जैनियोंको चिरस्थाई लाभहो उनकी प्रशंसाहो और धर्मकी दृढ ता और महमा बढै ॥ अगर मेले और वृथालौकिक खरचसे द्रव्य बचाकर एकत्र किया जावे तो बहुत द्रव्य जमा होसक्ताहै जिसकी सहा यतासे सर्व उत्तम कार्य विद्यालय औषधालय नियत होसकेहैं और हमारा धर्म सूर्य समान प्रकाश करनेलगे ॥

में उस लेखसे सहमतीहूं जो समरसी साहबने जैन प्रभाकर नंबर १० में लिखाहै ॥

सर्व भ्रातृगण हितैषी
छगनलाल कांसलीवाल
अजमेर

॥ जाहिरात ॥

जाहिर खबर सर्व देशांतरके जैनी भाईयोंको धर्मका वंदन होनेके लिये मालुम कियाहै के श्री सिद्धवर कूटजीके मंदिरकी मरम्मत वगैराके वास्ते सदा बंद सब देशांतरके लोगोंने लिख्या परमाणें लाग देना किंचित लाग लगीहै तो ये लाग देनेको कुछ मुष्किल नहींहै इसमें किसी बातका संशय करना नहीं इस काममें भाव रखेगा जिनके परभोवकी खरची पल्ले रहेगा सो पुरमें बास होवेगा सो यह महान पुण्यका कामहै ये नीचे लिखी हुई लाग पंचायतिमें लेलेना ॥

१ लडका वा कन्या जन्मे जिसका रुपया १ परमाने लेना

२ लडका खोल्या लेवे जिसका रुपया १ परमाने लेना

३ सगाई होवे जिसपर लाग दोनों तरफसे रुपया १ परमाने लेना वियाहमें भी रु: १ लेना

४ जिस किसीके रसोई व्याव की तथा नुकताकी वगैरामें गुड घी सक्कर गाले उसने एक मण पीछे एक आना परमाने लेना

५ मासवारामें नित नेमका आना चार परमाने लेना घरधीट भादवा सुदी १४ पंचायतीमें

इस उपर लिख्या परमाने लाग लगाईहै सो वखतकी वखत पंचोंने लेलेना पंचायतीमें जमा रखना बाद पैसा भेला होजावे तब हुंडी तथा मनी आर्डर तथा नोट टिकट तथा नगदी किसी आताजाता के हाथ इंदोरको लष्करी मंदरमें भेज देना ठिकाना भुरजी सुरजमल मोदीके दुकानपर करदेना जिसकी नम्बरवार पावती मिलेगी मिती माह बदी ११ बिसपतवार संवत १९४७ ॥

सही भुरजी सुरजमल मोदी
इंदोर मल्हार गंज
द: मोतीलाल

चिट्ठीयोंका संक्षेप समाचार

लाला सोहनलालजी साहब अंबालहसे लिखेहैं कि उनकी कोठियोंमे सब कारकुन जैनी भाईहैं और शास्त्रजी पढे हुयेहैं॥ हमको इसके पढनेसे अत्यंत हर्ष हुआहै और हम आशा करतेहैं कि और भी जैनी सेठ साहूकार और जिमीदार इस उमदा रीत पर चलेगे॥ वात्सलय गुण इसी प्रकारसे वृद्धि होगा॥

---ooo---

सेठ मोहनलालजी साहब खुरईसे लिखेहै कि उन्होने सर्व पंचोंकी सहायतासे मिती फागुन बदी ३ को जैन पाठशाला नियत करदीनीहै॥ सेठ साहबकी रुचि प्रभावना करनेमे विशेषहै इससे पूर्ण आशाहै कि वे दिन प्रति दिन पाठशालाकी उन्नति करते रहैंगे॥

---ooo---

एक भाई शिकायत करतेहैं कि उनके शहरके लोग मुरदनीमे नही जाते अकसर मृतक शरीरको गाडियोंपर धरके स्मसानमें लेजाना पडताहै॥ यह बात वाजिब नही, और पंचोंको मुरदेके साथ अवश्य जाना चाहिये इसका बंदोबस्त शीघ्रहोना उचितहै॥

---ooo---

पंडित बलदेवदासजी इंदोरसे लिखेहैं कि वडनगरमें एक जैनी ब्राह्मणहै वे अपनी ज़ातिकी तरफसे उपद्रव आनेपरभी जैन धर्मपर बडे दृढहै उनका साहस और धीर्य बढाने और स्थिती करण गुण प्रगट करनेको सर्व जैनी भाईयोको उचितहै कि उनकी सहायता करे जिससे औरों काभी साहस बना रहे और जैन धर्मसे नहीं चिगें॥

---ooo---

होलीकी रात और छारेंडी के दिन यहां अजमेरके मंदिरोंमें भजन और पूजन होतेरहे जिसके कारण बहुतसे साधर्मी भाई होलीके ख्यालमें नही गये और धर्म ध्यान

में लगेरहेहै ॥ अगर इसी प्रकार हर वर्ष भजन पूजन होतारहैगा तो यकीनहै कि थोडेही दिनोंमें यह होली का निंदानीक रिवाज जैन कुलमें से जाता रहैगा ॥

॥ एडीटारियल ॥

आजके पत्रमें एक रूपका लंकार बाबू रत्नचंद्रजी कृत मुद्रित हुआहै और हम अर्ज करतेहैं कि सर्व जैनी भाई उसको बहुत ध्यान धरके पढैगें और उसके गूढ आशय पर अच्छी तरह विचार करेगें ॥ इस समयमें हरेक जातिके लोग अपने २ धर्मकी उन्नति कररहेहैं परंतु जैनी इसके विपरीत धर्ममें सिथल होतेजातेहैं और बाहरी शोभाको बढातेहैं और जातिके लोग सिरफ अपनीही संतानको विद्याभ्यास करानेके वास्ते हजारों रुपया खरच नही करतेहैं ॥ लेकिन अपनी जाति विरादरीके गरीब और निर्धन भाईयोंके लडकोंकी शिक्षामेंभी लाखों रुपया खर्च करतेहैं ॥ कुछ समय व्यतीत हुआ कि मुंशी कालीप्रशाद जी साहबने अपने सर्व कायस्थ भाईयोकी शिक्षाके वास्ते अपनी जन्म भरकी कमाई देदीनी और एक पाठशाला नियत करदीनी ॥

बंबईके बडे सेठ सर नाथूभाई मंगलभाईने ४३०००००) तेतालीस लाख रुपया इसी परोपकारी कार्यमें खर्च करादिया और एक संस्कृत पाठशाला कि जहां उनके धर्म शास्त्र पढायेजावे नियत कर दीनीहै कोई समयथा जबकि जैनी संस्कृत विद्याभ्यास करनेमें और जैन सिद्धांतोके रहस्य जाननेमें अत्यंत परिश्रम और धन खर्च करतेथे लेकिन वह सब बातें अब इस समयमे जाती रही और उसका परिणाम यह हुआहै कि जिन धर्मका भावलिंग दिनपर दिन घटता

जाताहे और द्रव्यलिंग बाहरी दिखावट और शोभा बढती जाताहै॥

हमारे यहां बालकोंको प्रथम श्रावगाचार पढाया जाताथा जिससे हरेक स्त्री पुरषको भली भांत मालूम होजाताथा कि हमारे कुल की क्या क्रिया और कैसा आचार है और हमको अपने गुरुजनोंसे कैसा व्यवहार रखना चाहिय तथा लौकिक काम काज किस प्रकार से करने चाहिय और श्रावगा चार के पढनेसे सबसे बडा लाभ यह होताथा कि मनुष्य असद और अन्याय मार्गको बाल अवस्थासेही त्याग करदेतेथे॥ परंतु अफसोसहै कि यह सब प्राचीन राजमार्ग जातारहा॥ धनवानोंनें तो धनके मद से और गरीबोंनें थिरता नही होने से अपने बालकोंको जिन धर्म संबंधी विद्या पढाना छोडदिया॥ अब यह हाल होरहाहै कि मंदिरोंमें शास्त्रजी सुनने तकको सोमेंसे पांच आदमी आतेहैं पढनेका तो जिक्र ही क्या॥ लेकिन अगर कोई सच्चा धर्म हितेशी जिनधर्मकी सच्ची प्रभावना करनेवाला बिबेकी पुरुष हमारे भाईयोंको उनकी गलती बताकर विद्या वृद्ध करनेका और जैन सिद्धांतोको पढने पढानेका उपदेश करताहै तो वे उसे मूर्ख समझते हैं बेटे के व्याह में दस हजार रुपियेकी आतिशबाजी छुटा देंगे मगर उसको धर्म शास्त्र पढानेमें जिससे कि उसके इसलोक परलोक संबंधी कार्य सिद्धहों कभी एक रुपयाभी नही खर्च करेगें॥ इस अज्ञानपर कहांतक पशचाताप करें॥ भाईयों अब चेतो और अपनी आवश्यकताओं पर बिचार करो और जिस प्रकार आपकी संतान धर्मात्मा और न्याय मार्गी बनीरहे आपकी वडे कष्टसे कुमाई हुई लक्ष्मी को वे कमार्ग और कुविसनमे खर्च नही करसकें एसा उपाय शीघ्र

करे॥ वह उपाय यहीहै कि उन को स्वधर्मावलंबनी विद्या श्रवगाचार आदि जैन सिद्धांतोको पढाने का उद्योग करो और आपभी मंदिर जीमें जाकर नित्य प्रति शास्त्रजी का अभ्यास करो और २ भाईयों को अपने साथ लेजाकर ज्ञानाभ्यास कराओ एसा करनेसे और ज्ञानकी वृद्धिहोंनेंसे जाति और धर्म दोनोकी सच्ची उन्नति होगी और परस्पर मैत्री और वात्सल्य वढेगे॥

मूल्य प्राप्ति॥

२) बाबू बिहारीलालजी खानजी १) परमानंद दमोह २) चुन्नीलालजी हीगन घाट १) श्रीपंचान उजैन १) आगर १) रतलाम ॥।=) ललितपुर ।=) बिजोली १) सेः नेनसुखजी नासक १) जगननाथजी लाहोर २) मूलचंदजी अमरावती ॥=) स्वोरिजमल १) गोबंदराम कुचामण १) जसुरामजी पिडावा १) वहदुरमलजी ॥=) पिरथादास आगरा ॥=) गमीरमलजी सोगाणी ॥=) रामदयालजी ॥=) लक्ष्मीचंदजी ॥=) सुगनचंदजी १) मांगीलालजी मंडी १) केसरीलालजी अलवर १) सेठ मोहनलालजी खुरई १) कजोडीमलजी रिड १) जेठमलजी १) स्वाईरामजी १) सुरतरामजी १) पुरणमलजी १) हुकमचंदजी हैदराबाद २) मोहनलालजी कामटीछावनी १) गबदलालजी कामटी १) विहारीवाम वडकर १) सेठ बुटेभवाना अमरावती १) रामचंदजी वर्धा १) नारायणजी सावर १) मुरलीधरजी दोसा १) जमनालालजी धोलपुर १) मुः भगवान जगदलपुर १) सुषलालजी जबलपुर १) सेठ दीपचंदजी १) रामचंदजी हुशंगाबाद २) सेठ छोगालालजी १) राजमलजी नसीराबाद १) दयाचंदजी नुकुड १) श्री पंचान

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासंबधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा नैं
प्रकाश किया

नम्बर २

मिती बैसाख सुदी [illegible] संबत १९५८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजरके विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचे प्रार्थनाहै कि वे इसको संपूर्ण पढ़कर अपने पुत्रमित्रोंको पढ़नेके वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ कर सुनार्दे॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संबधी नई वार्ता पत्रमें छापनेको भेजें॥ जो भाई पत्र लेंना चाहै हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालें॥

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) वाहर वालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है॥

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके उद्देशहें ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलीटीकल वार्ता मतमतांतरका झगडा इसमें नही छपैगा॥

मूल्य प्राप्ति ॥

१) श्री पंचान जैन मंद्र आरा, १) दुलीचंदजी पटवा, फतेगढ १) श्री पंचान जैन मंद्र रतलाम, १) छाजुलालजी लालसोठ, १) बाबू बारसदासजी बंदटोरडो १) उदैराजजी भंडारी जोधपुर १) छोगा लालजी बोहरा जैपुर १) ग्यानमलजी छोगालालजी भेलसा १) जवाहर मलजी के सरीमलजी उदैपुर १) श्रीपंचान गोविंदगढ १) सुलतानसिंघजी दहली १) पंचान सिगोली १) किस्तूरचंदजी नया नगर १) लक्ष्मीचंदजी सर्वसुखजी जैपुर २) जवाहरमलजी बडजा त्या नागोर १) श्रीपंचान॥ (सेषआगे)

(सेषआगे)

समस्त चिट्ठी रुपया वगैरह लाला छोगालाल कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेरके नाम भेजना चाहीये॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर २ | अजमेर बैसाख सुदी १ संवत् १९४८ | अंक २

श्री जिन बिंव प्रतिष्टा महोच्छव नयानगर॥

यह उच्छब बहुत अच्छा हुआ और इसकी संपूर्ण शोभा वेही जानतेहैं जिन्होंने उसे देखाहै॥ हमारी सामर्थ नहींहै कि इस अनुपम उच्छबका बर्णन करसकें तथापि कुछ थोडासा लिखनेका उद्यम करतेहैं जिसके पढनेसे जैनी भाईयोंके धर्मानुराग बढे और जिन धर्मकी प्रभावनाका आनंद रूपी सूर्य उनके हृदय कमलको प्रफुल्लत करै॥ नये नगरके दरवाजेके पास पछिमकी तरफको सेठ चंपालाल जीने नवीन जिन मंदिर बनवाया है॥ मंदिरकी इमारत बहुत मनोज्ञ और दो खनीहै बीचमें आंगन और चारूं तरफ दालान और बरंडेहैं जिनमें जाली झरोके बहुत हवा दारहै और रंगामेजीके कामसे बहुत सुहावने और रमणीय मालूम होतेहैं॥ वेदी उत्तर मुख संगमरमरकी जिसपर सुनहरी कामके वेलबूंटे बनेहुयेहैं अति मनोज्ञ है और उसपर सिखरहै जिसके

ऊपर स्वर्ण कलश जगमगा रहाहै और ध्वजा फैरारहीहै सोमानू हाथ का इशारा करके भव्य जीवोंको जिन दर्शन और पूजनको बुलारही है॥ मंदिरजीमें प्रवेश करतेही शांत परणाम होतेहैं और धर्म ध्यान में चित लगताहै एसा अतिशय इस पवित्र क्षेत्रकाहै जहां सर्व प्राणीयोंकी पापतापके हरने वाले, सुख समुद्रके बढाने और आल्हाद के करने वाले तीन लोकके चंद्रमा श्री देवाधिदेव श्री श्याम वर्ण पद्मासन विराजेहैं जिनके दर्शनकरनेसे सर्व मन बांछित कारज सिद्ध होतेहैं सो श्री जिनवर जैवंतेरहो और यह नवीन मंदिर परम धर्मका स्थानक स्वर्ग मोक्ष का द्वार सदा काल स्थिररहो और यहांपर सर्व जैनी श्रावक धर्मका साधन कर अपना नरभव सफल करो॥

मंदिरजीके नीचेके पहले खंड में बडे २ दालानहैं सो जैन पाठशालादिके काममें अच्छी तरह आसक्तेहैं और मंदिरजीके साथ पाठशाला नियत होनेसे बहुत जीवोंका कल्याणहोगा॥

अब कुछ संक्षप वर्णन प्रतिष्ठाका लिखतेहैं॥ हम चैत बदी १५ को नयेनगर पहुचे मंदिरजीके चारों तरफ मैदानमें तथा बाहिर बागमें सैकडों डेरे खडेथे जिनमें जात्री उतरते थे और खान पानकी सामग्री और व्यापारकी चीजोंका बाजार लगा हुआथा पुलिसका डेरा इसी बाजारमेंथा बंदोबस्त अच्छाथा पानीकी प्याहू जगह २ लगी हुईथी जहां जात्री ठंडा मीठा पानी पीते थे॥ जगह २ लालटेने रोशनीके वास्ते लगी हुईथी और दिनमें बेठनेके वास्ते चांदनी तान दीनीथी जिनके नीचे सायामे स्त्री पुरुष बेठतेथे॥ जगह २ नकारखाने और बाजे बजतेथे॥

प्रतिष्ठाका श्रीमंडप सौ गज लंबा और सौ गज चौडा कपडेका बना हुआथा जिसमें मुख्य मंडप बहुत शोभाय मान चौकोर था जहां वेदीमें श्री जिनराज विराजेथे और इसी मंडपमें नवीन बिंब जिनकी प्रतिष्ठा होने वालीथी स्थापित कियेथे॥ यहां पर नित्य प्रति महा पूजा विधान सहित होताथा और इसी मंडपमे पंच कल्याणककी सर्व क्रिया हुईथी चैत सुदी १ को प्रभात समय जल जात्रा और तीसरे पहर रथजात्रा हुईथी सुदी २ को गर्भावतार मंगल सुदी ३ को जन्म मंगल और सुमेर पर्वत पर भगवानका एक हजार आठ कलशो कर अभिषेक और हाथी पर सवार होकर शहरमें हो तेहुये श्री मंडपमे प्रवेश और पालना झूलना इत्यादि हुईथी सुदी ४ को भगवानका संसार सरीर भोगो से विरक्तहोना और वैराग्य चिंतवन करना देव देवेन्द्रों करके भगवानका अभिषेक और पालकीमें बैठाकर बनमे जाना वहां सर्व परिग्रह वस्त्रा भूषण कात्याग कर जथा जात नग्न मुद्राका धारण करना इस प्रकार तपकल्याणक की क्रिया हुईथी॥ सुदी ५ को चार घातिया कर्मका नाशकर अनंत चतुष्टय और समव सरण लक्ष्मीका प्रगट होना धर्म तीर्थका करना आदि ज्ञान कल्याणककी क्रिया हुई और उसी दिन मोक्ष मंगलका भाव दिखाया गया था॥ इसी दिन सुभलग्न मुहूर्तमे श्रीजी नवीन मंदिरमें विराजमान हुये और मंदिरकी सिखरपर कलश और ध्वजा चढाये गयेथे और तीसरे पहर शहरमें जलेब बहुत जलूस और धूमधामसे हुईथी॥

कल्याणकोंके उच्छव देखनेके लियें रातके ४ बजे सेही सर्व स्त्री पुरुष स्नानकर पवित्र वस्त्रा भूषण पहर कर श्री मंडपमें अपने २ स्था

नोंमें आन बेठतेथे और अरुणोदय के समय तक संपूर्ण मंडप घिरजा ताथा पीछे देरसे आनेवालोंको बेठनेके लिये जगह नही मिलती थी इसी कारण सब लोग जलदी आतेथे देरसे आनेवाले दर खडे रहतेथे॥ कल्याणक का उच्छव दिन निकले पीछे प्रारंभ होताथा और १० बजे तक रहताथा नरनारी विनय सहित हाथ जोड प्रसन्न चित उच्छवको देखतेथे और जिनेन्द्रकी भक्तिसे अपने हृदयको पवित्रकर जन्म कृतार्थ मानतेथे॥

दिनके १२ से शामके ५ बजे तक मंडपमें नृत्यगान वाजित्रसे ओत आनंद होते रहतेथे और हर समय जात्रीयोंके झुंडके झुंड श्री मंडपमें जगह २ पर बैठे हुये धर्म चर्चा करतेथे॥ कहीं शास्त्रजीका व्याख्यान होताथा॥ कोई प्रश्नोत्तर कर अपना संदेह निवारण करता था कोई धर्म कथा करताथा॥ कोई जिन गुनगान कोई पूजा कोई भजन कोई जाप कोई सामयक कोई न्टत्य कोई भजन कोई रात्रि जागरण आदि धर्मके अनेक अंगों में अपनी २ रुचि माफक हरेक जैनी भाई अपने चितको लगाता था पापाश्रवका संवरकर पुन्यका भंडार भरा ताथा श्री मंडप धर्म साधन करनेका मुख्य स्थानकथा॥

जलेव हररोज २ बजेसे ६ बजे तक होतीथी॥ जलेवके जलूसका सामान बहुत और नवीन सुहावनाथा प्रथम धौंसा और नीसान घोडोपर निकलताथा उसके पीछे कोतल घोडे रेशमके टाटबाफी सुनेहरी साज और जडाऊ गहने पहरे चले आतेथे॥ उनके पीछे बाजे वाले और रंगरंगकी अनेक नवीन ध्वजा पताका की पंकि फेरातीहुई थी॥ इनके पीछे नकारखानेकी गाडीमें नोबत बजती हुई चलीआतीथी चमर और छत्रकी पंक्तिके

सुनेहरी और रुपहरी गोटे हवासे हिलते और सूरजकी किरणोसे झिलमिलाते चमकते अति सोभा देते मनको मोहित करतेथे॥ उन के पीछे अंगरेजी बाजोकी ध्वनि श्रोत्रोंको प्यारी बहुतही अच्छी मालूम होतीथा जिनके पीछे २ पलटनके सिपाही धीरें २ कदम उठातेहुये चले आतेथे॥ एरावत हाथी अपनी सुंड उठाये चमर करतहुये आतेथे उनके महावत सुंदर वस्त्र पहरे बैठेथे और अंबारी सजी हुईथी टाटबाफी झूले पडेहुईथी एक हाथी अजमेर काथा और दूसरा खुरजे से आयाथा ये दोनो हाथी बहुत ही सुंदर बने हुयेहैं॥ एक गाडामें सिंहासन और वेदी रखी हुईथी और एक गाडीमे इंद्र अष्ट मंगल द्रव्य लियेहुये खडे चले आतेथे एक रथ खुरजेका दो खनका सुनहरी बहुत उमदाथा जिसमें सिंहासन पर श्रीजी विराजमानथे सिरपर छत्र फिरतेथे और दोनो तरफ चमर होतेथे॥ इस रथके बैल जोयजातेथे दूसरा रथ अजमेरका घोडोकाथा जो वर्गाके आकार नई वजेका बना हुआहै और कलसे अपने आप चलताहै और कलसेही इंद्र चमर करतेहै इस रथकी सोभा देखनेसे ही जानी जातीहै॥ जलेबके साथ में इस कदर स्त्री पुरुषोकी भीड होताथी कि बाजारमें पैर रखने को जगह नहीं मिलतीथी दोनो तरफकी तमाम दूकाने और उनके ऊपर झरोखे गोखे और छज्जे और खिडकी और मकानोंकी छत्ते स्त्री पुरुषोंसे लदे हुयेथे रास्तेमें दरखतोंके गुट्टोंपर आदमीयोंके झुंड बैठेथे जहां कहीं जराभी बैठनेकी जगह थी वह सब झुकी हुईथी॥ रास्तेमें जगह २ भजन और नृत्यकी सभा हातीथी और जैजै कारकी ध्वनि मे सारा शहर गूंझ उठताथा॥ रथ के पाछे २ स्त्री जन सुंदर वस्त्र आभ

रण पहरे समयके अनुकूल मंगला चार जिन गुन गाती हुई चलीआ तीथी धूपसे छाया करनेको लंबी २ चांदनीयां तनी हुईथी और जगह २ पानी पीनेको प्याहू बाजारमें लगी हुईथी॥ जलेबकी लंबाई एक मील से कम हरगिज नही होतीथा॥ हमारी कलममें सामर्थ नहीहै कि जलेबकी शोभा लिखसके॥ इस उच्छवके देखनेसे जो परमानंद हो ताथा सो बचनके अगोचरहै उस सुखको वेही जानतेहैं जिन्होंनें उसे प्रत्यक्ष देखाहै॥

जैपुरकी जैन पाठशालाके विद्या र्थीयोने दो रात्रिको नाटक कियेथे॥ छोटे २ लडके मिष्ट स्वरसे संस्कृत और भाषामें नाटकका स्वरुप झल काते हुये मोहराजाकी हार और आत्म प्रभुको रत्नत्रय प्राप्ति वर्णन करतेहुये अपनी विद्या प्रकाशकरते थे तथा उन महानुभावोंका जो कि जिन धर्म संबंधी विद्या वृद्धि कर नेका उद्योग और परिश्रम करतेहैं जस प्रकट करतेहुये श्रोतागणोंको प्रेरणा करतेथे कि वेभी अपने पुत्र पौत्रादिकोंको विद्या पढानेका यतन करैं॥ ये नाटक बडे हितोप देशके दाताहै और इनमें लौकिक और पारमार्थिक शिक्षा भराहुईहै जिन के सुननेसे ज्ञान प्राप्ति होताहै॥

इस मेलेमें दूर २ देशोके अनेक विद्वान पंडित धर्मात्मा राज्यमान राज्याधिकारी और धनवान सेठ साहूकार और पंच चौधरी आदि प्रधान पुरुष तथा साधरण मनुष्य एकत्र हुयेथे जिनकी संख्या ६०००० साठ हजारसे कम नही होगी॥ एसा समूह बार २ और हरेक जगह एकत्र नही होता बहुत दुर्लभहै इस लिये जैनियोके उप कार और जैन धर्मकी सच्ची प्रभा वना करनेको जैन विद्यालय और उसके खरचके वास्ते भंडार नि यत करनेको अजमेर वालोंकी तर

फसे एक सभाभी हुईथी–जिसमे जैन विद्यालय भंडारका नीम लग गई॥

जैन विद्यालय भंडार॥

मिती चैत्र सुदी ३ शनिवार सं १९४८ को भगवानके जन्म कल्याणकका उच्छवथा और तीर्थ करके जन्म होतेहो जगतका अज्ञान अंधकार दूरहोताहै और जीव स्वर्ग मोक्षके मार्ग रत्नत्रय धर्म मे प्रवर्त्ततेहैं इसी कारणसे जैन कुलमेंसे अज्ञान अंधकारके नष्टकरने और सद्धर्मके वृद्धि करनेको विद्यालयकी नाम लगानेका मुहूर्त इस दिवसको किया॥ सेठ चांदमलजी सोगाणीकी सहायतासे एक विज्ञापन दिनमें दिया और रात्रिको ८ वजेसे सभा एकत्र हुई॥ जैपुरके प्रसिद्ध पंडित लाला गुलाबरायजी साहबके प्रस्ताव और नसीराबादके सेठ पंनालालजी साहबकी अनुमोदनासे और सभाकी सर्व सम्मतिसे सेठ उग्रसेनजी साहब रईस और आनरेरी मजिष्ट्रेट सहारनपुरने सभापतिका आसन ग्रहण किया और सेठ दौलतरामजी साहब मुन्तजिम सायरात राज झालावाड और सेठ चांदमलजी सोगाणी मुन्तजिम सायरात राज जैपुर उप सभापतिथे॥ सभामें पंडित गुलाबरायजी जैपुर पंडित लालजीमलजी सहारनपुर पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद पंडित बलदेवदासजी इंदोर, पंडित कस्तूरचंदजी मंदसोर, पंडित नंदरामजी आगरा, पंडित प्यारेलालजी अलीगढ, और राय बहादुर सेठ मूलचंद्रजी म्यूनीसीपेल कामिश्नर आनरेरी मजिष्ट्रेट अजमेर सेठ चुन्नीलालजी, सेठ हुकमचंदजी इंदोर सेठ अमृतलालजी खुरजा, परतापगढ और रतलाम वाले सेठ आदि अनेक सभ्यजन विद्यमानथे॥ सेठ

दौलतरामजी साहबने मंगलाचरण कर जैन वियाकी आवश्यकता दिखातेहुये सभा प्रारंभकरी और सभापतकी आज्ञासे बाबू बैजनाथजी अजमेर निवासीने एक व्याख्यान "इस समय जैनीयोंमें विया वृद्धि करनेकी आवश्यकता" परदिया जिसमे उन्होने विया वृद्धि करना लाभकारी और शक्यानुष्ठान सिद्ध किया और विया वृद्धिके बाह्य निमित्त कारण पुस्तक अध्यापक आदि सामग्री मिलानेकी अत्यंत आवश्यकता दिखाई और यह वर्णन किया कि यदि एक जैन वियालय भंडार नियत होजाय और सर्व भाई अपने २ वित्तानुसार सहायता करें तो जैनियोंमें बहुत शीघ्र विया वृद्धि होजायगी और वियाके साथ २ जाति और धर्मकी उन्नति होगी॥

इस व्याख्यानकी पुष्टता पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद वालोंने और पंडित बलदेवदासजी इंदोर वालोंनेकी और इसके पश्चात एक थाल सभाके बीचमें रखागया और भाईयोंसे प्रार्थनाकी कि जो भाई जैन विया वृद्धिकर अपने धर्म और जातिकी उन्नति करनेकी इच्छा करतेहैं वे अपने निज घरू खरचमें से अपनी प्रसन्नता पूर्वक रोकडी दाम जैन वियालय भंडारमे जमा करावें॥ सभा सदोंके चित्तपर व्याख्यानका बडा असर हुआ और विया पढानेकी सबको रुचि हुई॥ पंडित चुन्नीलालजीने रु: ५) रोकडी सबसे पहले भंडारमें जमा कराये और एक रसीद जाबतेकी नंबरी छपीहुई किताबमेसे उनको देदी॥ इसके पीछे और २ भाईयानेभी अपने २ उछाहसे रुपया जमा कराया किउसी समय रोकडी रु: ३८०) तीनसौ अस्सी जमा होगये॥ रात बहुत आगईथी इस कारण सभापतिने आज्ञा दीनी कि

भंडार दूसरे दिन खुला रहे और जिन भाईयोंकी इच्छाहोवे जमा करादें और फिर जैकारा बोलकर सभा बिसर्जन हुई॥ सभापतिकी आज्ञानुसार भंडार चौथ और पंचमीको खुलारहा और जैनी भाई रुपया जमा करतेरहे॥ सेठ चांदमलजी सोगार्णीने रुः १०१) रोकडी जमा कराये और लाला नेमदासजी वकीलने सहारनपुर वालोंकी तरफसे एक रुक्का रुः २७६०) का लिखकर दिया जिस में रुः २५००) सेठ उग्रसेनजीके और रुः २०५) उनके खुदकेथे वायदा किया कि यह सब रुपया सहारनपुरसे नकद भेजदिया जायगा॥

इन सभ्यपुरुषोंकी उदारता और परोपकारणी बुद्धि अत्यंत प्रसंसा जोग्यहै और हमको पूर्ण आशाहोतीहै कि जब एसे २ धर्मज्ञ धनवान परोपकारी पुरुष हमारे संघ में विद्यमानहैं तो अब जैन धर्म और जैन विद्याकी उन्नति बहुत सीघ्र ही निःसंदेह होगी॥ हम सुदी ६ को अजमेर आगये और यहांपर सिंघी घनस्यामदासजी साहब ओसवाल देरागाजीखां वालोंने रुः १०) भंडारमें जमा कराये और रसीद नंबर ७०९ उनको देदीनी॥ यहांतक का जोड लगानेसे कुल रुपया रोकडी १४८६।) चौदहसै छियासी चारआने हुये और एक रुक्का सहारनपुर वालोंका रुः २७६०) काहै जिसमेंसे हुंडी १ बंबईकी रुः १४९०) की अजमेरके मौतबिर सराफकी बाजार भाव खरीदकर भंडारमें जमा रखीहै॥ व्याज शिरुहुवा सहारनपुरका रुपया आनेसे उसकीभी हुंडी खरीदी जायगी और व्याज शिरुहोगा॥ इस रुपयेका व्याज विद्या वृद्धि करनेमें अभीसैं जिस प्रकार लगाया जायगा उसका बयान आगें लिखेंगे॥

इस स्थानपर हम यहभी लिखना उचित समझतेहैं कि जिन २ भाईयोंने पहले चिट्ठा लिखदीनाहै अथवा विवाहादि कार्योमे नकद रुपया जैन विद्यालयके निमित्त अलग निकालदीनाहै वे अब सीघ्रही अपना २ रुपया भंडारमें जमा करादें तो उसकाभी व्याज विद्या वृद्धिके काममें आवे और उनके सिरसे कर्ज उतरे॥ और सब भाईयोंसे प्रार्थनाहै कि वे अपने २ वित्तानुसार रुपया जमा कराकर जैन विद्यालय भंडारकी सहायता करैं जिससे यह भंडार सीघ्र वृद्धिको प्राप्ति होकर अपना कामकरैं॥ अब रुपया एकत्रकर भंडारकी वृद्धि करनेंमें बिलंब करना जोग्य नही है जितनी जलदी रुपया जमा होगा उतनी जलदी विद्यालय का काम चलेगा॥

भंडारकी रक्षा निमित सरकारमें रजिष्टरी होना बहुत जरूरहै और यह रजिष्टरी सर्व सम्मतिसे होनी चाहिये कि जिससे इस भंडारका रुपया हमेशह बना रहै और कोई उसे बिगाड नसके वा किसी प्रकारका विघ्न आपत्य इस पर न आवें और इसके अधिकारी ईमानदारीसे काम करतेरहैं॥ इस लियें बाबू रतनचंदजी वकील इलाहाबाद बाबू प्यारेलालजी बेरिष्टर मेरठ बाबू रंगलालजी बेरिष्टर दहली लाला सूरजभानजी वकील देवबंद लाला नेमदासजी वकील सहारनपुर लाला मूलचंदजी वकील मथरा आदि सर्व जैनी वकील और सरकारी अहलकारोंसे प्रार्थनाहै कि वे इसको अपना घरू काम जानकर कानूनके माफिक बहुत उमदा मसौदा बनाकर आपसमें राय मिलालें और बहुत जल्द रजिष्टरी करादें जिससे सर्व लोगोको बिस्वास होजाय कि यह रकम बिगडने नही पावेगी॥

चैत सुदी ४ की रातको मेलेमें सेठ उग्रसेनजीने बैठकर भंडारकी कार्याधिकारणी सभा नियत करने के वास्ते सर्व प्रधान पुरुषोंको बुलायाथा परंतु उस रात नाटकथा और रात बहुत गईथी इस कारण पूरा बंदोवस्त नही होसका और दूसरे दिन उच्छबथा और लोगोको चलनेकी फिक्र पडी लेकिन सभा नियत होना बहुत जरूरथा सो सेठ चांदमलजी सोगाणीके डेरे बैठकर यह सभा नियत करलीनीहै सो भंडारका सर्व कार्य करती रहैगी॥

१ सेठ चांदमलजी सोगाणी अजमेर वाले मुन्तजिम सायरात राज जैपुर, प्रधान॥

२ बाबू बैजनाथ क्लारक आडिट आफिस, मंत्री॥

३ लाला छोगालाल अजमेरा साहूकार, कोषाध्यक्ष॥

४ लाला मोहनलालजी डाकलिया बजाज॥

५ बाबू नांदमलजी फारेष्टरेनजर॥

६ बाबू लखमीचंदजी क्लारक ट्राफिक आफिस॥

७ लाला गोपालदासजी गुमास्ता रायबहादुर सेठ मूलचंदजी॥

८ लाला सूआलालजी सोगाणी दुकानदार किनारी गोटा॥

९ लाला कनकमलजी गिधिया आडतिया॥

१० लाला भोलीलालजी सेठी शिरश्तेदार अदालत दीवानी राज जैपुर॥

११ लाला रतनलालजी मुनीम सेठ मनीरामजी लखमीचंद मथरा

१२ पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद॥

१३ लाला प्यारेलालजी जोहरी नसीराबाद॥

१४ लाला घासीरामजी पेचवाला नयानगर॥

१५ लाला धन्नालालजी पाटनी

सेक्रेटरी जैन सभा और औषधालय केकडी॥

१६ लाला क्षेमराजजी पाटनी मुनीम सेठ हरसुखराय अमोलक चंद केकडी॥

१७ लाला सूरजमलजी गिंधि या साहूकार बीर ये सभासदहैं॥

हालमें कमेटीके ये मेम्बर चुन लियेहैं और न्यूनाधिक करनेका इखतियारहै॥ जो भाई स्वधर्माभि मानी अपने चित्तके हुलाससे भंडार की कमेटीमे शामिल होनाचाहैं वे कृपाकर अपना नाम ओहदा और ठिकाना लिखकर हमारे पास भेजदें उनकी सम्मतिभी पत्रद्वारा मिलाली जायगी॥

जैन विद्यालय नियत करने और भंडारकी वृद्धि करनेमें सर्व भाईयों को उचितहै कि कमेटीकी सहाव ता करें यह जिन धर्म प्रभावना का कामहै और इसमें प्रमाद और आलस्य करना जोग्य नहीहै॥

चिट्ठीयोंका संक्षेप समाचार

जनाब लाला छोगालालजी साहब

जैनप्रभाकरमें जो मजमून ला ला रतनचंदजी साहबने बनाम स मरसी तहरीर कियाहै उस को पढ कर अजहद आनंदहुआ॥ बेशक आजकल हमारा धरम वगैर विद्या के चौड़ेमें लुटरहाहै यह अविद्याही का बाइसहै कि हमारे उस कामको कि जिसके वसीलेसै हमारे धर्म और जातिकी तरक्कीहो और हमारे संता नके धर्म और सुखकी वृद्धिके लि यें एक कल्पवृक्षका पौदा लगजावे बिलकुल तवजह नकरतेहै और धर्मकी बाहरी सोभामें हजारों रूपिये लगाते चलेजातेहै॥ भाई यो वगैर विद्याके आदमी पशु स मानहै॥ विद्याके प्रभावसै धर्मसै वाकिफहोकर मोक्षमारगकी प्राप्ति होतीहै॥ और इसका इन्तजाम करना कुछ मुशकिलनहीहै भरथ क्षेत्रमे दसलाखजैनीहै अगर फी

घर एक २ रुपया दें तो दसलाख रुपया होजाय कि जिसके सूदसे एक कालेज मय चंद शास्त्रोंके नखषी चलसकाहे जिससे धर्मकी बडी तरक्की हो ॥ भाईयों जहांकत होसके इसनेक काम करनेमें देर मतकरो ॥

यहां चैत सुदी १० कोरथ जात्रा काभेला हुआ तीन दिनकत पूजा नृत्यगान बाजित्रसे बड़ा उच्छव रहा ॥

रामलाल छावनी अंबाला

आपके पत्र मथुरा निवासी जैनियोंके हृदयमें एसा उद्योत किया है कि यहांपर वैसाख वदी १० के दिन सभाहुई और नियत पाया कि हर मावस पूनोंको सभा हुआकरै आपका पत्र सच्चा जैन प्रभाकरहे ॥

घासीराम मथुरा

नासिकमें ओसवाल हितकारणी सभाका जलसा अच्छा हुआ करीब ६०० सभ्य पुरुष एकत्र हुयेथे ॥ विवाहादी कार्योंमें खर्च कमलगानेका और विद्या वृद्धि करनेका कुछ प्रबंध हुआहैं ॥

॥ विज्ञापन ॥

विदितहो कि नयेनगरके मेलेमें जैन विद्यालय भंडारमें रु: १४८६।) हुये जिसकी हुंडी खरीदलीहै और इस रकमका छः महीनेका व्याज अनुमान रु: २५) के होगा ॥ "जैन विद्यालय भंडार कार्याधिकारणी सभा" का विचार हुआहै कि इस रकममेसे रु: २१) जैन विद्याकी वृद्धिमें खर्च करैं और जोकि रु: २७६०) सहारनपुरसे लाला उग्रसेनजी नेमीदासजी के आनेवालेहैं उनका और छः महीनेमें जो कुछ ज्यादह रुपया जमा होजायगा तो उसकाभी व्याज इसीमें मिलाकर विद्या वृद्धिमें खर्च किया जायगा ॥ जिसका विज्ञापन दूसरा

हैमें॥ इस लिये यह विज्ञापन देकर सर्व भाईयोंसे प्रार्थना है कि वे अपने २ शहरकी जैन पाठशालाओंके विद्यार्थी और पंडितोंसे कहदें कि छः महीनेके अंदर जो लड़का परीक्षामें पोइल निकलेगा उसको "मानपत्र" दिया जायगा और पहले नंबरके विद्यार्थीको रु: ५) दूसरे को रु: ७) तीसरेको रु: ५) रोकड़ा इनामके मिठाई खानेको दिये जायगे॥ प्रथम परीक्षाके वास्ते रत्नकरंड श्रावकाचारके श्लोक ८० अस्सी अर्थ सहित कंठ और छव कोमदाका पंच संधि अर्थ और साधनका सहित याद होनी चाहिये और हिसाब आना पाई का जोड़ बाकी गुणाकार भागहार तक होना चाहिये लिखाई साफ और अक्षर अच्छे होने चाहिये॥ इन तीनों विषयोंमें परीक्षा कातिक सुदी १३-१४-१५ के दिन होगी॥ प्रश्नोंके छपेहये पत्र सबके पास अजमेरसे भेजे जांयगे॥ जो विद्यार्थी परीक्षा देनाचाहें वे अपनी पाठशालाके पंडितके मारफत अपना और अपने पिताका नाम उमर और जाति लिखवाकर हमारे पास जल्दी भेजदें और पढ़नेपर मिहनत करना सिखादें॥ जेठ बद २ से जो नये सिरसे इन चीजोंका पढना प्रारंभ करेंगे वे इनाम के हकदार होंगे॥ हमको भरोसा होताहै कि इस प्रकार हर छटे महीने परीक्षा होनेसे सबको निश्चय होजायगा कि किस पाठशालामें से बहुतसे विद्यार्थी अच्छी परीक्षा देतेहैं और कहांके जैनी भाई अपनी पाठशालाकी उन्नति करनेका ज्यादह उद्योग करतेहैं जहां इन दोनों बातोंकी जोग्यता होगी वहांही जैन विद्यालय नियत होनाभी संभव होगा॥

अजमेर:
वैशाख बदी ९ सं १९६८ } वैजनाथ
सेक्रेटरी जैन विद्यालय [illegible]

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभा सबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा नें

प्रकाश किया

नम्बर ५

मिती श्रावण सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिकमूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचे प्रार्थनाहै कि वे इसको संपूर्ण पढ़कर अपने पुत्रमित्रोंको पढ़नेके वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ़कर सुनावें॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संवधी नई वार्ता पत्रमें छापनेको भेजें॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालेवें

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर वालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है॥

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके उद्देशहैं ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल वार्ता मतमतांतरका झगडा इसमें नही छपैगा॥

॥ विज्ञापन ॥

सुजानगढ जैन पाठशालाके निमित्त एक जैनी पंडित महाशयकी निहायतही जरूरतहै अगर कोई महाशय इस पाठशाला पर दया करें धर्मोन्नति करना चाहें तो निम्न लिखित ठिकानेसे नाम धाम जिला आदि लिखियें॥ पाठशालामें लघु कौमुदी व्याकरण तथा हितोपदेश तथा जैन ग्रंथ रत्नकरंड श्रावकाचार जो सूत्रजीकी टीका सम्यक्त कौमुदी सिंदूर प्रकर्ण आदि पढानेहोंगे मासिक वेतन जितना वे महाशय अपनी जोग्यतानुसार चाहेंगे दिया जायगा॥ आसाहै कि दया करके कोई पंडित महाशय अवशय इस धर्मोन्नति कारक कार्यको स्वीकार करके पत्र लिखेगें॥

पत्र भेजनेका ठिकाना
धन्नालाल आसकरण वा. दिः
जैन दुर्गापुर पोः मोगलहाट
जिला रंगपुर॥

समस्त चिठ्ठी रुपया वगैरह लाला छोगालाल अजमेरा कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम भेजना चाहीये॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ५ | अजमेर श्रावण सुदी १ संबत् १९४८ | अंक २

जैन पद्धातिका बिवाह

मूंढता बडी प्रबलहै इसके फंदे मेंसे निकलना बडे बीर पुरषोंका कामहै इसलियें जब कभी कोई धीर बीर पुरुष अपने जाति कुलमें से मूंढताको मेट्टताहै अथबा उसके मेटनेका उपाय करताहै तो उस समाचारके सुननेसे हमे अत्यंत हर्ष प्राप्ति होताहै क्यों कि धर्मका मूल सम्यक दर्शनहै और सम्यक दर्शनके नाश करनेवाले तीन मूंढ ता अर्थात् देव मूंढता धर्म मूंढता और लोक मूंढताहैं॥ जबतक मनुष्यके हृदयमें मूंढता निवास करतेहैं तबतक सच्चा धर्म उस हृदयमें प्रवेश नहीं कर सक्ताहै॥ बिवाह आदि कार्योंमें मूंढता बडे प्रचंडतेजसे राज्य सासन करतेहैं कि उनके तेजके सामने बडे २ ज्ञानी और बिद्वानोके ज्ञान चक्षुमें चका चौंध आनेसे अज्ञान अंधकार आजाताहै जिससे उनको जोग्य अजोग्य दिखाई नहीं देता और वे मूंढताकी आज्ञा मान कर कुगुरु कुदेवोंकी पूजा कर सम्यक्तसे

भृष्टहोते और मिथ्यात्वका सेवन करने लगजातेहैं॥ बर्षोंकी मिहनत और शास्त्राभ्यास सत संगत के प्रसादसे जो तत्वरुची और सम्यक श्रद्धान लाभ हुआथा वह सब क्षण मात्रमें लोक रीत पूरा करनेमें नष्ट करतेहैं जिसका फिर लाभ होना अत्यंत दुर्लभ होजाता है॥ इस लिये अपने धर्मकी रक्षा निमित्त मूढता कर उत्पन्न हुई ऐसे कुगुरु कुदेवोंके पूजने और भेडी चालवत् कुमार्गमें चलनेकी खोटी रीति रिवाजके मेटनेमें यथा अवसर सर्व भाईयोंको पुरुपार्थ करना उचितहै॥

हमको यह समाचार लिखने से अत्यंत आनंद होताहै कि राय वहादुर श्रेष्ठि श्री मूलचंद्रजी साहिवने अपने सुपुत्र कुवर नेमीचंद्र जीके बिबाहके अबसरमें जो असाढ सुदी ६ को हुआथा मूंढताको पराजय कर अपना "बहादुर" पद सार्थिक किया॥ अर्थात् उन्होंने इस बिबाहमें नवगृह आदि कुदेवोंकी पूजनादिक्रिया जो ब्राह्मण अपनी बिबाह पद्धतिसे करातेहैं नहीं होनेदी परंतु बिबाहकी सब क्रिया प्राचीन जैन धर्मकी रीतके अनुसार कराई जिसका संक्षेप वृत्तांत लिखतेहैं और आशा करते हैं कि और भी सर्व जैनी भाई इसी रीतसे बिबाह करावेंगे॥

प्रथमही बिन्दायक के दिन शुभ लग्नमें वर कन्या अपने २ गृहसे मंगल स्नान कर पवित्र नवीन वस्त्राभूषण पहर गीत बाजित्र सहित जिन मंदिरजीमें गये और वहां पवित्र अष्ट द्रव्यसे जिनेंद्रके आगें पंचपरमेष्ठी और चत्तारि मंगलोत्तमशरणके यंत्रका पूजन विधान सहित किया और उस यंत्रराजको बडे उच्छबसे अपनी हवेली लाकर एक उत्तम स्थानमें बिराज मान किया और नित्य प्रति

उसकी पूजा करतेरहे ॥ तदनंतर समस्त पंचोंके सामने कंगन डोरा मंत्र सहित बांधागया ॥ बिबाहके पहले जो बिंदोरीकी सवारी निकलतीहै वह दिनमेंही निकाली गईथीं और तोरणके स्पर्श करनेको बरात की निकासी भी दिनमें हुईथी रात्रि में अनेक मशालें और पलीतोंकी रोशनी और आतिश बाजीसे महा हिंसा होतीहै और फिजूल खर्ची भी होतीहै सो यह कुरीति दूरकरी॥ दिनकी निकासीसे सोभा विशेष हुई जिससे सर्व जनोंको अत्यंत आनंद हुआ ॥

बिबाहके दिन मंडपमें वेदी तीन कटनी सहित रचीगईथी उस पर प्रथम कटनीमें पूर्वोक्त कन्याका लाया हुआ यंत्रराज और दूसरीमें द्वादशांग शास्त्र और तीसरीमे चोसठ ऋद्धि और अष्ठ मंगल द्रव्य आदि बिराज मान कियेथे ॥ प्रथम यंत्र राजका पूजन अष्ठद्रव्यसे पूर्वोक्त प्रकार कराकर जयमाल पढी और नियतलग्नमें बर कन्याका पाणिगृहण विध पूर्वक कराया गया और तिसके पीछैं बिघ्न बिनाशार्थ सुगंध द्रव्यसे मंत्र पढकर अग्नि कुंडमें आहुति दीनी गईथीं॥ इसके पीछैं, यंत्र राजका पूर्णार्घ उतार कर बर कन्याने पाणिगृहण कियेहुये उक्त वेदीकी सात परिक्रमा दीनी और बिबाहकी क्रिया संपूर्ण हुई॥ पश्चात् सर्व सभानें बर और जाया (धर्नी धिरानी) को आशीर्वाद दिया कि तुम जयकुमार सुलोचनाके समान गृहस्त धर्म साधन करते चिरंजीव रहो इसका मंत्र पढ असीसके पुष्य उनके ऊपर बरसाये और बाजे बजनेलगे॥

इस बिबाहकी सर्व क्रिया बिबाहकी बिधिके वेत्ता पंडितजी श्री बापूजी साहब जैनी ब्राह्मण रतलाम निवासी तथा पंडितजी श्री राम चंद्रजी अध्यापक जैन पाठ

शाळा जैपुर निवासीने कीथी और यहांके तामडायत ब्राह्मणोंको जो यहांके श्रावकोंके बिबाह करातेहै यह सब क्रिया भले प्रकारसे दिखा दीनीथी ता कि वेइसी रीतसे आ इंदे श्रावकोंके बिबाह कराया करैं॥ जिस समय उक्त पंडितजी केसरि या पगडी दुपट्टा और धोती पहने हुये मंडपमें बेठेहुये शास्त्रोक्त मंत्र पढकर यंत्रराजकी पूजा करातेथे उस शोभाको देख और मंत्रोंकी मधुर ध्वनि सुन सबके मन प्रफु ल्लित होतेथे और सबही स्वमती परमती सभ्यजन रायवहादुरसेठ समीरमलजी सेठ सोभाग्यमलजी आदि जो उस सभामें पधारेथे वहुत हर्षाय मान हुये और आकांक्षाहुई कि बिबाहकी विधि इसी प्रकारसे होनाचाहिये॥

ब्याहकी खुशीमें सेठ मूलचंद्र जी साहबने रू: १००) जैन पाठ शाळा अंजमेर और रु: १००) जैन विद्यालय भंडारमें दिये और मंदिरोमे रुपया उपकर्ण पुस्तक चढाये॥

चिठीयोंके संक्षेप समाचार॥

हे सकल सज्जन धर्म जातिकी उन्नतिके इच्छुक महाशयों आपके चरण कमलोंमें एकमेरी अर्जहै सो इस मेरी अर्जको पढकर मुझपर क्षमाकर आलश्यको दूरकर जाति धर्म्मोंन्नति करनेमें तनमन धनसे यत्न कीजिये॥

मेरे परिणाम हमेशाहसे अखबार पढनेमें अधिक रहतेहैं अवभी १५ अखबार मगाताहुं इनके पढनेसे मालूम होताहै कि अन्य२ जातियों के लोग केसे उदारचित्तहै उनके उदार चित्तकी प्रसंसा हरएक पत्रमें पांच सात जगह देखनेमें आतीहै आज फलाने साहबने अपनी जा तिके लडकोंके पठनार्थ एक लाख रुपये दिये फलाने महाशयने अस

पतालको दसहजार अमुक महाशय ने वीस हजार दान किये इत्यादि संवाद और प्रसंसा बांचनेमें आतीहै तब हमारे जैनी भाईयोंकी अबस्था और उदारताकी तरफ दृष्टिजातीहै और आकांक्षा होतीहै कि उनकी प्रसंसा और उदारताका भी कोई लेख अखबारोंमें होगा तो शिरूसे अखीरतक हरेक पत्रको ढूंड डालताहूं परंतु कोई लेख नहीं मिलता तो सिवाय रोने और पश्चातापके कुछ लाभ नहीं होता अखबार पढनेको जी नहीं चाहता॥ अगर अखबारोंमें जैनीयोंकी उदारता और जिन धर्मकी वृद्धिके समाचार लिखे आते तो बडे हर्षसे सब कार्य छोड प्रथम उसीको पढता परंतु हमारे भाईयोंमें कहांतो साप्ताहिक पत्र और कहां विद्या दान परोपकारके करनेवाले जिनकी प्रसंसा लिखीजावे॥ जैनीयोंके यद्यपि चार मासिक पत्र निकलतेहैं मगर जैसा आनंद अजमेर जैन प्रभाकर के पढनेसे होताहै वेसा किसीके पढनेसे नहीं होता कारण यह कि यह पत्र अपने जाति और धर्मकी उन्नतिमें बहुत कुछ उद्यम कररहाहै

आज दिन मेरे एक मित्र बंगाली बाबू बंगला बंगवासी सुनाने लगेतो प्रथम तो यह संवाद पढा कि "भारत धर्म महा मंडल" (वैष्णवोंकी महासभा) के स्थापित होनेसे जो एक संस्कृत कालेज खोलनेकी चर्चा पाई गई उस कालेज की सहायतामें लखनौके प्रसिद्ध मुन्शी नवल किसोरजीने एक लाख रुपये देना स्वीकार कियाहै दूसरा अलीगढके प्रसिद्ध सरसैयद अहमदखां साहिब जिन्होंने अलीगढ में मुसलमान कालेज बनायाहै और जिनकी कीर्त्ति इसी कारण देशदेशोंमें विख्यातहै अब हैदरावाद आदि रजवाडोंमें घूमकर उक्त कालेज की उन्नति करनेको चंदा करेगें तास

रा यह कि कलकत्तेके मुसलमानो से एक मस्जिदके विषयमें कुछ तकरार हुई उसके मुकदमेंके लियें लखनो आदि शहरोंके मुसलमान अपने भाईयोंके क्लेशनिवारणार्थ हजारों रुपये भेजरहेहैं ॥ चौथे विलायतमें मुसलमानी धर्म फैलानेके वास्ते मौलवी भेजनेको धडाधड चंदाकर रहेहैं इत्यादि समाचारोंके सुनने से आंसू आगये और अखबारको रखदिया तबमेरे मित्रनेपूंछा कि आंसू क्योआये मेंने उत्तर दिया कि हमारे जैनी भाईयोंकी उदारता आज तक सब मतवाले करतेथे और हम लोग उदार चित्त और परस्पर मैत्री भाव रखनेमें अबभी प्रसिद्धहैं मगर पश्चाताप इसबातकाहै कि उपरोक्त प्रकार उद्यम करने वाले हमारे जैनीयोंमें इस समय कोई नहीं दीखता और यदि कोई उद्यम करना चाहताहै तो उसको कोई सहायता नहीं देता जैसा सम्मेद सिखरजी पर चरबी बनानेके कारखानेके विषयमें जो मुकदमा हुआ था उस्के लियें चंदा करनेको कई विज्ञापन निकले मगर किसोनेभी चंदा इकट्ठा करके नहीं भेजा तथा जैन कालेजके वास्ते श्री युत स्वर्गबासी मुंशी मुकंदराजी तथा पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद निवासी तथा लाला उग्रसेनजी रईस आनरेरी मजिष्ट्रेटने जैन पत्रिका द्वार चंदा इकट्ठा करनेको अनेक विज्ञापन तथा उपदेश दिये और पंडितचुन्नीलालजी शहर शहरमेंघूमें मगर "हां साहिब यह कार्य बहुत अच्छा है कीजिये" इस वाक्यके सिवाय किसीने भी और कुछ उत्तर नहीं दिया फिर जैन महासभा स्थापित करनेके लियें सभासद बननेकी अर्जी जैनी महाशयोंको भेजी गई मगर एकभी जगहका उत्तर नहीं आया अब उसी कार्यके अर्थ जैन प्रभाकर अजमेरकी तर्फसे अर्ज कि

ये आठमहीने होगये मगर एकका भी उत्तर नहीं आया अब उसी जैन प्रभाकर नंबर २ में जैन विद्यालय भंडारके लियें चंदा करनेकी प्रार्थना जैनी महाशयोंसे कीगईहै मगर इसका उत्तर आनेकी आसा नहीं है ॥ हमारी जातिके लोग स्वधर्म जातिकी उन्नति करनेमें बडे आलसी और धन खर्चनेमें कंगाल बनगयेहैं परन्तु लौकिक कार्योंमें बडे पुर्षार्थी और विवाहादिमें ज्योनार नाचकरनेमें बडे धनवान बनतेहैं सो यह दशा बहुत सोचनीय है इसका परिपाक अच्छा नहीं मालूमहोताहै यह वृत्तांतसुन कर मेरे मित्रभी अश्रुपात बहाने लगे सो उचितहीहै सज्जनोका स्वभावही एसाहै ॥

अब मेरी प्रार्थना सर्व भाईयों से यह है कि आप आलश्यको त्याग धर्म कार्यमें कटिबंध हूजिये और जैन प्रभाकर नंबर २ को पढकर सब जगहके जैनी भाई अपने २ यहां पंचायतकरके अपनी शक्ति सारू जैन विद्यालय भंडारके लियें चिट्ठा कर नकद रुपया वसूलकर भेजदीजिये तथा नीचेलिखे नियमानुसार हमेशह देतेरहिये

१ जब कंहीं मेलाहो मेलेके चिट्ठेके साथ जैन विद्यालयका चिट्ठा भी अलग वसूल करके उसी वक्त रुपये भंडारमें भेजदें

२ जो जैनी भाई किसी मेलेमें ज्योनार करे तो फी रुपया एक आना वादोआना उक्त भंडारमें जमा करावें ॥

३ पुत्रकाजन्म वा गोदलेना पुत्र की सगाई और व्याहमें यथा शक्ति उक्त भंडारमें जमा करावें ॥

४ व्याह शादी औसर मौसरकी ज्योंनारमें घी और खांड पर कुछ मनगत लागान लगाकर देंवे

५ व्यापारी लोग अपने मालकी खरीद फरोख्त पर कुछ लागान लगा

कर सालियाना जमा करातेरहे ॥

६ सेठ साहूकार जिमीदार और सरकारी अहलकार अपनी आमदनीमेंसे फी रुपया एक पाई तथा एक पैसा जैसी जिसकी इछाहोइ जैन विद्यालय भंडारमें जमा करावें

आगें जैनी भाई अपनी आमदनीका तीसरा हिस्सा अर्थात् १००) रु: मेंसे ३३।–) ४ पाई दान करतेथे काल दोषसे फिर दसमा हिस्सा धर्म कार्यमें करनेलगे परंतु आज दिन बहुत कम करतेहैं और नियम बांधकर आमदनीमें से मुकर्रर हिस्सा धर्म कार्यमें खर्च करनेवाले तो इस समय दो चार ही होंगें हमतो सिरफ चौसठवां हिस्सा विद्या वृद्धि करनमे देनेकी पार्थना करतेहैं सो इतना देना किसी धर्म्मात्माको कठिन नहीं मालूमहोगा ॥

७ भंडारके नामसे एक गोलक अपने घरोंमें रखे और उसमें कुछ नित्य प्रति डालदिया करें और माहवारी निकालकर भंडारमें भेजदें ॥

८ जो स्त्री पुरुष व्रतोका उद्यापन करें तो मंदिरजीके भंडारमें जमा करनेके समय इस भंडारमेंभी कुछ जमा करावें ॥

इत्यादि दान धर्ममे सैंकडों तरहसे रुपया दे सक्तेहैं जिस भाई को जो रीति अच्छी और सुगम मालूमहो उस प्रकारसे अपने कष्ट कर उपार्जित धनमेंसे दान परोपकार काविभाग करें क्योंकि सोरठा दान भोग अरुनाश तीन अवस्था द्रव्य की निश्चय धन होयनाश दान भोग जो नाकरै एसा जानकर सर्व भाईयोंको उचितहै कि कृपण बुद्धि और आलस्य त्याग धर्म दान परोपकार में चित्त लगाना उचितहै ॥

आपका शुभाकांक्षीदास
पन्नालाल बा. दि. जैन
दुर्गापुर निवासी

॥ अजमेर ॥

———ooo———

हम बडे हर्षसे प्रकाश करतेहैं कि श्रीयुत पंडित लालालक्ष्मीचंद्रजी गिधीया लशकर निवासी यहां पदारेथे और बडे मंदिरजीमें सायंकाल शास्त्रजीका व्याख्यान करतेथे॥ पहले मंदिरजीमें शास्त्र श्रवण करनेको थोडे भाई आतेथे परंतु आपका शुभागमन सुनकर शास्त्रजीका व्याख्यान सुननेको हर रोज सौ आदमीयोंसे ज्यादह होजातेथे॥ पंडितजी साहबने बडी कृपा करकें नसियाजीमें सभामें कषाय चतुष्कके विषयमे दो व्याख्यान बडे ललित और सुंदरदिये ओर एक व्याख्यान श्रावक धर्म पर छोटे धडेके मंदिरमे दिया॥ मंदिरजीमें स्त्री पुरषोंकी एसी भीड हुई कि सारे मंदिरमें बैठने तकको जगह नहीं मिली॥ इस व्याख्यानका श्रोतागणोंके हृदय पर बडा प्रभाव हुआ और बहुतसे भाईयोंने अपने श्रावक धर्मका श्वरूप भली प्रकार श्रवणकरके कुप्पेका खानेका भांग तमाखू पीनेका और परस्त्री संसर्ग करनें और जूआ खेलनेका त्याग किया॥ धर्मका बडा उद्योत हुआ॥

नसियाजीमें जो व्याख्यान हुये थे उनकी शोभा और भी अधिकहै और इन सभाओमें परमती भी आयेथे मनुष्य संख्या पांचसौसे कम नहीं थी॥ बाबू विनोदीलालजी मुकरजी एम. ए. गवर्नमेंट कालेजके प्रोफेसर आदि अनेक सभ्यजनथे उक्त बाबू साहिब व्याख्यानकी लालित्यता और आत्म कल्याण हितोपदेश सुनकर अत्यंत संतुष्टायमान हुये और पंडितजीकी बहुत प्रसंसा करने लगे॥ निश्चयकर पंडितजी साहबकी वाक्यकला एसी ही अद्वितियहै दो घंटे तक एक आसन एक स्थान पर बैठे हुये मेहकी गर्जना समान मधुर श्वर करके धारा प्रवाह बोलते चले

आना और अनेक संस्कृत भाषा श्लोक और कवित स्वमत और पर मतके कहकर अपने पदार्थको दृढ कर उपदेश करना यह पूर्ण पंडिता ई इनमें ही देखनेमे आई॥ एसे विद्वानोके उपदेश सुननेसे बडा लाभ होताहै॥ हमारा रायमें एसे वक्त देशाटनकर जगह २ धर्मोपदेश देवे तो धर्मका बडा उद्योतहोवे॥

——ooo——

भाई हजारीलालजी सुलतान मलजी लिखेंहैं कि अठां मडावर में १ छोटासा कच्चा मकानमें श्रीजी विराजमानथे और १ अधूरा मंदिर बहुत अरसेसे विला मरम्मत पडा हुआथा सो भाई पूनमचंदजी का रुपया १००) और पाटणका पंचांन रुपया १००) की मददसे और भाई साहब कुंदनलालजी मोहरर तहसील पाटनकी कोशिस तायेदारकूं मीली कर नवीन मंदिरजी तैयारहो कर श्रीजीकी मिती जेठ बदी ११ सनीचरवारकूं प्रातः काल मंडल पंचकल्याणक मांड कर पूजन हुई और सब भाई जलेब सहित गीतनृत्य बाजित्र आदि उच्छवसे कलशाभिषकको एक बावडीसे जल लाये और कलशाभिषेक कर श्रीजी साढे दस बजे मंदिरजीमें विराज मान हुये॥ करीब ५०० आदमी पाटण छावनी इलाके झालावाड खानपुर रियासत कोटा वगेरहके अठेआयेथे अच्छा उच्छव हुआ॥ अठ आमनाय दोनो रही॥ और पाटणके पंचोंने मंदिरजीके चौतरफ कोट बनानेकी पानडी रु: १५०) की बणा कर मंजूर फरमा गयेहैं कोटबणा वो सो काम जारीहै॥ धर्मके प्रसादसे आनंद वर्त्तैहैं॥

——ooo——

मथराके पंचोंने रु: १००) बांदीकुईके मंदिरकी सहाइताको भेजे हैं॥

——ooo——

लाला गिरधारीलालजी वल्द

इशाकलालजी टोकरी निवासीने रुपया एक १) जैन विद्यालय भंडार में जमा करायाहै॥ हमने जो नंबर ३ में भंडारके वास्ते प्रार्थना लिखीथी उसके जवाबमे सबसे पहला रुपया इन्होने भेजा और विद्यासे अपना प्रेमसिद्ध किया इनको सभाकी तरफसे धन्यवाद दिया जाताहै और आशाहोतीहै कि और भाईभी इनका अनुकरण करेंगे॥

——००० ——

हमको यह खबर सुनकर बडा हर्षहुआहै कि मेरठके जाट लोग अपने बालकोंकी शिक्षा कि लियें अपना जातिय कालेज नियत करनेका प्रबंधकर रहेहैं और उसके खर्चके वास्ते चंदाभी जमा होताजाताहै॥ धन्यहै इनकी उत्तम बुद्धिको जो अपनी जातिकी उन्नति करनेमें सचेत हुयेहैं॥ जैनी भाईयों तुम कबतक सोते रहोगे जागो और अपने कल्याणका उपाय धर्म अर्थ कामको सिद्धि करनेवाला सत् विद्याका प्रचार सीघ्रकरनेमे उद्यम करो॥ अवसर चूके फिर पछताना पडेगा॥

——००० ——

जनाब लाला छोगालालजी साहब जे जिनेंद्र॥

जैन प्रभाकर नंबर ३ को पढकर यहांके सर्व भाईयोंको परमानंद प्राप्ति हुआ॥ हमको पूरन आशाथी कि अबके पत्रमें बहुत कुछ रुपया जमा होनेके समाचार होंगे मगर अफसोस कि हम देखतेहैं कि हमारे भाई विद्याके लियें कि जिसकी सहायतासे जैन कुलमेंसे अज्ञान अंधकार दूरहो और इस लोक परलोक संबंधी सर्व सुख संपदा कल्याणके देनेवाली दुर्गतसे बचाने वाली सद्धर्म संबंधी विद्याका प्रचारहो बिलकुल तवज्जह नहीं करतेहैं॥ धर्मके बाहरी अंगोमें वा लडकोंकी शादीमें हजारों रुपयेकी

आतिशबाजी बागबाडी छुडादेंगे मगर अफसोसकी अपनी संतान को धर्म शास्त्रके पढानेमें कि जिस के बाइस वह न्याय मार्गी बनेरहैं और कुविसनसे बचैं एकपैसाभी खर्चना नहीं चाहते॥ इसीका नती जा यह दिखाई देताहे कि जो लोग धनवान और खुशहालथे इज्जतदार समझेजातेथे और जो अच्छे २ बिबाहादि कारज करनेमे नामवरथे उन्होंके लडके धनहीन तनछीन मुख मलीन फटे कपडे पहनेहुये छोटे २ बल्क कमीने रोज गार जैसा पंखा कुली वगैरह की नोकरी की तलाश करते फिरतेहैं और बहुतसे भाई वे रोज गार दूसरोंके सहारे रहतेहैं॥ मध्यश्रेणी के लोग दिन पर दिन फजूल खर्ची करने और विद्या हीन होने तथा कुविसन सेवनेसे दलिद्री और तबाह होते चलेजातेहैं परंतु तोभी अपनी विहतरी करनेकी कोशिस नही करते बडे शोककी बातहै॥ इस लियेमें सेठ मूलचंद्रजी सेठ चंपालालजी, सेठ उग्रसेनजी आ दि प्रधान और धर्मज्ञ पुषोंसे प्रार्थ ना करताहू कि वे इस तरफको अपना पूरा २ ध्यानदें और अपनी जातिमेंसे अज्ञान और दलिद्रके दूर रखनेका उपाय जिन धर्म संबंधी विद्याका प्रचार सीघ्र करें॥ अख बारोंसे मालूम हुआ कि मुंशी नव लकिशोर साहिबने संस्कृत कालेज के वास्ते एक लाख रुपया दिया बडे अफसोसकी बातहै कि और २ जातिके लोग अपने धर्मको किस कदर तरकी देतेचले जातेहैं मगर हमारे जैनी धनवान साहूकार इस कारजमें बिलकुल ध्यान नही देते यह बात लोकमें प्रत्यक्षहै कि जो कारज धनवान प्रधान पुरुष करते हैं वैसाही सामान्यजनभी करने लगतेहैं इस लिये इस कारज अ र्थात् जिन धर्म संबंधी विद्या प्रचार

करनेमें प्रधान पुरुषोंको अग्रीहोना जोग्यहै॥

जैन विद्यालय भंडारकी रजिष्टरीका जो मसोदा आपने लिखा सो बहुत दुरुस्तहै इसके बारहमें बादमें तहरीर करूंगा॥

रामलाल और मंगलसैन,
अंबाला

॥ विज्ञापन ॥

---000---

सर्व साधर्मी भाईयोंको ज्ञातहो कि जैन प्रभाकरको मुद्रितहोते १७ महीने हुये उस अर्सेमें हमारी सामर्थ प्रमाण हम अपने धर्मके उद्योतके वास्ते परिश्रम करतेरहे और जैन प्रभाकरके मुद्रित होनेसे जो कुछ लाभ हुआ सो आप जाने हीं हैं॥ हमने विचार कियाथा कि अगर हमारे भाई सहायता देकर हमारा उछाह बढ़ावेंगे तो इस पत्रको पाक्षिक करदेगें परंतु हमारा यह मनोर्थ सिद्ध नहीं हुआ और न आगें होनेकी आशा दिखाई देतीहै॥ कारण यह कि पिछले सालका चंदा बहुतसे भाईयोंनें नहीं भेजा हिसाब करनेसे मालूम हुआ कि पिछली सालमें हमे ९०) रु: का नुकसान रहा और इस सालमें ज्यादह नुकसान होता दिखाई देवेहै॥ इस लियें लिखाजाताहै कि सर्व भाई अपना २ चंदा संवत् १९४७ तथा १९४८ का सीघ्र भेजदें इस थोडे लिखेको बहुत कर समझलेना और रूपया भेजनेमें ढील नहीं करना हालमें रु: २५) माहवारी खर्च पडतेंहैं॥

भूलसंसोधन॥

---000---

हमने नंबर ३ जैन प्रभाकर पृष्ठ ६ में जो हर्षके समाचार लिखेंहैं उसमें कारण बसतः भूलहोगईहै सो पाठक महाशय इस तरह पढना हमने लिखाहै कि एक जिन मंदिर जसरा[illegible]रमें इन्होने बनवाया

है उसकी प्रतिष्ठा जल्दी होयगी सो वह मंदिर उन अकेलोने नहीं बनवायाहै सब पंचोंने बनायाहै अब उसकी बडे आनंदके साथ प्रतिष्ठाभी होगई आदमी ५००) के लगभग आये॥

और सुजानगढ जैन पाठशाला भंडारके निमित्त ।-) सैंकडे कलकत्तेकी कोठीसे देना स्वीकार कियाहै सो प्रथम तो उन्होने स्वीकार नहीं किया सबकी सलाहसे यह कार्यहोगा दूसरे सैंकडेकी जगह हर चालानीमें जो मौसलसे मालभेजतेहैं उसके ऊपर ।-)। =)॥ लिखतेथे सो जैन पाठसाला सुजानगढमें देनेका विचारही कियाहै चलानीमें सैंकडेका कुछ ज्ञान नहीं किसीमें हजार किसीमें दो हजार का मालजाताहै मगर एक चलानीमें फकत ।-)। =)॥ लिखतेहैं॥

ऊपर लिखी भूल संसारमें हम अपने संवाद दाताके लिखे माफिक लिखतेहैं हमारी प्रार्थनाहै कि यह की गलतीके अपराधको जसरा सरके पंच कृपाकर क्षमा करेंगे॥

समाचार भेजनेवालोंको उचित है कि बहुत होशयारीसे निश्चय करके ठीक २ समाचार भेजे जिससे गलती नहीं होनेपावे॥

॥ जैन विद्यालय भंडार ॥

जेठ व असाढ सं १९४८ पहिले आमद १४९०।) बैसाख सुदी १५ तक

१) लाला गिरधारीलालजी सराफ टेकरी जि: मेरठ

१००) राय बहादुर सेठ मूलचंद्रजी अजमेर वालोंके पुत्रके व्याहकी खुशीके दिये

१५९१।) जोड असाढ सुदी १५तक

॥ मूलप्राप्ति ॥

१) श्री पंचान कोट १) धन्नालालजी सिंघी १) सेठ तिलोकचंदजी हुकमचंदजी इंदोर १) हुलासरायजी चुन्नीलालजी १) श्रीपंचान

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासंबंधी मासिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा ने

प्रकाश किया

नम्बर ६

मिती भादौं सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

सेठ चानमल मनेजर के विकोरिया प्रेस अजमेर में छपा

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ६ } अजमेर भाद्रवा सुदी १ संबत् १९४८ { अंक २

मंदिर प्रतिष्ठा बादशाहपुर जिला गुरगांव

श्रीयुत सम्पादक जैन प्रभाकर अजमेर महाशय॥ कृपाकर नीचे लिखे लेखको निज अमूल्य पत्रमें स्थानदेकर कृतार्थ कीजिये॥

जिला गुरगांवमें एक बादशाह पुरनाम स्थानहै जिसका फर्रुख नगरसे १० कोशका अंतरहै॥ यहां सात वर्षसे अधिकहुये जब एक नवीन जैन मंदिर तैयार हुआथा परंतु समया धीन लोगोंके प्रमाद कर अबतक उसमें भगवानकी प्रतिमाजी स्थापन नहीं हुईथी॥ मिती जेष्ट शुक्ल १० संबत् १९४८ को श्रीयुत पंडित जीयालालजी चौधरी फर्रुख नगर निवासीका अकस्मात बादशाह पुरमें आगमन हुआ और उक्त महाशयके पवित्र उपदेश द्वारा बादशाह पुरके सकल संघ श्रावक समुदायनें तुष्ट मान होकर यह प्रार्थना करी कि यदि आप खुदही आनकर विधान पूर्वक प्रतिमाजीकी स्थापना करादो तो हम जिस दिनका आप मुहूर्त्तदेवें

उसी दिन करनेको प्रसन्नहैं, इस पर उक्त पंडितजीने अपना पधारना स्वीकार असाढ शुक्ल १२ रविवारका दिन नियत कर दिया॥ असाढ शुक्ल ७ को बादशाह पुरसे एक श्रावक सवारी लेकर उक्त पंडितजीको बुलाने आया तब उक्त महाशयने बादशाह पुरमें पहुंचकर धर्म्मोपदेशकादेना और अन्य प्रकारकी तैयारीका प्रारंभ करदिया॥ बादशाह पुरके जैनीयोंमें कालदोषकर जुदे २ तीन थोक होरहेथे और अन्यमतानुयाई मनुष्यभी जिनधर्मके द्वेषीहीथे परंतु पंडितजी महाशयका एसा मिष्टवचन और ललित शब्दोंसे भरा उत्तम उपदेश हुआ जो जैनीयोंमे तो एकता होगई और अन्यमती लोग तनमनसे सहायकबने॥

नवीन मंदिरजीके ही चौकमें सभामंडप रचागया समव सरणका मंडल बनाया गयाथा पूजन पाठ प्रतिष्ठा विधान बडे आनंदसे हुआ॥ शास्त्रजीकी सभामें धर्मोपदेश सुननेको जैनी लोगोके अतिरिक्त ब्राह्मण वैश्नव सुनार अहीर जाट आदिक अन्य मतावलंबी मनुष्य भी अनेक एकत्र होतेथे॥ शास्त्रोपदेशक वा विधान कर्त्ता श्रीयुतपंडित जीथालालजी चौधरीके अतिरिक्त और कोई नहीं था संपूर्ण कार्यके कर्त्ता उक्त महाशय हीथे॥ असाढ शुक्ल १२ रविवारको प्रातसमयके नौबजे पीछे श्रीभगवानकी प्रतिमाजी पुराने मंदिरजीसे स्वर्णमई पालकीमें बिराजमान करके नगरके छोटे बडे संपूर्ण गली कूंचों बाजारोंमे घुमा कर दिनके २॥ बजे नवीन मंदिरजीकी नियत वेदीमें पधराई गई बाजारमें पालकीके आगें रिवाडीके श्रावक गीतनृत्य करते चले जारहेथे नौबत नक्कारा छडी निशान गुलाल वाडा ताशा मरफा आदिकी मनोहर शोभाथी॥ लाला ज्वा

लाप्रसादजी वैश्नव जेलदार और चौधरी ठाकुर दासजी आलानंबर दार बादशाह पुरके सवारीके संग थे॥ लाला ज्वाला प्रसादजीने अप ने स्थानके निकट पालकी पहुंचने पर भेटचढाई जिससे श्रावक संघ को अत्यंत हर्ष हुआ॥

यह मेला निर्विघ्न पूर्ण हुआ॥ ग्रामांतरके जो जैनीभाई आयेथे उनको मिष्टान्नका भोजन और बाद शाह पुरके ब्राह्मणोको घर पीछे आ धसेर मिष्टान्न लडडू दिये गयेथे

पूर्ण माशीके दिवस जब नंदी श्वरद्वीपके अकीर्त्तम चैत्यालयोकी पूजाका पाठ पूर्ण हुआ उक्त पंडित जीने बादशाह पुरके सकल संघ श्रा वक समुदाय स्त्री पुरुषसे अपनी भेट मांगी तब वे द्रव्यद्वारा उतारू हुये परंतु पंडितजीने कहा कि हमा री भेट द्रव्यकी नहीं है तुम्हारे नग रमें सकल संघ भगवानके दर्शन करके भोजन नहीं करते जलछांण कर नहीं पीते रात्रि भोजन नहीं छोडते सो ये दूषणत्यागदो यही हमारी भेटहै और इससे विशेश जो और कुछ त्याग आंखडी करो तो अत्यंत खुशीकी बातहै यह सुनकर सर्व जनोको अत्यंत आनंद हुआ और सर्वही लघुदीर्घ स्त्री पुरुषने नि जशक्ति समान व्रतनियम अंगीकार किये॥ और प्रतिघर दो आना महीना नवीन जैन मंदिरकी रोज २ की नित्य नियमकी पूजनके लिये देना स्वी कार कर हस्ताक्षर करदिये जि ससे एक मासका अगाऊ वसूलभी होगया॥ इस मेलेमें ब्राह्मण वैश्न वोने जोजो सहायता जैनी लोगों कीकरी उसका हम सच्चेमनसे धन्य वाद करतेहैं और परम ज्योति पर मात्मासे उनका भला चाहतेहैं॥ इस मेलेमें आनंद मंगल रहे और कोई विघ्न नहीं हुआ॥ दर्शकोंकी शोभा और संख्या अपारथी॥

उक्त पंडितजीके उपदेशसे " जै

न विश्व विद्यालय" की बात चली और एक पाठशाला जैनी लोगोंके बालकोंके पढानेके लियें नियत हुई॥ आपका अमूल्द मासिक पत्र भी वहांलेना स्वीकार हुआहै कृपा कर अवश्य भेजतेरहना और यह समाचार धर्म संबंधी समझकर मुद्रित करदेना

भवदीय कृपाकांक्षी
ध. रा. कार्य. सं. जै. प्र
फर्रुखनगर

जैन पाठशाला खुरई

श्री मानभाई छोगालालजी॥ यहां पर जो जैन पाठशाला फागुन वदी ३ से स्थापित हुईथी अभीतक उसके खर्चका कुछ प्रबंध नहीं हुआ था॥ अब मिती असाढ सुदी ७ को यहां एक सभा हुईथी जिसमें खुरई के सर्व जैनी परवार भाई तथा देहात खिमलासा इटावा बरौदिया डुंगाहा सागर इत्यादिके परवार जैनी भाई एकत्र हुयेथे और सबने जैन धर्म संबंधी विद्याके अध्ययन करने की आवश्यकता समझी और निम्न लिखित कार्य सभामें कियेगये॥

१ खुरई जैन पाठशाला संबंधी एक सभा स्थापितकी गई और धर्म्मामृतवर्द्धनी इस सभाका नाम रखागया जैन धर्म विद्या तथा जैनियोंकी उन्नति करना इस सभाका उद्देशहै

२ इस सभामें ३१ सभासद नियत कियेगयेहैं जिनकेनाम जुदे फहरिस्तमें लिखेहैं उनमेंसे पंडित शांतिलालजी सभा पति २ पंडितराम लालजी उप सभा पति ३ सेठ मोहनलालजी कार्य्याध्यक्ष ४ सिंघई मोहनलालजी उपकार्याध्यक्ष ५ चौधरी लीलाधरजी कोषाधीश ६ जैयारामलीलाधर भाईजी पुस्तकाधीश ७ मुंड नंदलालजी सभा रक्षकहैं॥

३ यह सभा पाक्षिक तथा मा

सिक तथा तृतिय मासमें एकत्र हुआ करेगी ॥

१ अंतरंग सभा १५ दिनमें हुआ करेगा और इसमे बहुधा इसी नगरके सभासद उपस्थित हुआ करेंगें और बालकोंकी परीक्षा हुआ करेगी ॥

२ मध्य सभा यह एक महीनेमें एकत्रहोगा और इसमें पाठशाला की दशापर बिचार तथा धर्म व्याख्यान हुआ करेंगे

३ बृहत् सभा यह तीन मासमें एकत्र होगी इसमें पाठशालाकी परीक्षा तथा रुपयोके व्याजकी वसूलात तथा नयेकार्यका चिंतवन और धर्म व्याख्यान हुआ करेंगें ॥

४ पाठशालाके खर्चके लियें सम्मति हुई कि सर्व भाईयोंसे रुपया इकठा कियाजावे और उसके व्याजसे पाठशालाका मासिक खर्च कियाजावे परंतु कई कारणोंसे कुल रुपया जमा नहीं होसका इस लियें यह विचार निश्चय किया गया कि ५१) तक जो साहिब देवगे वह रुपया उन्होके पास रहेगा और ॥) सेंकडे से व्याज लिया जावेगा और जो रु: ५१) से कमदेंगे उनसे नगद रुपया लिया जावेगा और उस रुपयेका व्याज सभा उतपन्नकरेगी ॥

५ दूसरे दिन सभा एकत्र हुई और रुपया व्याजू तथा नगद सब भाईयोंने अपने २ नामपर लिखे जिसकी वसली इत्यादिके नियम आगामी सभामें बिचारे जांवेगें

६ यहांके सर्व जैनी भाईयोंने विवाहमे ५) सेंकडा टीकेकी रकम पर तथा गल्लेकी बिकरी पर –)॥ सेकडा तथा और कुल व्यापारों पर –) सेकडा जैन पाठशाला खुर्ईको देना स्वीकार कियाहै

७ विद्यार्थीयोंकी परीक्षा पंडित शांतीलालजी मुंगावली तथा पंडितरामलालजी सिमलासा वालोंने

की और इस शालामें ४५ लडके पढतेहैं और पंडित खेमचंद्रजी पढा तेहैं विद्यार्थीयोंने पंचमंगल देव गुरु शास्त्रकी संस्कृत तथा भाषा पूजा, सिद्ध पूजा अकीर्त्तम जैत्याल योंकी पूजा, नंदीश्वरद्वीप पूजा, बीस तीर्थंकर पूजा, वा चौबीस ती र्थंकरोंके नाम तथा माता पिताके नाम त्रेसठ सलाका नाम सहस्त्र नाम स्वर्गनर्क वर्णन चौबीस ठाना द्रव्य संग्रह अष्टकर्मकी प्रकृते चर चा सतक, तथा दोलतरामजी कृत छः ढाला क्रियाकोष श्वाध्याप इत्यादि पढेहैं

यद्यपि इस शालाको नियत हुये ५ महीनेही हुयेहैं तोभी पंडित खेमचंद्रजीका परिश्रम प्रशंस नीयहै और आशाहै कि थोडे दि नोंमें इस परिश्रमका फल विशेष होगा

७ सभा सदोंका बिचार एक संस्कृत अध्यापक नियत करनकाहै जो सारश्वत चंद्रका कौमुदी अमर कोष इत्यादि पढावेगा इसका प्रबंध सीघ्र होगा॥

इस सभा तथा पाठशालाका इस प्राकर प्रबंध हुआहै जो ऊपर लिख चुकाहूं शेष प्रबंध आगा भा सभामें नियत होनेपर विदित कि येजांयगे आप इस शुभ समाचार को अमूल्य पत्र जैन प्रभाकर में स्थान दीजियेगाजी

द: सेठ मोहनलाल
खुरई जिला सागर

पाठसालाके खर्चके वास्ते रु: ७५००) का चिट्ठा हुआ जिसमें रु: २०००) सेठ मथरादासजी मो हनलालजीके और रु: १०००) संग ही मोहनलालजीकेहैं

पत्रमे जगह कमहोनेके सबब सर्व भाईयोंके नाम मुद्रित नहीं करसके॥ जैन प्रभाकर

श्री जैन धर्म पाठशाला और जैन पुरुषार्थ सभा इटावाका वार्षिकोच्छव

प्रियवर लाला छोगालालजी साहब, मिती असाढ सुदी १४ संवत् १९४८ चंद्रवारको श्री जैन धर्म पाठशाला वा सभाको यहां कायम किये हुये एक साल आनंद पूर्वक हर्षसे व्यतीत हुआ॥ अष्टान्हकाजी का उसी तिथी बारके महान उत्सव के साथ श्री जैन मंदिर पंसारी टोलामें सभा वा पाठसालाका वार्षिकोच्छव कियागया॥ बाबू सिताब चंद्रजी साहिब शिरोमणि लाला भवानी प्रसादजी साहिब वैद्य प्रतिशिरोमणी लाला हजारीलालजी साहिब वैद्य मंत्री लाला पन्नालालजी साहब कोषाध्यक्ष लाला जगन्नाथजी साहिब कोषाध्यक्ष जैन सभा लाला अजुध्याप्रसादजीसाहिब कार्य्याध्यक्ष जैन मंदिर लाला हुलासरायजी मूलचंद्रजी बंसीधरजी माणिकचंद्रजी हुबलालजी छोटेलालजी साहिब आदि नगरके सर्व जैनी भाई पधारेथे॥ लाला हजारीलालजी साहब नाटक नायक करहल जिला मैनपुरीभा सभामे सुशोभितथे॥ पाठसालाके समस्त विद्यार्थी भी सभामें एकत्रथे॥ आस पासके दालानोमें चिक और पर्दोंके भीतर अष्टान्हका जीके उत्सवके सबब बहुत सी स्त्रीयांभी पाठशाला और सभाकी कार रवाई देखने और सुननेके लिये हर्ष सहित बैठी हुई थी॥

प्रथम मुन्शी प्यारेलालजी साहिब मेनेजर जैन पाठसाला साविक माष्टर हबूमहाई स्कूल इटावानें मंगलाचरण पढ़कर एक मजमून सालयाना कार रवाई सभा वा पाठसालाकी वार्षिक परीक्षा की रिपोर्टको सभा सदोंके सामने

पढकर सुनाई जिसके सुननेसे सर्व भातृ गणोंको अति हर्ष हुआ कि वार्षिक परीक्षामें गत षटमासिक परीक्षासे पाठशालामें विद्याकी श्रेष्ठ उन्नतिहै और पाठकनका उद्योगभी विशेष पायागया परंतु सभासद भाईयोंकी तवज्जह सभा की ओर किसी कदर कमहै॥ बाद हू उक्त मुंशीजी साहबने उन भाईयोंके हितार्थ जो विद्याके रससे अजानहैं विद्या प्रशंसा द्वारा विद्या के गुण परमार्थिक अविनाशी सुख और प्रत्यक्ष संसारी लाभों पर एक संक्षेप मात्र पुरतासीर व्याख्यान दिया जिसके सुननेसे सभा हर्षमे मग्न हुई॥ विद्यार्थीयोंको पढनेमें और सभा स्थित सभ्यजनोंके दिलोंमें अपने पुत्र कलित्रोंको पढानेका यकायक बडा असर पेदा हो गया॥ इसके बाद जैकारा बोल कर सभा विसर्जन हुई और विद्यार्थीयोंको एक रोजकी छुट्टी दीगई॥

मुंशी प्यारेलालजी साहब पाठ सालाके विद्यार्थीयोंकी हफ्ते वार माह वारी तिमाही शिमाहा और सालियाना परीक्षा लिया करते हैं॥ पाठसालका कुल प्रबंध पंचों ने इन्हीको देरखाहै और वे बहुत खुशीसे सबकाम करतेहैं॥ सभा के दिन सभासद भाईभी सब इन्तजाम देख भाललेतेहैं और जो कुछ एब नुक्स पातेहैं कसरत राय से दुरुस्त करदेतेहैं॥

आजदिन पाठसालामें ४ कक्षा और ६० विद्यार्थीहैं

चौथा कक्षामें (जो सबसे ऊपरकीहै) ११ विद्यार्थीहैं: लघुकोमुदी सूत्रजी पंच परमेष्ठी पाठ अमर कोष सहस्रनाम भक्तामरजी रत्नकरंड श्रावकाचार और हिसाब गणित प्रभाकर पहला भाग समाप्त पढाये जातेहैं

पांचवी कक्षामें १० विद्यार्थी. मंगल पाठ नित्य नियमकी पूजा.

है॥ जैसे बकराईदके दिन मुसल मान लाखों बकरे मार कुरबानी करते और उनके मांसको भक्षण करतेहैं वेसेही आसोज सुदी नवमी दसमीके दिन वेदिक धर्मा बलेवी हिन्दू ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रभी लाखों भैंसे और बकरे देवीके सामने मार २ कर चढाते बलदान करते और उनके मांस का प्रसाद खातेहैं॥ कितनी ही जातोंके लोग जो मांस भक्षीहैं वे तो साक्षात चलते फिरते जिते बकरे भैंसेका बलदान कर देवीको चढातेहैं और कितनी ही जातोंके लोग जो वैष्णव कहलातेहैं और मांस नहीं खाते वे गोला या नारियलमें बकरेकी कल्पना करके उसे बधारतेहैं या मिट्टी चून मिट्टीके बकरे बनाकर देवीके सामने चढा देतेहैं और प्रसाद कहकर उन्हे खाजातेहैं इस आसोज सुदी ९ को लाखों जीवोंकी हत्या होतीहै इसीसे इसका नाम "पाप नवमी" सार्थिकहै॥

कितने हो अज्ञानो भोले श्रावक भी पाडपाडोसकी देखा देखीसे और कितने ही जेनाभासी वस्त्रधारी भेषी कुगुरुओंके बहकाने से सासन देवी या कुलदेवी चक्रेश्वरी पदमावती वीज्ञासनीके नामसे कि वह धर्मकी रक्षा करनेवालीहै और बेटा पोता देकर कुलकी वृद्धि करेगी और धनदेगी एसी आसा कर के इस पाप नवमीको पूजने लग गयेहैं

पाप नवमीके दिन श्रावकोकी स्त्रीया बडे हर्ष और चावसे रसोईमें घूघरी कसार का देवीका पुजापा बनातीहै उसमें कसारकीनौ पिंडी बनाकर रखतीहैं और एक दीवारके ऊपर त्रिसूलका आकार बनाकर उसके नीचे चौकपूर उस पर पट्टा बिछादेतीहैं॥ घरके बडे पुरुष पट्टेपर रोलीके सांतियेलगा

कर वीजासनी आदिका झालरा रखदेतेहैं और अग्निकी ज्वाला प्रज्वलित कर गुगल और घी चढा तेहैं नारियल बधारतेहैं और पूजा पेकी थाली पट्टेपर धरके हाथमे रोली चामल जलसे सबछोटे बडे लडकेवाले मिलकर एक साथ छींटें देतेहैं और दोनो हाथजोड २ कर बडी भक्तिसे प्रणाम करतेहैं और उनके पीछें उनकी स्त्रीयांभी उसी प्रकारसे करतीहैं॥ इस प्रकार पूजा करके कसार का प्रसाद सब खातेहैं और बहुत हर्षातेहैं॥ परंतु शोक वे अज्ञानी नहीं जानते और अगर कितनेही जानतेभीहैं परंतु जान बूझकरभी देवमूढताके मारे नहीं मानते कि उन्होने इस खुशी २ में कैसा गृहीत मिथ्यात्व पुष्टकिया मांसाहारी कुदेवोंकी पूजा करी जी वोंका घातकिया और मांसका भक्षण किया और अपनेको नर्कमें डुबोया॥ भाई और बहनों अगर आप इस पाप नवमीके श्वरूपको जान जाओगे तो फिर कभी इस पाप नवमीका पूजा नहीं करोगे॥

आपभले प्रकारसे जानतेहो कि देवीके भक्त कहतेहैं कि देवी मांस खाती और मद्य पीतीहै और यदि आपने देवीकी मूरतदेखी होयतो कहसकेहो कि वह एक हाथमे तलवार लियें दूसरेमें आद मीका कटा हुआ सिर जीभ निका ले मुंडोकी मालापहने मांस खाती और खूनपीती हुईहैं यह तो अन्य मतावलवीयोकी देवीकी मूर्त्तिहै परंतु शोक आपके कुगुरुओंने आ पके जिन मंदिरोंमेभी तलवार लियें हुये डरांवनी सूरतकी हिंसक देवीयोंकी मूर्त्ति आपकी सासनया कुलदेवीके नामसे बैठाल रखीहै सो ऐसी हिंसकदेवी तुम्हारे पूजने जोग्य कभी नहीं होसकीहै और न उनके पूजनेसे आपका कल्याण होवेगा इनके पूजनेसे तो आपको

लाखों जीवोंकी हिंसा होतीहै पूजते हैं वे परम उत्कृष्ट निर्मल जिन धर्म को लज्जा दिलातेहैं लो कहतेहैं कि देखोये दया धर्म धारी श्रावक कह लातेहैं और पाप नवमीको पूजते और अनेक जीवोकी हिंसाकरते हैं॥ इस लिये आपने यह उत्तम श्रावक कुलमें न्मज लियाहै और जिन धर्म पायाहै तो यह महान हिंसाका कारण जो पाप नवमी तिसके पूजनेका तुरंत त्यागकरो॥ जो काम घरका बडा करताहै उस की देखादेखी उसकी संनतानके सर्व लोग करतेहैं इस लिये जो कोई घरका बडा अपने कुलमेंसे मिथ्यात्व और हिंसाकी प्रवृत्तिको तोडदेताहै वह अपने सर्व संतान और उनके संतान और कितनीही पीढियोको मिथ्यात्व अधर्मसे बचा ताहै इस लिये हे भाईयो देरमत करो इस पाप नवमीकी पूजाको सीघ्रही अपने घरमेंसे उठादो इस महा घोर पापकाबंध होगा आप कसारकी पिंडी या बनाकर चढाते ना.रियल बधारतेहो और कसार और गिरीका प्रसाद खातेहो सो बकरों और मांसकी स्थापनाहै इस हे तुसे आप जीव हिंसक और मांस भक्षी बनातेहो और श्रावक धर्मसे भ्रष्ट होतेहो॥

वैदिक धर्मा बलम्बी जो पशु घात करतेहैं सो तो अपने शास्त्रकी आज्ञासे करतेहैं क्यो कि उनके वेदमें पशुओंको मार जग्य करना लिखाहै परंतु हे श्रावक भाईयो आपजो स्थापना पशुमारतेहो सो कोनसे शास्त्रकी आज्ञासे मारते हो॥ आपके जैन शास्त्रोमेतो जीव घातकरनेका सर्वत्र निषेध कियाहै परंतु आप हिंसाकर धर्म मानतेहो सो जिन आज्ञा विरुद्धकरनेसे महा मिथ्याती निर्दई पापी बनतेहो॥

जो जैनी श्रावकहोकरभी पाप नवमी कहिये दशहराको जिसमें

से आपका बडा धर्म और जस हो गा ॥ कीचडमें फसे हुये गाडेको कोई बडाधोरी वृषभ निकालनेको समर्थ होताहै इसी प्रकार अज्ञान और मिथ्यात्व रूपी कीचडमें फंसे हुये कुटंबरूपी गाडेको वृषभ पुरुष कहिये प्रधान पुरुषही निकालनेके समर्थहैं हीन पुरुषकी सामर्थ नहीं है जो कि साहस करके मिथ्यात्व का नाशकरै सो आप हीन पुरुष मतबनो परंतु बीर पुरुष बनो नि डर होकर इस पाप नवमीकी खो टी रीत रिवाजको अपने घरमेंसे उठादो यही हमारी बार २ आपसे प्रार्थनाहै ॥

——000——

एक चिठ्ठी देवलिया परताप गढसे भाई राटी नंदलालजी व बगसी बरदमानजीकी लिखी आई है जिसमें समंचारहै कि असाढ सुदी ५ से समोसरणजीका पूजन शिरू हुआ और असाढ सुदी १५ को पूर्ण हुआ उस दिन श्री देवाधि देव रथमें बिराजमान होकर सरे बाजार जखेव होतेहुये गीतनृत्य बाजित्र सहित बगीचेमें पधारे और वहां पूजन और कलशा भिषेकहो कर फिर उसी प्रकार गीतनृत्य बा जित्र सहित सरे बाजार होतेहुये सायंकाल मंदिरजीमें बिराजमान हुये ॥ असाढ सुदी ११ १२ १३ के दिन सभा हुई उसमें भाई कस्तूरचंदजी साहब बाकली बाल मंदसोर निवासीने अतिथ संबि भागके विशयमे व्याख्यान दिये और विद्यादानकी अति आवश्यक ता दिखाकर पाठशाला नियतकर ने और लडकोंको जिन धर्म संबं धी विद्या पढानेका अतिश्रेष्ठ उप देश दिया और डांकटर हर सहाय मलजीभी पाठसालाके बाबत पह लेसे उपदेश कर रहेथे सो इस व्याख्यानका बडा असर हुआ और सावन वदी ५ शनिवारके रोज

शामके तीनबजे सरस्वतीजी का पूजन करके पाठसालाका महूरत होगया उस समय यहांके सर्व स्त्री पुरुष एकत्र हुयथे उन सबको पाठसालाके नियत होनेसे बडा आनंद हुआ सो लिखनेमे नहीं आता

यहांसे ३ कोसपर बमानेर करके एक ग्रामहै वहांपर एक बडा प्राचीन जिन मंदिरहै प्रतिमा बहुत मनोज्ञ और अतिश्य क्षेत्रहै वहांपर भाई कस्तूरचंदजी दर्शनोको गये और उनके साथमे १०० स्त्री पुरुषभी गये वहां पूजन अभिषेकसे बडा आनंद हुआ ॥ भाई कस्तूरचंदजीके यहां पधारनेसे धर्मका बडा उद्योत हुआ सो यह समाचार अपने पत्रमें छापदेनाजी ॥

——०००——

प्रियवर, एक मजमून दानके विषयमें जो लाला सूरजभानजी साहिब वकील देवबंद जिला सहारनपुरका आपने जैन प्रभाकर पत्र नंबर ४ में मुद्रित कियाहै उसके पढनेसे श्री जैन प्रचारनी सभा जिला एटाके सर्व सभासद भाईयों को अतिआनंद प्राप्ति हुआ और कुदान देनेसे अरूचि हुई ॥ सर्व भाईयोंने वकील साहिबको अनेकानेक धन्य बाद दियेहैं और आशा है कि वे सदेव अपने ललित और मनोहर सर्व हितकारी लेखोंसे पत्रके पढने वालोको धर्मोपदेश देकर हर्षित करके जस और पुन्य उपार्जन करते रहेंगे जिससे जैन प्रभाकर पत्रका सच्चाभाव प्रगटहोगा याने अज्ञान तिमिरका नाश और सम्यक ज्ञानका प्रकाश होगा ॥

बराय महर बानी इस परचेको दरज माशिक पत्र फरमाईयेगा ॥

आपका दास बनवारीलाल

प्रेसीडेंट श्रीजैन प्रचारनी सभा

जिला एटा

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन समासबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा ने

प्रकाश किया

नम्बर ७

मिती आसोज सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

सेठ कानमल मनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेर में छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचे प्रार्थनाहै कि वे इसको अवश्य पढ़कर अपने पुत्रमित्रोंको पढ़नेके वास्ते देदेवैं और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ़ कर सुनादें॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संबधी नई वार्ता पत्रमें छापनेको भेजें॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालें॥

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर वालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है॥

---

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके उद्देशहैं ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल वार्ता मतमतांतरका झगडा इसमें नहीं छपैगा॥

॥ मूल्य प्राप्ति ॥

१) दोलतरामजी १) समीरचंदजी १) घंटामलजी सोदागर १) पारसदासजी धर्मदासजी खजानची १) बाबू मोलकरामजी १) बाबू परभूलालजी शमला १) हिगनलालजी मनसूरी १) नाथूलालजी जूनया १) मांगीलालजी खजानची टाटगढ २) बीबोदी लालजी बालचंदजी उजैन ॥=) फूलचंदजी सेठी ॥=) सैसकरणजी सेठी अजमेर १) नहारसिंघजी १) धर्मसिंघजी सुलतानपुर १) हीराचंदजी मोहनचंदजी चांदवड १) उदैचंदजी पाटणी गंगापुर १) गुलाबरायजी महरचंदजी लशकर १) मिसरीलालजी बडज्यात्या टोंक १) मनोहरलालजी मैनेजर जैन पाटशाला दहली

समस्त चिट्ठी रुपया वगेरह लाला झोंगालाल अजमेरा कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम भेजना चाहीये॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्वर ७ | अजमेर आसोज सुदी १ संवत् १९४८ | अंक २

॥ एडीटोरियल ॥

इस साल भादवाजीमें सोलह कारण दसलक्षण रत्नत्रय आदि वृत्तोंका उच्छव बडे हर्षसे हुआ और समयके अनुकूल सर्व स्त्री पुरुष बाल वृद्ध अपनी २ शक्ति प्रमाण वृतनेम आंखडी जपतप सील सं जम पूजा प्रभावना शास्त्र श्रवण आदि धर्म कार्योंमें लगेरहे॥ आ सोज सुदी १ शनिवारको सायं काल कलशा भिषेकके पश्चात् सर्व भाईयोंने उत्तम क्षमाकरी और उसी प्रकार हम अपने देश देशां तरोके सर्व भ्रातृ गणोंसे विनय पूर्वक क्षमा करातेहैं

वैसाखके पत्रमें एक विज्ञापन जैन पाठशालाओंके विद्यार्थीयोंको रत्नकरंड श्रावगाचार लघु कौमुदी और हिसाव पढानेके वास्ते दिया गयाथा और कार्तिकमें इमतिहान लेकर इनाम देनेका वाइदा किया था और लिखाथा कि जो विद्यार्थी इमतिहान देनाचाहें उनके नाम लिखकर भेजदो परंतु आजकी मि

तीतक किसी पाठशालासे नाम विद्यार्थीयोंके लिखे हुये नहीं आये इसलिये अब सर्व भाईयोंसे अर्जहै कि यदि आपकी पाठशालाके विद्यार्थी इमतिहान देनेको तैयारहो गये होंयतो उनके नाम फोरन लिखकर भेजदो ताकि प्रश्न यहां से भेजदेवें॥ विद्यार्थीयोंके नाम ज्यादहसे ज्यादह देर कातिग सुदी ५ तक हमारे पास अवश्य पहूंच जाने चाहिये न पहुचने पर हम समझेंगे कि आपकी पाठशालासे इमतिहानके वास्ते कोई विद्यार्थी तैयार नहीं हुआ॥

——०००——

दूसरा इमतिहान बैसाख सुदी १२ १३ १४ १५ सं१९४९ मे लेनेका बिचार करतेहैं सो इस इमतिहान के वास्ते कौन २ पुस्तक नियतहोने चाहियें इसमे आपकी सम्मति लिखें॥ हमारी सभाका सम्मति यहहै कि जो कातिकमें परीक्षा देचुकेंगे उनसे और जो विद्यार्थी देनाचाहैं उनसे रत्नकरंड श्रावकाचार पूर्ण लघुकौमुदी षटलिंग पूर्ण द्रव्यसंग्रह पूर्ण और हिसाब त्रैराशिक और व्याजकी फैलावटमें होना चाहिये और जो विद्यार्थी पहला इमतिहान देना चाहैं उनके वास्ते पूर्ववत्त अर्थात् बैसाख सं १९४८ के बिज्ञापनानुसार, रत्नकरंड आदि नियतरहैं॥ इसविषयमें सर्व पंडितोंकी सम्मत्तिहोना उचितहै॥

——०००——

हमारी सम्मति यह भीहै कि आजदिन बहुतसे नगरोंमें जैन पाठशाला नियत होगईहैं परंतु उनकी पढाई न्यारी २ है इसलियें सर्व पाठशालोंमें एक क्रमसे एकसी पढाई होना जोग्यहै एकसी पढाई होनेसे पढने पढाने वालोंके मनमें हिर्स और उछाह अधिकहोनेके कारण विद्याकी विशेष वृद्धिहोगी॥ सरकारी मदरसोंमे भी एकसेही

क्रमसे पढाई होतीहै॥ जैन पाठ शालाओंमे किस क्रमसे पढाई हो नी चाहिये इस विषयमें भी जैनी पंडितोंकी सम्मति होना उचित है॥ हमने एक नकसा एकसी पढाईके वास्ते तैयार कियाहै उसको और पंडितोंकी सम्मति आनेसे अगले पत्रमें लिखेंगे॥

वर्षात न होनेके कारण इस देशमें दुर्भिक्षहै॥ यह समय दान और परोपकार करनेकाहै॥ उदार चित्त जैनी श्रावगोको उचितहै कि पंचायत या कमेटी करके अपने दीन दुर्बल भाईयोंकी प्रति पालना करनेका कुछ प्रबंध अवश्य करैं और बहुतसे गरीब कंगले भूखे प्यासे अपना घरबार छोडकर मारे २ फिरतेहैं उनपर दया करके उन्हे आहार औषद वस्त्रादिभी दानकरैं हम समस्या करतेहैं कि कोई प्रधान पुरुष अग्रेश्वर होकर इस कार्यको करैं तो बडे जस और धर्मके पात्रहोंगे॥

जैन पाठसाला हांसी

महाशय, कृपाकर इस खुशखबरी को अपने जैन प्रभाकरमें जगहदें कि हांसीमें भाई न्यायमत सिंह जी साहिब मंत्रि जैन पाठसाला व भाई जीयारामजी अजुध्या प्रसादजी रुलदूमलजी रघनाथ सहायजीकी मिहनत व कोशिससे चंदा जमा होकरके जैन पाठसाला कायम हुई और मुहूरत पाठसालाका शुभ सम्वत् १९४८ मिती श्रावण बदी २ बृहस्पति बारको भाई अमन सिंहजी पट्टीदार जैनोंकी कोठीके ऊपर बडी शोभाके साथ किया गया यह मकान पाठसालाके वास्ते निहायत उमदाहै और उसी वक्त २१ लडकोंने पढनेके वास्ते अपने नाम लिखवाये और पढनेके वास्ते जतीजी मो

डमलजी साहब नियुक्त कियेगये जो बडे विद्वानहै और विद्यार्थीयों को बडे स्नेह और परिश्रमसे पढा तेहैं॥ अभी पंक्तिया नियुक्त नहीं कीगईहै जो नियुक्त होनेपर आप को लिखूंगा॥ इस वक्त पाठसाला में ३० विद्यार्थीहैं॥

आज शुभ संवत् १९४८ मिती श्रावण वदी १३ रविवारको श्री जिन मंदिरजी पंचायतीमें सभा नियुक्त हुई जिसमें ८० जैनी भाई दिगंबर आम्नाय और ढूंडीया पंथी मौजूदथे पहले सब भाईयोंको मासिक पत्र जैन प्रभाकर अजमेर सुनाया गया जिसको सुन करके सर्व भाई अत्यंत खुश हुये बादमे सभाकी कार रवाई होकर निम्न लिखित साहवान मेम्बर वा कार्या धि कारी मुकर्रर हुवे॥

मेम्बर भाई मामन चंद्रजी सोहनलालजी कटले वाले बिशन लालजी सर्राफ, रुलदूमलजी सर्राफ, जीयारामजी खजानची लेखराजजी धरनी धरवालोमेसे रुलदूमलजी वसीके नवीस बिसन लालजी पट्टीदार दलीपसिहजी पट्टी दार कार्य्या धिकारी भाई रुघ नाथ सहायजी गोबिंदराय वालो मेसे कोषाध्यक्ष भाई उमराव सिहजी भाई रणजीत सिहजी मंत्री॥ नियत हुये॥ करीब १० बजे सुबहके सभा समाप्त हुई॥ मिती श्रावण वदी १४ सं १९४८

आपका दास

उमराव सिंह मंत्री

जैन पाठसाला हांसी जिहिसार

॥जैन सभा सिमला॥

यहांके सर्व भाईयोंकी इच्छा हुई कि सभाका वार्षिकोच्छव होवे तो धर्मकी विशेष प्रभावना होवे इस वास्ते लाला उग्रसेनजी साहब और पंडित पन्नालालजीको निमंत्रणभेजा और वे कृपाकर पधा

रे॥ मिती श्रावण बदी १२ १३ को उच्छव कीया विज्ञापन जगह २ लगा दियेगये ध्वजा पताकासे सभा मंदिर वहुत सजा हुआथा आठ वजे सर्व भाई मंदिरमे पधारे और शास्त्रजीका व्याख्यान हुआ॥ और एक घंटे तक पदवीनती होते रहे॥ तीन बजे फिर शास्त्रजी स्थापन किये गये और पंडित पन्नालालजी साहबने छः बजे तक धर्म्मोपदेश दिया जिसके सुननेसे अत्यंत आनंद प्राप्ति हुआ जैसे सुगंधका लोभी भौरा फूलोंकी सुगंध लेते २ तृप्त नहीं होता अधिक २ सूंघना चाहताहै जैसेही जिन धर्मके निर्मल और कल्याण कारी उपदेशोको श्रवण करते करते श्रोतागणोको तृप्ति नहीं हुई अधिक २ धर्मामृत पीनेकी वांछा हुई॥ फिर आठ बजे सभा हुई पंडितजीके व्याख्यानका इस कदर शोहरा हुआ कि हरेक मतानुयाईके चित्तमें

श्रवण करनेकी अभिलाषा हुई आदमी इस कदर जमा हुये [कि] सभा मंदिर श्रोता गणोसे भर [गया] था धर्मोपदेश दस बजे तक हो[ता] रहा दूसरे दिनभी उसी माफि[क] कारग्वाई हुई और सर्व भाईयो[की] फोटोकी तसबीर उतारी गई॥

दो बजेसे पांचबजे तक पंडि[त] पन्नालालजीने " टौन हाल " में [...] जोर शोर खुश बयानीसे कर्त्[ता] खंनड " के विषयमे व्याख्यान [दि]या जिसका खास विज्ञापन प[...] दियाथा व्याख्यान समाप्त होने[पर] सर्व सभासे अर्ज करदियाथा जिस किसी साहबको कुछ [...] या संदेह होय तो वे कृपाकर ८ [बजे] रातको मंदिर जैन सभामें [आ]कर संदेह निवारणकरें चु[नांचे] आर्य समाजी आये और वहु[त] और लोग सुननको आये सम[ाजि]योंकी तरफसे पंडित पूर्णानं[द] ने संस्कृतमें प्रश्नोतर किये

पंडित पन्नालालजी समाधान कर तेरहे परंतु और श्रोतागण कुछ नहीं समझे इसलिये भाषामें प्रश्नो तर करनेकी प्रार्थना की जो दोनो साहिबोंने मंजूरकी बारह बजे तक शास्त्रार्थ होतारहा॥ पंडित पन्ना लालजीने जिन धर्मके पवित्र उप देश और युक्तागमसे पूर्णानंदजी को लाजवाब कर दिया तब सभा में जय २ की ध्वनि हुई जिससे सारा मंदिर गूंझ उठा॥ इसके बाद हार मोनीयमके बाजेके साथ भजन हुये और बहुतसे भाई धर्म चर्चा करतेरहे॥

अगस्त तारीख ८ और ९ को पंडितजी साहबने उसी टौन हाल में मूर्त्ती पूजा सिद्धकरने और धर्म के लक्षणोके विषयमें व्याख्यान दिये॥ सर्व सभा सदों पर जिन धर्मकी उत्कृष्टता सचाई और पवित्रताका असर डाल दियाथा आमूली धन्यबादके बाद संदेह निवारणके वास्ते अर्ज कियाथा लेकिन इन दोनो दिनोंमें किसी साहबने प्रश्न नहीं दिये और सबने यही कहा कि पंडितजी साहबका उपदेश यथार्थ और ठीकहै॥

बीचके दिनोंमें पंडितजी बि बिध विषयोंमें धर्मो पदेश देतेरहे और जिन धर्म संबंधी विद्या पढ़ने पढ़ानेमें रुचि दिलातेरहे हर सभा में इस कदर भीडहोतीथी कि बैठ नेको जगह नहीं मिलतीथी बहुत से भाई खडे २ सुनतेथे॥ सभाका वार्षिकोच्छव होने और पंडितजी के व्याख्यानोसे यहाके भाईयोंको बडा लाभ हुआ जिन श्रावक भाई योंके अवल धर्ममें रुचि नहीं थी उन्होंने सभामें धर्म श्रवण करने और शास्त्रजीका स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञाकरी मंत्री साहबने ता रीख १० की रातको लाला उग्रसे नजी आदि सर्व भाईयोंको जो बा हिरसे आयेथे धन्यबाद दिया और

पंडित पन्नालालजीने संसकृत काव्यसे आशीर्वाद दिया इस प्रकार यह वार्षिकोच्छव वडे आनंदसे पूर्ण हुआ सभा विसर्जन हुई॥ ११ तारीखको सर्व भाई अपने २ देश तशरीफ लेगये॥

प्रभूलाल मंत्री
जैन सभा सिमला

——०००——

विद्यादान उपदेश प्रकाश
जैन सभा वर्धा

इस सभाको स्थापन हुये आसोज सुदी ७ को एक वर्ष पूर्ण होगया आजतक सभा आनंदसे चली आई और अगाडी चलनेकी आशाहै॥ इस साल भादवाका उत्साह वहुत आनंदसे हुआ और इस सभाके प्रसंगसे इधरकी वहुतसी रीति भांत सुधर गई

१ खंडेल वाल श्रावक हमेशाह दिनमे खडेहोकर पूजन करतेथे हमारे बराडी लोकमें भादवामें पंचमेर सोला कारण आदि पूजा कुछ तो दिनको होतीथी और कुछ रातको सो रात्रिमें पूजा करनेका रिवाज बंद किया सब पूजा दिनको ही होना शिरू होगया॥ और बैठके पूजा करतेथे सो महाराजके समने खडे रहके पूजा करणा सरु हुआहै॥

२ भादवा सुदी १५ को हमारे बराडी श्रावक भाई भेला होकर पुण्या बाचन होताहै और जनेउ दिये जातेहैं॥ मान भद्रजीको नारियल फोडे जातेहैं और सूंठ शकर और शीरणी प्रसाद दिये जातेहैं एसा रिवाजचला आताहै उस कारण चौदशके दिन पूजन हुये बाद सभा भराई और प्रकाशकार बकारामजी रोडे सेक्रेटरी नेम चंद्रजी चवडे और एक दोजनेने शास्त्राधारसे व्याख्यान दिया और बहुतसा उपदेश दिया इस कारणसे मानभद्रजीको नारियल फोडणा

ोर मंदिरजीमें एक मेकको प्रसाद ठ शकर देणा बंद होगया यह थ्यात्वका रिवाज खोटे सो श्रा क लोक छोडते चलेहैं धर्मपर द्धा रखतेहैं ॥

३ इस सभाके वक्त विद्यादान अर्थ बराडी भाईयोंमें रु: २५) ोर दूसरे दिन सभामें खंडेल ल मंडलीमें रु: २७) भेला हुआ : ५२) की आमदनी हुई ॥ सेठ सकरणजी झाझरी सेठ चंपाला जी बडजाता सेठ मनालालजी डजाता सेठ छोगालालजी पाट सेठ चंदनमल वडजाता आदि डेलवाल मंडलीसे सभाको बहुत हायताहे उनका हम बहुत धन्य द मानतेहैं ॥

४ इस सभाने ४२) इस साल विद्यावृद्धी करनेमें खर्चकियाहे ोर जिन २ भाईयोंने वर्गणी था व्यापार परसे रुपया दियाहे नकी सहायता होनेसे आगामी वर्षमें और विद्या और धर्मकी वृद्धिहोगी प्रार्थनाहे कि सर्व भाइ सहायता देतेरहैं

चकारामपैकाजी रोडे पदमावती
पलीवाल जैन सभा बर्धा

॥ जैन सभा मथरा ॥

आसोज वदी २ को यह सभा बडी धूमधामसे एकत्र हुई लाला रतनलालजीने रत्नत्रय धर्मका व्याख्यान अनुमान तीन घंटेतक किया जिसके सुननेसे परम आनंद हुआ पश्चात् सभाके कार्याधिकारी नियत हुये

श्रीयुत श्रेष्ठी लक्ष्मणदासजी सी आई ईस आजम शहर मथुरा सभा पति ॥ लाला कन्हैयालालजी मुनीम उप सभा पति ॥ लाला मूलचंदजी वकील मंत्री ॥ लाला घासीरामजी प्रबंध कर्त्ता ॥ आशाहै कि सभाके द्वारा धर्मकी वृद्धि और सदाचारकी प्रवृत्ति होगी ॥

घासीराम मथुरा

जैन विद्यालय भंडार

—<○>—

१५९१।) असाढ सुदी १५ तक जमा

५) लाला मंगलसैनजी जिला सहारनपुर वालोंके

१०) बाबू बंसीधरजी बांदीकुई

५७॥) बम्बई जैन सभा मारफत सेठ मोहनलालजीके

१) इमरतलालजी हमीरमलजी बोरी

१) लाला मांगीलालजी गोधा अजमेर व्याहकी खुशीके

३) मास्टर भूरामलजी वाकानेर

४) लाला रामलालजी अंबाला

२) लाला मित्रसैनजी „

२) लाला मंगलसैनजी „

४) लाला कन्हैयालालजी बिहारीलालजी गया

१०) रा. रा. बकारामजी पदमावता पल्लीवाल वर्धा

१४॥) चिंमनलालजी वल्द नस नलालजी व लाला बाहमलजी वल्द श्री बिशनदासजी सुलतानपुर

१७१२॥) जोड आसोज वदी १५ सं १९४८ तकका

ऊपर लिखे भाईयोंको सभाकी तरफसे धन्यबाद दिया जाताहै और २ स्वधर्माभिमानी भाईयोंसे अर्जहै कि व भंडारको वृद्धि करने में जलदीकरैं॥ रुपया भेजने वाले भाईयोंको उचितहै कि वे अपना नाम जाति गांव या शहर और मोहल्ला या बाजार वगैरहका ठिकाना ठीक २ खुलासा शास्त्री और अंगरेजीमें लिखभेजे ताकि रसीद उनके पासभेजदी जावे॥ भाई मंगलसैनजी जिला सहारनपुर वालोंने अपना ठिकाना ठीक २ नहीं लिखा इस कारण रसीद उनको नहीं भेजीगई अब उनको उचित है कि अपना ठिकाना ठीक २ जल्द लिखभेजे॥

॥ चिठ्ठीयोंका संक्षेप ॥

भाई गौरीलालजी मेरठ सदर बाजारसे चिठ्ठी लिखैहैं कि मासिक पत्र आपका नंबर ५ का आया राय बहादुर सेठ मूलचंद्रजीके पुत्र नमीचंद्रजीके बिबाह २१ शास्त्रोक्त रीतसे हुआ उनको पढकर बडा आनंद हुआ ॥ प्रथम मिथ्यात्वका कारण बडा भारी यही था इसके दूर होजाने पर धर्मकी बहुत प्रभावना होगी और यहां परभी इस बातकी कोशिस कीजावेगी ॥ बडे आश्चर्यकी बातहै कि हमारे जैनी भाई फजूल बातोंकी तर्फतो ध्यान करतेहैं और विद्याकी उन्नतिके कुछखयाल नहीं करते परंतु आपके यत्नकरनेसे कुछ विद्याकी उन्नति होयतो आपको बडा धर्मका लाभ होगा ॥

२ आगे किताब एक छपी हुई मौजअ दुर्गापुर जिला रंगपुरसे लाला धन्नालाल आस करणने भेजी और उसमें नानायुक्ति और प्रश्नोत्तर करके जैन शास्त्रोंका छपाना लिखा उसमें सब जैनियोंसे छपानेकी आज्ञा मांगीहै सो यह बात शास्त्रसे बहुत बिरुद्धहै और छपनेसे बसबवहोने अशुद्ध स्याही वगैरहके जिन मतके उत्तमाचरणमें बहुत न्यूनता होगी ॥ इस समयमें शहर २ और गांम २ में हजारों शास्त्र रक्खेहैं जिनको कोई खोल करभी नहीं देखता चौमासेमें सील बचानेको धूप तक नहीं दिखाता पढनेकी तो बार्त्ता दूरही रहो तब शास्त्रोंके छपनेसे क्या फायदा होगा केवल अविनय और फिजूल खर्च रुपयेका होगा सो इस बातको तुम अपने जैन प्रभाकरमें छपादेना कि कोई भाई इस बातमें राय छपनेकी नदें और दुर्गापुर वाले भाईयोंकोभी समझादेना जो इस बातका हठ करके प्रचार न करैं और

अच्छी तरहसे विचार करदेखें कि इस बातके होनेमें कितनी बडी हानीहै ॥ आप धर्मात्माहो और हेयोपादेयको जानोहो इस कारण इस समयमें तो केवल विद्याके होनेसे जिनमतकी उन्नतिहो सक्तीहै सो जो भव्यात्मा अपना कल्याणका इच्छकहै सो जिन धर्म संबंधी विद्याकी उन्नतिमें कोशिस करैं ॥

अनुमतिः इसी विषयमें एक चिठ्ठी झालावाडसे भाई गणेशीलालजीकी वहाकी सभाकी सम्मतिसे आईहै और उन्होनेभी जैन शास्त्रोंके छपनेकी मनाई लिखीहै ॥ हमे अफसोस करतेहैं कि धन्नालालजी आसकरणने अपनी किताव आजतक हमारे पास नहीं भेजी वरना उसको पढकर भले प्रकार उसका समाधान करते ॥ हमारी समझमें भाई गौरीलालजी और गणेशीलालजीका लिखना बहुत दुरुस्त मालूम होताहै धर्मकी उन्नतिशुद्ध आचरणके ग्रहणसे होतीहै यदी शुद्ध आचरण बिगडेतो केवल विद्यासे क्या प्रयोजन सिद्ध है ॥ और विद्यातो पढनेमें खूब मिहनत करनेसे आतीहै केवल पुस्तकोंके समूहसे विद्या नहीं आती इसलियें जो पुस्तकें भंडारमें मोजूदहैं उनसेही विद्या पढनी चाहिये अगर उनसे पूरा नहीं पडे और पुस्तकोंकी चाहना विशेषहोय तो लेखकोंसे लिखवालेनी चाहियें ॥ आगें कंपिलाजीके मेलेमें सर्व संघ श्रावक समुदायने जैन शास्त्रोंके छपानेकी और छपीहुई पुस्तकोंके मोललेनेकी मनाईकी आज्ञा कर दीनीहै सो उस आज्ञाका प्रतिपालन सर्व भाईयोंको करना उचितहै ॥

—ooo—

जनाव एडीटर जैन प्रभाकर साहिब मेरेभी थोडेसे हर्षके समांचार अपने अमूल्य पत्रमें स्थानदानदेकर कृतार्थ कीजियेगा.........

अबके भादवाजीके दिनोंमें श्रीयुत् लाला लक्ष्मीचंद्रजी साहिब लश करवालोंका यहां हमारे लोगोंके भाग्योदय और बडी कोशिशसे पधारनाहुवा सो अब हम उन्हीं को धन्यवाद देतेहैंके लालाजी साहबने श्रीयुत् सेट मूलचंद्रजीके मंद्रिजीमें ऐसा शास्त्रजीका कंठस्थ व्याख्यान मधुर और ललित हरयेक रोजनया २ धाराप्रवाह मेघ की गरजना समानदेतेथे केजिन्हों के सुनते २ स्त्री और पुरुष तृप्त नहीं होतेथे यही चाहना दिलोंमें बनी रहतीथीके कबप्रातः कालहोय और कबशास्त्र श्रवण करें और उक्त लालाजी साहिबकी सभामें अन्य मतावलम्बीभी शास्त्र श्रवण करने को आतेथे और हर एकके मुखसे वाह २ काशब्द निकलताथा और यह कहतेथे कि हमने अपनी तमाम उमरमें बहुतसे वक्ता और सभा देखी मगर ऐसे वक्ता और व्याख्यान हमारी उमरमें देखने और सुन्नेमें नहीं आया लालाजी साहबमें यह किन्नी बडी बातहैके तीन चार घंटे एकासन बैठकर मधुर ध्वनिसे व्याख्यान करना और मंदिरजीमें जगहका तो यह हालथा कि बैठने तक कोभी नहीं मिलती थी खडे २ बहुतसे भाई श्रवणकर तेथे और लालजी साहबने हम लोगों पर कृपा करके चोथाकाल दिखा दिया लालाजीका ऐसा व्याख्यान सुनकरके चंद आदमियोंके पढने लिखनेकी चाहना हुई तब लालाजीसे कहा गया उन्होंने जवाब दिया के मेरे स्त्र्याध्यापके वक्त में आप लोगआयगें मंदिरजोमे तोमें बनादिया करूंगा अब लाला जीके पास सिद्धकरणजी पुत्र सहसकरणजी सेठीके सोभागमलजी पुत्र रामलालजी सोनीके रिषभदासजी पुत्र हरसुखदासजी अज्मेराके पन्नालालजी पुत्र सूरजमल

जी अज्मेराके मगनमलजी पाटणी पुत्र सुगनचंदजीके राजमलजी गांड्या केसरीमलजी पुत्र रतनलालजी गोदाके महताबचंदजी खवाडा फूलचंदजी रावका सुवालालजी लवाडा कनैयालालजी पाटणी मांगीलालजी गोदा पुत्र पन्नालालजीके चंदुमलजी दिल्ली वाले रामदयालजी आगरेवाले इत्यादि पढतेहैं ॥

जैन पाठशाला जैपुर

आज दिन यह पाठशाला वडी उन्नतिपरहै और सेठ चांदमलजी साहब तथा पंडित गुलाबरायजी आदि यहांके प्रधान पुरुष उसकी वृद्धिकरनेमें दिनरात उद्यमी रहते हैं ॥ श्रीदरबार जैपुरकी तरफसेभी पाठशालाकी निगह बानीहोती रहतीहै ॥ मिती असाढ सुदी ४ सुक्रवारके दिन श्रीमान रायबहादुर बाबू कांतीचंद्रजी मुकरजी सी आई ई. मुखतियार प्राईम मिनिष्टर रियासत जैपुरक कृपाकर पाठशाला देखनेको पधारे उस समय २५० विद्यार्थी मोजूदथे आपने विद्यार्थीयों की परीक्षालीनी जिससे अतिहर्षायमान हुये और अपनी कृपा और प्रसन्नता पकट करके रु: ५०) का किताबे अपने करकमलोंसे विद्यार्थीयोंको इनामदीनी और बहुत संतुष्ट हुये ॥ उन्होंने निहायत परवरिशकीनिगाहसे पाठशाला के हमेशह निर्वाहिके वास्ते और मकान अच्छा नफीस पाठशालाके विद्यार्थीयोंके आराम वास्ते इसी मंदर पाठशालामें ऊपर छतके महल तयार करादेणे वास्ते फरमाया सो श्री महाराज साहिबकी रिया या परवरी और बाबूजी साहिबके विद्यानुरागसे रु: ११९८) की वास्ते तामीर महलके मंजूरी फरमाई सो काम जारीहो गयाहै और यकीन कामिलहै कि वास्ते निर्वाह

हमेशह पाठशालामें चंदा माहवा रीकी परवरिश जरूर फरमाई जा वेगी॥ इस वार्त्ताके होनेसे यहांके सर्व जैनी लोगोंके वा विद्यार्थीयों के चित्तमें बडा आल्हाद वा विद्या नुराग वढाहै और श्रीमान बाबूजी साहिबको अपने हृदयसे अनेका नेक धन्यवाद करतेहैं और आशा करतेहैं कि आपकी नजर महर वानीकी इसी प्रकार बनीरही तो आपकी सहायतासे रियासत जैपुर निवासी श्रावकोंकी बहुत जल्द उन्नति होगी॥ और हमें यहभी आशाहै कि हमारे बहुतसे धनवान भाई जो विद्याकी तरफ मंदउद्यमी थे वे भी अब अवश्य उद्यमकरने लगेंगे क्यों कि चंद्रकांतिका एसा ही स्वभावहै कि वह सबको उज्वल और सीतल अपने समान करतीहै सोई बाबूजी साहबका असर सब पर पडना उचितहै॥

यहांपर कालाडहराके मंदिरजी में प्रतिसप्ताह धर्म विषयमें व्याख्यान होतेहैं हालमें भोलीलालजी सेठीने पुन्य पापके विषयमें फूलचंद्र विद्यार्थीने जगत अकीर्तिम सिद्ध करने और उसके कर्त्ताका निषेध करनेमें और कुंदनलाल विद्यार्थी ने मिथ्यात्वका निराकरण कर सम्यक्त धारण विषयमे अति ललित और सुंदर व्याख्यान दियेथे

---ooo---

मिती कातिक बादि १३ सुक्रवारसे सुद ५ तक लिखमीचंदजी सरबसुखजी बोहराकी नासिया जैपुरमें चांदपोल दरवाजे रथ जात्राका मेला और पूजा नाटक जागरन सभा इत्यादि उच्छव होंगे सर्व भाई कृपाकर पधारें॥

---ooo---

इन विद्यार्थीयोंकी परीक्षा श्रावगाचार और अष्ट कर्मके आश्रव और २ फुटकल चर्चामें हुई जिसके सुननेसे सभाको बडा आनंद हुआ और लालाजी साहबको धन्यवाद दिया

द: बाबू मंगलसेन

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा नैं

प्रकाश किया

नम्बर ८

मिती कार्तिक सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा

॥ विज्ञापन ॥

सब भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थनाहै कि वे इसको संपूर्ण पढ़कर अपने पुत्रमित्रोंको पढ़नेके वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ कर सुनादें ॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संबधी नई वार्ता पत्रमें छापनेको भेजदें॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालें

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर वालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म ज्ञातकी उन्नति करना इसके उद्देशहैं ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल वार्ता मतमतांतरका झगडा इसमें नही छपैगा ॥

॥ मूल्य प्राप्ति ॥

१) इमरतलालजी हमीरमल बोरी १) सेठः मोतीलालजी चंपा लाल ऐलचपुर ॥=) मिठनलाल जी केवलारी १) जायारामजी ला होर १) वाः बीहारीलालजी गया १) केवलकिशनजी भीवानी १) मुरामलजी बीकानेर १) मित्रसेन जी अंबाला १) सोदागरमलजी नसीराबाद १) छीतरमलजी अली गढ ॥=) वाः परमेश्रीदासजी अज मेर २) ज्ञानचंदजी समीरचंद जी लाहोर १) बालचंद इंदसाऐ वला १) संतलालजी १) इमरत लालजी जोरावरमल जबलपुर १) पंः नंदरामजी हकीम आगरा १) लक्ष्मीचंदजी नायब मुन्तजिम सायरात जैपुर १) लक्ष्मीचंदजी पोस्टआफिस अजमेर शेसआगे ॥

समस्त चिट्ठी रुपया वगैरह लाला छोगालाल अजमेरा कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम भेजना चाहीये ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ८ } अजमेर कार्त्तिक सुदी १ संवत् १९४८ { अंक २

॥ धर्मोपदेश ॥

जैन सुधर्म सभा आगरा बेलन गंजके सकल जैनी भाई तथा और सर्व देश देशांतरोंके साधर्मी भाई योंसे प्रार्थनाहै कि जैन सभा इस प्रयोजनसे होतीहै कि सभाके आदिमें उपदेश धार्मिकका वर्णन पश्चात् लौकिक व्यवहार और कुरीतोंके सुधारनेंकी शिक्षा कि जिस्से सर्व संसारी जीवोंका भलाहो दी जातीहै क्यो कि संसारमें सर्व जीव सुखके अभिलाषी दृष्टि आते हैं सो सुखकी प्राप्ति सत्यधर्म अहिंसाके अनुकूल चलना और कुरीतों और बुरे आचरणोंके छोडनेसे होतीहै ॥ परंतु आजदिन इन दोनों श्रेष्ठ कार्योंके बिपरीत संसारमें प्रवृति होरहीहै सो एसी दशामें सुख मिलनेकी कौनसी आशाहै ? कोई नहीं ॥

लेकिन पुरुषार्थ करनेसे सर्व कार्य सिद्धहोतेहैं और विशेष कर शुभकार्य विद्या धन सदाचार और धर्म धारण करनेमें अत्यंतही पुरुषार्थ करने और आलस छोडनेकी

आवश्यकता है और यह सच्चा पुरुषार्थ जिससे कि अविनाशी लक्ष्मी और निराबाध सुखकी प्राप्तिहो मनुष्य जन्ममेंही होसक्ताहै क्योंकि नारकीतो सदा काल दुखसे व्याकुलहैं और पशुओंको अति तीव्र अज्ञानने घेर रखाहै और देव विशयाशक्तहैं इसलियें वे अपना आत्म कल्याण कुछ नहीं करसक्ते हैं॥ आत्म कल्याण करनेकी पूरी २ जोग्यता इस मनुष्य कोही है अतएव यदि आप सर्व भाई सम्मति करके कुरीतोंके मेटने और सुरीतोंके प्रचलित करनेका यत्न करें तो शीघ्रही इस जैन सभा रूपी कल्पवृक्षसें अमृत रूपी फल दृष्टि आने लगेंगें कि जिनके खाने से अजर अमर पदको प्राप्ति होती है॥

सर्व कुरीतीयों और हीना चारों के प्रचलित होनेका मूल कारण अज्ञानहे, इसलियें श्रावक कुलमें से अज्ञान नाशकरनेका उपाय सब से पहले होना चाहिये॥ अगले समयमे हमारे श्रावक कुलमें यह रीतथी कि जब बालक आठवें वर्षमें प्रवेश करताथा तब प्रथम उसे उपासकाध्ययन अर्थात् श्रावकाचार पढातेथे और उसके पढने से वह श्रावक धर्ममें दृढ होजाता था और जन्म पर्य्यंत धर्मसे नहीं चिगताथा इसी कारण उसके सर्व लौकिक और पार्मार्थिक व्यवहार धर्म रीति और न्याय नीतिसे होते थे और वह लोकमान्य और राज दर्बारमें प्रतिष्ठा पात्र होतेथे॥ परंतु समयके फेर फारसे वह बालकोंको श्रावकाचारके पढने पढानेकी प्राचीन रीत जाती रही और उसका परिपाक यह हुआ कि अनेक प्रकारके मिथ्यात्व कुगुरु कुदेवोंको पूजा और कुरीतियोंका प्रवृत हमारे कुलमें जारी होगईहैं और नित्य प्रतिहोती जातीहैं और वाजी २

कुरीतियोंने तो एसी जडपकडली नीहै कि उनका मिटना अति कठिन होगयाहै क्यों कि बहुतसे भाई उन कुरीतियोंको अपना सनातन सच्चा श्रावक धर्मही समझने लगगयेहैं ॥ इसलियें भाईयों यदि आपको धर्मका उन्नतिकरना कुरीत मेंटना और सुरीत प्रचलितकरना इष्टहै तो प्रथम हरेक बालक और वृद्ध, मनुष्य और स्त्री को श्रावकाचार पढाने और उसी के अनुसार बरताव करनेका यत्न करना चाहिये ॥ क्या पाठशालाओंमें और क्या सभामें और क्या शास्त्रजीकी सभामें श्रावकाचार काही उपदेश पूर्वा चारियोंके मूल ग्रंथानुसार देना चाहिये हमें निश्चयहै कि श्रावकाचारके जानने और उसपर अमल करनेसे और सब कुरीतियां स्वयमेव छुटजायगी ॥

अबमें बडी २ कुरीतियोंका शंक्षेप नाम मात्र वर्णन करूहूं जिनका दूरहोनेका प्रबंध सीघ्रहोना उचितहै ॥ प्रथम बिवाहदि कार्यों में कुदेवोंकी पूजा होतीहै दूसरे स्वस्वरके घरके जाते वरातमें आतिशबाजी छोडतेहैं सो ये महान हिंसाका कारणहै सो ये कार्य सर्बथा प्रकार अनुचित और जिन धर्मसे बर्जितहै सो अवश्य त्यागने जोग्यहैं ॥ तीसरे स्त्रीयां कुम्हार के चाकका पूजन करनेको शूद्रके घरजातीहै और राजमार्गोंमें अत्यंत घोर शब्दसे एसे २ अनुचित गीत गालियां निर्लज्जताके मुहसे गातीहै जिनके सुननेसे शरम आतीहै ॥ इन स्त्रीयोंके समूहमें बाल तरुण वृद्ध और विधवाभी साथमे रहतीहै और उनके देखादेखी वैसे ही अयोग्य शब्दबोलने लगतीहै और जब उन्होंने एसे अपशब्दोंमें हर्ष माना तो क्या काम रूपी पिशाच उनको बाधा नहीं करेगा

अवश्य करेगा ॥ उसके अनेक उप द्रवहैं राजदंड पंचदंड हिंसा आदि सो आप अपने मनमें विचारलो चौथे छोटी उमरकी लडकीयोंको वृद्ध पुरुषके साथमें द्रव्यलेकर बि बाह करदेना वा करादेना यह महा अन्याय और पापका मूलहै पांच वें वेश्या संसर्ग बिवाहादिमें उन का नाचदेखना॥ छटे जूआखेल ना जो सातोंविसनोंका राजाहै॥ सातवे धूम्रपान अर्थात हुक्का पीना भांगपीना तमाखूखाना ये सब महानीच कर्महै॥ आठमें सीतला भवानी कुयेवाला जखेया आदि नीच देवोंका पूजनाभी अब जैनि योंके गृहोंमें जडपकडता जाताहै॥ मूडस्त्रीयां बालबच्चोंको साथलेकर गीत गातीहुई पूजनेजातीहै और बासोडा वगैरह करतीहै॥ इस लियें भाईयों जहांतक बनसकें कुरीतोंके सुधारनेमें चित्त लगाना चाहिये॥॥ एकसाथ कोई कार्य नहीं होसकाहै परंतु क्रम २ करके होताहै जैसे महारोग गृसित पुरुष को थोडी २ औषधी नितप्रतिका से बन करनेसे निरोग करदेतीहै सो हम महामिथ्यात्वके रोग कर गृसित होरहेहैं तो धर्म रूपी अमोघ औषधके थोडा २ नितप्रति सेवन करनेसे अवश्य निरोग होंगे॥

घरके सर्व कार्य स्त्रीयोंके आ धीनहैं और स्त्री और बालक पुरुषो के आधीनहै सो जैसा घरका मा लिक धर्म्मात्मा वा पापी ज्ञानी वा अज्ञानी बिवेकी वा अविवेकी सज्जन वा दुर्जन सदाचारी वा हीना चारी जैसा वह घरका मालिक होताहै वैसेही चालचलनके उसके घरके लोगभी अवश्यहोगें इस लियें घरकेधनीको बिबेक सहित सर्व कार्य करने उचितहैं अगर घरका धनी क्रम २ कर कुरीतोंको मेटना चाहे तो सहजही मिट सकेगी॥ दोहा॥

क्रम २ से कारज करैं
व्यापे नहीं कछु खेद
क्रम २ से ऋण उतरै
मूरख लखैन भेद

अर्थात् जो मनुष्य कर्ज दारहै वह क्रम २ कर थोडा २ रूपया देवे तो सीघ्रही कर्ज उतरजाय इसी प्रकार क्रम २ कर एक २ कुरीतको मेटनेसे थोडे कालमें सर्व कुरीतियां जाती रहैंगी॥ हमारे इस व्याख्यानका प्रयोजन यहहै कि श्रावगाचार पढने पढाने और अयोग्य कार्य्योंका त्याग और जोग्य कार्योंका गृहण करनेमें जिससे अपने श्रावग कुलकी धन और प्रतिष्ठा मे वृद्धिहो और जिन धर्मका उद्योतहो सर्व स्त्री पुरुष बाल वृद्ध भाईयोंको अपने तनमन धनसे बहुत सीघ्र कोशिस करनी चाहिये

हरदेवदास पाटनी
बेलनगंज आगरा

विद्यादान उपदेश प्रकास जैनसभा वर्धा

भाई बकारामजी साहब वर्धा से लिखेंहैं कि हमारे तर्फके बराडी योंमें दिनोदिन मिथ्या रिवाज बंदहोते जातेहैं यह जैन समाजकी उन्नति और सातावेदनी आदि पुन्य पकृतिका उदय मानतेहैं॥ इधर बराड और नागपुर प्रांतमें विजया दसमी अर्थात् पापदसमी के दिन एसी रिवाजहै कि गांव बाहिर बोहतसे लोक भेलेहोतेहैं और वहां शेमीवृक्षको गामका महाजन तलवारसे तोडताहै और रांवणमारा यह कहलातेहैं॥ वह समारंभ देखनेको इधरके सबही श्रावक जातेहैं और वहांसे वह शेमीवृक्षके पत्र लूट करलाते और मंदिरजीमें श्रीभगवानजीकी प्रतिमाके सामने चढातेहैं और आपस में भेटभलाई लेतेहैं॥

जैन प्रभाकर नंबर ६ में पाप नवमीके बारेमें लिखा आया सो यहांके सर्व श्रावकोंको सुनाया गया और हमारे सभाके उद्योतसे इस बारेमें उपदेश दियागया कि विजयादसमीका उत्सव देखणे कूंजानेसे काया बाचा और मान सीक पाप लगताहै और जैनागम से यह देखना महा मिथ्यात्व और हिंसाका पुष्टकरनाहै और वह हरित पत्र लाय भगवान कू चढाना और सुनालेव (स्वर्णलो) कहना यह कूठबोलनेका और हरितपत्ती चढानेका वहुत पापकर्म बंध होता है एसा उपदेश दियागया सो बर्धाके श्रावक मंडली विजयादस मी पापदसमीका उत्सव देखने को गये नहीं और मंदिरजीमें उच्छव किया और भंडारमें सोना चांदी रुपया पेसा जमा कराया॥ इस प्रकार पापदसमीका हमेशां का रिवाज बंद हुआ और गांव खेडाके श्रावकोंकोभी इस पाप दसमीका रिवाज बंदकरनेका उप देशदेना शिरूकर दियाहे

जैन धर्म्मामृतवर्षनी भसा खुरई

मिती आसोज सुदी १५ सं १८४७ को सभाका वृहत अधिवेशन हुआ उस समय बाहर के आये हुये श्रावक भाई दो सो २०० और खुरई निवासी भाई पांचसो ५०० उपस्थितथे॥ सभामें निम्नलिखित कार्य किये गये॥

१ जैन पाठशालाके ६० विद्यार्थी योंकी परीक्षा लीगई पूजन मंगल चरचास तक द्रव्य संगृह चोवीसाठाणा सारस्वत पढाये जातेहैं परीक्षा अच्छी हुई

२ सभाकी ओर से वडे २ नगरों में उपदेशक भेजनेका मनतव्य किया गयाहे जो सर्व जैनी भाई योंसे सभा और पाठशाला स्था

पित करने और जैन विद्यालय भंडार अजमेर और जैन पाठशाला खुरईकी सहायताकी प्रार्थना करेंगे॥

३ यहांके इलाकेके बहुधा मंदिर जीर्णहैं और जैन मंदिरोंके रुपया लोगों पर बाकीभीहै इसलियें यह विचार किया गया कि जहांके श्री जैन मंदिर जीर्णहों और मंदिरोंके रुपया जितने जिन २ भाईयोंसे लेनाहो उनके समाचार आगामी वृहत सभामें अवश्य आनाचाहिये, यदि किसी मंदिरके रुपया वा प्रातहार्य मंदिमेंही मौजूदहों तो भी समाचार आनाचाहिये कि इतना सामान मंदिरमें मौजूदहै समाचार आने पर सभा योग्य प्रबंध करैगी॥

४ देहातके जैनी भाईयोंने रुपया सोलासो व्याजू अपने नाम लिखाये वा रुपया ४०) नकद जमाकराये और १४ नये सभासद हुये

५ जैन पाठशालाके विद्यार्थीयों को रु: १५) के रूमाल टोपी शीरनी बांटीगई॥

सभामें दो दिवस बडाही आनंद बर्त्ता और आठ उपदेशक व्याख्यान पढेगये पश्चात सभा विसर्जन हुई

सेठ मोहनलाल

लाला सिखरचंदजी साहब ओवर सीयर रियासत नाहन लिखेंहैं कि आपके जैन प्रभाकरको पढकर चितको बहुत आनंद हुआ और मालूम हुआ कि उन्नति जैन धर्म के वास्ते जो सच्चा रास्तह और सब सुख संपदा स्वर्ग मोक्षका देनेवालाहै धर्मात्मा धनाढय दयालू परोपकारक पुरुषोंने अपने और दूसरोंके सम्यक् दर्शनज्ञान चारित्र की प्राप्तिके अर्थ जैन विद्यालय भंडार कायम कियाहै और उसमें कुछ रुपया भी जमा कियाहै के

किस पूरा २ रुपया उसकी सहाय ताके वास्ते जमा नहीं हुआ और यह जमा होना एक महाशयका काम नहींहै कि भंडारका काम बखूबी चलाकर धर्म ज्ञान और विद्यासे तमाम जहानके आदमी योंको प्रफुल्लितकरै इसलियें मेरी सर्व देशदेशोंके जैनी भाईयोंसे यह अरदासहै कि वे इस विद्या लय भंडारके वृद्धिकरनेमें अवश्य सहायता देंवें॥

मेरी रायमें रूपया देशदेशोंसे न आनेकी चंद वजहहैं याने अवल्ल तो बहुतसे आदमी विद्या और धर्म और उनके फलसे बिलकुल आगाह खबरदार नहींहै॥ जब वे विद्या और धर्मको जानतेही नहीं तो फिर उनका दिल क्यों कर उम डे कि वे विद्या और धर्मके काममें कुछ मददकरें क्यों कि जब दिलमें किसी बातकी जगह होतीहै तभी वह काम किया जाताहै और सिद्ध भी होताहै इस वास्ते जो विद्वान और धर्म्मात्मा बिवेकी पुर्षहैं और विद्याके रसको जानतेहैं उनको चाहिये कि सबसे पहले इस काम में सहायता करैं याने वे पहले अप ना रुपया भंडारमें जमा करांवे और अजान भाईयोंको उपदेश देकर विद्याके फाइदोसे वाकिफ करके रुपया जमा करानेकी प्रेरणा करैं॥ और बहुतसी जगह पंडित चुन्नीलालजी और स्वर्गवासी मुंशी मुकंदलालजीके उपदेशसे पाठशा ला कायम होगईहै जिन धर्म और विद्याका उपदेश होताहै और लोग अपनी २ कोशिस करके पाठशा लाका काम ततमन धनसे सरअंन जाम करतेहैं जिससे अब बहुत कुछ तरक्की हुईहै और आइंदेको उमेदहै इस सबबसे पूरी पूरी जैन विद्यालय भंडारकी अबतक सहाय ता नहीं हुई इस वास्ते इल्तमास है कि आपके जैन प्रभाकरमें अगर

आपकी रायमें मुनासिब मालूम होवे यह दर्ज फरमाईये कि जैन वियालय भंडारसे अब तक यह काररवाई और उन्नति हुईहै और आइंदेको यह होगी और जिसका फल एसाहै और जब सब महाशय सहायता फरमायेगे तो यह नतीजा पैदाहोगा॥ एसा उपदेश करनेसे सब महाशयोंके दिलपर निहायत असर होगा और जैन धर्मकी सहाइताके वास्ते तन, मन धनसे कोशिस फरमायेंगे और जहां २ पाठशाला कायम नहींहैं अपने यहां रुपया जमा करके उसके सूदसे या उसके व्योहारसे धन उपार्जन करके और कुछ अपने द्रव्यमेंसे माहवारी चंदा करके विद्यारूपी अमृतको बरसावे और जैन वियालय भंडारमेंभी मदद फरमावें लिहाजा अपनी गुजारिश को बढता हुआ देखकर समाप्त करता हूं और आशा करताहूं कि मेरी प्रार्थनापर सर्व भाई ध्यानदेंगे॥

जैन वियालय भंडारके लाभ

लाला सिखरचंदजी साहबने जो प्रश्न उठायेहैं कि जैन वियालय भंडारने आजतक क्या काररवाईकी और क्या कररहाहै और आगेको क्या करेगा और इससे क्या लाभहोंगे इनके उत्तर जानने की अभिलाषा बहुतसे सभ्यजनो को होगी इसलियें सब भाईयोंके हितार्थ इसका संक्षेप वर्णन प्रारंभ से करना वाजिबहै॥

विदितहो कि समयके फेरफार से जैनियोमें स्वधर्मावलंबी विद्या का पढना पढाना बहुत कम हो गयाथा मिथ्यात्व अंधकार फैलता जाताथा और जैनी लोग हिताहितके बिचार रहित प्रमादी हुये अज्ञान निद्रामे सोरहेथे॥ और २ जातियोंके लोग विद्या उपार्जन कर सरकारके निश्कंटक राज्यमे

अनेक प्रकारके लाभ उठारहेथे और विद्या धन और राज प्रतिष्ठा से अपनी २ जातिकी उन्नतिकर रहेथे ॥ भाग्योदयसे श्रीयुतमुंशी मुकंदरामजी और पंडित चुन्नी लालजी मुरादाबाद निवासीयोंने यह अवस्था देखकर जैनियोंकी उन्नति करनेका उपाय मनमें धा रण किया और जगह २ देशाटन करते हुये धर्म्मोपदेशके व्याख्यान करके जैसे प्रभात समय सूरज अपनी किरणोंसे रात्रिके सोते हुओंको जगाताहै वैसे सर्व भाई योंको जगादिया और सदविद्या आदि सुगुणोंके ग्रहण करनमें उन की रुची बढाकर जगह २ पाठसा ला और सभा स्थापित करदी थी ॥ धर्म शास्त्र और उच्चश्रेणीकी लौकिक विद्या अंगरेजी फारसी आदिक और विकालत आदी जैनी भाईयोंको पढानेके वास्ते एक जैन कालेज नियत करनेका बिचारभी उन्होंनेही किया और उसके खर्च के वास्ते करीब चालीस हजारके चिट्ठाभी लिखागया और उम्मेद हुई कि बहुत जल्द जाति और धर्मकी उन्नति होजायगी परंतु अफसोस हजार अफसोस कि इसी अरसेमें मुंशी मुकंदरामजी बीमार होगये और कुछ दिन पीछे स्वर्ग लोक प्राप्तभये और उन्होने जो परिश्रम और रुपया खर्च कर के यह महान कार्यका प्रारंभ कियाथा अधूरा रहगया और जैनियों को बडाभारी नुकसान पहुचा क्यों कि यदि मुंशीजी साहिबजीते हुये होते तो बेशक जैन कालेज रुपी कल्प वृक्ष इस समय फलफूलोंसे लहलहारहाहोता ॥

पंडित चुन्नीलालजीको मुंशीजी के देहांत होनेका बडारंज हुआ मानो उनकी दहनी बांह जाती रही तो भी वे जैन कालेजके वास्ते अपने तनमन धनसे परिश्रम कर

ते हुये चलेजातेहैं और जितना परिश्रम वे करतेहैं यदि उसका हजारवा भागभी और भाई करते और जिन साहिबोंने चिट्ठा लिख दियाथा वे रुपया जमा करके उन को सहायता देते तो निस्संदेह जैन कालेज कायम होगया होता मगर हमारे भाईयोंका प्रमाद जगत विख्यातहै और इसी कारण जितने काम शिरूहोतेहैं वे सब बीचमेंही नष्ट होजातेहैं अंजामको नहीं पहुचते और तमाम परिश्रम रुपया और काल उनमें व्यय हो ताहै वह सब निरर्थक जाताहै॥

यहां अजमेरमें पंडित चुन्नी लालजी तीनबरस पहले पधारेथे सो विद्याके विषयमें अतिश्रेष्ठ व्या ख्यान दिया उसके सुननेसे हमारी गोष्ठीके भाईयोंके दिलमेंभी अप नी जाति और धर्मकी उन्नति कर नेकी रुचि पैदा हुई एक जैन सभा और पाठसाला यहां नियत हुई और जैन प्रभाकर मासिक पत्र भी जारी किया॥ पंडित चुन्नी लालजीकी सहायतासे गोष्टीका वि चार हुआ कि नये नगरके मेलेमें जैन विद्यालय भंडार कायम कर के जैन कालेजकी नीम अवश्य डालनी चाहिये जब मेला करीब आया तो पंडितजी साहबसे राय मिलाई और वे आप मेलेमें आये और अपने हाथ जैन विद्यालय भंडारमे सबसे पहले रुपया जमा करके उसको नियत किया और अब उस भंडारका काम चलरहा है॥ और जो भाई रुपया जमा कराते जातेहैं उन्हें सरिस्ताई नंब री रसीद भेजदी जातीहै और उन के नाम जैन प्रभाकरमें मुद्रित करदिये जातेहैं॥

भंडारके हिसाबके बही खाते सराफी कोठीके मुताबिक डालदी नेहैं और रकमकी हुंडी मोत बिर सराफोंकी पोतेरहतीहै ब्याज उप

जाया जाताहै जो स्वधर्म विद्या वृद्धि करनेमें लगाया जायगा॥

भंडारकी रक्षा निमित सरकार में रजिष्टरी करानेका मसोदा जैन प्रभाकर नंबर तीनमे देचुकेहैं उस पर सम्मति अभीतक कहींसे नहीं आई उसके उम्मेदवारहैं॥

जैन विद्यालय भंडारको नियत हुवे अभी बहुत तुच्छ काल हुआहै और उसमें रुपयाभी बहुत थोडाहै उससे इतने थोडे अरसेमें वडे फल की चाहना करना एसाहै जैसा होमहीनेके बालकसे समस्त कुटंब के पालनेके वास्ते कुमाई करवाना वह बच्चा इस वक्त कुमाई नहीं करसका परंतु प्रथम कुटंबके लोग उसको खिला पिला विद्यापढाकर होशयारकरैंगें तव वह उन सबकी परवरिशभले प्रकारसे करैगा इसी प्रकार भंडारको सर्व भाई रुपया देदे कर वडा और मजबूत करेंगे तव वह सर्व जनोको लाभदायक होगा॥ अभी बचपनेमें अस मर्थहै तो भी अपने वित्तके अनुसार जैन मर्थकी विद्या वृद्धि करनेको इमतिहान लेकर इनामदेनेका नोटिस दिया था परंतु किसी पाठशालाने उस लाभको गृहण नहीं किया अब आसोजके पत्रमें आगिम वैसाखमें इमतिहान लेकर इनाम बांटनेको कहाहै यकीनहैकी इस अवसरमें सर्व पाठशालाओंसें विद्यार्थी इम तिहान देनेको तैयार होंगें और भंडारके होनेका लाभ सव पर प्रकट कर दिखावेगें॥

भंडारसे क्या लाभ होंगे इस का उत्तर यहहै कि इसकी सहाय तासे किसी जोग्य स्थानमें जहां सर्व भाईयोंकी सम्मतिहो वहां जैन विद्यालय नियत किया जाय जो कलकत्ता या इलाहाबाद यूनीवार्सिटीके मानिंद समझा जावे और यहां पर उच्चश्रेणीकी पढाई होवे॥ और २ शहरोंकी छोटी

पाठशालाओंके विद्यार्थी जो विद्या व्यवकी नियतकी हुई परीक्षामें उत्तीर्णहोंवे वहां आकरपढें और उन्हें खान पानकी सहायता दी जावे तथा किसी शहरकी पाठशालामें पढने वाले लडके बहुतहों और उस शहरके भाई पाठशाला का खर्च चलानेमें असमर्थ होतो उनको रुपयेकी सहायता भंडारसे दीजावे॥ तथा जैन विद्यार्थीयोंको इनाम या स्कालरशिप देकर उच्चश्रेणीकी विद्या पढनेमें सहाता भंडारसे दीजावे॥

भंडारसे एसे २ फायदोंका होना विचार करतेहैं परंतु हमारे विचार आकाशमें महल बनानेके समानहैं क्यों कि इन सबका होना रुपयेसे संभवहै और रुपया जमा होना सर्व भाईयोंकी सम्मति और उदारताके आधीनहै सो यदि सर्व भाई सम्मति करके कपट बुद्धिछोड शीघ्रतासे उद्यमकरे तो भंडार बहुत बलवान होजायगा और विद्याके प्रकाशसे अति शय कर जिन धर्मकी प्रभावना करेगा॥

---ooo---

अजमेर यहांपर अनुमान पांच सो घर श्रावकोंकेहैं उनमेंसे एक सो सतरह घर अजमेरके भट्टारकजी की आम्नायमें चलतेथे अब उनमें से करीब नव्वे घर उनको छोडकर अलग होगये और निर्विघ्न धर्मसेवनके निमित्त उन्होंने अपने मस्तक चैत्यालय स्थापित किया॥ मिती कार्तिक वदी ८ रविवारके दिन गीतनृत्य वादित्र आदि सहित बडे जलूस से भगवानकी वेदी सरेबाजार निकली जिसके संगमें सर्व स्त्री पुरुषथे और दो पहरके समय श्रीजी चैत्यालयमें विराज मान हुये॥ बडा आनंद हुआ॥ अब वहां पूजा और दोनो समय शास्त्रजीका व्याख्यान

होताहै और सर्व स्त्रीपुरुष सुनने को आतेहैं॥ सुनाहै कि नवीन मंदिरभी बहुत जल्द बनने वाला है॥

—०००—

कार्तिक वदी १३ की रात्रिको लाला लक्ष्मीचंद्रजी कसकर वालेने दीपोत्सव अर्थात् दिवालीके विषयमें बडा मनोहर व्याख्यान दिया सभामें सर्व भाई मौजूदथे॥ उन्हों ने कुल करोंकी उत्पत्तिसेले चौथे कालका वर्णन करते हुये महावीर स्वामीके पंच कल्याणक और विशेष कर निर्वाण कल्याणकके महोत्सव का अतिशयकर वर्णन किया जिस को हुये यह २५५४ वार्षिकोत्सव है और उपदेश दिया कि ज्ञान रूपी दीपकका प्रकाशकर मिथ्यात्व अंधकार मेट आत्माका उद्योत करना चाहिये यह दीपोत्सवका भावहै॥ उन्होंने रात्रिमें पूजा करना और हलवाईके यहाके बने हुये तथा अशुद्ध घृतादिके बनये हुये लडडू आदि पकवानको मंदिरजीमें चढानेका शुकागमसे निषेध किया जिसका असर बहुत भाईयों पर हुआ और अशुद्धद्रव्य को मंदिरमें चढानेका त्याग किया॥

—०००—

विज्ञापन॥ सर्व भाईयोंसे जिन्होंने जैन प्रभाकरकी कीमत नहीं भेजीहै प्रार्थनाहै कि वे कृपा कर अब अपनी २ सं ४७ और ४८ की कीमत जल्दभेजदें ताकि पत्र के छपानेमें नुकसान नहीं होवे बराबर जारीरहे॥

—०००—

मथराजीका मेला बडे उच्छव और आनंदसे हुआ॥ ६ जगहसे रथ आयेथे॥ एक सभाभी हुई मुंशी छगमनलालजी आगरे वालों ने व्याख्यान दिया॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासंबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा नैं

प्रकाश किया

नम्बर ९

मिती मगसिर सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा

॥ विज्ञपन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचे प्रार्थनाहै कि वे इसको संपूर्ण पढकर अपने पुत्रमित्रोंको पढनेके वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ कर सुनावें ॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संवधी नई वार्ता पत्रमें छापनेको भेजदें॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालें

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर वालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके उद्देशहैं ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल वार्ता मतमतांतरका झगडा इसमें नही छपैगा ॥

॥मूल्य प्राप्ति॥

१) जैन पाठशाला हांसी १) कपूरचंदजी मुनशी नारनोद १) प्रभुदयालजी हांसी १) श्रीपंचान रिसाला भुरेदासजी पेमचंदजी दयाळचंदजी १) खुबचंदजी १) पीतंमबरजीपरमसजी गुना १) श्रीपंचान गुनाशहर २) पंचान जैनमंद्र बजरंगड १) उमरावसिंघ जी ठेकेदार आबरीड १) श्रीपंचान कोटा १) श्रीपंचानहिसार १) मुथ रादासजी पटयाला १) टीकाराम जी मन्नुलालजी होशंगाबाद १) अमनसिंघजी देहली २) बदरीपर शादजी महावीरपरसाद बिजनोर१) दरयावपरशादजी लक्षमीचंदजी भेलसा १) जोतीचंदजी मिसरोली १) हाजारीलालजी मडांवर १) भगवानदासजी शाहबाद

समस्त चिठ्ठी रुपया वगैरह लाला झोंगालाल अजमेरा कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम भेजना चाहीये ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ९ } अजमेर मगसिर सुदी १ संबत् १९४८ { अंक २

जैन पुर्षार्थ सभा मेरठ॥

यहां सुवहके वक्त श्री परमात्मा प्रकाशजी और आत्मानुशासनजी दोपहरको श्री भगवती आराधना सारजी और पद्मपुराणजी और शामको श्री पारसपुराणजी और दौलतरामकृत क्रियाकोशजी पढे जातेहैं और भाईयोंको शास्त्रश्रवण करनेका शौकभी बहुतहै॥ अब यह तजवीज होगईहै कि एक सभा जिसका कि नाम "जैन पुरुषार्थ सभा मेरठ शहर" है मुकर्रर हुईहै उसमें अवल दरजै वात्सल्य और वैयावृत्य करनेका उद्देशहै अर्थात् जो भाई कर्मोदयसे बीमार होजावे तो एक २ घंटा उसकी टहलचाकरी करै और धर्म सुनावें याने १२ साहब इस सभामेंहैं तो एक २ घंटे बीमारकी टहलचाकरी करी और धर्म सुनाया तो उसका तमाम वक्त धर्म ध्यानमें व्यतीत होगया और किस कदर फाइदा हुआ॥ चंदाभी मुकर्रर होगयाहै उसमें अवल जैन अखबारका मंगाना बाकी दानमें

सर्फ करदेना॥ इस सभाका इत्फाक मैत्री पर बहुत खयाल रहेगा क्यों कि जैनी भाईयोंमें जब कि पहले इत्फाकथा किसी भाईको क्लेश न होताथा अबभी इस सभाकी दृष्टि उसीकामपरहै॥

मथरादास मेरठ॥

अनुमति॥ धन्यहैं उन भाईयों को जो ख्यात लाभ पूजाकी बांछा छोडकर चतुर विध संघके गुणोंमें अनुराग और प्रीत करके उनका बात्सल्य और बैयावृत्य करनेमें तत्पर होतेहैं॥ हम समस्या करते हैं कि औषधालय नियत होनेसे सभाका मनोर्थ भले प्रकार सिद्ध होगा॥

गंधपूजा

जैन बोधक शोलापुरका ऊपर लिखें विषयमें इस प्रकार लिखेहैं॥

गंध यह द्रव्य प्रतिमाजीके चरणोंके ऊपर लेपकरें किंवा प्रतिमा जीके आगे चढावे इस प्रश्नबद्दल बहुत ठिकानोमें चर्चा होतीहै॥ कितनेक लोक कहतेहैं कि प्रतिमा जीके चरणोंपर गंध लगाना लेप करना नहीं चाहिये इस प्रकार कहने वालेलोक तेरह पंथाहैं॥ परंतु कर्नाटक और द्राविड देशों में तेरह पंथीलोक मूलमेंही नहीं हैं कारण यह कि वहांके बहुतसे लोक भट्टारक क्षेत्रपाल और पद्मावतीकी पूजा करने वाले निश्चयकर तेरहपंथी नहीं कहे जा सक्तेहैं॥ उसमेभी स्वतः भट्टारक जी और उनके शिष्य बडे विद्वान पंडितोंकी सम्मति लेनेसे इस विषयमें निष्पक्षपात उत्तर मिले एसा माननेमें कुछ हरकत नहींहै॥ श्रवणबेलगुल निवासी भट्टारक चारुकीर्त्तिजी और ब्रह्मसूरि शास्त्री जी वा पार्श्वनाथ शास्त्रीजीकी इस विषयमें सम्मति उनके दस्त खत्त सहित हम यहां देतेहैं॥

(ऊपर लिखा हुआ मराठी

लेखका आशयहै)

—०००—

भट्टाकलंकदेव संहितायां अष्ट विधार्चन लक्षण निरूपणावसरे अभिहित श्लोकः॥ पूजायां जल गंधादीम प्रयुंजीत यथाविधि॥ भृंगारेण सनालेन मितपात्रेण वाजलं॥ १॥ पातयेत् पंचकृत्वो ग्रे पूजनेपरमेष्ठिनां॥ तथैव चं दनरसानक्षतानांचपूंजकान्॥ २॥ हस्तायां पालतोवापि कुर्यात्पं चैव दक्षिणात्॥ पुष्पाणि पा णिपात्रस्यान्यादरेण प्रयच्छत्॥ चरुंस्वर्णादिपात्रस्थ मुत्क्षिप्यात्र निवर्तयत्॥ अथवा तत्र सुरभि मुद्रां संदर्श्य कल्पयेत्॥ समर्च्यदीप मा जानो समुद्धार्य क्षणस्थितं॥ जिर्यग्प्रसार्यंयुगपत् त्रीन्वारनपुरतः क्षिपेत्॥ एवमाकुक्षिचाकंठं पुनरा पादकंठकं॥ शनैः शनैरथोधोथ निवर्त्त्यपुरतः क्षिपेत्॥ अथ धूपा तिमप्येवं फलानितु यथोचितं॥ रचनीयानिपुरतः पार्श्वतोपियथा रुची॥ जलादि वस्तुरचितमर्घ्यं धृत्वा करद्वये॥ दीपातिवन्निवर्त्यै वलन्वारान् पुरतः क्षिपेत्॥ यथा हि मंगलद्रव्यं शांतिधारातु दक्षि णात्॥ आवामदेशमापात्या पुरः पुष्पांजलिक्रिया॥

पुनः प्रश्न— काश्मीर कृष्णाग रुगंधसार॥ कर्पूर पौरस्त्य विले पनेन॥ निसर्ग सौरभ्य गुणोल्वणा नां संचर्चयाम्य त्रियुगजिना नां॥ १॥ इसश्लोकसे ऐसा अर्थ होताहैके जिनप्रतिमाके चरणऊपर चंदन विलेपन करनां सो इसका समाधान कैसा है:

समाधान– कर्तव्य विषयमें वि धिप्रमाण है विधी शास्त्रमे लिखा है भट्टाकलंक संहितामे ऊपर लि खेहुये पूजायां गंधादीन' इत्यादि श्लोक लिखेहै उसपरसे प्रतिमाके आगे चंदन चढाना ऐसा लिखाहै और हमारे पास दशसंहिताहैउस

मे कहांभी प्रतिमाके चरण ऊपर चढाना ऐसा नहीं लिखा है चरण अग्रे चढावना ऐसा लिखाहै चरण ऊपर चढानेसे प्रतिमाके वीतराग तामे किंचित् न्यूनता होतीहै और आगे चढानेसे संपूर्ण वीतरागता कायम रहतीहै हमारे कर्नाटक द्राविड, और मूडबिदरेके मुलखमे यह शास्त्रप्रमाण मुजब शिष्टाचार प्राचीन कालसे प्रतिमाके अगाडी चढावनेका संप्रदायहै तुमने जो श्लोक' काश्मीर कृष्णागरु' इत्यादि कहा सो कोनसे आचार्यका है सो मालूम नहीं बक्तप्रामाण्यात् बचनप्रामाण्य। इस श्लोकका कर्तातो मिलता नहीं, तथापि इसका चर्चा शब्दका अर्थ चरणकूं लगाना ऐसा करेतो बाधाआती है जहा मुख्यार्थकूं बाधा आवेगो वहाँ लक्षणार्थ स्वीकारकरणा जैसा 'गंगायां घोषः' कहनेसे गंगाके प्रवाहमे गांवहै ऐसा अर्थ हुवा तो असंभाव्य होताहै उस सबबसे गंगायां इस शब्दका अर्थ 'गंगा तीरे घोषः' कहिये गंगाके तीरमे गांव है, ऐसा लेणां वैसाही लेपन शब्दकूं तथा चर्चा शब्दकूं लगाना ऐसा अर्थ करेतो एक पुनरुक्त दोष, दुसरा विधीके विरुद्धार्थ दोष, और तिसरा वीतराग हीनता, दोष ऐसे तीन दोष लगते हैं. ए तीन दोष निवारणके वास्ते विलेपन शब्दकूं चदंन द्रवार्थ, चर्चा शब्दकूं अग्रे समर्पण ऐसा अर्थ करनां और नेमिचंद्र देवोक्त प्रतिष्ठा तिलके ॥ गंधश्चंदन गंध बंधुरतरो यद्दिव्य देहोद्भवो॥ गंधर्वाद्यमरस्तुतो विजयते गंधांतरं सर्वतः ॥ गंधादी नखिला नजेतिविशदं गंधादि मुक्तो पिच: ॥ तंगंधाद्यध गंध मात्र हतये गंधेन संपूजये॥ एतत् बचन प्रामाण्येन भगवज्जिनेंद्र चरणारविंदाग्रे चंदन समर्चन करणां सोही दिगंबर आम्नायकूं उत्तम है.

(सही कानडी) इदं ब्रह्मसुरि शास्त्रिणा मिहितं

(सही द्राविड) अयं अभिप्राय: चारुकीर्तिपंडिता चार्यवर्य स्वाम नांच संम्मत:

(कानडीमध्यें)

अत्रचंदनादि गंधद्रव्यमपिजि नचरणोपरि नचर्चनीयं अपितुचर णाग्रत: (पुरत:) अर्चनीय मि ति॥ स्वतिश्री श्रवणबेळगुळ पुर स्थित पार्श्वनाथशास्त्रिणोक्तं। अपि तुस्त्रियोमि श्रीजिनप्रतिमा हस्ता दौनस्पर्शनीया इतिममाभिप्राय॥

॥ बिरादरीके खर्च॥

इसमें किसी तरहका संदेह नहींहै कि इससमयमें बहुधा लोक निर्धन और दुखी होतेजातेहैं॥ बहुतसे कुटंब एसे देखनेमें आतेहैं कि जिनको एक बारभी पेटभरभो जन नहीं मिलता और कपडे गह नेकी तो कथा ही क्या जाडेमें ठंडे मरतेहैं॥ इस अवस्थापर पहुच नेके व्यापारकी कमी दुर्भिक्ष और फिजूलखर्ची आदि अनेक कारण हैं लेकिन उन सबमें बिरादरी सं बंधी बिबाहादि कार्य्योंकी रीत रस्म पूरा करनेको सामर्थसे बा हिर खर्च करना मुख्य कारण मा लूम होताहे, बिबाहादि कार्य्योंमें झुंठी नामवरी और थोथी प्रतिष्ठा पानेको या शेखी दिखाने और किसी दूसरे भाई या पडोसीके कि ये हुये कार्य्यको तुच्छ और अपने को अधिक दिखा उनका मानखं डन करनेको बहुतसे मानी पुरुष अपनी जिमीन जाएदाद और जवर वगहरे वेचकरभी खर्च करदे तेहैं और निर्धन होकर अपने स्त्री पुत्रादि कुटंबको दलिद्रकी अवस्था में पहुचातेहैं और आपभी खेद खिन्न होतेहैं कर्ज रूपी पथ्थर बांध कर दुख समुद्रमें आप डूबतेहैं और अपनी संतानको डुबातेहैं॥ इसका नतीजा यह होताहे कि धनही

नहोनेके कारण वे व्यापार आदि रोजगार नहीं करसक्ते और जाय दाद जेवर बिकजानेसे उनको बाजारमें उधारभी नहीं मिलसका कि जिसकी मददसे व्यापारकरै और विद्याहीन होनेके कारण मुनीमी आदि नौकरीभी नहीं कर सक्ते इस प्रकार आमदका बंद होना और खर्चका जारी रहना दिन २ कंगालीको पहुचाता जाताहै॥ इसी रीतिसे बहुतसे भाई जो अच्छी अवस्थामेंथे और प्रतिष्टत समझे जातेथे सो अब निहायत गरीब और कंगाल होगयेहैं बडी मुशकिलसे अपनी गुजर करतेहैं उनकेपीछें उनकी स्त्री और पुत्रोंकी क्यादुख अवस्था होगी और वे क्यों कर अपनी गुजर करेंगें इस खयालकेकरनेसे हमारा हृदय विदीर्ण होताहै सरीर कांपताहै और आंखोंसे आंसूकी धारा पडतीहै॥ वे बिचारी अबला। जिनका धूप देखकर बदन कुमलाताथा कभी पानी पीनेका गिलासभी नहीं माजतीथी सो इस फजूल खर्चीकी मारी हुई चक्की पीसकर अपना पेटभरैगी और वे सुकमाल बालक जो हमे शह मिठाई खाते और दूधबताशे पीतेथे सो अब रूखी सूखीरोटी खांवेगे और धनबानोके खिदमतगार या पंखाकुली होकर अपनी जिंदगी काटेंगे॥ प्रियभ्रातृगणों यह डरांवनी तसवीर हमने अपने दिलसे नहीं खींचीहै किंतु यह अवस्था हमारे प्रत्यक्ष देखनेमें आती है और आपकेमें भी अवश्य आती होगी सो बिचार करलो॥ और गरीब अबलाओ और अनाथ बालकोंको दुखसे बचानेके लियें इस बिरादरीका फिजूल खर्चीको बंद करनेका उपाय शीघ्रकरो॥

बिरादरीकी रीतरस्मका सुधार होसक्ताहै या नहीं॥ बहुतसे भोले भाई कहदेतहैं कि येरीत बडेरोंकी

बनाईहै सो बंद नहीं होसक्ताहै सबको करनीही चाहिये सो एसा कहना उनका नादानीहै ॥ जैन धर्मको आम्नायसे सबको इखतियारहै कि देश कालकी जोग्यता देखकर श्रावकाचारके अविरुद्ध अपने निर्विघ्न गृहस्थ धर्म पालने और संक्लेशरहित परणामोकी विशुद्धता रखनेको हमेशहनेयेरीति रिवाज नियत करलेवे और पुराने रिवाज जो धर्म साधनमें हान कारक और संक्लेश बढाने वालेहैं उनको तुरंत त्यागदें ॥ धनहीन कर्जदार होनेसे चित्तको थि रत नही रहती परणाम हमेशह संक्लेश रूपरहतेहै और संक्लेशमें धर्म नहो पलता ॥ ज्यों २ धर्ममें सिथलहोताजाताहै त्यों २ अन्याय और अधर्म मार्गमें प्रवेश करताजाताहै जिसका फल यहांपर कारागार जेलखाना और परलोकमे नर्क तिर्यंचवे दुखपाना पडताहै ॥ बहुत प्रलाप कर क्या धर्मात्मा गृहस्थीयोको कृपण बुद्धिछोड अपने मर्यादा की रक्षा निमित्त पूर्वसंचित धनकी और न्याय सहित धन उपार्जन करना और उसके छः विभाग करके एकको दानपूजा परोपकारमें लगाना दो तथा तीनको कुटंब केपालनेमें लगाना एकको विवाहादि कार्योंके वास्ते संचित करना और एकको पूंजी बढाने के वास्तेरखना उचितहै ॥

विवाहादि कार्य्योंकी रीतरिवाज एसे होने चाहियें कि जिनसे पंचायतीके गरीब और अमीर सब भाईयों पर खर्चका बोझ बरोबर आनपडे जैसे कोई भाई जिसकी आमदनी २०००) सालीयाना वह १५००) रुपये खर्चकरे तो हजारकी आमद वाला साडे सातसौ लगावे और पांचसौकी आमद वाला पौनेचारसौ खरचकरे और यदी सौ रुपयेकी आमदनी (बहुतसे भाई एसेहैं कि जि

सो रुपये सालकीभी आमदनी नहींहै) तो उसका कामपंचपिच हत्तर रुपयेमें करादेंवे और किसी तरहकी शिकायत नहीं होने पावे॥ इस प्रकार बंदोबस्त होनेसे बिराद रीको बडा लाभहोगा॥

लेकिन बिरादरीकी रीतरस्मो का बंदोबस्त करना एक आदमीके हाथमें नहींहै इसलियें सर्व पंचो को आपसकी ईर्षा और द्वेष छोड कर सर्व बिरादरीके लाभार्थ सर्व सम्मतिसे रीतरिवाजका बंदोबस्त करना उचितहै जो पुरानी रिवाज लाभ दायकहैं उनकोरखे और जो हानकारकहैं उनकी जगह नयेलाभ दायक रिवाज बनादेवें लेकिन इनसब रिवाजोपर निगाह कम खर्चपर रखनी चाहियें क्यों कि नया धनकुमाना बहुत मुशकिलहै परंतु पुरानकी रक्षा करना सुगमहै सुगम कामको पहले करना वा जबहै धनरहनेसे लोगसुखी रहेंगे

नकुड

नकुडके अग्रवाल श्रावक भाई योंने अपनी बिरादरीके सर्व रीत रस्मका बंदोबस्त करदियाहै उस की एक नकल हमारे पासआईहै और उसका कुछ संक्षेप नीचे लिख तेहैं उसको पढकर यकीनहै कि और २ शहरोंके पंचभी प्रबंध कर नेका उद्यम करेंगें॥

(१) सगाई पर लडका लडकी से कमसे कम एक बरस बडाहोना चाहिये—बडी सगाइ जिसमें हजारो रुपये खरच होतेथे और फिरत वगैरह सब मौकूफ

(२) ज्योंनारनगर वा नगर गिंदोंडा वा ब्राह्मणोंको गिंदोंडा और दक्षणा देना मौकूफ

(३) भातमें ५१) से ज्यादह नही दिये जांवेगें, और लडकेके भातमें तेल कपडोंका नहीं दियीजा वेगी और रुखसतके वक्त भातियों

को टीकेके रुपये नहीं दियेजावेंगे॥

(४) बरातमें नाच तमाशा रंडी नक्काल भांड अंगरेजी बाजा बागबाडी आतिशबाजी सब मौकूफ॥

(५) बरातमें २५ गाडीसे ज्यादा नही जांवेगी॥

(६) बागमें १००) से ज्यादह नही दियेजांवगे, जेवर और घोडी का देना मौकूफ

(७) पत्तलमें लडडू और इमरतीके सिवाय सब मिठाईबंद

(८) डोलेपर बखेर बंद

(९) जब दुलहन बिवाह मुकलावेके पीछे या किसी और वक्त सुसरालसे बापके यहां जातीथी तो बहुतसे जोडे कपडोंके और भाजी लेजाया करतीथी जिसमें सैंकडो रुपये खर्च होतेथे उसका लेजाना बंद कियागया॥

(१०) पूजा उत्सव मेले तमाशे मे जो जमाई मिलजाताथा तो उसको टोपियां खिलोने देतेथे जिसमे सैकडो रुपये खर्च होतेथे वह बिलकुल मौकूफ कियागया॥

(११) जबकोई मरजावे चाहै जवानहो चाहै बूढा बाजा नहीं बजाया जावेगा और ना उसपर बखेरकीजावेगी और ना एक दुशालेसे ज्यादह डाले जांवेंगे और बिरादरीमें कोई भाजी मट्ठे आदिक नहीं दीजावेगी और न कुछ खाना (ज्यौंनार) कियाजावेगा औरतोंका बेहूदा बकना बंद शांपा सिरफ १५ दिन रहैगा॥

१२ कोई शखश बेटाकी एवज रुपया नही लेनेपावेगा और ना कोई देने पावेगा दर सूरत सावित होनेके बिरादरीसे भाजी बरतन अलहदह कीजावेगी॥ दर सूरत मुफलिसी नादारीके दाल चांवल दस आदमीयोंको खिलाकर बेटीका व्याहकर सक्ताहै और पंच उसके सब नेगटेले करादेंवेगे॥

पचास बर्षकी उमर वालेकी शादी नहीं होगी और अगर कोई करेगा तो बिला सूबूत दुखतर फरोशी (बेटीबेचना) समझा जावेगा

॥ चिठ्ठी ॥

प्रियवर॥ संपूर्ण आर्यावर्त्त निवासी जिन धर्म्मानुरागी सत्पुरुषों को ज्ञात हो कि जिन बचनानुसार न्याय पूर्वक बातूसल्यता युक्त धर्मात्मा पुरुषोकी सहायता धर्म की रक्षा निमित्त परस्पर प्रीतका वृद्धि करना यह प्रथम मुख्य गुण श्रावकोकाहै जबतक यह गुण गृहण नही होगा धर्मकी रक्षा और वृद्धि प्राप्ति होना असंभवहै परंतु कई महाशय कालको दूषण देतेहैं यह भी विचारांशसे भिन्नहै. केवल परिणामोंहाका गुण दोष मुख्यहै यह वार्त्ता सिद्धांतासे द्रढहै सो बुधीमान सज्जनोको भली भांति ज्ञातहै इस कारण हमारे साधर्म्मी भ्रातृगणोंको यह गुण अवश्य धारकर परस्पर स्नेह बढाना और न्याय पूर्बक पंचायती जीविका आदिकरना और अन्याय रूपी अंधकारको स्वजातिमेंसे निकालनेका उपाय सीघ्रतासे करना उचितहै॥ देव गुरु धर्म जिनवाणीका विनय और साधर्मीजनोंकी सश्रूखायथोचित जिना ज्ञानुकूल करना योग्यहै॥ यदि विद्वान धर्मज्ञ पुरुषों में कोई कारणपाय किसी प्रकार कोई अवगुण सत्य दृष्टिगोचरहो तो योग्य बचनद्वारा एकांत स्थल में प्रीत पूर्बक सूचितकर निर्दोष करना उचितहै नकि व्यर्थ द्वेषवृद्धि कर मिथ्या दूषण आरोपण करने में कटिबद्धहों यदि जिन धर्मके रसिक धर्मानुरागी होय तो अवश्य जिन बचनानुकूल प्रवर्त्तें यदि विपरीति परणमें तो मिथ्यादृष्टी नर्कके पात्र होंयगे केवल मानाधीन बचनकी पक्षलेकर विपरीति ठानें तो नर्कगति अवश्यही प्राप्तिहोगी

क्या इसमें किसी प्रकार संशयहै॥ संपूर्ण मतका सार यहीहै॥ केवल विचार शक्तिकी हानिह परंतु स्याद वादमतसे सिद्धहै हम उन्ही पुरुषों को जैनी समझतेहैं जो जिन आ ज्ञाके दृढपालकहैं नहीं तो केवल नामही जैनी होनेसे क्या लाभहै॥

महाशयों इस साल भाद्रपदके वृत्तोंके दिनोमें शुक्ला ११ को प्र भात समय शास्त्रजीका पठन सभामें होरहाथा उसी समय को ई २ महाशय आपसमें विपरीत भंडवचनालाप कर अत्यंत क्रोधा तुर होगये और शास्त्रजीका पूर्ण अविनय हुआ तब शास्त्रजीको स्थलकर विसर्जन किया॥ पुनः कुछ कालके पश्चात विस्तारे गये मानों जिनवाणी एक बालकोंका खिलोनाही हुआ सो सब महाशयो ने देखा परंतु इस विपरीत कार्यके आगामी रोकनेका कुछ प्रबंध नहीं कियागया॥ तब कई महाशयों नें मेरेको शास्त्रजी बांचनेके वास्ते कहा तब मेने यह अविनय अनर्थ देख एसी उत्तम सहेलीमें शास्त्रजी बांचनेसे हाथ खींचलिया और कह दिया कि इस अनाचार का प्रबंध होजायगा कि आगामी शास्त्रजी का अविनय नहोने पावगा तो शास्त्रजी बांचनेको तत्परहूं नही तो धर्मका अविनय कराना हमको स्वीकार नहींहै तब संपूर्ण भाईयों ने सून्य खींची और परस्पर मुह देखादेखाके सिवाय कुछ प्रबंध नही हुआ तब और भी एक दो भाईयोंने शास्त्रजी सभामें बांचने से हाथखींच लिया तथापि कुछ परवाह नहीं धर्म तो खिलोनाही है इससे एसा जानागया कि यह अविनयसे प्रसन्नहैं॥ तबसे अब पूर्ण रूप शास्त्रजीका व्याख्यानहोता है सो पूर्व उपरोक्तलेखसे ज्ञातही होजायगा॥ क्या यही धर्मकी वृद्धि होनेका उपायहै किस प्रकरा

धर्मकी उन्नति होनेकी आशाहै शास्त्रजीका उपदेश सुनते २ आयु भी पूर्ण होनेलगी तो क्या लाभ हुआ जैसे चकमक पाषाण हजार जलमेंरहै परंतु आग्निको नछोडे वैसेही यहभी ॥ संपूर्णभद्रपुरुषों को इसके ऊपर अपनी २ राय देना उचितहै ॥

संम्पूर्ण जिन मतानुयाई धार्मीक
सत्पुरुषोंका शुभचिंतक
बालमुकुंद श्रावकगोधा
कामठीकी छांवनी

अनुमति ॥ मंदिरजी धर्मायतन धर्म साधन करनेका ठिकानाहै इसकारण सर्व साधर्म्मी भाईयों को उचितहै कि वहांपर सिवाय धर्म कथाके दूसरा कार्य कदाचित भी नही करें ॥ वहुधा स्थानोंमे पंचायती काररवाई मंदिरजांके साथमेंहै इसकारण वहांके पंचोंको मंदिरजीमें कुबचनादि अयोग्य क्रिया करनी पडतीहै जिनसे देव गुर धर्मका आविनयभी करनाही पडताहै इसलिये सर्व भाईयोंको उचितहै कि मंदिरजीमेंसे पंचायती महकमेको न्यारा तुरंतकर दें जिस से उनको मंदिरजीमें कुवचनादि अविनवय और अयोग्य यापाचार रूप क्रिया नही करनी पडे और निर्विघ्न धर्मका साधनहोवे ॥

॥ विज्ञानप ॥

जैन विद्यालयकी प्रथम परीक्षा जिसका विज्ञापन बैसाख स: १९४८ में दियाथा सो इस कार्त्तिक में नहीं हुई कारण यह कि किसी भी पाठशालासे विद्यार्थी पढकर तैयार नही हुये और इसी कारण इनामभी नहीं बटा इसका हमें बडा रंजहै ॥ अब हम सर्व जैन पाठशालाओंके प्रबंधकर्त्ता तथा अध्यापक और विद्यार्थीयोंसे प्रार्थना करतेहैं कि वे आसोजके जैन

प्रभाकरके अनुसार बैसाख स १९४९ की परीक्षाके वास्ते पढाने और पढनेमें अवश्य उद्यम करके इमतिहानदेनेका उद्योग करेंगें जिससे जैन विद्यालय भंडारके नियत होंनेका लाभ सर्व भाईयों को ज्ञातहोजाय और जैन धर्मकी विद्याकी बढवारी होवे॥ इस परीक्षाके वास्ते प्रारंभ करनेकी मिती का कुछ नेम नहींहै प्रारंभ कभी का किया हुआहो परीक्षाके समय तक नीचेलिखे प्रमाण नियत किये हुये पुस्तकोंको पढलेना चाहिये॥

प्रथम परीक्षा

१ रत्नकरंड श्रावगाचार संसकृत श्लोक ८० कंठ अर्थ सहित

२ लघुकोमुदी पंचसधि साधन का सहित

३ हिसाब आनापाईका भाग तक

द्वितिय परीक्षा

१ रत्नकरंड श्रावगाचार संस्कृत संपूर्ण कंठ अर्थ सहित

२ द्रव्य संग्रह प्राकृतगाथा संपूर्ण कंठ अर्थ सहित

३ लघुकोमुदी षट लिंगपूर्ण साधनका सहित

४ हिसाब त्रैराशिक आदिसत्तराशिकतक

इनदोनों परीक्षाओंमेंसे जो जो विद्यार्थी जिस जिसके वास्ते तैयार होनाचाहैं उनकेनाम कृपा कर हमारे पासलिखभेजें

मुरादाबाद जैन पाठशालाके विद्यार्थीयोंकेनाम रजिष्टर करलिये हैं और अलवर इलाहाबाद जैपुर खुरई इंदोर लशकर दहली सहारनपुर करहल फिरोजाबाद इटावा अंबेटा एटा आदि पाठशालाओंमें भी विद्यार्थी इन परीक्षाओंके देनेके लायकहैं सो उनके नामभी अवश्य रजिष्टर करादेने चाहिये

इनामकी रकम अगले पत्रमे लिखेगे॥

शोलापुरके श्रावक भाईयोंने रु: ३८०००) जमा कियहैं कि उनके व्याजसे चार प्रकारका दान होतारहै धन्यहै ॥

जैन विद्यालय भंडार

१७१२॥) आसोज बदी १५ सं १९४८ तक जमा

१) बालचंद्रजी इन्द्रसाबजी एवला
५) दयाचंद्रजी खूबचंद्रजी गूना
५) भूरेदासजी पेमचंद्रजी ॥
५) छीतरमलजी हजारीमलजी॥
५) पन्नालालजी गोधा॥
२) जवाहरमलजी चत्रभजजी॥
१) दलसुखजी रोडमलजी॥
१) चुन्नीलालजी हरलालजी॥
२) मनसारामजी ननुलालजी ॥
१) कन्हैयालालजी बेटा हीरा लालजीका कोटा
१) भूरालालजी सभोदरावघेर वाल कोटा
१) मुथरालालजी भूरालालजी अग्रवाल॥ कोटा
१) अमनसिंहजी अर्जी नवीस दिल्ली
१) मंगलसेनजी चिलकाना
२) लक्ष्मीचंद्रजी सेठी नसी राबाद वालेकी बूजीसाहब

१७४६॥) जोड मगसिर बदी १५ सं १९४८ तकका

———ooo———

लाला क्षेमराजजी पाटनी नयानगरका व्याहभा जैनरीत्यानु सारहुआ और देखने वाले भाईयों को बडा आनंद हुआ

कईजगहोंसे बिबाह पद्धतिकी मांग हमारे पासआईहै नकल करानेका प्रबंध कररहेहै लेखक अछा मिलनेसे लिखाकर भेजे जों वेगे ॥

केकडीमें अमृतसंजावनी जैन औषधालयका काम बहुत अच्छा चलरहाहै सैकडो बीमारोंको शुद्ध प्रासुकदवाई दीनीजातीहै

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा नें

प्रकाश किया

नम्बर १०

मिती पोह सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा

॥ विज्ञान ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचै प्रार्थना है कि वे इसको संपूर्ण पढकर अपने पुत्रमित्रोंको पढनेके वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे श्रावग एकत्रहों पढ कर सुनादें ॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संबधी नई वार्त्ता पत्रमें छापनेको भेजें ॥जो भाई पत्र लेना चाहै हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालेवें ॥

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=)बाहर वालेंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने छपैगा ॥ २ वातसल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना,विद्या धन धर्म ज्ञानकी उन्नति करना इसके उद्देशहै ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलोटीकिल् वा मतमतांतरका झगडा इसमें नहीं छपैगा ॥

मूल्यप्राप्ति

१)जैनसभा सारोल मा.सभा झालरापाटन २)भरूंलालजी गोदा जपुर १) हजारीमलजी बगतावरमलजी दाध्या१)फतेलालजी इन्दोर२)खरातीमलजी सावहारा १) गंगारामजी हीरालालजी नागपुर १) श्री पंचानकठुमर १) क्षेमराजजीककडी १)रिखवदासजी खादेडा२)श्रीजैनपं चलसकर १)इमरतलालजी नसीराबाद १) मुनालालजीनाहन १) मुतसद्दीलालजी १)सोहनलालजी १) शब्रामलजी छावणी अंबाला१)सोहनलालजी कालका २)श्रीजैनमंदका मा हरकचंदजीसोगाणी ॥=) लिखमीचंदजी सेठी अजमेर १)नन्नेमल जौहरी जसाखेडा २१)

नोटिस विक्टोरियाप्रेस अजमेर

विदित होकि हमने रबरकी मोहर बनाने का कारखाना खोला है जिन महाशयों को बनवाना हो अपनानाम पता लिख भेजें ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर १० } अजमेर पोह सुदी १ संवत् १९४८ { अंक २

जैन चतुर्विध दानशाला

मिती कार्त्तिक शुदी ११ गुरवार सं १९४८ मुताबिक तारीख १२ नवंबर सं १८९१ ई के दिवस शोलापुर निवासी श्रावक समुदायने अपने धनको दान और परोपकारमें लगाकर जैन धर्मकी महान प्रभावना करनेके अर्थ एक "जैन चतुर्विध दानशाला" नियत करीहै और यह बिचार निश्चय कियाहै कि इस दान शाला के भंडारके मूल रुपयेके व्याजसे जैन सासनकी आज्ञानुसार चार प्रकारका दान हमेशह बटता रहैगा, प्रथम आहार दान याने गरीब भूखे दीन अनाथ लोंगोको शुद्ध भोजन दियाजायगा, द्वितिय औषध दान अर्थात् बीमार लोगोंको शुद्ध प्रासुक औषध दवाई दीनी जायगी, त्रितिय अभयदान अर्थात् दुख संकटमें पडे हुये प्राणीयोंकी पीडा मिटाई जायगी तथा पांजरापोलमें जानवरोंको मदत दी जायगी, चतुर्थ ज्ञान दान अर्थात् जैन धर्म बंसंधी विद्या ज्ञानकी

वृद्धिकरने पढने पढानेका उपाय किया जायगा ॥ यह चार प्रकार का दान सदा कालसे श्रावक कुल में होता आयाहे और आगे बडे २ दानी पुरुष अपने कुलमे प्रकट हुयेहैं जिनकी पवित्र कथा शास्त्रो में विष्यातहै जो कि दानके प्रभावकर इंद्र चक्रवर्त्यादि पदवी के सुख भोगकर अजर अमर पदको प्राप्त हुये परंतु कालदोष तथा अज्ञान प्रमादके बस होकर आज दिन जैनी अपने सनातन धर्मको भूलरहेहैं और थोथी नामवरीके वास्ते हजारों रुपये खर्च करतेहैं परंतु उत्तम दान देनेकी रुचि कम रखतेहैं एसे समयमें शोलापुर निवासी श्रावक भाईयोंको धन्यहै कि जिन्होंने इस उत्तम दानके मार्गको नये सिरसे प्रचलित करनेका उद्योग कियाहै ॥

इस जैन चतुर्विध दान शाला का भंडार नियत होगयाहे और नीचे लिखे प्रमाण रकमे जमा होगईहैं ॥

७५०१) हरीभाई देवर्ण
६१०१) हरीचंद परमचंद
५७०१) बस्ताखुसाल
४२०१) मोतीचंद परमचंद
२५०१) सखाराम खुशाल
१५०१) रायचंद खुशाल
१३०१) रामचंद साकला
१२०१) सखाराम नेमचंद
११०१) मोतीचंद खेमचंद
१००१) नानचंद खेमचंद
१००१) पदमशी नाहालचंद
१००१) जोतीचंद नेमचंद
१००१) गौतम नेमचंद
१००१) पदमशी कस्तुर
१००१) मलुकचंद गणेश
१००१) रामचंद गोवनजी
३८११६) जोड

इस प्रकार रकमें जमा होगईहैं सो आठ आना सेकडेके व्याजपर मोतबिर ठिकाने जमा होंगी और

रकमके बढानेका प्रयत्न उघाई हो रहीहै सो बहुत जलदी एक बडा भंडार तैयार होजायगा॥ औषध शालाका काम जारी होगयाहै और एक जैनी वैद्य बलवंत नेमाही जी उपाध्याय इसका काम करतेहैं॥

एक दमसे इतनी बडी रकमका जमा होना बडा आश्चर्य कारी कामहै और इस समाचारके पढने से सर्व जैनी भाईयोंको बडा हर्ष होनाचाहिये तथा उन सबको इस उत्तम कार्यमें अपनी सामर्थ प्रमाण सहायता करनी चाहिये॥

और और नगर निवासी श्रावक भाईयोंको भी उचितहै कि एसे उत्तम कार्यको अपने २ शहरों में नियत करनेका उद्योगकरें क्यों कि धनाढयलोग हर जगह मौजूद है और वे अपना धनभी खर्च करतेहैं परंतु अब और कामोंमेंसे बचाकर रुपयेको एसे दान और परोपकारमें लगाना वाजिबहै॥ हमको पूरा २ यकीनहै कि अगर जैनी एक सम्मतिहों तो सर्व कार्य सुगम होजांयगे और जस और धर्मका बडा लाभहोगा॥

आपसकी ईर्षा

इतिहासोंके पढने वालोंको अच्छी तरह मालूमहै कि आपस की ईर्षा और द्वेष करनेसे कितने बडे २ नुकसान हुयेहैं और कितने राज कारिंदोंकी आपसकी ईर्षासे नष्ट होगयेहैं॥ एक समय था कि फरांसीसीयोंका राज इस भारतवर्षमें बडी उन्नति परथा परंतु जो कामदार लोग उस राजकी उन्नति यहांपर कररहेथे उनसे फरांस देशके कारिंदे बहुत ईर्षा करने लगेथे बजाय धन्यवाद और उनके औहदे बढाने और प्रतिष्ठा करनेके उनकी बुराई वा अजसदेने लगे न[illegible]

कि अच्छे कारिंदोंके मन मलीन हुये और वे अपने हाथ खींच उदास होकर घरमें बैठे तब उन की जगहपर और लोगोंने जो राज कामसे वाकिफ नहींथे उन्हों ने पहलें कभी कोई काम नहीं कियाथा नातजुरबेकारथे अपने घमंडमें काम करना प्रारंभ किया और पहली कीहुई सब काररवाईयोंको लोट पोट करदिया बस इसी कारण रफते २ फ्रान्सका सारा राज हिन्दुस्तानमेंसे जाता रहा ॥ लेकिन इसमें नुकसान नतो इन कारिंदोंका कुछ हुआ और न उन कारिंदोंका कुछ हुआ जो कुछ हुआ सो सब फ्रान्सके शहनशाहका हुआ कहनावत मशहूरहै कि फक्कड़ फक्कड़ लडपड़े खपड़ो की हानि ॥

इसके विपरीत अंगरेज बहादुरके यहांकी काररवाई पर दृष्टि कीजिये ॥ उनके यहां पर रिवाजहै कि जो हाकिम अच्छा काम करताहै उसकी बडी इज्जत होतीहै जागीर और बडे २ खिताब दिये जातेहैं ॥ इसी कारणसे प्रत्यक्ष देखलीजिये कि सरकारी राज्य दिन २ उन्नतिपर होता चलाजाताहै ॥ राज्य और प्रजाके सर्व साधारण जनोके फायदेके काममें वे अपनी निजघरू ईर्षा वैर विरोध को भूलजातेहैं और जो पुरष सर्व साधरणके लाभका कार्य करताहै उसकी हरेक अंगरेज चाहै वह उसका मित्रहो चाहै शत्रुहो उस कार्य संबंधी तो वह उस पुरुषकी प्रतिष्टा और बडाईही करताहै इसीसे कारिंदोंके मन बढतेहैं और वे अपने जानमाल झोंककरभी हमेशह सर्व साधरणके लाभके वास्ते उद्यम करतेरहतेहैं और अनेक कष्टउठाकर कार्यको सिद्धि भी करलेतेहैं ॥ लेकिन अगर किसी कारिंदेसे नुकसानभी होजावे तब

भी वे उसकी बुराई नही करते किंतु यही कहतेहैं कि इसका अभिप्राय तो अच्छा हीथा अबकी बार काम बिगड़ गयाहै तो कुछ परवा नहीं दूसरी दफे ठीक २ करै गा और फिर वे उसके साहसकी प्रसंसाही करते और उसके दिल को बढातेहैं और जिन कारणोंसे नुकसान होजाताहै उनको दुरस्त भी करदेतेहैं परंतु बडे प्रेमके साथ

हमारे लिखनेका अभिप्राय यहहै कि हमारे संघमें एसे साह सी और परोपकारी पुरुष बहुत थोडेहैं जो अपना धन और समय सर्ब साधरण जैनीयोंके हितार्थ लगातेहैं इसलिये सर्ब भाईयोंको उचितहै कि एसे परोपकारी पुरुषों की सश्रूखा और प्रतिष्ठाकरैं उनके दिलको किसी प्रकारसे दुखावैं नही अपने निज लाभके वास्ते सर्ब संघका नुकसान करना बडा अयोग्य अजस और पापका काम है॥ हमारी सर्ब भाईयोंसे प्रार्थ नाहै और इटावेके भाईयोंसे खास करहै कि आप इस लेखपर बिचार करैं और निजके फायदेके वास्ते सर्ब साधरणका नुकसान जिससे होय वह काम हरगिज नहीं करै॥

बने हुये अच्छे कामको बिगाड कर फिर उसको बनाना बहुत कठिनहै॥ जैनियोंकी जो कुछ हीन अवस्थाहोरहीहै उसका मुख्य कारण आपसकी ईर्षा और राग द्वेषहै इसलियें उन्नति करने वाले सर्ब बिबेकी भाईयोंको उचितहै कि जिस प्रकार रागद्वेष नही उत्पन्नहों वेसे करैं॥

विद्यादान उपदेश प्रकाश सभा वर्धा

इस सभाका वार्षिकोच्छव मिती कार्त्तिक सुदी ५ सं १९४८ को बडे हर्षसे हुआ इस उत्छवके अर्थ सेठ संगई बबूलालजी परवार

सेठ बन्सीलालजी परवार उमरा बतीसे आयेथे और गांव पर गांव के श्रावक भाई तथा अन्यमतीय सभ्यलोकमेलेहुयेथे॥ वर्धाके प्रसिद्ध सेठ पछराजजी और सेठ फूलचंद्रजी अगरवले इनकी इस उत्छवमें बहुतसी सहायता मिली

प्रथम सभामें धर्म्मी उपदेश हुआ और फिर जिनेश्वरका गीत नृत्य बाजित्रके साथ स्तुति हुआ त्पतश्चात विद्यार्थीयोंकी परीक्षा चौबीस ठानाकी चर्चा और दश लक्षणाजीके दश अंगके अर्थमे हुई बालकोने प्रश्नोंके उत्तर बहुत अच्छे दिये जिससे समस्त सभा को अत्यंत आनंद प्राप्ति हुआ॥

विद्यादान सभाके अर्थ यह तेरह महीनामें जो जमा खर्च हुआ था जिसका हिसाब सभाके सेक्रेटरी जिनदासनारायणजी चवडे वर्धाकर इनोने तफसीलवार वांच कर सुनाया जमा ५३८॥=) खर्च ४०१॥-) लोगोमें लेना ७६॥) नगदी सिलकमे ६०=) सेक्रेटरी नेमचंद्र नारायणजी चवडे वर्धाकर इनका व्याख्यान बहुत रसिक और धर्मोन्नति योग्य हुआ

प्रकाशकार बकारामजी पैकाजी रोडे पदमावती पल्लीवाल वर्धा इनका व्याख्यान धर्म्मोपदेश पर विद्या वृद्धिआदि रीत भांत यह विषयपर एक घंटाभर हुआ. फिर जयकार होकर सभा विसर्जन हुई॥ दूसरे दिन श्रावक पंचभाईयोंकी जामनार हुई॥

जिनदासनारायणजी चवडे

शोक

जैन सभा हिसारकी तरफसे एक लेख लाला जहरियामलजी साहब सभापतिके अकस्मात काल प्राप्ति होनेके अत्यंत शोकसे और उनके अनेक सद्गुणोंका प्रसंसाके बाबत हमारे पास आयाहै स्थाना

भावसे संपूर्ण मुद्रित नहीं करसके पढनेसे बहुत रंजहुआ और उनके सुपुत्र लाला मुतसद्दीलालजीको धार्य बंधातेहैं कि इस संसारकी अवस्थाको अथिरजान आप संतोष धारणकरैं और जिस प्रकार आपके पूज्य पिताजी सदा काल धर्म कार्य्यमें लगे रहतेथे वैसे आपभी सदाकाल धर्मका साधन और दान पूजा परोपकारी कार्य करतेरहैं॥ खुलासा उस लेख का यहहै कि लाला जाहरियामल जी साहब हिसारके बडे रईस और प्रतिष्ठित पुरुषथे म्युनीसी पेलकमेटीके मेम्बरभीथे और सरकारी हुक्कामोंसे बडी इज्जत पातेथे उनकी चिठ्ठीयांभी मौजूदहैं॥ बिरादरीमें आप सबसे अधिकथे आपने कितनेही बुरीत रिवाज बंद कर दियेथे और औरोंके बंद करनेकी कोशिस कररहेथे॥ लेकिन यह धर्म और परोपकार विषयमेंहै कि आज हमको उनके देहांत होनेसे बडाभारी नुकसान पहुचाहै जिसका अत्यंत शोककरना पडाहै॥ आपधर्म और परोपकारी कार्य्योंमें सबसे ज्यादह अपना तनमनधन लगातेथे जैन पाठशाला और सभा आपनेही नियत कराहै उनके खर्चका बंदोबस्तभी बहुत अच्छा करादियाहै और अपना निजवरुं भी बहुत कुछ रुपया धर्मकी उन्नति में लगातेथे। मंदिरजीमें नई वेदी भी बनवाईहै और प्रतिष्ठा करने का बिचार करतेथे इस वास्ते बहुत से विद्वानोंसे पत्र व्यवहार किया और इरादाथा कि उनकी सम्मति से जैन धर्मकी उन्नतिका कोई अच्छा बंदोबस्तकरैं मगर अफसोस वे सबविचार मनके मनमेंहीरहे और तारीख १० नवंबर सं १८९१ इ वक्त ७ बजे ५६ वर्षकी उमर्में जब भानकर बादामले मंदिरजी को जातेथे अकस्मात काल प्राप्ति

हुये और सरीर धन और भोगोंकी अनित्यता सबपर प्रगट करगये कि इस जगतमें जोउत्पन्न हुआहै सो अवश्य मरैगा यह काल इंद्र चंद्र धरणेंद्र चक्रवर्त्यादि किसी को भी नही छोडेग क्या राजा और क्या रंक कोईभी नहीं बचेगा ऐसा जानकर धन जोबन ऐश्वर्य कामद छोडकर सदा काल धर्म ध्यानमें रहना उचितहै क्योंकि नहीं मालूम किस जगह और किस समय मौत आन दबावे जब झोंपडी जलने लगे तब कुआ खुदानेसे क्या होवे इसलिये धर्मको एकक्षण मात्रभी भूलना नहीं चाहिये ॥

॥ कालदोष अविद्याकाफल ॥

विद्यानहोनेसे जो जो हानियां हमने अपने सफरमें देखीहै उनका संपूर्ण वर्णन करनेसे लेख बढताहै और बारलगतीहै दूसरे बिस्तार होनेसे हमारे जैनी भाई पढतेभी नहींहैं ॥ हमने जैन प्रभाकर वर्त्तमान समयके अमोलिक रत्नको बहुत जगह बंदही रखा देखाहै नतो वे लोग आपखुद पढतेहैं और न दूसरोंको पढनेके वास्ते देतेहैं महाशयों इसके पढनेके लिये एक नेम करलेना चाहिये या तो शास्त्रजीके बादमें १ तथा २ पत्रे पढकर सुनादियाकरें या जहां सभाहोतीहै वहां सभाके दिन अथवा महीनेमे कोई एक खास तिथिके दिन मुकर्रर करकें संपूर्ण पढकर सुनादियाकरें इस सममय अज्ञान अंधकारके मेटने जैन धर्म का उद्योत करने और कल्याणका सीधा राज मार्ग दिखानेको यह जैन प्रभाकर प्रभाकर कहिये सूर्य है इसके पढनेसे अवश्य मोहनींद उतरैगी और प्रमाद दूरकरके जो कोई भाई हिता हितका विचार करैगा वह अवश्य अहितके त्याग और हितके गृहण करनेमें उद्यमी

होगा॥ कालदोष और अविद्या के फलसे हमारे जैन धर्ममें कैसी हानि हुई और जो हमने रियासत कोटेमें प्रत्यक्ष देखीहै आपके पढ़ने और विचारकरने तथा उन्नति का कुछ उपाय करनेकी आशासे लिखाहै और दूसरी जगहका वर्णन अगले पत्र में छापने को भेजैगे इसलिये प्रार्थना है कि समस्त रुचिवान भाई जैन प्रभाकर में इसे देखकर पश्चाताप न करें वलके विद्या नहोंने से जैन कुल का अभाव जगह व जगह इसी प्रकार समझें॥

हमारे सूची पत्र के लिखने का प्रयोजन यह है कि प्रत्येक स्थान में प्रथम कितने घर जैनियों के थे और अभाव हो कर कितने घर अब वर्त्तमान में रहे और कितने मंदिर हैं (इसविषय को यथासंख्य लगा कर पढना चाहिये)

नाम स्थान कोटा प्रथम घर १४० वर्त्तमानघर ८० मंदिर ७॥ पलायता २५।०।२ बडेमनोज्ञहैं॥ डवा १५।८।१। वारान २०। १०।२। एक नसियां जहां श्री १००८ कुन्दकुन्दाचार्यजी का देहान्त हुआ तीर्थस्थान है॥ किसनगंज २०।१२।१॥ जलवाड़ा१५। १०।१ यहां के दसोघर अग्रवाल जैनी मिथ्याती हैं धर्ममें स्थित करने का उपाय किया जाता है॥ मन्वरगढ १०।सून्या॥१ अटर९ सून्या। १॥ आमली १०।२।१॥ देलुदहाथीका १५।६।१॥ सेरगढ २५। २०।१॥थाणो २०।१२। १॥ लुअवद १२।७।१॥ रेलावन ५०।३।२॥ यह रेलावन पहले बडा शहर था अब विलकुल ऊजडसा है हमने सेठमोहनलालजीसे कहादियाहै के ५० घरोंमें से तीनघर तुम्हारे रहे हैं अवभी जि

नाज्ञानुसार चलसी तोपातग न लग सी ॥ गई सो गई अबराख रही को ॥ बहुतक्रिया और गद्दी मंदिर जी में रखना जोग्य नहीं है क्योंकि मंदिर में अविनय करने से महा पाप होता है ॥ स्थान इटावा १५ । ७ । १ ॥ चौमा १० । ३ । १ ॥ सांगोद २० । १५ । २ ॥ आटुन ३० । २० । १ ॥ कलम्डा १० । ६ । १ ॥ कुनेउ २० । १५ । १ । नसियाभी ॥ पाटरा १० । ४ । १ ॥ खान पुर २० । १५ । १ ॥ चांदखेडी मं दिर १ बहुत मनोज्ञ तीर्थस्थान है जैनियों काघर एक भी नहीं है ॥ बडोदा १० । ६ । १ ॥ डीगोड १० । ३ । १ ॥ करौली १० । ४ । १ ॥ रामगढ । १४ । ४ । १ ॥ नसिया भी मांगरोल ० । ४ । १ ॥

सो यह सूची पत्र राज कोटे के जैनियों का है इसको जैनी भा इयों के विचारार्थ छापना जोग्य है ताकि उनको मालूम होजावे कौ वि द्या नहोने से जैनकुल को कैसी हो नि हुई है और अब भी अगर विद्या की वृध्दि नहीं की जाय गी तो आ इंदे और भी न्यून अवस्था होगी

डाकटर हरसहायमल
शफाखाना जलवाडा
राज कोटा

धन्यबाद ॥ अनेकानेक धन्यबाद हैं श्रीमान महाराजाजी साहब रि यासत कोटाको कि जिन्होंने परम दया और करुणा बिचारकर इस साल दशहरे (पापदशमी) के दिवस अनेक जीवोंकी हिंसा दूर करी जो बहुत दिनों से चलीआती थी याने तोपके ऊपर बकरामारना और रा वण के मरने से पहले भैंसे का वध अर्थात् मारना बिल कुल बंद कर दिया और अपनी कुल रियासत में हुकम करदिया कि आज कोई जी व हिंसा न करै ॥ हम निश्चय कर ते हैं कि इस जीव दया के समाचार

सुननेसे सर्व मनुष्यों को परम हर्ष होगा और जहां एसी होती होगी वहां के लोग महाराजोजी साहब के साहस और दया को देखकर हिंसा बंद करेंगे॥ और हमारे जैनी भाई जो राजदर्बार में नोंकर हैं ऐसे हिंसारूपी कार्य को दूर करने के लिये उपाय करेंगे और यह कोटेकी नर्जार उनको बहुत हितकारी होगी क्योंकि धर्म का मूल जीवदया है और यह सर्व मतावलंबीयों को इष्ट है॥

॥ चिठी ॥

लाला मंगलसेनजी चिलकाने वाले बडे सज्जन और स्वमतानुरागी भद्रपुरुषहैं आपको विद्या वृद्धि करनेसे बडा प्रेमहै वे लिखते हैं कि दहलाके मेलेमें शास्त्रजीकी सभा में अलीगढ जैन पाठशाला कायम होना और उसके फायदे सुनकर मेरे मन में बडा हर्ष हुआ ओर बिना किसी के कहे रु ५) रोकडी उस के खर्च को दिये और हर सालअपनी हिम्मत प्रमाण अपने पास से तथा और भाईयों से रुपया इकठा करा कर भेजतारहा और एक पाठशाला का ब्याहों में कायम करा दिया सो पंचायती कालेज के वास्ते कायमकरायाथा परंतु कालदोषसे सब जीवों के दिलों में एसा ममत्व पैदा हुआ के रुपयाहम दूसरी जगह नहीं भेजते अपने यहांकी पाठशाला में खर्च करैं गे सो सरसावा रामपुर आद कसबों में तो पाठशाला बैठ गइ परंतु चिलकाने सुलतानपुर दोनों कसबों में नतो कोई पाटशाला हुई और न कहीं रुपया भेजने की सम्मति है रुपया करीब ८०) चलकानेमें और १५०) सुलतानपुर में जमा है और रोज २ बढने कीआसा है॥ लेकिन एसा आदमी कोई नहीं जो दवाव देकर रुपया दूसरी जगह भिजवावे कोई एद दूसरे का कहना नहीं मानता॥

॥ दोहा ॥

में में में सब लग रहे नहीं जथारथ ज्ञान । इक में एसी होत है करै दोउ की हान ॥ गोर करने की जगह है दो छोटे कसबों में इतना रुपया जमा तो अगर सब कसबों और शहरों का रुपया सालदरसाल इकठा होके जैन विद्यालय भंडार मेंधाराप्रवाह पोहचतारहे तो बहुत जल्द रुपया जमा होजाय और किसी को भारी नहीं मालूम हो और उस भंडार से सब को लाभ पहुंचे ॥ मगर वगैर रुपये के आजतक कोन नहीं हुआ कालेजऔर नहो ने की उमेदहै मैंने अकेलेने रु: ५) दिये तो उससे क्या हो सक्ता है परतु हरएक जिले में से कोई रईस लायक साधर्मी दोचार भाई मिलकर कोशिस करने को उठे तो उन के साथ एकदो मुझसा तुच्छ पुरुषार्थीभी हो जायतो हरएक कसबों में से आपके बंधान के माफिक फी घर फी तागडीबंध एक रुपया जमा होना बडी बात नहींहै ॥ दोहा समर्थ हिन्दुस्तान में एक एक जैनी भ्रात ॥जो चाहै सो कर सकें यह कितनी इक बात॥ आतिशवाजी नाच अरु व्याह करन निज नाम ॥ बहुत द्रव्यखरचै सही देतन यहांछदाम॥उलटे पुलटे भरमके । भयेमदरसे जोर। धर्महीन जैनी भये बिन विद्या की दौर ॥ कहाकरों धन है नहीं होता तो किस काम । जिन पै है उन सम कहा नहीं होते परनाम ॥

धन वेते देवै नहीं निर्धन कहा दिवाह। कैसे विद्या वृद्धि होय मनही मन पछताह॥ मिथ्या खंडन लावनी कही हुई यह जास सोमंगल यह बालमत सज्जन जन को दास ॥

॥ ताकीद ॥

जैन प्रभाकर नम्बर ३ मिती जेठ सुदी १ संवत १९४८ में एक मसोदा जैन विद्यालय भंडार को सरकारी

कानून नम्बर २१ सन १८६० इस्वी के मुताबिक रजिष्टरी कराने का मुद्रित कियाथा सर्व भाइयों से और विशेषकर जैनी वकील बैरिष्टर और सरकारी ओहदाकार कानून के जानने वालों से प्रार्थना की थी कि वे कृपाकर उस मेंसौदे को ध्यान लगाकर पढें और उसके ऊपर अपनी २ सम्मति तथा जो कुछ न्यूनाधिक कराने की इच्छा होय सो प्रकट कर लिख भेजें ॥ इस बात को आज पूरे सात महीने हो गये परंतु किसी भाई ने उसपर अपना सम्मति नहीं भेजी इसका हमें बडा पश्चाताप है ॥ हमारी आम्नाय यह है कि जिस कार्य में सर्व पञ्चायती का द्रव्य लगे और जिसकी हानि और लाभ सर्व साधारण पर पहुंचे उस कार्य में सर्व सम्मति होना अति आवश्यक है॥ इस जैन विद्यालय भंडार में सर्व देशदेशों के भाईयों ने रुपया जमा कराया है और आईंदे सर्व भाइयों से रुपया उघाने की उमेद है और कोशिस की जाती है तथा इस भंडार के बिगडने सुधरने से सर्व श्रावक समुदाय को हानि लाभ पहुंचैगा ॥ इस वास्ते प्रारंभ से ही एसा बंदोवस्त होना चाहिये कि जिस से इस भंडारकी पूरी २ रक्षा हो जाय और हानि नहीं होवे और यह कार्य अकेले एकदो मनुष्य की रायपर छोडना वाजिब नहीं मालूम होता सर्व सम्मति से होना उचित है ॥ सर्व सम्मति होनेसे सर्व लोगों का ज्यदह विश्वास होगा और रुपया जमा कराने और भंडार की वृद्धि करने को अवकाश मिलैगा इसलिये आप सर्व भाईयों से प्रार्थना की जाती है कि आप कृपा करके उस मसौदे को पढ़ें और बिचार करके फागुन सुदी १५ तक अपनी २ सम्मति लिख भेजें ताकि उसके माफिक काररवाई की जावे—

इस स्थान पर हमको एक बात और भी कहनी आवश्यक होती है और यदि वह बुरी मालूम होवे तो प्रार्थना है कि हमारा अपराध क्षमा किया जाय ॥ हम सर्व संसारी जन आठ पहर कोलूके बेल की तरह इस शरीर और शरीरके संबंधी स्त्री पुत्र आदि कुटम्ब के धंधे में लगे रहते हैं धंधा पूरा नहीं होता उमर पूरी हुई चली जाती है ॥ हम लोगों की दृष्टि आत्म कल्याण की तरफ बिलकुल नहीं जाती इसवास्ते यह याद दिलाते हैं कि घरके धंधे में से कुछ धन और समय दान पूजा स्वाध्याय सन्मार्ग प्रभावना आदि धर्म और परोपकारी कार्यों में भी लगाना वाजिब है जो धन और समय धर्म काय्यों में लगता है सोही सफल है बाकी और सब व्यर्थ है ॥ एक प्रमाद अनर्थ का मूल है ,, आजकाल जो करत रहात सो मूरख पीछे पछतात इसलिये प्रमाद छोड़ कर उचित कार्य करने में ढील नहीं करनी चाहिये॥

॥ अजमेर ॥

मिती पोसवदी ११ को रायबहादुर सेठ मूलचंदजी अपने परिवार और लाला छोगालालजी आदि ३० जात्री सहित दक्षिण देशस्थ जैन बद्री मूल बद्री आदि तीर्थ स्थानों की जात्रा को गये और त्रयादशी के दिन लाला लक्ष्मीचन्दजी शहस्त्र किरणजी आदि छत्तीस जन और गये तारंगाजी और पावागिरजी की जात्रा करते हुये बंबई में सर्व संघ एकत्र हुआ और आगे जावेंगे॥

यहां पर नये मंदिर जी की नीम लग गई है काम जारी है बहुत जल्द तैयार होने और प्रतिष्ठा होने की उम्मेद है

जैनप्रभाकर की सालीयानाकी जिन भाईयों ने नहीं भेजी है वे कृपाकर जल्द भेजें ॥ जिन्हों को दो बरसकी कीमत नहीं आई है उनको अगले सालमें पत्र नहीं भेजेंगे

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासवंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा नें

प्रकाश किया

नम्बर ११

मिती माह सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

सेठ कानमल मनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इसको संपूर्ण पढ़कर अपने पुत्रमित्रोंको पढ़नेके वास्ते देवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुतसे भाइयम एकत्रहों पढ कर सुनावें ॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संबधी नई वार्त्ता पत्रमें छापनेको भेजें ॥जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालेवें ॥

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर वालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने छपैगा ॥ २ वातसल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना,विद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके उद्देशहै ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलोटीकिल वा मतमतांतरका झगडा इसमें नही छपैगा ॥

॥ रबर की मोहरें बनानेवाली कम्पनी अजमेर ॥

॥ इश्तहार ॥

में बडी खुशी के साथ सब सहाबान को इत्तला देताहूं कि बोहत मजबूत मोहर हिन्दी अंगरेजी उर्दू जबानमें यह कम्पनी बोहत सस्ती बनाती है यह मोहरें दफ्तर सरकारी सोदागरी व रियासतों के लिये और टिकटोंको भरपाई करनेमें व पोस्टकार्ड व मुलाकात के कारडों पर लगाने में मुफीद हैं ॥ और यह मोहरें निहायत साफ हरूफ छापती है और बहुत मुद्दत तक ठेरती है ॥

और मोहर लगाने की स्याही रंग २ की अच्छी बनाती है ॥

मारफत मनेजर विक्टोरिया प्रेस अजमेर

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करे। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ११ } अजमेर महा सुदी १ संवत् १९४८ { अंक २

लाला रूपचंद्रजी साहब रईस सहारनपुर निवासी जो बडे गुणवान धर्मज्ञ सौम्य और साहसी पुरुष हैं यहां पधारे थे और तीन दिन यहां रहे ॥ हमने जैन विद्यालय भंडार संबन्धी बही खाते रजिष्टर और रसीद की किताबें आपको दिखाई थी और हम बहुत खुश हैं कि उन्होंने उन सबको बड़े ध्यान से देख और पढकर अपनी प्रसन्नता प्रगट की ॥ इसके बाद जैन विद्यालय के बाबत बहुत कुछ बातचीत होती रही ॥ लाला जी साहिब ने कहा कि जैन विद्यालय के खर्च के वास्ते कितनी रकम जमा होनी चाहिये हमने कहा कि हम खयाल करते हैं कि अगर कमसेकम पांचसौ रुपये माहवारी का खर्च लगाना चाहें तो डेढ लाख रुपया चाहिये गा ॥ लालाजी साहिब ने कहाकि इतने रुपये से काम अच्छी तरह नहीं चल सकैगा . हमने कहा कि आप का कहना ठीक है हजार रुपये महीने की जीवका होनी चाहिये और इस हिसाब से बारह हजार रुपये सालियाने सूद की आ

मदनी के वास्ते तीन लाख रुपये मूल में जमा होने चाहिये ॥

आपने फरमाया कि रुपया बहुत जमा हो सका है और लोग देने को भी राजीहैं परन्तु पहले यहबात साबित होनी चाहिये कि विद्यालय से सब जगह के लोगों को फायदा पहुंचैगा एक शहर में विद्यालय नियत होंने से उसी शहर के या उसके आस पास के लोगों कोतो फायदा हो सका है परन्तु सब जगह के लोगों को फायदा नहीं हो सका है इस वास्तै कोई दूसरी तरकीब एसी सोचनी चाहिये कि जिससे सब लोगों को लाभ बराबर पहुंचे इस तरह लोगों की दिलजमई होने से रुपया बहुत जल्द जमा हो जावेगा ॥

आपने यह भी कहा कि सबजगहो के जैनियों को लाभ पहुंचाने के लिये हमारी राय यह यह है कि सरकार से यह अर्ज करी जावे कि सरकारी मदरसों में जितने जैनी लडके पढन को आवें उनको मदरसे का पंडित एक या दो घंटा जैन धर्म संबन्धी शास्त्र मदरसे में पढा दिया करें और उस पंडित के महनतानेका माशिक रुपया जो ठहर जावे सो उस पंडित को सरकारकी मारफत देदिया जावे अगर कोई सूरत से एसा प्रबन्ध होजावे तो सब जगह के श्रावकों के लडकों को जैन शास्त्र बडी सुगमता सें पढाये जासके हैं क्योंकि आज दिन अंगरेजीपढने अकसर सब लड़के जाते हैं और अंगरेजी के साथ जिसतरह हिसाब और हिन्दी फारसी पढतेहैं वैसेही जैन शास्त्र भी पढलिया करैं गे ॥

लालाजी साहिब की रायपर सब भाईयों को बिचारकर अपनी २ सम्मति देना चाहिये ॥

हमने उसी समय इस बात पर बिचार कियाथा और हमको उसी वक्त एसा मालूम हुआ कि यह काम अशक्यानुष्टान है सोई लालाजी साहिब से उसी समय निवेदन करदियाथा परन्तु तौभी आपकी आज्ञा से इसपर अपनी गोष्टी सहित बिचार करते रहे और अब यह अच्छी तरह निश्चय होगया कि यह काम असंभव है ॥

अवल सब मदरसे सरकारी नहीं हैं ईसाई पादरी आदि अन्य मतानलंबी यों के मदरसे भी हैं और उन में भी श्रावकों के लडके पढने जाते हैं वे लोग अपना धर्म पढाते हैं सो उसे न पढाकर हमारे धर्मको क्यों पढाने लगें और अगर कहा जावे कि अन्य मतावलंबी यों के मदरसों में हमारे लडके न जाने पावे सब सरकारी मदरसों में ही जांवें और अपना धर्म पढे इसका उत्तर यह हैकि सरकार का नियम है कि वे धर्म संबंधी मामलों में हस्ताक्षेप नहीं करतेहैं यहां तक कि विलायत के बडे२ पादरी और रईस सरकार से बार२ कहते हैं कि सरकारी मदर सों में ईसाई धर्म की पुस्तकें अवश्य पढानी चाहिये जिस से लडकों के चाल चलन दुरुस्त हों परंतु सरकार अपने नियम पर आरूढ हैं और उनके कहने पर कुछ ध्यान नहीं देते हैं जब कि सरकार अपने ही धर्म को अपने मदर सों में नहीं पढाते हैं तब बे हमारे धर्म पडाने को कैसे राजी होंगे

अलावह इस के इस समय सरकार शिक्षा विभाग के बोझको अपने ऊपर से हटाकर प्रजाके ऊपर रखते जाते हैं सो नया बोझ अपने ऊपर क्यों लेने लगे ॥

हरेक काम में सरकारी सहाय ता कीही बांछा करना यह हमारी कम हिम्मत और आलस्य सबूत करना है और इसलिये हमारी स मझ में यह आता है कि अपने धर्म संबन्धी शिक्षा का बोझ दूसरों पर डालना भी उचित नहीं है धर्म सं बन्धी शिक्षा आम्नाय पूर्वक भले प्रकार वही दे सक्ता है जो आप उ स धर्म का धारी है ॥ अन्य धर्म वाला दूसरे धर्म की शिक्षा कदापि भी ठीक २ नहीं दे सक्ता है इस लिये हमारी राय में लालाजी सा हब का कहना अशक्य और प्रयो जन रहित मालूम होता है और भाई इस को विचारकर अपनी स म्मति प्रकट करें तो वह भी जैन प्रभाकर में मुद्रित की जायगी ॥

हमने प्रारंभ से ही ऐसा विचार कि या था कि इस जैन विद्यालय भंडार से सब जगहके श्रावकों को लाभ पहुंचे और इसी कारण विज्ञा पन दियाथा कि जो लडके रत्नक रंड श्रावगाचार आदि सभा के नियत किये हुये पढकर परिक्षा देंगे उसको इनाम दिये जांय गे और अम्बालालजी साहब की आ ज्ञानुसार दो बारा बिचार करने से भलेप्रकार निश्चय हुआ कि इसी तरकीबसे सब जगह के श्रावकों के लडकों को लाभ होगा ॥

अगर यह बंदो बस्त हो जावे कि जो लडका २० श्लोक कंठ अ र्थ सहित याद करके और उनका सारटीफिकट सभा के पास भेज अपने शहर के पंचों को सुना दे वह एक रुपया इनाम का पावे तो देखिये कितनी जल्दी विद्या वृद्धि होती है और जो गरीब भाई कि दलिद्र के कारण विद्या नहीं प ढ सके और अपने छोटे२ लडकों

से मिहनत मजूरी कराते हैं वह महनत मजूरी छुडाकर पढने में लगादेवें क्योंकि उनको दुहेरा लाभ होजाय अबल उनके आमदनी हो जाय दोयम लडका विद्या पढजाय और सुमार्ग में लगजाय जवान होवे तो भलेप्रकार से रोजगार कर सके॥ ऐसा होना कुछ मुशकिल काम नहीं है। थोडा सा प्रारंभ करना चाहिये इस का फल एक वर्ष में प्रत्यक्ष दिखाई देजायगा और फल देख कर भंडार में रुपया जमा कराने को हरेक भाई राजी हो जायगा॥ इस स्थान में यह भी सूचना करना वाजिब मालूम होता है कि धर्मशास्त्र कोलोग अकसर इसी कारण अपने लडकों को नहीं पडाते हैं कि उनको पढाने से उन्हें कोई आमदनी की सूरत दिखाई नहीं देती है॥ अब आज मायश के वास्ते हमारे उदार चित शास्त्रदन के दातार भाई अपने शहर के लडकों को रुपया देकर शास्त्र पढावें तो कितनी अच्छी बात है॥ द्रव्य संग्रह की पढाईके रु: ३) हुये और रत्न करंड के रु: ७॥) और सूत्रजी के रु: १२॥) होते हैं इतना रुपया हरेक कोई खर्च कर सक्ता है ओर इनके पढने से कितना लाभ होवे जब तक भंडार जमा नहीं होवे इस प्रकार धर्म विद्या की वृद्धि हरेक भाई को अवश्य करनी चाहिये॥ लेकिन सब शास्त्र अर्थ सहित कंठस्थ होने चाहिये॥

यह तो धर्म संबधी विद्या वृद्धि करने की तरकीब है और इस का खर्च भंडार के व्याज से चलेगा लौकिक याने रोजगार संबधी विद्या वृद्धि करने की दूसरी तरकीब सोची गई है वह इस प्रकार से है। धनवान तो अपने लडकों को शिक्षा देते ही हैं उनका तो जिक्र

हीं क्या परन्तु यहां साधारण का जिक्र है कि जो गरीब भाई अपने लडके को बिद्या पढाना चाहैं तो उसके लडके को सभा देखेगा और यदि उसको सुशील विनयवान आज्ञाकारी परिश्रमी और बुद्धिमान आदि गुण सहित जानेगी तो उस लडके को अपनी तरफ से अपनी पाठशाला में या और किसी जोग्यस्थान में भेजदेगी और वह लडका सभा की सम्मत्यानुसार पढेगा उस की पढाई के खर्च के वास्ते सबा भंडार में से रुपया आठ आने सैंकडे के व्याज पर उसके उधार देगी कि जब वह लडका पढ कर तैयार होजाय और कमाई करने लगे तब उस की पढाई में जो खर्च पड़ा है उसको थोडा२ किश्त कर अपने उपार्जन धन में से मूल और व्याज भंडार में जमा करादेवे॥ अगर लडका सभा की मरजी माफिक नहीं पढेगा तो रुपय उसके बाप से एक मुश्त वसूल किया जावे॥ लडका और उसके बाप की ईमानदारी और नेक नीयती की गवाहा उस शहर के पंचो को देनी पडेगी और चार पंचो को उनका जामिन भी बनना पडेगा कि अगर रुपया नहीं अदा करैं तो जामिन अदा करैं क्यों कि भंडार की प्रतिज्ञा है कि मूल द्रव्य बिगड ने नहीं पावे उसकी रक्षा करना सब भाइयों को उचित होगा॥

हमने अपनी तरकीब का संक्षेप वर्णन ऊपर लिखा और हम खयाल करते हैं कि इससै सब देशों के श्रावकों को लाभ पहुंचे॥ इस का बिस्तार जो हमारे दिलमें समाया हुआ है सो यथा अवसर लिखेंगे॥ हमारी प्राथना है कि लाला रूपचद्रजी साहिब और २

भाई इस तरकीब पर विचारकर अपनी सम्मति लिखैं और यदि तरकीब पसंद आवे तो इसके जारी करने का प्रबंध शीघ्र करैं॥

॥ श्री जिनागम- रहस्य सभा जैपुर का वार्षिकोत्छव ॥

श्री जिनागम रहस्य सभा ज्याकि कालाडहरों के मंदिर में हुआ करती है उसका वार्षिक महोच्छव मिती पोष शुक्ला ११ आदित्य वार को बडे हर्ष सहित हुआ और इस उच्छव में जैनी भाई और अन्यमती भाई रामसभा विद्या प्रचारणी सभा आर्य्यसमाज कायस्थसभा अग्रवालसभा खंडेलवालसभा आदि के सभासद आदि अनुमान दो सहस्र सभ्य जन और राज केबडे २ अधिकारी पधारे रेथे॥ सायंकाल के ६ बजे से प्रारंभहुआ तिसमें प्रथभ कुवर फूलचद्रजी सोगाणी ने कार्य सूचना करते हुये एक मनोहर एडैस पढा और सभ्यजनों केशुभागमन का हर्ष प्रकट किया ॥ तदंतर लाला भोलीलाल जी सेठी ने मंगलाचरण हपकर मनुष्य जन्म आर्यक्षेत्र उत्तमकुल इंद्रियों की पूर्णता दीर्घायु निरोग शरीर विद्या अभ्यास और सत्संग पाना और धर्म धारण करना उत्तरोत्तर दुलभ वर्णन किया और कहाकि जेलाग इतनी सामग्री पायकर भी सदविद्या और धर्म ग्रहण नहीं करते हैं परन्तु अनेक कुविसनों में रक्त रहते हैं वे अपने को ठगते और मनुष्य जन्म विफल गमाते हैं ॥ इस ललित और हितोपदेश का सर्व सभा सदों पर बडा असर हुआ ॥

इसके पीछे वार्षिक रिपोर्ट सुनाई गई और जिन २ सभ्य पुरुषों ने सभा में व्याख्यान दिये थे

तथा पाठशाला की धन आदि से सहायता करी और विवाहादि कार्य्यों में पाठशाला की लगान लगा कर रुपया दिया उन सर्व को प्रत्येक की नामावली पढकर धन्यवाद दिया और आशाकी कि सर्व भद्र पुरुष इसी प्रकार सभा और पाठशाला की हमेशह सहायता करते रहेंगे तदनंतर लाला गौरीलालजी वांकलीवाल कृत धर्म नाटक का प्रथम अंक जो पाठशाला के छात्रों को सिखाया गया है सभा में सुनाया गया और जिनेन्द्र गुण साज सहित गाये गये जिस से विद्यार्थीयों की शिक्षा का नमूना सब पर प्रकट हुआ ॥ सर्व ही सभासद स्वमती तथा परमती जिनवाणी रूप अमृत का आस्वाद कर परम आल्हाद को प्राप्ति हुये और जय २ कार कर जिन धर्म की उत्कृष्ट निर्मलता और महत्वता की प्रशंसा करने लगे ॥

छोटे २ लडके मिष्टस्वष्टस्वर से निशंक संस्कृत श्लोकों को पढते और उनके अर्थ करते थे जिस से धर्म का स्वरूप साक्षात प्रत्यक्ष मालूम होता है ॥ पाठपाला होने से जैनियों को विद्या और धर्म का अत्यंत लाभ हुआ और होवेगा और जैपुर निवासियों को भी विद्या और धर्म में बढैगी ॥ हम को पूरी २ आशा है कि हमारे भ्रातृगण पाठशाला का फल प्रत्यक्ष देख कर अपने लडकों के पढने में और पाठशाला की सहायता देने में निरुधमी नहीं रहैगे परन्तु अपनी २ सामर्थ प्रमाण सर्व जैपुर निवासी श्रावक पाठशाला की सहायता करेंगे ॥ अंत मगला चरण कर सभा विसर्जन हुई और सर्व जनों को अत्यंत आनंद प्राप्ति हुआ ॥

लाला रूपचंद्रजी साहब रईस साहरनपुर निवासी भी वार्षिकोच्छव देखने को पधारे थे उन्होंने दूसरे दिन पाठशाला की सातों कक्षा के विद्यार्थियों को अलग २ देखा और कुछ २ प्रश्न सबसै किये ॥ जवाहिरलाल विद्यार्थी जिसकी उमर सात वर्षकी है उससे उन्होंने श्रावक के वृत और आचरण में बहुत प्रश्नकिये और उसने सब केउत्तर यथावत दिये जिनमे उक्त लाला साहिब बहुत प्रसन्न हुये और उस विद्यार्थी को रु: २५) इनाम के दिये ॥ लालाजी साहिब एक सौ रुपया सालियाना पाठशाला की सहायता को देते हैं सो इस साल के रु: १००) पाठशाला भंडार में जमा कराये और पाठशाला में विद्याकी उन्नति देखकर अत्यंत हर्षित हुये ॥

जैन पाठशाला जैपुर की उन्नति से हम को बडा हर्ष होता है॥ जैपुर खंडेलवाल श्रावकों का मुख्य स्थान है और वहां पर बडे२ जैनी पंडित हुये हैं जिन्होंने संसकृत शास्त्रों की बचनका करी है कि जिन के आश्रय से आज दिन जैन धर्म स्थित है और अबभी उमेद है कि जैपुरमें पंडित प्रगट होंगे ॥ रतनतो रतनकी खान में हीं पैदा होते हैं॥

श्री धर्म्मामृतवर्द्धनी सभा

॥ खुरई ॥

मिती पोह सुदी १५ को सभा का द्वितिय अधिवेशन हुआ और निम्न लिखित कार्य किये गये ॥ सभा में अनुमान ८०० जैनी भाई एकत्र हुये थे जिन में ४०० इस नगर निवासी और ४०० पर नगर निवासी थे ॥

१ सभा के सन्मुख जैन पाठ शाला के विद्यार्थियों की परीक्षा ली गई

६९ विद्यार्थी पढते हैं उनमें से ५७ हाजिर थे ॥ ८ वि० समासचक्र रूपावली पढते हैं और शेष जैनधर्म संबंधी पूजनादि पढते हैं ॥ संस्कृत विद्या पं० विनायक रावजी और जैन विद्या पं० खेमचन्द्रजी पढाते हैं ॥ परीक्षा अच्छी हुई और इसी हिसाब से विद्या की वृद्धि होती रही तो बहुत उन्नति होने की आशा है ॥ महावारी खर्च रुः २०) है सभाने एक और पंडित नियत करने का बिचार किया है ॥

२. सभामें पंडित खेमचंद्रजी ने जैन प्रभाकर अजमेर सेठ लक्ष्मीचद्रजी ने धर्म धारण करने के विषय में और सिंघई कंच्छेदीलाल जी ने संजम धारण करने के विषय में व्याख्यान पढे ॥ पंडित संतीलालजी सभापति ने धर्म्मोपदेश देकर सभा की प्रशंसा की और कहार के हाथका भरा जल तथा रात्रि में जल पीने आदि अयोग्य क्रियाओं का निषेध कर सभा को त्याग कराया ॥ समय अधिक बीत जाने के कारण दूसरे दिन सभा एकत्र होने का बिचार प्रकाश किया और सर्व सभासदों ने इसे धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किया

३ दूसरे दिवस संध्या समय सभा एकत्र हुई और पंडित खेमचंद्रजी ने सब जगह पाठशाला और सभा नियत होने का उपदेश दिया ॥ उसी समय खिमलासा इटावा दुगाहा में सभा स्थापित करने का विचार कियागया ॥

४. सभामें विद्यार्थियों को रुः ११) की टोपी वगैरह पारितोषक से बांटी गई और फिर श्रीजिनेन्द्र के गुन गान हुए और जयकारा बोल कर सभा विसर्जन हुई ॥

मिती माह बदी १ के दिन यहां गुरहा कालूराम रामचन्द्रजी ने प्राचीन जिन मंदिर जी नवीन शिखर बनाई है उस पर स्वर्ण

कलश और ध्वजा चढाए गये उस समय सर्व जैनी स्त्री पुरुष एकत्र थे और शहर के वैश्यादि महाशय तथा हाकिम अमला मंदिरजी की सभा में थे ॥ पूजन नृत्यगान से बडा उच्छव हुआ और सर्व जनों को परम अपूर्व आनंद प्राप्ति हुआ ॥

सेठ मोहनलाल खुरई

विज्ञापन पत्र भारत वर्षीय श्री जिन धर्म संरक्षणी महा सभा का

(संक्षेप)

मथरामें हमेशह साधारण मेला हो ताथा अब पांच छै बरससे श्रीमान सेठ लक्ष्मणदासजी सी एस आई के उद्योग से मेला अति उन्नति पर पहुंचा है ॥ मेले की शोभा देख कर एक अविनाशी नामक जैन दिगम्बरीको ऐसी उत्कंठा हुई कि श्रीजैनधर्मावलंबी लोग जो इसकालमें अविद्या आलस मद प्रमुख निद्रामें सोरहे हैं उनको जाग्रित करने के हेतु कुछ निवेदन करूं सो सेठ साहिब आदि धर्मस्नेही भाइयों ने भी साहस दिलाया तब अविनाशी ने मध्य सभा में खडे होकर जो निवेदन किया उस्का सारांश यह था

(१) श्री जैन धर्मावलंबी लोगों का इस आर्यक्षेत्र में श्री ऋषभदेव स्वामी के समय से मुसलमानों की आमद तक अनुशासक होना मूर्ति आदि प्राचीन चिन्हों से अनेक इतिहासों से सिद्ध किया ॥

(२) अन्यकी अपेक्षा श्रीजैन धर्म की निर्मलता वा तदाश्रितों की सभ्यता सिद्धकरी

(३)बर्तमान समय में राजनीति शिल्पचिकित्सादि विद्या की शिक्षा के अभाव से जैनियों की हानियां दिखाई

(४) सरकार के निशंकटक राज्य में भी जैनी घोर निद्रा से आंख नहीं खोलते अपने हक्क पाने का उद्योग नहीं करते इसका दुख निवारण करना आवश्यक है युक्ति से सिद्ध किया

(५) परस्पर एक्यता होने की आवश्यकता दिखाई

(६) ज्ञातकुलाचार व स्वधर्म रक्षार्थ एक महासभा नियत करने की प्रार्थना करी

इस व्याख्या को श्रवण कर सभा आनंद से गद२होगई—और कार्तिक बदी ९ चंद्रवार के प्रातः काल सेठजी के डेरे पर सभा भेली हुई पंडित छेदालालजी ने जैनकुलाचार विषय में उपदेप दिया उसका आशय यह था यह जैन कुल सदैव पवित्राचरण रूपरहा जिसकी ख्यातिता संपूर्ण अन्यमताव लंबीयों पर भी विदित है इस समय प्राचीन कुलाचार का प्रबंध टूटता और धर्म धन की हानि होती जाती है इसकारण कुलाचार का प्रबंध ठीक करने का यत्न करना उचित है जिससे जैनियोंमें धर्म धन दोनों की वृद्धि होने से लौकिक पारलौकिक सुखको प्राप्ति हो॥

यह सुनकर सर्व भाइयों ने पूर्वोक्त प्रबंध निमित्त एक महा सभा भारत वर्षीय श्री जैनधर्म संरक्षणी महा सभा नियत की उसमें १५० नगर पंचों के हस्ताक्षर हो गये और सर्व समत्यानुसार सभापति श्रीमान सेठजी साहब श्री लक्ष्मणदासजी साहिब सीएस आई रईस मथरा और उप सभापति सेट अमोलकचन्दजी खुरजा आदि और सक्रटरी अर्थात् संपादक मुन्शी श्री छगनलालजी साहब रईस आगरा लाला मूलचंद्रजी साहब वकील मथुरा आदि नियत

हुये सभा के उद्देश्य १ सर्व नमस्कार मंत्र पाठी जैनमात्र की परस्पर ऐक्यता का उद्योग करके उनके धर्म धन आत्माकी चिकित्सा में प्रवर्तना

२ जैन कुलाचार में जो वर्तमान समय में खान पानादि बिपरीत होने की सम्भावना और जन्म मरण विवाहादि में कुरीतियों प्रवर्त रही है उसको दूर करने वा आगामी रोकने की चेष्टा करना

३ वर्तमान अनुसासिक याने गवर्नमन्ट सरकार से जैनधर्म की रक्षा हेतु यथा उचित उपाय करना

४ जैन मतावलंबीयों की भिन्न २ पहचान वा रक्षा निमित्त डायरेक्टरी तय्यार करना

सभाकी यह भी सम्मति हुई कि इस महा सभा होने का वृत्तांत सर्व देश वा ग्राम २ के जैनी भाईयों को पत्र द्वारा निवेदन करे और सर्वजन सभाकी उन्नति करें और सर्व प्रतिनिध आगामी मेलेमें पधारें फिर महा राणी विक्टोरिया और सभा पति को धन्यवाद दे कर विसर्जन हुई॥

(इस विज्ञापन पर मुन्शी छगनलाल सेक्रेटरी और लक्षमणदास सभापति याने प्रेसीडेन्ट के दस्तखत हैं)

समालोचना॥ महा सभा की अत्यंत आवश्यकत्ता है सो यदि इस सभा का कार्य लिखे प्रमाण चलता रहैगा तो सर्व जैनियों को अत्यंत लाभ होगा॥ इस कारण हरेक जैनी भाई को उचित है कि उसकी सहायता करै॥ हरसाल मेलों में अनेक श्रावक एकत्र होते हैं ऐसे अवसरों पर उन्हैं अपनी जाति और धर्म की उन्नति का उपाय जरूर करना चाहिये और इसमें बडी खुशी हुई है कि मथरा के मेले में इस कार्य की नीम लग गई॥

वार्षिक मूल्य जलदी भेजिये गा॥

शोक शोक महाशोक

श्री मान राज कुमार प्रिन्स एल बर्ट विकटरके अकाल मृत्यु प्राप्ति होनेके हृदय विदारक शोकसमाचार सुनकर अजमेर निवासी सर्व जैनी श्रावक समुदाय को अत्यंत खेद प्राप्ति हुआसो वचनके अगोचर है, राजकुलमें शोक होवे से किसे शोककी ज्वाला सताय मान नहीं करती? सर्व ही प्रजा को करती है॥ उनके पूज्य माता पिता और परम पूज्य महामातृ संपूर्ण गुण संपन्न क्वीन एमप्रेस विक्टोरिया और उनके परवारके शोक निवारणार्थ श्रीजिनमंदिर में शांतिपाठ आदि यथोचित क्रिया हुई और जिनेंद्र से प्रार्थना की कि राजकुमार को सुर्ग वासहो॥

लाला रतनलालजी साहब ने लिखाहै कि अलीगढ़ में एक सभा नियत हुई है जो खंडेलवाल श्रावकों के जन्म मरण विवाहादि कार्योमें अपव्यय दूर करने का प्रबंध करेगी

रामटेक नागपुर और पिंडरूआ जिला सागर में जिनबिंब प्रतिष्ठाका महोच्छव बडे आनंदसे हुआ करहल जिले मैनपुरी में रथजात्रा का मेला और नाटक चैतमें होगा॥ रोहतक में नवीन जिन मंदिर की प्रतिष्ठा फागुन सुदी ५ से होगी कई भोले भाई जैनमंदिर में कुदेवों की मूरत स्थापित करना चाहतेहैं सो यह कार्य अजोग्य सम्यक्त का घातक. मिथ्यात्व का पुष्ट करनेवाला नहीं होना चाहिये

होली आती है॥ यह होली सील संजम धर्म को बिगाडने वाली नरक में लेजाने वाली है हमारे भाइयों को इसके ख्याल में शामिल हो काला मुह कर अपना जनम नहीं बिगाडना चाहिये परन्तु उस दिन मंदिरजी में बैठ भजन पूजा कर धर्म उपार्जे करना चाहिये॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासंबंधी मासिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया

नम्बर १२

मिती फागुन सुदी १ संवत १९४८ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठकानमल मनेजर के विकटोरिया प्रेस अजमेर में छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाइयों से जिनके पास जैन प्रभाकर पंहुचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावग एकत्र हों पढ कर सुनावें ॥ आप के शहर की जाति और धर्म संबधी नई वार्ता पत्र में छापने को भेजें ॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकार्ड भेज कर मगालें ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ॥=) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का -) है ॥

१ यह पत्र हर महिने में छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या धन धर्म जात कीउन्नति करना इसके उद्देश हैं ३ जिन धर्म बिरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतान्तर का झगडा इस में नहीं छपैगा ॥

मूल्यप्राप्ति

१)सुवालाल मोहनलालजी रेवाडी १)जीवणरामजी ताराचंदजी सरवाड २) चुन्नीलालजी चांदमलजी हींगणघाट २)सुखदेवजी बालमुकनजी सीकर १) बकाराम पैकाजी रोडेबर्धा ॥=) बाबू केसरामलजी हीगड दोराई २) लिछमीनारयणजी मास्टर खुरई ३)चीरंजीलालजी ओवरसीयर घाटमपुर १) पूरणमलजी हणवतरामजी हैदराबाद १) श्री पंचान नलखेडा १) स्यामलालजी बजाज पाडमजी मैनपुरी

१५॥=)

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर १२ } अजमेर फागुन सुदी १ संवत् १९४८ { अंक २

॥ जातिका सुधार ॥

मथरा में श्री जंबूस्वामी जी के मेलेमें जो भारतवर्षीय श्री जैनधर्म संरक्षणी महासभा नियत हुई है उस के विज्ञापन का संक्षेप हम पिछले पत्र में लिखचुके हैं; आज उस विषय में हम अपनी सम्मति लिखना चाहते हैं ॥ हमको प्रथम देखना चाहिये कि जाति के सुधार करने का आवश्यकता है यानहीं यदि सुधार करने की आवश्यकता है तबसर्व जाति हितेच्छुओंको उसका उपाय करना वाजिब होगा और यदि जातिमें सुधार करने की आवश्यकता नहीं है तो सभा आदिक उद्योगकरना बिलकुल निरर्थक है॥ इन सवालोंका उत्तर हरेक भाई को विचारना उचितहै और भले प्रकार निश्चय करने के पश्चात यथा योग्य उपाय करना चाहिये ॥

जाति की शोभा करने वाली पांच चीजें होतीहै और उन पांचों में से किसी के न्यून होनेसे जा

ति में अनेक बिकार और बुराईयां पेदा होजाती है लेकिन अगर उन पाचों की ही कमी होजावे तब उस जाति की बुराइयों का क्या ठिकाना है ॥ वे पांच चीजें ये हैं ॥ १ विद्या २ धन ३ राजप्रतिष्ठा ४ धर्म ५ शुद्ध आचरण, हम जहां तक बिचार कर देखते हैं वहां तक हमको इन पांचों चीजों की कमी दिखाई देतीहै और दिन पर दिन वह कमी बढती जाती है यदि उनके रोकने का कोई उपाय नहीं होगा तो वह कमी इतनी बढजायगी कि एक दिन जाति को नष्ट करदे गी ॥

पिछले साल की मनुष्य गणना से मालूम हुआ कि तमाम भारत वर्षमेंकुल जैनियोंकी संख्या चौदह लाख सोला हजार एक सौ नौ है इतने कम होने पर भी जैनी आज तक प्रथक रहे और २ जातियों मेंशामिल नहीं हुए उसका एक कारण यही है कि वे अपने विद्या और धर्म विषय में परि पूर्ण रहे परंतु अबविद्या और धर्म आदि की कमी होने से साबित होता है कि कुछ काल में वे विला जांय गे

अब बिचार करना चाहिये कि जो पांचो चीजें ऊपर लिखी हैं उनका आज दिन जैनियों में घटावहै अथवा बढवारी है ॥ हमारा निश्चय है कि आज दिन उन पांचों चीजों का घटाव है और इसी कारण जाति में अनेक बुराइयां दिन पर दिन पैदा होती जाती है ॥

१ प्रथम विद्या का घटाव देखिये आपकी जाति में कितने आदमी विद्वान दिखाई देते हैं कितने आदमी बीये और एमेए पास किये हुये हें ॥ कितने वैद्य या डाकटर हें उनकी गिनती कीजिये ॥ मथुरा के मेले में जहां पांच हजार आदमी एकत्र हुये थे जैन शास्त्र के जानकार कितने थे ॥ आपके

शहर में कितने पढे लिखे आदमी है सो विचार कीजिये ॥ शायद हजार आदमी में पांच भी विद्वान नहीं मिलें गे ॥ जब विद्या की यह दशा है तो क्या जात की न्यून दशा नहीं होगी बेशक होगी और विद्या की वृद्धि कर जाति का सुधार करना अवश्य है ॥

२ दोयम अब धन की तरफ ख्याल करो और विचारो कि कितने धनवान करोडपति हैं और कितने लखपति हैं और कितने शहस्र पती हैं ॥ ऊपर से सफैद कपडे पहने हुये और बालों में चमेली का तेल डाले हुये बहुत से दिखाई देते हैं परंतु उनकी अंतरंग दशा देखो उनके पास घरकी नगद रोकड माल जायदाद कितना है वोहरेका पूंजी पर गुल्लाला बने कितने फिरते हैं ॥ लेकिन अब तो यह भी दिन पर दिन कम होती जाती है और गरीब दलिद्रीयोंकी संख्या बढती जाती है ॥ पास पूंजी नहीं नाम बडा बेटी का ब्याह करना जरूर चारजो नार करनी पडेगी बस जो कुछ बचा कु । जर जेवर है उसे बेचकर बहुत से भाई दलिद्री होते जाते हैं शोक का बात है कोई कुछ बंदोबस्त नहीं करता धनवान तो अब केवल इतने हैं जो उंगलियों पर गिने जा सके हैं और गरीब दलिद्री हजारों हैं जिन्हें एकवक्त भर पेटरोटी नहीं मिलती है और मध्य श्रेणी वाले कोरी शेखी में दिन पर दिन कंगाल होते जाते हैं ॥ जब धन की यह दशा तो कहो जति की कैसी शोभा ॥ एक सभा इकठी करो तो तोडे कंठी वाले दो चार ओर बाकी सब तन छीन वस्त्र हीन मुख मलीन दिखाई देंगे ॥

३ राज में प्रतिष्टा विद्या और ध

न की होती है सो विद्या और धन रहित होने से राजमें कोन प्रतिष्टा करता है अब आप विचार करो और दूर २ तक दृष्टि फैलाकर अपनी जातिके लोगों को देखो उन में कितने ऐसे हैं जो बडे लार्ड साहिब के दरबार में जाते हैं और कितने हैं जो छोटे लार्ड साहिब के दरबार में जाते हैं और कितने हैं जो कमिशनर साहिब से मुलाकात कर सके और तुम्हारी विरादरी में तुम्हारे शहर में कितने हैं जो साहब कल्कटर से हर वक्त मुलाकात कर आसके हैं॥ आगे रजवाडे में जैनी लोग बडे २ काम पर थे अब देखने में आता हैं कि वहां से भी दिन पर दिन कम होते जाते हैं और सरकारी वडे ओहदो पर तो बहुत ही थोडे आदमी हैं॥ विचार करो कौंसिल में कोई आपका भाई है क्या कोई हाईकोर्टका जज है या कोई सीवल सरविस थाने जज माजिष्ट्रेट है फिर देखो तुम्हारे कितने भाइयों को सरकार ने सितारह हिन्द या इन्डीयन एमपायर की पदवी दीनीहै कितनों को राय वहादुर की पदवी दीनी है॥ इनविचारों के करने से विलकुल सून्य दिखाई देता है और साबित होता है की हमारी जाति की राजप्रातिष्ठा मेंभी बडी न्यूनदशा हो रही है॥

४ अब अपने धर्मकी तरफ देखिये तो इस जगह सबसे जा दाह हानि दिखाई देती है॥ हजारों आदमी एसे दिखाई देतेहै जो जैन धर्म के नाम से भी अजान हैं॥ और तो क्या कहैं पंचणमोकार मंत्र के अर्थ तकको नहीं जानते॥ अर्थ जानना तो दूरही रहा उसका शुद्ध उच्चारण तक भी नहीं करस

के हैं ॥ फिर वे यह भी नहीं जानते कि हमारा देव कौन है और कैसा है और उसके कैसे गुण हैं और हमारे गुरु का क्या स्वरूप और कैसा आचरण और गुण हैं ॥ उनको मालूम नहीं कि धर्म किसे कहते हैं और उसका लक्षण क्या है और उसका फल क्या है वे कभी अपने धर्म शास्त्र को नहीं पढ़ते हैं और पढ़ते हैं तो समझते नहीं हैं ॥ और हम ऐसे कई भाईयों को जानते हैं जो अंगरेजी फारसी में अच्छी लियाकत रखते हैं परंतु जिनको दर्शन करने की स्तुति या नाम तक नहीं आते कहां तक शरम की बात है कि देवनागरी वर्णमाला तक नहीं जानते कहो तब वे कैसे शास्त्र पढ़ें और कैसे उन्हें धर्म का श्रद्धान होवे

५ जो लोग धर्म शास्त्रों को नहीं जानते हैं उनका आचरण क्योंकर शुद्ध होसक्ता है नहीं हो सक्ता ॥ परन्तु तौभी जाति बिरादरी और पंचायती के डर तथा कुलाचार कर कुछ थोड़ा बहुत आचरण शुद्ध था परंतु अब वह भी नहीं रहा लोग स्वेच्छाचारी ज्यादह दिखाई देते हैं और इसी सबब आचरण भी बिगड़ता जाता है ॥

सत्य तो यों है कि धन और धर्म हीन होने के कारण और गृहस्थाचार के खर्च बढ़ने के कारण लोग अन्याय मार्गी होते जाते हैं चोरी ठगाई करना अच्छे माल में खोटा मिलाना झूट फरेब करना इत्यादि राज बिरुद्ध तथा लोक बिरुद्ध कार्य करते डरते नहीं हैं, अपनी छोटी २ लड़कियों का धन लेकर बूढ़ों के साथ व्याह देते हैं, फिर बिचार कीजिये कि आपके सीलवृत पालने की धर्म और पंचायती मर्याद हैं अब कहिये पर स्त्री के त्यागी आपके संग में कितने हैं जिन्हों ने मंदिरजी में बैठकर सील पालने की

प्रतिज्ञा करी है ॥ रात्रि भोजन और अनछाना पानी पीने का त्याग यह जेनीयों के मुख्य चिन्ह जगत विख्यात है अब अपने शहर में गिनती कीजिये कि इनके त्यागी कितने हैं

कहां तक कहें जैनियों का आचरण दिन पर दिन बिगडता जाता है और इसी कारण जाति की न्यून दशा होती जाती है ॥

हम यकीन करते हैं कि अगर हमारे भ्रातृगण इन पांचों अर्थात् विद्या, धन, राज प्रतिष्टा, धर्म और शुद्ध आचरण को एक२ को अलग २ लेकर भले प्रकार विचार करें तो निसंदेह उनको निश्चय होजायगा कि जाति की बडी दुर्दशा हो रही है और अब उसका सुधार करना अत्यंत ही आवश्यक है ॥ हमको बडी खुशी हुई है कि श्री मान सेठ लक्षमणदासजी साहिब ने अपना ध्यान जाति के सुधार करने की तरफ लगाया है और अगर सेठजी साहिब की कोशिश होगी तो बेशक बहुत जल्द सुधार हो जायगा ॥ लेकिन केवल बातों से कार्य सिद्ध नहीं होगा आपको कुछ परिश्रम करना पडेगा जिस तरह कायस्थ महाशयों ने सालियाना सभा करके बहुत सी कुरीतियों दूर करदीनी है उसी प्रकार यदि मथरा में मेले के ऊपर सभा होवे और प्रबन्ध किये जांय तो बहुत कुछ सुधार होसकेगा ॥

—— : o : ——

संवत १९४९ के कार्तिक के मेले में क्या २ प्रबन्ध किस २ प्रकार से किया जायगा उसका बादानुबाद करकै अभी सै निश्चय होना चाहिये और यदि सभा के सक्रेटरी मुंशी छगनलालजी और लाला मूलचंदजी इस विशय में कुछ लिखेंगे तो वह सर्व भाइयों के हितार्थ

हम जैन प्रभाकर में प्रकाश करैं गे और अपनी २ सम्मति प्रकट करैं गे ॥

॥ बहुत जरूर सूचना ॥

जैनप्रभाकर को मुद्रित होते हुये अब दो वर्ष पूरे हुये ॥ बहुत से भाइयों ने उसकी कीमत आज तक नहीं भेजी सो उनसे प्रार्थना है कि महर बानी कर कीमत जलदी भेजें ॥ पत्र के छपाने में खर्च पडता है और मिहनत भी पडती है ॥ हम अपने जाति और धर्म की उन्नति और प्रभावना करने को अपना रुपया भी लगाते हैं और मिहनत भी करते हैं अगर इस पत्र में फायदा होवे गा तो हमारा विचार है कि जाति के फायदे में खरच करैंगे परन्तु बजाय फायदे के उलटा नुकसान दिखाई देताहै कारण यह है कि अवल तो हमने पत्र की कीमत उतनी ही रखी थी जितने में यह हमारे घर छपा छपा या पडता है सो इस वास्ते रखी थी कि सब भाई खरीद सकें और दोयम यह कि बहुत से भाई कीमत नहीं भेजते बहुत से दोचार महीने मगाकर बंद कर देते हैं आप भले प्रकार जानते हैं कि जिस काम में घाटा पडेगा उसका एक दिन न एक दिन दिवाला निकले गा ॥ हमारी सामर्थ नहीं है कि घाटा सह सके इस लिये वार २ भाइयों से कहाजाता है कि अपनी २ कीमत जलदी भेजदें ॥ और जो पत्र की मंदिरजी या सभा के नाम से भेजे जाते हैं उसकी कीमत सभासद आपस में उघाई करके भेजें मंदिरजी के भंडार मेंसे नहीं भेजें ॥

जिन भाइयों ने कीमत भेज कर हमें सहायता दीनी है अथवा पत्र में छापने को लेख चिठी सर्म

चार भेजे हैं उन्हें हम धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वह हमें हमेशह इसी प्रकार सहायता देते रहेंगे ॥

हम खयाल करते हैं कि जैन प्रभाकर के सबब से जाति को बहुत कुछ लाभ होता है और इसका जारी रहना वाजिब है तो सर्व भाइयों की सहायता से रह सक्ता है हमारे भाइयों को उचित है कि वे इस प्रकार से सहायता करैं

१ अव्वल तो सालियाना कीमत १) एक रुपया चैत के महिने में बेनागा हमेशह भेजदेवैं

२ अगर उनकी मरजी होवे तो कीमत के अलावह खर्च में दो चार रुपयों से सहायता करैं

३ ग्राहकों के बढाने की कोशिस करैं

४ जाति की उन्नति और धर्म प्रभावना के लेख छापने को भेजें

५ आपके शहर या आस पास के गाम में जाति और धर्म संबधी जो नये समाचार हों सो लिख भेजें

विद्या वृद्धि करने की तरकीब

जैनियों में धर्म तथा लौकिक विद्या वृद्धि करने की जो तरकीब हमने माहके जैनप्रभाकर में लिखी है आशा है कि वह हमारे भ्रातृगणों के पसंद आई होगी ॥

हमने सप्ताहिक टाईम्स आफ इंडिया,, तारीख ३० जनवरी सन् १८९२ में सेठ जमसतजी एन टाटा की तरकीब उच्चश्रेणी की शिक्षा की पढी और वह हमारे अर्थ को पुष्ट करती है लेकिन विशेष इतना है कि हमारी तो केवल बातें ही बातें हैं और सेठ साहिब ने अपनी तरकीब चलाने केवास्ते अपना नकद रुपया देकर भंडार भी नियत

कर दियाहै उसका संक्षेप आशय एसा है जो पारसो लडके युनिवर सिटी का पहला इमतिहान देकर अगाडीऊचे दरजे की विद्या में निपुण होना चाहे उनको एक कमेटी देखेगी और उचित समझे गी तो रुः ५०) माहवारी और अगर विलायत पढने जावेंगे तो १५०) माहवारी और पुस्तक पढाई सफर खर्च भी देगी जब वे पढकर तैयार होजाय और कमसे कम रु १५०)माहवारी पैदा करने लगजाय तब किश्त करके सब रुपया जो उनकी पढाई में खर्च पडा है मय ४) रुपया फी सैकडा सालियाना ब्याज के भंडार में पीछा जमा करा दें

पढने वालों को कमेटी की आज्ञा प्रमाण चलना होगा आज्ञा भंग करने से उनेआगे रुपया नहीं दिया जायगा और जो दिया गया है वह एक मुस्त मय ब्याज वसूल किया जायगा इस सालदोलडके पढानेके वास्ते लिये जांयगे और हर साल दोदो लिये जांयगे एकवक्त में आठ पढाये जांयगे कुल रुपये का एक भंडार नियत होगा जो हमेशह जाति के उपकार वास्ते काम आवेगा—उन्हों ने इस प्रकार अपनी जाति की उन्नति का प्रबंध किया है

भाइयों एक गरीब भाइके लडके के पढाने में साठ से लेकर सौ रुपये सालियाने का खर्च है लडका पांच छ बरस में पढ कर तैयार और कमाई करने के लायक होकर अपने घर का दालिद्र दूर कर सक्ता है और इस प्रकार जाति की बहुत उन्नति हो सक्ता है ॥ इतना रुपया खर्च करने समर्थ अब भी बहुत से जैनी हैं सो उनको परोपकारार्थ यह करना चाहिये और यदि परोपकारार्थ खर्च नहीं कर सकें तो व्यापारार्थ ही रुपया लगावें ॥ परंतु विद्या वृद्धि और जाति की उन्नति में कुछ करना तो अवश्य चाहिये ॥

जैन विद्यालय भंडार

१७१६॥) मगसिर बदी १५ तक

५) लाला चरनदास रामजीदास अंबाला

१०) „ ख्यालामलजी जोरामल

१०) „ शेवगरामजी मिस्रीमल

१०) „ कुंजलालजी सोहनलाल

५) „ रामबकसजी तोताराम

२) „ केवलरामजी भारीमल

१) „ हरचंदरायजी मुतसदी लाल

१) „ तुलसीरामजी चोखेलाल

१) „ छज्जूमलजी बजाज

१) „ कलियानदासजी रामप्रसाद

७) „ जुहारसिहजी हरद्वारी मल

५) „ जोहरीलालजी बनवारी लाल

१) „ कपूरचंदजी ओवरसियर

१) „ घमंडीलालजी दहलीवाल

१) लाला नथुमलजी बैजनाथ

१) „ चानरसीदासजी कुंदन लाल

१) „ नामतसिहजी मुनीम

१) „ रामगोपालजी सादीराम

१) „ बनसीलालजी जोहरीलाल

१) „ बखतावरमलजी मांगी लाल

१) „ भोकसुमलजी संकरदास

१) „ रामलालजी कमसरियट

२) „ फुनदूलालजी खजानची

२।) खेरीज पंचान

९।।।) पंचान स्त्रीयां

५) लाला सिखरचन्द्रजी ओवरसियर नहान

४) „ मुन्नालालजी एकौंटन्ट

५) „ खीवराजजी पाटनी के कडी ब्याह की खुशी के

२) „ मोतीलालजी नाहान

७) „ चिरंजीलालजी ओवरसियर घाटमपुर

११) लाला पूरनमलजी हनुमंतराम हैदराबाद दखन
१०) „ सरवसुखजी पहाडा कोटा
५) „ भूरामलजी मास्टर बीकानेर
२५) „ श्री पंचान नलखेडा हस्ते जगंनाथ ब्राह्मण

१९०३॥) जोड फागुन बदी १५ संवत् १९४८ तकका

छोटे से बडा होता है

बबई बिश्वविद्यालय में सं१८६२ में प्रथम परीक्षा देनेवाले केवल ८६ विद्यार्थी थे दस वर्ष पीछे सन १८७२ में ८४० हुये फिर दस बरस पीछे सं१८८२में १३७४हुये और अब फिर दस बरस पीछे सं१८९२ में ३०३० विद्यार्थी हुये इसी प्रकार बराबर काम जारी रहेगा तो जैन विद्यालय जिसकी नीमलगाना चाहते हैं अगर लग गई तो तीसबरसमें उसकी भी एसी ही बढवारी हो एसा खयाल करने से हमें हिम्मत होती है और २ भाइयों कोभी होनी चाहिये क्यों कि सब काम छोटे से बडे होते हैं और एसा बिचार कर जैन विद्यालय की नीम लगाने में सर्व भाइयों को यथाजोग्य सहायता करनी चाहिये ॥

कुरीतियों का बन्द होना

यह देखने से खुशी होती है कि हमारी जातिमें अब बहुधा कुरीतियों के बन्द करने की चेष्टा हरेक विद्वज्जन करते जाते हैं सो ठीकही हैं ज्यो २ प्रभात समय सूर्य का उद्योत होता जाता है त्यों २ रात्रि संबन्धी अंधकार दूर होता जाता है इसी प्रकार ज्ञानदिवाकरके प्रकाश से अज्ञान अंधकार दूर होता है और भले नेत्रवाले पुरुषों को सुमार्ग

और कुमार्ग दृष्टि पडता हैं ॥ ज्ञान नाम इसी का है कि जिससे भले बुरे की पहचान हो और बुरे को छोडे भले को गृहण करें ॥

यहां अजमेर में यह रिवाज है कि जब किसी के बिवाहादि कार्य्यों के निमित्त ज्योंनार होनी है तब सर्व स्त्रीजन बाजार यागली के बीच में बैठकर जीमती हैं ॥ गालियों की हकीकत सब जानते हैं वमब मल मूत्र से भरीहुई महा दुर्गंध और घिनावनी होती है कि वहां की पडी हुई चीज को कोई उठाता नहीं है परन्तु लोक मूढता एसा दुर्निवार है कि उन्हीं गलियोंमें नये २ वस्त्र आभूषण पहरे हुये स्त्रियां बैठ जाती है और पतलों में रखकर अनेक प्रकार के पकवान मिठाई बड़े स्वादसे खाजाती हैं और पुरानी सेली के लोग यह देख कर बहुत प्रसन्न होते हैं ॥ परंतु धन्यवाद है श्रेष्ठी श्री मूलचंद्रजी को कि उनके प्रबंध से यह रस्म टूटती जाती है और अब यहां के चारों धडे के बुद्धिमान लोग बागों में जहां बडे २ पक्के दालान पंचायती बनेहुयेहैं ज्योंनार करने लगे हैं ॥ यकीन होता है कि थोडे दिनों में रफते २ यह गालयों में ज्योनार का होना बंद होजायगा

इसी प्रकार विवाह में अलूफे के साथ स्त्री जन गालियां गाती हुई पुरुषों के साथ २ बरातियों के डेरे पर जाती थीं और बरातियों के बीचमें अकेली जाकर लडकी की बहन या भूआ बींदको लहरिया बंधाती थी सो यह रिवाज प्रथम सूरजमलजी की बाई के व्याहमें नहीं हुई उसकी देखा देखी छगनलालजी कासलीवाल तथा और साहबों नेभी न करी और बींदको लहराया सवासने ने बंधाया सेठ चांदमलजी की बाई के व्याव में भी यही रीत हुई और पुरषों के साथ स्त्री जन गा

लियां गाती हुई भी नहीं आई ॥ पहरावनी के वक्त पंचों के बीच में जो ब्याहन ब्याही को स्त्रीयोंके कपडे पहनाती और उसके काजल टीकी लगाकर आईना दिखाती है और उस वक्त बहुत कुछ वेहूदा हंसी होती है सो यह रिवाज भी मुन्शी छगनलालजी कांसलीवाल और सेठ चांदमलजी के नहीं हुई और यह नेग पुरुषों ने हीं कर दिया और यकीन होता है कि और लोग भी ऐसाही करैंगे

चिठियों के संक्षेप समाचार

लाला महावीर प्रशादजी विजनोर से लिखें हैं कि कसवे नहटौर में एक बरात नजीवाबाद से शंकरदासजी धूमसिह श्रीनगर वालों की आई थी लाला कुंजमलजी जिन के बरात आई थी बडी धूम धाम से बाग में अगौनी देकर बरात लिवा लेगये ॥ अगले दिन मंदिरजी में सर्व पंच इकठेहुये और नहटौर में जैनपाठशाला नियत करने के वास्ते नहटौर के पंचोने और बरातियों ने माहवारी चंदा लिख दिया धन्य है लाला कुंजबिहारीलालजी को जिन्हों ने माहवारी चंदा भी दिया और यह भी स्वीकार किया कि अगर किसी महीने में चंदा कमती जमा होगा तो बाकी हम देवेंगे ॥ उस वक्त लाला सलेखचन्द्रजी नजीवाबाद लालाबालगोविन्दजी श्रीनगर लालाकुंजबिहारीलालजी व मुन्शी दीवानसिंह नहटौर और समस्त पंचो की सम्मति से यह भी निश्चय हुआ कि पांच रुपया सैंकडा अगौनी पर बेटे वाले से पाठशाला के वास्ते लिया जावे और लालाशंकरदासजी ने उसीवक्त जमा करादिये ॥

अब एक पंडित की जरूरत है जिस्को रुः १०) तथा १२) का महीना दिया जायगा संस्कृत कौमदी गणित पूजा पाठ आदि पढा सके जिस किसी को नोकरी करनी हो लालाकुंजबिहारीलालजी नहटौर जिला बिजनौर को चिट्ठी लिखें ॥

॥ विज्ञापन ॥

मेरे दो लडके हैं और अगरेजी व नागरी पढते है मुझको उन के वास्ते एक माष्टर का जरूरत है वह एन्टरन्स पास हो उसको तनख्वा रुः २०) खुश्क या रुः १२) और खूराक दूंगा अग्रवाल भाई को ज्यादह सुबीता होगा मैं भी अग्रवाल हूं जिस किसी महाशय को करना मंजूर होय वह अपनी दरखास्त जैनप्रभाकर के पास या मेरे पास इस पते पर भेजे

चिरंजीलाल ओवरसीयर
नहरगंग घाटमपुर
जिः कानपुर

जैन पाठशाला जैपुर के कार्याध्यक्षो की तरफ से सूचना दी जाती है कि जिन भाइयों ने उक्त पाठशाला को सहायता निमित्त नये नगर के मेले में महावारी रुपया देने की प्रतिज्ञा करी थी वे अब कृपा कर अपना २ रुपया शीघ्र भेजें क्यों कि एक वर्ष पूरा होने आया और उसके साथही संवत् १९४९ का चंदा भी भेज दें सर्व भाईयों की सहायता से ही पाठशाला का काम चलेगा

———ooo———

धर्म विद्या वृद्धि करने की तरकीब में सर्व भाई को उचित है कि अपनी२ सेली की सम्मति लिखें और जैन विद्यालय भंडार में रुपया जमा कराने की कोशिस करें

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया

नम्बर २

मिती बैसाख सुदी १ संवत १९४१ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

॥ विक्टोरिया प्रेस अजमेर में छपा ॥

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाइयों से जिनके पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावग एकत्र हों पढ कर सुनावें ॥ आप के शहर की जाति और धर्म संबधी नई वार्ता पत्र में छापने को भेजें ॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकार्ड भेज कर मगालें ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ॥=) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या धन धर्म जात कीउन्नति करना इसके उदेश हैं ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपैगा ॥

जैनविद्यालयभंडार १९०३॥) फागुनवदी १५ सं१९४८ तक १०) लाला उदयचंदजीपाटनी नयानगर २) लाला ज्ञानचंदजी समीरचंदजी लाहोरवाले ५) श्योराजजी दुलेराजजी मुहता जोधपुरवाले २०) श्रीपंचान वीजोली १०) सुरतरामजी छगनमलजी पहाडा हैदराबाद २) इमरतमलजी हमीरमलजी बोरा—१९५२॥) जोड बैसाख सुदी १ सं १९४९ तक.

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करे। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर २ } अजमेर वैसाख सुदी १ संवत् १९४९ { अंक २

जैन सभा झालरापाटन की चिठ्ठी

—:o:—

आगे यहां पाटन में एक मंदिर तेरह पंथ आम्नाय तीन बीस पंथ आम्नाय के बहुत सुन्दर बडी २ लागत के बने हुये हैं ॥ उनमें बडा मंदिर श्री शांतिनाथजी का है उस में अठ पहरी नौबत नकार घडियाल बजते हैं सिपाहीयान मंदिरजी के पहरे के वास्ते नोकर है यहां के चारों मंदिरजी का खर्च करीब २००) माहवारी का है इस वक्त ज्ञानकी मंदता के कारण धर्म का उद्योत पहले बनिस्वत कमहै तेरह पंथ आमनाय के मंदिरजी में भाई कुंदनलालजी की प्रेरणा तीन साल से अच्छी है हर चतुर्दशी को सभा होती है दस बीस भाई तन मन से शामिल है धर्म का उद्योग बना हुआ है ॥ भादों सुदी १२ संवत १९४८ को सभा हुई उसमें करीब १०० सभ्यजन उपस्थित थे भाई हुन्सराजजी ने तीनलोक के स्वरूप पर

और भाई हीरालालजी ने विद्या के विषय में व्याख्यान दिये पीछे भाई कुंदनलालजी ने अढेवा (आंकडा) साल १ की आमदनी खर्च मंदिरजी का जो उन्हों ने अपनी निगरानी से बनवाया था सुनाया इन्तजाम आमद खर्च इस मंदिरजी का बहुत अच्छे तरी के पर मुकर्रर करादिया है॥ आम दनी सब भाइयों पर हसबहैसियत माहवारी बांधदीनी है और आ मदनी का तखमीना देखकर पंचों की सम्मति से खरच का तखमी ना करके सालभर का अंदाजा आमदनी खरच पर लिखकर देदे ते हैं कि इस माफिक सालभर में खर्च होना चाहिये जिस की नकल चिट्ठी साथ भेजी जाती है छपा कर सर्व भाइयों के हितार्थ जैनप्र भाकर में मुद्रित कर दिया कीजि ये इस अढेवे और तखमीने से ब डाभारी लाभ है कि मंदिरजी का हिसाब मानिन्द आइने के साफ निर्मल होजाता है और हरेक भाई को आमदनी खर्च का हिसाब मालूम होजाता है और हिसावकी गलती या तैयार न होना अथवा चौधरी पंच जो हिसाब अपने पास रखते और सर्व भाइयों कोहिसाब देनेमें हील हुज्जत किया करतेहैं इन कारणों से मंदिरजी में आपस में कलह लडाई होती है वेसव दूर होजाता है धर्म का लाभ और वा त्सल्य गुणकी वृद्धि होती है इस लिये सर्व भाइयों से प्रार्थना है कि वे अपने २ मंदिरों में इसी प्र कार तखमीना व अढेवा बांधकर हिसाब की सफैयत करें गे॥

इसके पीछे जो २ काम ३ वर्ष में धर्म प्रभावना वगैरहः और स भा के विचार हुये उनपर खुला सा लिखकर सुनाया गया और पाठशाला के लिये कई कायदे मु करर करे और लडकों को पढाने

के वास्ते इरजे कर पढाई का नकसा बनाया वह सुनाया गया और लडकों का इमतिहान भी लिया गया ॥

एक चिठी भाई धन्नालालजी आसकरण की दुर्गा पुर से छपी हुई आइथी उसके सवालो का जबाब भाई कुंदनलालजी ने लिखा था सो अब पंचो ने मंजूर किया और सर्व सभा की सम्मति हुई कि जैन शास्त्रों का छापना अच्छा नहीं और न छपाने की कोई आवश्यकता है ॥ पीछे जैकारा बोल कर रात के दस बजे सभा विसर्जन हुई ॥

यहां बडे मंदिरजी में पाठशाला है परन्तु लडकों की पढाई अच्छी नहीं होती ब्राह्मण पंडित सिखों को पाठ सुनाने में काल व्यतीत कर देते हैं और २ अर्ध घं स्वाध्याय करके चले जाते हैं ॥ इस सबब से वैसाख बदी १५ की सभा में भाई पूनमचंदजी मालिक कोठी हंसराजजी हमीरमलजी व भाई कुंदनलालजी ने कहा कि एक पाठशाला इस मन्दिरजी में सभा ताल के बिठलाई जावे और खर्च का प्रबंध चन्दा होकर होजावे तो ज्ञानकी वृद्धि होवे सो यह बात सबने मन्जूर की और असाढ सुदी २ संवत् १९४८ को पाठशाला नियत हुई २१ लडके पढते हैं पंच संधी रत्नकरंड श्रावकाचार श्लोक पढनेवाले ४ लडके हैं नितनेम की पूजन आदि ७. और बाकी १० व णमाला आदि तीन चौबीसी दर्शन सीखते हैं ॥ इसमें मुख्य सहायक भाई हंसराजजी हमीरमलजी की है ये धनाढ्य और धर्मात्मा पुरुष है अबभी उन्होंने ७०) दिये हैं—

यहां अरसे १० साल से कोई क्षेप श्रावकों में तड होगईथी उनमें आपस में मिलाप करने के

लिये बहुत जनोंने कोशिस की परन्तु दिल की सल्य नहीं निकली सफाई नहीं हुई लेकिन अब साह रामचन्द्रजी जागीरदार परधान वं बनलालजी के भाई जो खास झालरापाटन में तहसीलदार हैं उन की और पूनमचंदजी की औरभी कई भाइयों की कोशिस से एकता होगई ॥ तहसीलदारजी साहब ने दोनों तड़ वालों की दलीलें ऐसी अच्छी तरह से साफ करदीनी है कि दोनों थोक के भाइयों ने आपका कहना मंजूर किया और आसोज सुदी १५ पर मामूली रथजात्रा होती है उस रोज सब एक हो कर सबकी मिलौनी हुई मंदिरजी और बिरादरी के कामों को ४ पंच नियत होगये हैं ॥ हजारा धन्यवाद तहसीलदारजी साहब कोहैं जिन्होंने ऐसे बडे झगडे को सहज में समझाकर फैसला करदिया और उमेद है कि आप धर्म और जाति की उन्नति में हमेश इसी प्रकार अपना दिल लगाते रहेंगे ॥

इस मंदिर में कुल शास्त्रजी और सामान की फरद अलहदे २ तैयार हैं और एक २ काम अलग२ भाइयों के सुपरद है इस वजेसे सब इन्तजाम ठीक है और श्रीजी की कृपा से आनंद वर्ते हैं ॥

मिती कार्तिक सुदी २ सं १९४८ नकल दूसरी मिती बैसाख वदी ३ सं १९४९

कई कारणों से यह चिट्ठी नहीं छप सकी सो झालरापाटन के भाई क्षमा करें अब बडे हर्ष से हमने इस चिट्ठी और हिसाब का संक्षेप कर लिखा है ॥

झालरापाटन के तेरह पंथ आमनाय के मन्दिरजी की आमदनी और खर्च का हिसाब आसोज बदी १ सं १९४७ से भादों सुदी १५ सं १९४८ मास १२—

(खुलासा)(विगत हमने नहीं

लिखी है) आमदनी हुई—

८॥=) रोकड़ बाकी
२०६॥=) आमदनी माहवारी भाइयों से हुई
१०) सरकार से आये
५८॥-) किराया मकान दूकान
२५०॥-)॥ तखमीने मामूली से आमदनी सिवाय हुई उपकरण कपडा बरतन वगैरह
२१७॥-)॥ गुजस्ते साल की बचत की जमा बांधी सामग्री पुराना गोटा कपडा बरतन वगैरह
२०॥=)॥ पाठशाला की आमदनी
१८५॥) अमानत उदरत लोगों का सामान आया और दिया गया जमा खर्च हुआ
१०५८॥-) जोड आमद

खरच

२१७॥=)॥ सरस्वाई खरच सामग्री पूजन की
९६) भाई हंसराजजी की तनख्वाह
७२) तनख्वाह पक्षालिया
१५॥=)॥ सभा खरच
८३॥=)। खरच घी तेललकडी का जेवाले भावका अठाई मुतफरक
१४१॥-)। सिवाया तीगेखाते ना छतर भामंडल संदुकडी कपडा धोती दुपट्टा चांदनी बरतन वगैरह
३४॥=)॥ पाठशाला खरच
२४५=)॥ अमानत उदरत देना सोदीना

१००६॥) खरच कुल
५२-) रोकड बाकी भादों सुदी १५

१०५८॥-)

तखमीना दूसरी साल की आमद खरच का—आसोज वदी १

सं १९४८ से भादों सुदी १५ सं १९४९

तहसील आमद

५१३) रोसन बाकी
१६५-) आमदनी माहवारी भाइयों पर बधी
१२) सरकार से
६०) किराया दुकान मकान
७५) सिवाय आमद सामग्री वगैरह
१) निर्वाण जी के लड्डूकी
१॥) कौडी अठवाडे के बाजार की
१०२।-)॥ उघाई पिछले साल की
२००) चंदा पाठशाला का
८७०-)॥ जोड आमद

तफसील खरच

२२५) सामग्री १८०) मामूली २४) अठाई २१) भादों
९६) तनखा भाई हंसराज
७२) तनखा पखालिया
१२) सभा खरच
८५) मुतफरक घी तेल लकडी धावी बाजेवाले वगैरह
१५) घडी
५०) मंदिरजी की सफाई रंग वगैरह
२००) पाठशाला
७५५) जोड खरच
११५-)॥ बचत रहने की उमेद है

करहलकाउच्छव

मैं चैत्र बदी ८ को दिन में ११ बजे रामनगर जिले बरेली में पहुंचा। यहांपर श्रीमत्पार्श्वनाथजी का ज्ञान कल्याणक हुआ है और आज दिन इस क्षेत्र का नाम अहिक्षतजी प्रसिद्ध है यहांपर हमेशह वार्षिकोच्छव होता है दो बजे बाद रथयात्रा गीत नृत्य वादित्रों कर मंडित आनंद दाता हुई

रात्रि को आरती के बाद शास्त्रजी का व्याख्यान और नृत्यगान होता था इसी प्रकार तीन दिन तक आनंद रहा दसमी के दिन सभा हुई उसमें विश्नोन्नति कारक उपदेश हुये॥ इस मेले के प्रबंध करता मुरादाबाद रामपुर के पंच हैं और अष्टमी से बारस तक बड़े आनंद से होता है

यहां से मैं करहल रवाने हुआ और चैत बदी ११ की रातको ११ बजे वहां पहुचा रथयात्रा दिन में बडे धूमधाम से होचुकीथी मगर ज्ञान सूर्योदय नाटक दृश्य जो उसी दिन से होने वाला था प्रारंभ नहीं हुआ था मेला चैत बदी १५ तक होना नियत था मगर मैनपुरी अटेर आदि से ६ मंदिरजी मय रथयात्रा के जलूस के आये इस कारण दो रोज मेला बढ गया और करीब बारह हजार के जैनी भाई उसी प्रांत के एकत्र होगये थे सो दिन में तो हरेक जगह के मन्दिरजी की तरफ से रथयात्रा होती थी और रात्रि को ४ दिन तक शास्त्रजी की सभा के पश्चात ज्ञान सूर्योदय नाटक का दृश्य खेला गया इस प्राचीन संस्कृत नाटक को भाई हजारीलालजी साहब नें छन्द बंध बनाकर ८ लड़कों को संगीत शास्त्रानुसार सिखाया है जिस के सुननें को बहुत से भाई बडा २ दूर से आये थे

पहले भी यह नाटक मथुराजी आदि कई मेलों में खेला गया था मगर यहां की अपूर्व ही शोभा थी॥ मैं धन्यवाद देता हूं पंडित गुलझारीलालजी तथा हजारीलालजी करहल निवासी महाशयों को जिन्होंने तनमन धन से नाटक मंडली खडी करके ज्ञान वैराग्यादि के गुण और क्रोधादि कषायो के दोष प्रत्यक्ष रूप दर्शा के धर्म प्रभावना का प्रकाश किया॥ नाटक खेलने के अर्थ एक

रंग भूमि अपूर्व बनाई थी—इकी कत में नाटक देखने लायक था मगर उस देशके जैनियों में विद्या का अभाव होने से उन्के लिये सिवाय करणेन्द्रिय और नेत्रेन्द्रिय के विषय पोषने के और कुछ विशेष लाभ दायक अर्थात् ज्ञान वैराग्य का दाता नहीं होसका था और मैं खयाल करता हूं कि अगर नाटक के साथ ही साथ धर्म संबंधी विद्या का प्रचार नहीं हुआ तो यह जैन नाटक मंडली पारसी नाटक मंडलियों के समान विषय कषाय की पोषने वाली होजांगी—इसलिये मेरी सब जैनी भाईयों से प्रार्थना है कि धर्म संबंधी विद्या उपार्जन में भलेप्रकार प्रयत्न करना चाहिये॥ अगरचे कि इस मेले में बारह हजार मनुष्य आये थे मगर पंडित पांच सात भी नहीं थे पंडित भादींलालजी वहीं के रहने वाले बीमार थे और पंडित गुलजारीमलजी तथा भवानीलालजी करहल निवासी और पंडित छेदालालजी भौंगांव निवासी को पूजा पाठ नाटक का बंदोबस्त करने से ही घडी१ की फुरसत नहीं होती थी इस कारण मेले का मुख्य इष्ट प्रयोजन शास्त्रजी का उपदेश ज्ञानचर्चा रत्नत्रय की प्रभावना बिलकुल गौण होगये थे यह बडाभारी घाटा है—

वदी चतुर्दशी को श्रीयुत पंडितवर बाबूरत्नचन्द्रजी बी. ऐ. वकील हाईकोर्ट इलाहबाद वाले पधारे उनके उद्योग से रात्रि को एक सभा हुई उस वक्त पंडित गुलजारीलालजी ने मंगलाचरण करके सभा का प्रारंभ किया और मुन्शी प्यारेलालजी साहब इटावेवालेने जैनियों की ही नदशापर व्याख्यान दिया फिर बाबू रत्नचन्द्रजी साहब ने फिजूल खर्च बंद करने पर अति उत्तम व्याख्यान दिया—आ

पके अखंड मेह की धारा समान मधुर ललित व्याख्यान का बडा असर हुआ और उस प्रांतके उन की जाति के लवैंचू जैनी भाईयों ने एक सम्मति होकर यह निश्चय किया कि विवाह के तीन दर्जे जिसमें रुः २००) ४००) ६००) से अधिक कोई खर्च करने नहीं पा यकीन है कि वह नियम निर्विघ्न जारी होजायगा—

श्रीयुत लाला फुलझारीलाल के पुज्य पिता साहिब ने करहल में हरसाल मेला होने के अर्थ १ गांव जिसकी आमदनी १५००) सालियाना है दिया है उसी आमदनी से हरसाल मेला होता है लेकिन इस साल फुलझारीलालजी की माजी साहिब ने किसी वृत का उद्यापन किया था इस कारण मेला विशेष धूमधाम करवाया था—जिसमें जात्रीयों की जीमणवार और मन्दिरजी में उपकरण और विद्यार्थीयों को पारितोषक देने का प्रबंध किया था सो बारह हजार जात्रियों की ज्योनार भी अच्छी तरह होगई जिसके खरच में रुः ५००० पडा होगा. और मन्दिरजी में ११०० के उपकर्ण भी चढा दिये गये परन्तु बेचारे विद्यार्थीयों को जो वडी उमेद से इमतिहान देने आये थे किसी ने कुछ न पूछा और न कुछ इनाम दिया वे सब बिलखे होकर अपने २ घर लौट गये ॥ बस अफसोस इसी बात का है कि हजारों रुपये सर्फ हुये मगर विद्योन्नति में जिसकी इस समय अत्यन्त आवश्यकता है कुछभी न लगा मैंने सुनाहै कितने ही भाईयों के कहने पर लाला साहिब ने रुः३१ और फिर ज्यादह दवाने पर रुः५१ करहल जैन पाठशाला को दिये खैर न होने से इतना होना भी अच्छा है

हम हृदय से कोटिश धन्यवाद

लाला फुलझारीलालजी को देते हैं कि ऐसा प्रभावनांग वर्द्धकमेला जो उस प्रांत में कभी नहीं हुआ था आपने करवाया मगर इतनी हमारी भी अर्ज हैं कि जो रुपया विद्यार्थीयों को इनाम देने की प्रतिज्ञा की थी सो पूरी होनी चाहिये

अगर आप की मरजी होतो जैन विद्यालय भंडार अजमेर में भेजदें वहां से जो बैसाख और कार्तिक में परिक्षा होकर इनाम बंट जावे या जैपुर या करहल या फीरोजाबाद आदि पाठशालाओं के भंडार में जमा करादें हमारे भाई मेलों में ज्योनार करने में अपनी नामवरी समझते हैं और उस में हरसाल हजारां रुपया खरच करते हैं परन्तु विद्यार्थीयों की अन्न वस्त्र पारितोषिक से सहायता कर वृद्धि करने में कुछ भी नहीं खरचते सो बडी भारी गलती है ॥ बारह हजार आदमीयों को एक दिन जिमाना खर्च में बराबर है बारह आदमीयों को हजार दिन जिमाने के लेकिन फायदे में बहुतही अधिक होता है सो विचार करने की बात है कि अगर कोई भाई बारह आदमीयों को हजार दिन याने तीन बरस तक खाने को दे और विद्या पढावे तो जाति को कितना लाभ होवे और उस दातार का कितना जस होवे लेकिन इसमें एक और गूढ फाइदा है कि बारह हजार के जिमाने के रुः५०००) तो बिलकुल खर्च पड गये और उनका नाम निशान भी जाता रहा परन्तु अगर यही रुः ५०००) साहूकारके जमा कराविये जांय तो सूद में विद्यार्थी हमेशह पढते और खाते पीते रहें रुपया हरवक्त नगद जमा रहे दातार का नाम और जस हमेशह कायम रहे परन्तु हमारे भाइयों की

इस तरफ दृष्टि नहीं यही बडाभारी घाटा है जैनी लोग धन खरचने में कमी नहीं करते परन्तु ठीक २ मार्ग से खरच नहीं करते इसी कारण विद्या धन और धर्म की हानि है ॥ यकीन है कि प्रभावनांगधारी भाई इस लेख पर विचार करके ज्योनार वगैरह में फिजूल बेमतलब अपना धन नहीं लुटावेंगे परन्तु उसकी एवज विद्यालय भंडार में जमा कराके धर्म की विद्या की उन्नति करेंगे

आपका कृपा कांक्षी

सर्व जैनियों का हितेच्छुदास

एक जैनी

प्रमाद

पंडित चुन्नीलालजी मुरादाबाद निवासी की चिठी से मालूम हुआ कि वे धामपुर के मेले में गये थे और वहां के सर्व भाईयों से प्रार्थना की कि जैनविद्यालय के वास्ते जो चिठा लिखा गया है और जिसका प्रारंभ चार वर्ष गुजरे इसी स्थान के मेले से हुआ है अब उसके जमा करने का बंदोबस्त हो जाना चाहिये ॥ इस बात को सुनकर किसी ने कुछ प्रबंध नहीं किया परन्तु लाला उमरावसिंहजी साहब नजीबाबाद वालों ने कहा कि वे अगले मेले में अवश्य बंदोबस्त करके सब रुपया जमा करवा देंगे

फीरोजाबाद के मेले में भी जो चिठा लिखा गया था उसके वसूल करने का भी कोई बंदोबस्त आज तक नहीं हुआ और न कुछ होने कीउमेद दिखाई देती है—

जैन प्रकाश में लिखा है कि कार्तिक सं १९४९ के श्रीजंबूस्वामीजीके मेले में जो सभा होवे उसमें जाति और धर्मकी उन्नति होने को जैनविद्यालय का प्रबंध सबसे पहले होना वाजब है और

हम उनकी सम्मति को स्वीकार करते हैं और अपनी सम्मति इस विषय में यह देते हैं कि जैनविद्यालय के वास्ते जो पहले फीरोजाबाद और धामपुर आदि स्थानों में उघाई हुई और चिट्ठे लिखे गये हैं वे सब कागजात उस महा सभा में पेशकीये जावें और जिन २ भाईयों ने विद्यालय के वास्ते रुपया देना स्वीकार किया है वे अपना २ रुपया वहांपर जमा करादें ॥ हमारे सुनने में आया है कि अनुमान ५००००) के चिट्ठा लिखाहुआहै और हम खयाल करते हैं कि हमारे भाई अब अपना प्रमाद छोडकर रुपया जमा करादेवे तो बहुत वाजिब होवे इधर तो उनके ऊपर से ऋण उतर जावे उधर जैनाविद्यालय का कार्य प्रारंभ होजावे जिससे जैन धर्म का उद्योत होवे ॥

हम अपने भाइयों कोजिन्होंने इस परम धर्म के कार्य में रुपये से सहाइता देना स्वीकार किया है याद दिलाते हैं कि अगर रुपया जल्दी जमा होजाता तो इस अरसे में कितनी विद्या की वृद्धि हो जाती और कितने लडके पढ कर तैयार होजाते वह सब लाभ प्रमाद के कारण नहीं होसके सो अब प्रमाद को अनर्थ का मूल जानकर त्याग कीजिये और हेयोपादेय का बिचार कर जोग्यकार्य को करने का सीघ्र ही प्रयत्न कीजिये क्योंकि बडोंने कहा किः

आज काल जे करत रहांहि
ते मूरख पीछे पछतांहि ॥

धन जीतव्य बिजली के चमत्कारवत हैं इनके बिनशने में देर नहीं लगती इस लिये जो कुछ दान परोपकार धर्म करना होइ सो जल्द करलेना चाहिये

रायबहादुर सेठमूलचन्द्रजी सा

हिब संघ सहित मूडबदरी की जात्रा करके राजीखुसी आगये सर्व संघ में कुशल रही बंबई में उन्होंने रथ जात्रा का बडाभारी उच्छ-कराया ॥ परम हर्ष और आनन्द के समाचार यह हैं की श्रीमत् धवल. जयधवल. महाधवल. सिद्धांतों की देवनागरी वर्णमाला में प्रतिलिखाने का वे प्रबंध कर आये हैं और उनके लिखने का मुहूर्तभी होगयाहै ॥ यह दुसाध्यकार्य उन्होंने सहज मेंही सिद्ध करलिया और इन महासिद्धांतो के जीर्णोद्धार करने से जैनियों का बडा उपकार किया इसका धन्यबाद देना वाजिब है

——ooo——

विज्ञापन

सर्व साधर्मी भाई जोग मालूम होवे कि जैनबियालय संबंधी परीक्षा मिती कार्तिक सुदी १२ १३ और १४ १५ संवत् १९४९ को होगी उसकी पढाई नीचे लिखे प्रमाण नियत की गई है सर्व भाईयों को उचित है कि अपने अपने नगर की जैनपाठशालाओं में इसी माफिक पढाई नियत करके बिद्यार्थीयों को परीक्षा के वास्ते तैयार करें और परीक्षा दिलावें ॥ जो बियार्थी परीक्षा में चौकस निकलेंगे उनमें से प्रथमादि तीन तक को यथाजोग्य जैनविद्यालय भंडार में से इनाम दिये जांयगे ॥

प्रथम परीक्षा

१ रत्नकरंड श्रावगाचार श्लोक ९० अर्थ सहित कंठ.

२ लघुकौमदी पंचसंधि साधनका अर्थ सहित कंठ.

३ हिसाब आनापाई मनसेर का भाग पर्य्यंत.

द्वितिय परीक्षा

१ रत्नकरंड श्रावगाचार संपूर्ण श्लोक. १५० अर्थ सहित कंठ.

२ द्रव्यसंग्रह संपूर्ण गाथा अर्थ सहित कंठ.

३ लघुकोमदी पटलिंग रूपसाधन का अर्थ सहित कंठ.

४ हिसाब त्रैराशिक पंचराशिक जिनस की फेलावट.

तृतिय परीक्षा

१ तत्वार्थ सूत्र अध्याय ५ अर्थ सहित कंठ.

२ सिंदूर प्रकर्ण काव्य ५० अन्वय पदच्छेदादि अर्थ सहित कंठ.

३ न्यायदीपका अर्थ प्रत्यक्ष प्रमाण तक सूत्रधारा अर्थ कंठ.

४ लघुकोमदी एयन्त प्रक्रिया तक रूप अर्थ कंठ.

५ हिसाब भिन्न सादा.कटमा, व्याजकीफेलावट. महाजनी रीतिसे.

जगह २ की पाठशालाओं में एक रीति की पढाई होकर सबकी शामिल परीक्षा होनेसे विद्या की वृद्धि विशेष होती है और विद्यार्थीयों कीरुचि पढने में ज्यावह होती है इसलिये आशा है कि सर्व जैन पाठशालाओं के कार्य्याध्यक्ष इसका प्रबंध अवश्य करेंगे

ऊपर लिखे प्रमाण हमारी नियत की हुई छः महीने की पढाई यदि कठिन और लडकों की पढने की सामर्थ से अधिक मालूम होवे और आप कुछ न्यूनकरना चाहैतो फौरन चिट्ठी लिख भेजें वाजिब समझा जायगा तो आपकी सम्मति स्वीकार करके उसकी इत्तला दूसरे पत्र में मुद्रित कीजायगी

वैजनाथ बांकलीवाल
सेक्रेटरी जैनविद्याभंडार
अजमेर

कितने ही कारणों से पत्र के छपने में देर होजाती है सो भाई क्षमा करें—

जैनविद्यालयभंडार की वृद्धि करना सर्व भाईयों को वाजिब है फुंदा २ कर तलाब भरता है दो च्यार दस पांच रुपया देना कुछ मुशकिल काम नहीं है ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया

नम्बर २

मिती जेठ सुदी १ संबत १९४९ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

॥ विक्टोरिया प्रेस अजमेर में छपा ॥

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाइयों से जिनके पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देवेंं और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से भाइ एकत्र हों पढ कर सुनावें ॥ आप के शहर की जाति और धर्म संबंधी नई वार्ता पत्र में छापने को भेजें ॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकार्ड भेज कर मगालें ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ॥=) बाहर वालों से मय डाक महसूल ॥) और एक पुस्तक का -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या धन धर्म जाति की उन्नति करना इसका उद्देश है ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपेगा ॥

नोटिस

सर्व भाईयो को जिनन्हो ने जैनप्रभाकर की कीमत अभी तक नही भेजा है वाजिब है कि अपने २ दाम फौरन भेजदेवें देरकरना उचितनही है

इन दिनो बाहिर शहरों में जंपूजा रथ यात्रा आदि उच्छव हुये उनके समाचार नही आये सर्व भाईयों को उचित है कि ऐसे धर्म संबंधी समाचार तुरंत भेजादयाकर

सर्व चिठ्ठी रुपया वगैर छोगालाल अजमेरा के पास भेजना

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ३ } अजमेर जेठ सुदी १ संवत् १९४९ { अंक ३

॥ धर्मामृत वर्षनी जैन सभा खुरई ॥

इस सभा का तृतिय बृहत अधिवेशन चैत्र सुदी १५ सं १९४९ को हुआ था जिसका सामान्य व्योरा इसप्रकार जानना ॥

सभा में अनुमान ८०० जैनी भाई थे उनमें २५० के आसरे बाहर गांवों से आयेथे बाकी नगर निवासी थे.

सभा के सन्मुख जैनपाठशाला के विद्यार्थीयों की परीक्षा लीगई कुल विद्यार्थी ५२. जिनमें १२ संस्कृत लघुकोमदी. और बाकी ४० पूजन मंडल इत्यादि पढते हैं. परिश्रम अच्छा किया गया है और विशेष कर संस्कृत विद्यार्थी की जल्द अच्छी आशा है ॥ अब यह बिचार किया गया है कि जो विद्यार्थी मंगल पूजन पढ चुके वे संस्कृत कौमदी तत्वार्थ सूत्र वा और शास्त्र पढें ॥ सवाईसिंघई मोहन लालजी ने एक २ टोपी और सभा की ओर से सर्व को पुस्तकें

सभा में फिजूल खर्च अर्थात् अपव्यय रोकने पर भी व्याख्यान पढ़े गये जिनके कारण १००) रु० के लगभग विवाह में खर्च कम करने का प्रबन्ध हुआ और वह इस प्रांत में प्रचलित भी होगया है ॥

इस नगर में लोग सभा में बहुत कम आते थे और मन्दिरजी में जिन पूजाकरने तथा शास्त्र श्रवण करने भी कम आते थे इस का भी प्रबन्ध हुआ है कि घर में से एक मनुष्य जरूर आवे ॥

एक विद्यार्थी माणकचन्द जैसवालआगरे से खुरईकी पाठशाला में पढ़ने आया है वह लघुकौमदी सम्पूर्ण और सिद्धांत कौमदी अर्द्ध पढ़ा हुआ है उस को न्याय व्याकरण और जैन सिद्धांतों में पूरा विद्वान करने का सभा का मनोर्थ है उसका खानपान का खर्च सभा ने अपने जिम्मे रक्खा है ॥

इस सभा के उद्योग से ललतपुर इटावा खिमलासा दुगाहा में सभा स्थापित हुई है और आशा है कि आस पास के स्थानों में सभा और पाठशालानियत करके जिन धर्म का उद्योग करेंगे ॥

सेठ मोहनलाल
खुरई

मंदिरजी में लड़ाई।

आप का लिखना ठीक है कि अकसर अनन्त चौदस को हरएक जगह कलह होती है यह बात बहुत बेजाबता है लेकिन और मुलकों बीच यहां की बडी तारीफ यहहैकि उस दिन शरतलगा कर जुआ खेलते हैं हायहाय बडे शोक और पश्चाताप की बात है कि इस भादवा सुदि १४ के पवित्र दिन को धर्म कर्म छोड़कर अज्ञानी लोगों ने कलहकारणी चौदस बनाकर पापकार्य करने लगगये

और रूमाल पारितोषिक दिये ॥

सभाकी पूंजी अब रु: १००००) होगई है इसका ५०) माहवारी ब्याज आता है खर्च ३०) है

सभामें पंडित खेमचन्द्रजी ने संसार में सुख प्राप्ति होने की रीति पर वा पंडित राजारामजी अध्यापक संस्कृत ने विद्या के लाभों पर व्याख्यान दिये और लाला चुन्नीलालजी ने सभाकी कारर्वाई पढकर सुनाई जिनके श्रवण करने से सर्व सभासदों के हृदय कमल आनंद रूपी जलसे आर्द्र होकर प्रफुल्लित हुये ॥

सभा ने दो तीन प्राचीन जीर्ण मंदिरों की मरम्मति कराने का प्रबंध किया है

पंडित शांतिलालजी सभापति ने यह कहा कि उनको इस बात के सुनने से अत्यंत खेद हुआ कि कोई २ अज्ञानी जैनी भाई प्रतिज्ञा लेकर उसे भंग करदेते है सो यह बात बहुत अजोग्य और पाप बंध का कारण है निरतीचार सुद्ध प्रतिज्ञा का पालना तो उसीसे हो सकेगा जिसने जिनवाणी के पवित्र निर्मल सीतल जलसे विषय कषाय रूपी मल को धोकर अपना अंतःकरण सुद्ध कर लिया है और सुद्ध भावों से प्रतिज्ञा लीहै तथापि भय और लज्जा से भी प्रतिज्ञा का पालन होसका है इसलिये पंचायती प्रबंध होना चाहिये कि जो कोई प्रतिज्ञा लेकर भंगकरै उसे पंचायती से कुछ दंड अवश्य होना जोग्य है ॥ यह सुनकर सभा ने उसी समय प्रबन्ध किया और एक इकरारनामा लिख कर सब के हस्ताक्षर होगये कि जो कोई प्रतिज्ञा लेकर भंग करै उसे पंच यथोचित दंड देवें ॥ यह रीति और २ शहरों के जैनी भाइयोंके भी स्वीकार करने जोग्य है ॥

हैं सो इसका प्रबन्ध जरूर होना चाहिये सबजगह के भाई अपनी २ सम्मति लिखें ॥

गणेशीलाल
झलरापाटन कीछावनी

जैन विद्यालय की परीक्षा

जैन विद्यालय भंडारसे सर्व देश देशांतरोंके जैनीभाईयों को बराबर एकसा लाभ पहूंचे इस वास्ते सभाने इमतिहान लेकर विद्यार्थीयोंको इनाम देना तजवीज किया था और इसवास्ते बैसाख सं १९४८ के जैन प्रभाकरमें विज्ञापन दिया था परन्तु उसके मुताबिक कोई विद्यार्थी परीक्षा देने नहीं आया आसोज के पत्र में फिर विज्ञापन दिया था कि बैसाख में परीक्षा होगी और परीक्षा के लिये पढाई भी नियत करदी गई थी और हम बडे आनंद से प्रकाश करते हैं कि इस समय बैसाख की परीक्षा में जैपुर अलवर मुरादाबाद और इलाहबाद जैनपाठशालाओं के विद्यार्थी आये ॥

यहां अजमेर से हरेक विद्यार्थी के वास्ते प्रश्नों के पत्र लिखे हुये डाक मारफत भेज दिये गये थे और वहां के पंचोने बैसाख सुदी १२ को प्रातः काल सात बजे से दस बजे तक रत्नकरंड श्रावकाचा के प्रश्नपत्र लडकों को बांटकर अपने सामने उत्तर लिखा कर उसी दिन डांक मारफत हमारे पास भेज दिये इसी प्रकार बैसाख सुदी १३ को लघुकौमदी के और १४ को हिसाब के उत्तर भी भिजवा दिये ॥- वे सब उत्तर रत्नकरंड के लाला गोपालदासजी ने और लघु कौमदी के पंडित दामोदरदासजी ने हिसाब के लाला बैजनाथजी ने जांचे और और हरेक के १०० नंबर स्थापे उनमें से यथा जोग्य उनको नंबर दिये उन सब का नकसा नीचे लिखे प्रमाण जानना।

॥ श्री जैनविद्यालय ॥

याददास्ती द्वितीय और प्रथम परीक्षा वैसाख सं ० १९४९ केफलकी

नं०	नाम विद्यार्थी	शहर पाठशाला	प्रतिक्रमण	छहढाला	हिसाब	जोड़	इनाम	
	द्वितिय	परीक्षा						
१	नानूलाल	जयपुर	६५	८४	७५	२२४	९)	
२	पुष्पचंद्र	,,	४५	६९	०	११४	०	हिसाब में बिगडा
	प्रथम	परीक्षा						
१	सुंदरलाल	जयपुर	६७	६२	१००	२२९	७)	
२	कस्तूरचंद	,,	७३	७०	८४	२२७	५)	
३	भूरामल	,,	७२	४८	८५	२०५	४)	
४	छगनलाल	मुरादाबाद	८४	६४	४०	१८८	४)	
५	घमंडीलाल	अलवर	४९	६०	७४	१८३	४)	
६	सोहनलाल	इलाहबाद	५३	४४	८५	१८२	४)	
७	रिषभदास	अलवर	४९	५३	७८	१८०	पुस्तक	
८	फूलचन्द्र	जयपुर	५४	५८	६४	१७६		
९	जवाहिरलाल	,,	५३	५३	७०	१७६		

१०	जयकुमार	इलाहबाद	३३	३४	९७	१६४	
११	रूपचन्द्र	मुरादाबाद	४०	६०	४३	१४३	
	चन्दूलाल	जयपुर	४४	२७	८७	१५८	ये लडके बिगड गये
	अनंतराम	इलाहबाद	१६	३४	९६	१४६	
	रामचरण	”	१९	२६	९४	१३९	
	रिषभचन्द्र	जयपुर	६३	४३	५	१११	

दुतिय परीक्षा के एक विद्यार्थी को रुपया इनाम दिया गया है और प्रथम परीक्षा में ६ इनाम कुल रुपया ३७) इनाम केहैं और लाला पन्नालालजी मुरादाबाद वालों ने सब विद्याथायों को पुस्तकें बांटी हैं ॥

अब इसके देखने से आप सर्व भाईयों को ज्ञात होगा कि जैन विद्यालय भंडार से कैसा लाभ है और हमारा विचार है कि जबतक के भंडार बडा नहीं होवे और किसी खास स्थान में जैनविद्याल नियत नहीं होवे तबतक इसी रीति से हरेक शहर के जैनपाठशालाओं के विद्यार्थीयों की परीक्षा लेकर इनाम बांटते रहैं इससे दो फाइदे हैं अव्वल तो इनाम की उमेद से लडके पढने की कोशिस करेंगे और पंडित लोग अच्छीतरह पढावेंगे जैनधर्म संबन्धी विद्या की वृद्धि होगी दोयम जिस शहर की पाठशाला ज्यादह उन्नति दिखलायेगी और जहां से बहुत से लडके हरसाल पढकर तैयार होंगे वही पाठशाला अंत में जैन विद्यालय होने की हकदार समझी जावेगी ॥

आगे के वास्ते पढाई नियत

करदी गई है जिसका विज्ञापन बै
साख के जैनप्रभाकर में मुद्रित हो
चुका है आशा है कि उस माफि
क हरेक जगह के भाई अपनी पा
ठशाला के विद्यार्थीयों को पढाक
र इमतिहान के वास्ते तैयार करें
गे ॥

अगली परीक्षा में जो लडके
अच्छे निकलेंगे उनको भी इनाम
दिये जांयगे और हम बडी खुशी
से प्रकाश करते हैं कि पंडित चु-
न्नीलालजी साहिब और लाला प
न्नालालजी साहिब ने पांच २ रुप
या इनाम देने को लिखा है ॥ ह
मारी रायतो यही है कि हरेक भा
ई जेन विद्यालय भंडार के मूल द्र
व्य में रुपया जमा करावे और उ
सका व्याज विद्यावृद्धि इनाम वगै
रह के काममें आवे लेकिन अगर
कोई भाई इनाम देना चाहे तो उ
नकी मरजी है यह भी अच्छा है ॥

औसर

औसर याने अपने माता पिता
दि कुटंबी जनों के मरे पीछे बिरा
दरी को जिमाना यह रिवाज कि
सतरह प्रचालित हुई इसका बिचा
र अवश्य करना चाहिये क्योंकि
इस रिवाज के कारण गृहस्थियों
को बडाभारी नुकसान पहुचताहै ॥
हम जितना २ बिचार इसपर क
रते हैं उतनी २ ही अधिक यह रि
वाज हमको धर्म बिरुद्ध और लो
क बिरुद्ध दिखाई देती है ॥ कित
नेही हमारे भाई मरे पीछे ज्योना
र करने में धर्म मानते हैं और ख
याल करते हैं कि इसका पुन्य म
रेहुये को पहुंचताहै सो इसमें धर्म
का लेश भी नहीं है और न इस
का पुन्य मरे हुये को पहुंचता है;
क्योंकि हमारे धर्मशास्त्रकी आज्ञा
नुसार यह जीव अपने किये हुये

शुभा शुभ कार्मों का फल आप भोगता है औरका किया हुआ और को पाप पुन्य नहीं लगता मरे पीछे पुत्रादिका किया हुआ पाप पुन्य मरने वालों को नहीं पहुंचता इसलिये यह रिवाज धर्म बिरुद्ध और इसी सबबसे जैनियों के त्यागने जोग्य है ॥

लोक व्यवहार में जो कोई अपनी जाति बिरादरी या मित्र वर्ग को जिमाता है तो कोई खुशी के कारण जैसे लडके का जन्म व्याह वगेरहः में जिमाता है परन्तु माता पिता या पति पत्नी के मरने में ऐसी क्या खुशी होती है जो अपनी जाति को जिमाते हैं और जाति वाले मजे से हंस २ कर जीम जाते हैं घरमें मृत्यु होने से तो घर वालों को रंज और शोक ही होता है और जहां शोक होता है या रुदन की आवाज कानों में आती है वहां पर दयाधर्म के पालने वाले कोमल हृदय जैनी अन्न पानी नहीं करते ऐसा शास्त्रों का लेख है तथा सिष्टार भी ऐसा ही है परन्तु न मालूम यह कैसा भृष्टाचार कठोर हृदय निर्दई पुरुषों ने निकाला है कि बीस बरस की तरुण बिधवा शोककी मारी घरके कोने में बैठी चिल्ला २ कर और पुकार २ कर अपने धनी के बियोग में रोती और छाती माथा कूटती धरती में मूर्छा खाकर लोटती और बेहोश हो गिर २ पडती डकराती है और आंसूओं की नदी बहाती है और दूसरी तरफ तीन बरस की उमर का छोटा बच्चा न्यराही चिल्ला रहा है और गोदी का बालक बोबा पीये बिन मुंह फाडे देता है और आंखें नटेर देता है जिसके देखने से हृदय के सौ २ टूक होते हैं परंतु अफसोस जीमने वालों के दिल कैसे पत्थर के बने हुये हैं कि जब

कर जरा असर नहीं होता वे अप
ने कानों में कीकी एक मजे से म
हू इजरत खाते और हंस २ के
बातें मारते जाते हैं और चिल्लाते
हैं कि सुखमा इधर लाओ एक ग
रम २ फूली हुई खस्ता मसालेदा
र कचौरी तुरन्त मंगाओ और क
हां भागा जाता है थोडे दाल सेव
हमारी पत्तल में परोस इस तरह
आनंद उडाते हैं ॥ इससे ज्यादह
निर्दयता और कठोरता क्या होगी
सो हम नहीं जानते ॥ ऐसी ज्यो
नार जीमने से तो घर की रूखी
रोटी खाकर सो रहना ही भला है
सो जैनी भाइयो तुम इस का वि
चार करो और इस हीनाचार को
छोडो ॥ शायद कोई कहेगा कि माता
पिता के मरने की खुशी होती है
क्योंकि उनके बर्षों के हरछ रिंथ
हुये धनके मालिक और गद्दी न
शीन होते हैं और वे बुड्ढे या बु
ढनको तकलीफ दिया करते थे सो
वे तकलीफ से बच गये ॥ इस बा
त की खुशी की ज्योनार करते हैं
हम इस के उत्तर में यही कहते हैं कि
अव्वल तो ऐसा खयाल करनाही
गलत है क्योंकि इस बात को स
ब लोग स्वीकार करेंगे कि माता
पिता के मरने में किसी को भी
खुशी नहीं होती सबको रंज ही हो
ता है लेकिन अगर तुम्हारा कह
नाही सत्य हो कि दुनियां में ऐसे
भी दुष्ट पुत्र है जो अपने माता पि
ता का मरना चाहते और मरनेसे
प्रसन्न होते हैं तो हमारा यही क
हना है कि ऐसे दुष्टों के घर मिठा
ई जीमना तो दूर ही रहो उनसे
बात चीत मेल मिलाप भी नहीं
करना चाहिये और यदि उनका
अन्न कोई खायगा तो निःसंदेह
वह उन सारखाही दुष्ट स्वभावी क्रू
र करभी होजायगा अत एव इस
तरह पर भी औसर में जीमना वा
जेब नहीं ठहरता

लेकिन अब तो और भी ज्याद ह विपरीत चल पडी है कि ज्योंही एक मनुष्य मरा कि मरने के दिन से लेकर सब भाई जमाई सासरे पीहर नजदीक दूर वाले स्त्री पुरुष बालक उसी के घर में तेरह दिन तक बराबर दोनों वक्त रसोई जीमेंगे ॥ जब वह बेचारा बीमार पडा हुआ दुःख भोगताथा तब कोई भाई बंधु आन कर उसकी खबर नहीं लताथा बल्कि कितने ही रिश्तेदार मुंह छिपाकर खबर पूंछने भी नहीं जाते कि कहीं हम से कुछ खरच के वास्ते न मांग उठे लेकिन अब वह मरगया और भाई बंधु रिश्तेदारों की बन आई ॥ चाहें मरने वाले के लडके और लुगाई अपना जेवर बेचैं चाहैं कर्ज काढ कर लावें कुछ परवा नहीं परन्तु रिश्तेदारों को तेरह दिन अवश्य ही जिमाना चाहिये ॥ एक कोने में बैठे २ रोते हैं और दूसरी तरफ रुपये देकर कहते हैं तुम गेहुं लाओ तुम चांवल लाओ तुम घी लाओ अरे नाई फलाने के नोता देआ फलाने को बुलाला फलानी रूसगई वह क्यों नहीं आई कल तीजा होगा कितने घर नोते देने चाहिये क्या करना सीरातो जरूर ही होना वाजिब है इत्यादि एक हंसी और एक दुःख की बातहै बडा विचित्र नाटक दिखाई देताहै एकतो उन विचारों का घर का धनी सिर का छत्र मरगया और दूसरे रुपया सब बीमारी में खर्च पड गया अब रिश्तदारों को जिमाना चाहिये पास कोडी एक नहीं हाय दैव यह कैसी बिपत के ऊपर विपत पडी क्या कीजिये कैसे इज्जत रहे इसी विचार में उनका दुःख दूना बढता है परन्तु कोई धीर्य दिलाने वाला नहीं सब खानेही खाने वाले नजर पडते हैं और उन बिचारों को लाचार तेरह दिन खिलाना पडता है भाईयों आप जरा इस बात पर अपने शुद्ध अंतःकरण से बिचार करो कि यह कैसी बुरी रिवाज हैं और अब इसके बंद करने शीघ्र ही प्रयत्न करो ॥ सम्पूर्ण

। श्री ।

जैन प्रभाकर ॥

अर्थात

जिन धर्म और जैन सभा सम्बन्धी मासिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावक भाइयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया

नम्बर ४

मिती असाढ़ सुदी १ सम्वत १९४९ का

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

अजमेर

"राजस्थान यंत्रालय" में छपा

विज्ञापन ।

सर्व भाइयों से जिनके पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को सम्पूर्ण पढ़ कर अपने पुत्र मित्रों को पढ़ने के वास्ते दे देवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावग एकत्र हों पढ़ कर सुनादें ।। आप के शहर की जाति और धर्म सम्बन्धी नई वार्ता पत्र में छाप ने को भेजें ।। जो भाई पत्र लेना चाहें हमें पोस्टकार्ड भेज कर मगालें ।।

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ।।=) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का -) है ।।

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा । २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या धन धर्म जात की उन्नति करना इस के उद्देश हैं ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलेटिकल वार्ता मतमतांतर का झगड़ा इस में नहीं छपैगा ।।

नोटिस

सर्व भाईयों को जिन्हों ने जैन प्रभाकर की कीमत अभी तक नहीं भेजा है वाजिब है कि अपने अपने दाम फौरन भेज देवें देर करना उचित नहीं है ।।

सब चिट्ठी वगैरह जोगालाल अजमेरा के पास भेजना ।।

— * —

श्री

जैन प्रभाकर॥

नम्बर ४ | अजमेर असाढ़ सुदी १ सम्बत १९४९ | अङ्क ३

श्री जैन विद्यालय भंडार के वार्षिक समाचार।

श्री जैन विद्यालय भण्डार को नियत हुये मिती चैत सुदी ३ सम्बत् १९४९ को एक वर्ष पूर्ण हुआ और नियमानुसार एक वर्ष के समाचार सर्व भाईयों को विदित किये जाते हैं कि नये नगर के मेले में कुल रुपया १४८६।) रोकड़ी जमा हुआ और इस के पीछे देश देशान्तरों के भाइयों ने भण्डार के वास्ते रुपया भेजा उस की रसीद उन के पास भेज दीनी गई और उन के नाम जैन प्रभाकर में मुद्रित होते रहे सो आप सर्व भाइयों को मालूम हैं।

यद्यपि आप सर्व भाइयों की तरफ से इतनी सहायता नहीं मिली जितनी कि सभा को आशा थी परन्तु तौ भी जिन २ भाईयों ने सत्मार्ग प्रभावनार्थ ज्ञानवृद्धि के लिये जो कुछ रुपया अपने हृदय के अनुराग और उत्साह से भण्डार में जमा कराया उन सर्व भाइयों की सद्वृत्ति और परोपकारिणी बुद्धि को हम धन्यवाद देते हैं विशेष कर अन्यान्य खुरई बिजौली आदि के पंचों का और आशा है कि आप सर्वपक्ष हमेशह इसी प्रकार सहायता देते और विद्यालय भण्डार के लाभ सर्व भाइयों को बताते रहेंगे।

इस वर्ष में ब्याज की आमदनी बहुत कम हुई कारण यह कि व्यापार की कमी के सबब हुंडी का ब्याज बहुत कम रीझा और बड़ ब्याज पर रुपया देना सभा ने मुनासिब नहीं समझा क्योंकि उस में जोखम ज्यादह उठानी पड़ती लेकिन वे जोखम बड़ ब्याज पर रुपया लगाने की कोशिश कर रहे हैं ठीक २ मिलने से किया जायगा।

खर्च सिर्फ बही खाते की पुस्तकें और रसीदों की छपाई तथा डाक महसूल में लगा है और सभा की दृष्टि हमेशह कम खर्च करने पर है।

जैन धर्म सम्बन्धी विद्या वृद्धि करने को सभा ने विज्ञापन दिया था कि सभा के नियत किये हुये पढ़ाई में जो जैनी लड़के परीक्षा देंगे उन्हें भंडार के ब्याज में से इनाम दिया जायगा इस पर कई भाइयों ने लिखा था कि जब तक भंडार पूरा नहीं होवे ब्याज की रकम भी जमा रखनी चाहिये और खर्च नहीं करनी चाहिये परन्तु सभाने अच्छी तरह विचार कर निश्चय किया कि यह राय मुनासिब नहीं क्योंकि नहीं कह सकते कि भंडार कब पूरा भरैगा और कितने रुपये से पूरा समझा जायगा। दोयम जब तक कि भंडारसे प्रत्यक्ष वर्त्तमानकालमें लाभनहीं दिखाई देवे तो देने वाले दातारों का मनभी देनेको नहीं चाहै और विद्याकी उन्नति भी नहीं होवे। इस लिये विद्या वृद्धि कर भंडार के लाभ प्रगट दिखाने और दातारों की रुचि बढ़ाने को सभा ने यही मुनासिब समझा कि जो कुछ ब्याज जमा होवे वह जैन पाठशालाओं के विद्यार्थियों को इनाम आदि पारितोषिक दे कर जिन धर्म सम्बन्धी विद्या वृद्धि करने में अवश्य खर्च करना चाहिये और हम बड़े हर्ष से विदित करते हैं कि वैशाख १९५४ की परीक्षा में जो विद्यार्थी अच्छे रहे उन को सभा ने इनाम में ३१) दिये हैं।

जैन विद्यालय भंडार के बढ़ाने की हरेक जैनी भाई को कोशिश करनी चाहिये॥ इस वर्ष में बहुत कम रुपया जमा हुआ उसके कारण मेरी समझ में दो मालूम होते हैं प्रथम तो यह कि बहुत से भाई विद्या के रससे अजान हैं इस कारण विद्या वृद्धि में अपना रुपया खर्च करना नहीं चाहते। मेरी प्रार्थना हरेक पंडित शास्त्र जी के वक्ता और उपदेशकों से यहहै कि वे धर्म संबंधी विद्या के लाभ उनको भले प्रकार समझाकर सच्चीप्रभावना करनेमें उन के मन को लगावे तथा रथ जात्राके मेलों और उच्छवों में विद्या वृद्धिका उपदेश करके जैन विद्यालय भंडार की वृद्धि करने का उपदेश करै तो बहुत कुछ रुपया जमा हो जावैगा। दोयम बहुत से भाई जो विद्या के गुणानुरागी हैं और उदार चित्तभी हैं परन्तु प्रमादी है॥ उनके विचार बहुधा यह रहते हैं कि थोड़ा सा रुपया क्या भेजें शरम आती है दोचार महीने बाद बहुतसा इकट्ठा भेजदेंगे और कितनेही आज भेजेंगे कल भेजेंगे ऐसे कहते २ दिन व्यतीत कर देते हैं सो हम उन सर्व भाइयों से प्रार्थना करते हैं कि यह शरम और प्रमाद दोनों को त्याग करके जो कुछ आपसे बनसके फौरन भेज दिया कीजिये क्योंकि भंडार में एक पैसाभी जमा कर लिया जा सक्ता है आप भूले हैं थोलने से नहीं है देने में क्या शरम अपने पास थोड़ा हुआ थोड़ा दिया बहुत हुआ बहुत दिया॥ थोड़ा २ कर भेजने में सहजही बहुत बड़ी रकम

होसक्ती है । आप खयाल कीजिये कि अगर आप एक शहर के पंच दो दो आना वा चार २ आना और जो ज्यादह धनवान हों वह रुपया दो रुपया वा पांच रुपया माहवारी इकट्ठा जमा करैं और फर्ज कीजिये कि औसद दर्जे पचीस रुपया जमा होवे और वह भंडार के वास्ते भेज दिया जावे और इसी प्रकार अगर चालीस जगहों से पचीस रुपया माहवारी चला आवे तो सहज में एक हजार रुपया माहवारी आमदनी होजावे और इस प्रकार वर्ष दिन में बारह हजार रुपया जमा होजावे फिर देखिये कि भंडार कितनी जलदी वृद्धि को प्राप्त होवे और जिन धर्म की कैसी उन्नति होवे क्या यह काम होना कुछ मुशकिल है । मैं खयाल करताहूं कि कुछ मुशकिल नहीं है क्योंकि आपका हजारों रुपया हर साल लौकिक बिवाहादि वा धर्म कार्य तीर्थ जात्रा रथजात्रा में लगता है मुशकिल सिर्फ इतनाही है कि आप सरदारों की दृष्टि ज्ञान दान की तरफ अभी तक नहीं झुकीहै अगर एक बार ज्ञान दानकी तरफ झुके तो फिर सब सुगम है इसलिये मेरी प्रार्थना है कि हरेक शहर में से कोई धर्मात्मा चौधरी पंच, या मुखिया जिनका कहना वहां के पंच मानते हों तथा जैन सभाके प्रधान या सेक्रेटरी इस काम के वास्ते कमर बांध कर खड़े होवें और जो भाई अपनी खुशी से देना चाहैं उनसे माहवारी उगाई करके जैन विद्यालय भंडार में भेजे तो वे धर्म के धोरी और सन्मार्ग प्रभावना करने वालों में मुख्य समझे जावेंगे क्योंकि जैसी प्रभावना ज्ञान और विद्यासे होती है वैसी और कार्यों से नहीं होती है अतएव सर्व भाइयों को जैन धर्म संबंधी विद्या की वृद्धि कर और ज्ञान दान देनेमें तत्पर होना चाहिये ॥

जैन विद्यालय भंडार का आंकड़ आगे लिखे प्रमाण जानना ॥

नये नगर के मेले में सहारनपुर वाले लाला उग्रसेनजी साहब जो भंडार के वास्ते रुपये का रुक्का लिख कर दे गयेथे वह रुपया अभीतक जमा नहीं हुआ सो आंकड़े में शामिल नहीं, जमा होनेसे शामिल किया जायगा ॥

भंडार के समाचार इस भांत है सो आप सर्व पंचो जोग मालूम होवे यह समाचार मंदिर जी में तथा सभामें पढ़कर सर्व भाइयों को सुना देना और जो इस विषय में आपकी सम्मति होवे सो कृपाकर लिख भेजना ॥

वैजनाथ बांकलीवाल

सेक्रेटरी

जैनविद्यालय भंडारका कार्य्याधिकारणीसभा

अजमेर

अजमेर असाढ़ बदी १४ सं० १९४९

श्री जैन विद्यालय भंडार का आंकड़ा मिती चैत सुदी ३ सम्वत १९४८ से लगाय मिती वैशाख सुदी १५ सम्वत १९४९ तक ।

जमा		लेखे	
१९४८॥)	श्री जैन विद्यालय भण्डार मूल द्रव्य खाते जमा रसीद नम्बर १ से ले रसीद नम्बर ७७३ तक का	१५॥-)।	श्री खर्च खाते लेखे बही रसीद बुक डाक महसूल आदि
५१॥)॥	श्री ब्याज खाते जमा	२०००)	श्री हुंडी खाते लेखे
१६॥।=)	श्री हुंडावन खाते जमा	२०१५॥-)।	
२०१६॥।=)॥		१।-)।	श्री रोकड़ बाकी
		२०१६॥।=)॥	

अमृत संजीवनी जैन औषधालय केकड़ी ।

भाई पन्नालाल जी पाठनी लिखें हैं कि यहां केकड़ी में जो अमृत संजीवनी जैन औषधालय जारी है उस से शरीर और उपमाचरण की रक्षा और जिन धर्म की बड़ी प्रभावना हो रही है और जैनी भाइयों की तथा अन्य धर्मात्मा भाइयों की सहायता से इस का काम बहुत अच्छी तरह चलरहा है । भादों बदी १३ सं०१९४७ से भादों बदी १३ सम्बत १९४८ तक बारह म-हीने में ४५१७ बीमार यहां आये जिन में से ४३७५ को आराम बिल कुल हो गया. २२४ आदमियों को तिजारे की बीमारी की दवाई देतेही जाती रही उन्होंने जिन धर्म के उपदेश से दीर्घ पाप विध्वंसनी एक २ प्रतिज्ञा करी है. औषधी उसी अनु-क्रम से दी जाती है जो पहले कायदा था इस साल की सूचना साल पूर्ण हुये लिखी जायगी परन्तु थोड़ा सा हाल लिखा जाता है कि इस वक्त यहां पर वा बाहर के सब गावों में हैजे की बीमारी बड़े जोर के साथ चल रही है जिन धर्म के प्रभाव से इस औषधालय का ऐसा अतिशय है कि जहां पर यहां से दवाई जाती है तत्काल रोगी को काल के मुख में से निकाल लेती है । इन १५ दिन में २६० मनुष्यों की इसकीस प्राइकरोग से जान बचाईहै इससे औषधालय की बड़ी कीर्ति हुईहै यहां तक की सरकारी मुला-

जिन भी इस औषधालयसे दवाई लेना प-सन्द करते हैं । सार्टीफिकट भी इस बक्तमें बड़े २ महाशयों के तथा पञ्चों के १५ आये हैं । वैद्यराज को भी इन्हीं १५ दिनों में रु. ६०) और १०० नारियल भेंटमें आये हैं ।

बहुत से गरीब लोग जिनकी इस हैजे से जान बचीहै वे औषधालय के द्वार पर खड़े होकर ऊंचे स्वर से पुकार कर प्रार्थना करते हैं कि यह औषधालय चिर काल स्थित रहै ।। इन समाचारों के पढ़ने से आप सर्व भाईयों को अवश्यही हर्ष प्राप्ति होगा और औषध दान देनेमें रुचि बढ़ैगी ।।

औषधालय के लाभ प्रत्यक्ष देख उसे चिर स्थाई रखने को यहां के पंचोंका विचार हुआहै कि औषधालय का मकान पक्का बनावें उसका तखमीना रु० ३०००) लगने का किया है यह भी विचार है कि औषधालय के ऊपर जैन पाठशाला का मकान बनावें लड़कों को जैनमतानुकूल विद्या पढ़ावैं और बाहर गांवके गरीब लड़कों को भोजनादि सामग्रीका खरच भी देवें और एक गरीब घर जिसमें दुःखित भुःखित रोगियो को रखें आहार पानी देवें और उनके रोग का इलाज करैं जब उनको आराम होजाय तब विदा करदें ।। इस प्रकार यहां के जैनी भाईयोंका विचार है कि श्री जिन धर्मकी आज्ञानुसार चार प्रकार का दान अर्थात् औषध दान अहार दान अभयदान और ज्ञान दान अपनीशक्ति प्रमाण करके जिन धर्मकी महिमा बढ़ावैं और इस चंचल लक्ष्मीको स्थिर करैं ।। केकड़ी गांव छोटाहै यहां श्रावकों के घरभी बहुत नहीं हैं परन्तु आस पासके गांववाले श्रावको की सहायता से आशाहै कि मनोर्थ सिद्ध होगा और मैं बड़ हर्षसे लिखताहूं कि धर्माधीश सकल पंच जैनी श्रावक तथा नगर निवासी भाईयोंने रु० २४६॥) सेठजी श्रीहरमुख रायजी अमोलक चन्दजी समेत दिये हैं ।। मैं कोट धन्यवाद सये नगर के पंच तथा उक्त सेठजी को देताहूं जिन्होंने अग्रेश्वर होकर इस नाशवान धनको परोपकारके लिये सब से पहिले उदारता के साथ दिया है ।। आप सर्व सज्जन भी इस दानशालाकी तरफ दया दृष्टिकर सहायता देवें जेठ सुदी ९ सं० १९४९ ।।

नवीन मंदिर की प्रतिष्ठा ।

देवली की छावनी में नवीन मंदिर जो तयार होकर प्रतिष्ठा हुई और श्री जी महाराज विराजमान हुये जिसका महूरत वैसाख सुदी ३ ताथा रथजात्रा को मेला शुद्ध आम्नाय से बडी धूम धाम से हुआ प्रथम वैशाख बदी ११ के दिवस रथयात्रा हुई बदी १४ के दिन श्री उपादान निमत्त के और रसका नाटक धन्नालाल केकड़ी वालों ने किया सो रात के ८ बजे से दो बजे तक बड़े आनन्द के साथ हुआ देखकर

जैनी वैष्णव संपूर्ण बड़े आनन्दित हुये। पूजन जंबूद्वीप के चैत्यालयोंकी हुई थी और नृत्यगान दिन में होते रहते थे रात्रि को श्रीरत्नकरंड श्रावकाचार जीका व्याख्यान होकर अनेक प्रश्नोत्तर होतेथे ॥ रथके साथ में बाजार में दो जगह बैठकर बड़ी सभायें हुई थीं ॥ विद्यालय भंडार कीभी बात चीत हुईथी परन्तु उसवक्त चंदा नहीं होसका अब होनेकी उमेद है कई जाति सम्बन्धी हानियां भी निकाली गईहैं जिन का हाल पीछे लिखा जायगा ॥ मंदिरजी पर कलश और ध्वजा चढ़ाये गये। मन्दिर बहुत सुन्दर बनाहै। रथयात्रा कराने को भाई धन्नालालजी पाटनी केकड़ीसे आयेथे आप ने ऐसी उत्तम बिधि से यात्रा कराई जिसे देख सर्व वैष्णवादि भी प्रशंसा करने लगे। रथ यात्रा का मेला और मन्दिर प्रतिष्ठा निर्विघ्न सम्पूर्ण हुई और सर्व भाइयों को बड़ा हर्ष रहा। एक उत्तम और श्रेष्ठ बात इस मेले में यह थी कि यहा के सर्व वैष्णवादि अन्य मतावलम्बी ऐसा होने से बड़े प्रसन्न हुये और वे हर रोज मेले में आते थे और रथ यात्रा में सब प्रकार से सहायता देते थे। अगर और २ स्थानों के भी अन्य मतावलम्बी भाई प्रीत सहित बर्तें तो कैसा आनन्द होवे। जेठ सुदी ६ सं. १९४९

आप सज्जनों के कमल चर्णों का
मधुकर बद्री लाल जैनी
बर्णी जैनी केकड़ी

रथ यात्रा का मेला हाथरस।

—————

हाथरस में करीब ६० वर्ष गुजरे जब रथ यात्रा का मेला हुआ था परन्तु उस समय वहां के अन्य मतावलम्बी भाइयों ने अज्ञान औ द्वेष के कारण मेले में बिघ्न डाल दिये तब से वहां के जैनी भाई भय के कारण मेला करने का साहस नहीं करते थे। दिल्ली कानपुर कोसी में सरकार की मदद से मेले हो गये और किसी प्रकार की बिघ्न नहीं हुई इस से हाथरस वाले जैनी भाइयों को भी मेला करने का साहस हुआ सरकार से प्रार्थना करी उन्होंने कृपा कर भरे बाजार रथ निकालने की आज्ञा दी मिती मुकर्रर हो गई और सर्व देश देशान्तरों के भाइयो को इस महोत्सव में बुलाने की मङ्गल पत्रिका भेज दीनी गई और सर्व प्रकार की तैयारी थी हो गई कि शहर निवासियो ने झूठे गुल गपाड़े मचाये कि बाजार में रथयात्रा होनेसे फिसाद होगा उनकी यह बातें सुन कर सरकारने मेला मुल्तवी कर दिया परन्तु इससे जैनियों को बड़ा दुख हुआ और उन के रुपये काभी बड़ा नुकसान हुआ बड़ा भारी हर्ज हुआ। तब जैनियों ने सरकार से फिर प्रार्थना की और सारा यथार्थ वर्णन कह सुना या सरकार भी भली भांति जाने हैं कि जैनी बड़े न्याय मार्गी और धर्मात्मा होते हैं यह मेलो में

कहीं भी दंगा नहीं करते सो सरकार ने अब नये सिर से हुकम दे दीना है कि मेला जैनियों का बदस्तूर हो जावे। मेला होने से समाचार आवेंगे तब पूरा वर्णन लिखा जायगा हम इस अवसर पर श्रीमान सर औकलयड कालविन साहब बहादुर लफटनेंट गवर्नर और उन के चीफ सेक्रेटरी मिस्टर लटूश साहब बहादुर तथा अलीगढ के कलकटर साहब बहादुर को अनेकानेक धन्यबाद देते हैं कि जिनकी कृपासे अब हमारा मेला होजायगा। सरकार अंगरेज का राज्य सदा काल अटल बना रहै यही हमारी जिनेन्द्र से प्रार्थना है।

अजमेर के भट्टारकजी जी की आम्नाय त्याग कर जो यहां के १०० घर अलग होगये और उन्होंने ने नवीन जिन मन्दिर बनवाया अब उस में बैसाख सुदी १२ को श्री जी बिराजमान होगये। प्रातःकाल बड़े धूम धाम गीत नृत्य बादित्र सहित सर्व बाजार रथयात्रा हुई और ८ बजे मन्दिर जी में पूजा और कलशाभिषेक के बाद शुभ लग्न मुहूर्त में श्री जी बेदी में बिराजमान हुये। बड़ा आनन्द हुआ। मन्दिर जी में शुद्ध तेरह पन्थ आम्नाय वर्त्ते है। सभा में रत्नकरंड श्रावकाचार जी और पार्श्वनाथ पुराण का व्याख्यान होता है।

चिट्ठी।

महाशयवर आप का पत्र जैन प्रभाकर हमारे यहां आता है सो यहां के श्री जिन मन्दिर जी में शास्त्र जी बिसर्जन हुए पीछे पत्र को बांच कर सुना दिया करते हैं श्रवण करने से सभा को बहुत आनन्द होता है और पत्र की बहुत अनुमोदना करते हैं। नं० २ सं० १९४८ में जैन बिद्यालय भंडार नियत हुआ और जिन भाइयों ने रुपया जमा कराया उन की बहुत अनुमोदना करी और अनेकानेक धन्यबाद दिये और यहां के श्रावक भाइयों ने रु. १५) जमा कराये हैं यहां श्रावकों के घर केवल ५ हैं जिन में खंडेलवालों के ३ और परवालों के घर २ हैं और ३ श्रावक रहे हैं।

कामटी में मोहनलाल जी लोकजी वालकी बेटी का ब्याह था, सीवनी छपरा से रामलाल जी राजका का लड़का ब्याह ने आया था, सोह लेने के दिन श्री जिन मन्दिर जी में नागपुर कामठी सीवनी छिंदवाड़ा धामक बर्धा वोरी बोर गांव और आस पास के सर्व श्रावक एकत्र हुये थे, उस समय रिषभदास जी पाटनी छिंदवाड़े निवासी ने विवाह आदि कार्यों में जो कुरीति प्रचलित हो रही हैं उन के से-

टने के विषय में मनोहर व्याख्यान दिया और जैन प्रभाकर नं० ५ में राय बहादुर सेठ मूलचन्द जी साहब के कुंवर नेमी चन्द जी का विवाह प्राचीन जैन आम्नाय के अनुसार हुआ लिखा उसकी सर्व भाईयो ने बहुत प्रशंसा की कि उक्त सेठजी साहब ने मिथ्यात्व और मूढ़ता जिससे दोनों लोक बिगड़ते हैं मेटने का उपाय किया आशा है कि और सर्व स्थानों के जैनी भाई भी आपसी जैन आम्नाय से सर्वकार्य करैंगे क्योंकि मिथ्यात्व कुगुरु कुदेव कुधर्म की पूजा करने समान और कोई पाप नहीं है और विवाहादि के अवसर में लोक मूढ़ताके वश यह अकार्य अवश्य करने पड़ते हैं सो बंद होने चाहिये और गालियो से लज्जा जाती है और कुशील का प्रसंग आता है तथा दूसरो का अपवाद करने से महापापका बंध होता है सो गालिया गाना श्रावको के कुल में से अवश्य बंद होना चाहिये।

इसके पश्चात् मैंने भी मेरी लघु बुद्धि अनुसार जैन विद्यालय भंडार के विषय में प्रार्थना करी कि कुछ लागत लगादी जावे तो सहज में विद्याकी वृद्धि होवे विद्यादान समान और दूसरा पुन्य नहीं है कि जिसका फल परंपराय मोक्ष है यह सुन कर बहुत से भाईयों के दिल में आई कि प्रबन्ध होजावे तो ठीक है और रिषभदास जी पाटनी ने रु० २) छिंदवाड़े की पंचायत के और हुकमतरामजी बाल मुकुंद गोदाने कामटी वालोंने रु० १) दिया और सब भाई विचारने लगे कितनों के दिल में आई परन्तु मुखिया पंच नाग पुरके हैं सो दो चार मनुष्य आपस मे बात चीत कर उठखड़े हुये प्रबंधकुछ नहीं हुआ बात दिलकी दिलमें रह गई अगर कुछ होजाता तो इस इलाके में सब जगह उसी माफक चलता रहता और और जगह के धर्मात्मा सज्जन लोग भी इसे स्वीकार करलेते इसमें किसी को भी तकलीफ नहीं होती परन्तु नहीं मालूम कि उन महाशयों ने ऐसे उत्तम कार्य को होते हुये क्यों रोका अब सुनने में आया है कि उन्होंने ऐसा विचार किया है कि हम हमारे शहर में प्रबन्ध करैंगे जिसमें हमारी नामवरी होवे सो भाइयो धर्म-संबंधी कार्य तो जब करोगे जहां करोगे वहांही धर्म और जस होगा सो अच्छा है आप अपने शहरसेही कोई धर्म, दान परोपकारका प्रबंध करैं हम आपके साथी हैं परन्तु जल्दी कीजिये क्योंकि आयु का लक्ष्मी का कुछ भरोसा नहीं है शुभ कार्य करने में ढील मतकरो यही हमारी सब भाईयों से प्रार्थना है।

सकलजैन धर्मानुरागी भाइयों के
चरणो का दास
हजारी मलसेठी मु० गोंदिया

एक बुरी रीति का बन्द होना।

हमको समाचार मिले हैं कि कसबः कठूमर राज अलवर के खंडेल वाल श्रावकों मे गली बाजार में स्त्रियों को गालीयां गाते हुये जानेकी बुरी रीतिको बंद कर दिया है इस शुभ कार्यके करने में पंचोंको बडाभारी परिश्रम करना पडा परन्तु दो चार विवेकी और विद्वानों के उद्योग से अंत में यह कार्य सिद्ध हुआ और सर्व पचो के दस्तखत होगये ।। इसी अरसे में एक सभ्यजन जो बिरादरी में मुखिया समझे जाते हैं उन के यहा विवाह हुआ और उनके घरकी स्त्रीयां बाजार में गालीया गाती निकली और यह बात मर्य्याद विरुद्ध होने से पचो को बहुत बुरी मालूम हुई पंचोने उनसे जबाब तलब किया तो उन्होंने कहा कि स्त्रीयां हमारे बस में नहीं हैं यह तो हमेशह से गालीयां गाती आई हैं सो गावेंहींगी किसी की बंद करी बंद नही होसक्ती हैं ।। पचो ने यह जबाब सुनकर और उन साहिब को जबर दस्त देखकर ख्याल किया कि अब मर्य्याद रहना कठिन है यह मर्य्याद टूट जायगीतो बडा अनस और अनर्थ होगा और आगे फिर कोई पंचो की आज्ञा नहीं मानेगा ऐसा विचार कर बडे साहस और मुलामियत से जबाब दिया कि अच्छा भाई साहब आप के घरकी स्त्रीयां आप के बस में नहीं हैं तो खैर कुछ हरज नहीं है हमारा दिल हमारे बशमें है सो हम अब आप के घर नहीं आवेंगे ।। यह सुनकर तो उनकी बुद्धि ठिकाने फिर आगई और घबरा कर बोले कि हम स्त्रीयों को मनेकर देंगे और वे फिर बाजार में गालीयां नही गावेंगी ।। और फिर उन्होंने स्त्रीयों को गालीयां गाने से बंद कर दिया और इस प्रकार पंचोंकी बांधी हुई मर्य्याद टूट होगई हमको इस समाचार के सुनने से अत्यंत हर्ष प्राप्त हुआ है और कठूमर के पचोंको अनेकानेक धन्य वाद देते हैं और आशा करते हैं कि वे हमेंशह हीनाचार को मेट सदाचारके चलाने में इसी प्रकार उद्योग करते रहेंगे।

इस स्थानपर हम यह भी लिखना वाजिब समझते हैं कि जिस तरह कठूमर के पंचोंने यह बुरी रीति बंदकर दीनी उसी प्रकार और २ स्थानो के पंचो को भी गालीयां गाना बंद करना चाहिये कठूमर एक छोटा सा कसबा है और वहां पर ज्ञान और विद्याका विशेष प्रचार नहींहै परन्तु तौभी वहा के पंचोनेबुरी रीति के बंद करने में अपनी उमनता प्रकट की तो क्या शहर निवासियो को जहां कि अकसर विद्वान् और पंडित रहते हैं और विद्या और ज्ञान का विशेष प्रचार है यह बुरी रीति बंद करना वाजिब नही है ? ।। जो लोग यह कहदेते हैं कि स्त्रीयां कहना नहीं मानती सो सब बिलकुल झूठ है ।। हमारे

आर्यक्षेत्र की स्त्रीयां जैसी पतिव्रता और पतिकी आज्ञा कारणी हैं वैसी अन्य देशों की शायद ही होंगी और जो पुरुष कि यह कहते हैं कि स्त्रीयां हमारा कहना नहीं मानती सो महा मिथ्या वादी हैं और स्त्रीयों को झूठा कलंक लगाते हैं विचार करने की बात है कि जो कुलवंती लज्जवंती शीलवंती स्त्री घर में अपने स्वसर जेठ के सामने मुंह से आवाज भी नहीं निकालती हैं वही स्त्री बाहर बाजार में तथा घर में अपने स्वसर जेठ बाप भाई आदि गुरुजनों के सामने निर्लज्जहुई बड़े जोर शोरसे चिल्ला२ कर गालीयां गाती हैं जिनके सुनने से शरम आती है इसका क्या कारण है जो कि स्त्रीयां घरके अन्दर आज्ञा माने और बाहिर न माने यह कैसे संभव है ॥ हमको स्त्रीयों के गाली गाने का मुख्य कारण यही मालुम होता है कि आजतक घरके बड़ेरोंने उनको यह बुरा काम करते कभी रोकानहीं बल्कि हमने अपने कानो सुनाहै बहुत से मर्द जब ब्याह बिरादरी में एकत्र होते हैं तो कह कहकर गालीयां गवाते हैं वह नहीं गातीहैं तो ताना मारते हैं कि गूंगी क्या बैठी हो क्या तुम्हारे जीभ नही है क्यों नहीं गालीयां गाओ और जब वे अपने घरकों के मुह से यह बचन पाती हैं तो वे अपने दिल में ख्याल करती हैं कि गालीयां सुनना हमारे घरकों को अच्छा और प्रिय है तो वे लाचार उन्हें प्रसन्न करनेको गालीयां गाती हैं और उन्हें सुनकर लोग खुशभी होते हैं और तारीफ भी करते हैं कि वाह वाह बहुत अच्छी गाली गाई और गाओ तब वे फिर और भी ज्यादह २ चिल्ला २ कर और निर्लज्ज होकर गाती हैं यहां तक कि जब उनका गला बैठ जाता है तो वह कहती हैं कि "गाते गाते गला बैठ गया जीभ गई तुतलाय । तुम्हें जवाईं जी भाजी की सौंह जोड़े देहु मंगाय ॥ यह निर्लज्जता की बातें अब ज्यादह कहां तक लिखें आपको सब मालूम है परन्तु आप निश्चय जानों कि स्त्रीयों का कुछ अपराध नहीं है सारा अपराध पुरुषों का है अगर पुरुष स्त्रीयों से कह देवे कि हमें गालीयां सुनना अच्छा नहीं लगता तुम गालीयांमत गाओ तो वे अवश्य आज्ञा मानेगीं और कभी गालीयां नहीं गावेगी इस लिये सर्व पञ्चों को उचित् है कि गालियां सुनने का त्यागकरैं तो गालीयां गाना स्वयमेव बंद होजायगा ।

मूल्य प्राप्ति स्थानाभाव से नहीं दी ।

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करे। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ५ } अजमेर सावन सुदी १ संवत् १९४९ { अंक ३

मंदिर में कलह ॥

अब भादोंका महीना नजदीक आन [illegible] है. वह महीना अपने जैन धर्ममें बहुतउत्तम और पवित्र माना गयाहै. इस समयमें सर्वस्त्री पुरुष बाल वृद्ध अपनी २ शक्तिप्रमाण वृत संजम दान पूजा सामायक स्वाध्याय आदि धर्म ध्यानमें लीन हो पुण्य उपार्जन करते हैं सो हमारे सर्व भाई भलीभांति जानते हैं. परंतु इस हुंडावसर्पणी काल दोष अज्ञान अंधकारके प्रचुर विस्तार से बहुतसी रीत रिवाजें इस समयमें ऐसी प्रचलित हो गई हैं कि जो धर्म साधन करने में बडी बडी हानिकारक है और जिनके कारण धर्म ध्यान सिद्ध नहींहोता है किन्तु आरत और रौद्र ध्यान होने से महापाप का बंध होताहै॥ बहुतसे भाई अपने गृहचार के अनेक काम काज छोडकर मंदिरजी में धर्म साधन करने की आशा कर आतेहैं परंतु शोकहै कि वहां बडे २ चौधरी और पंच जिन की धर्म में रुचि नहीं और जिनसे

चुपका मौनधारण कर बैठाभी नहीं रहाजाता क्योंकि अगर चुपचाप बैठे रहें तो चौधराट की टसक जाती रहे फिर उनको कौन चौ- धरी और पंच कहें इसलिये वे कोई बात झगडे टंटेकी ऐसी छेड देतेहैं कि जिससे सारी सभा में खलबली मचजाती है और चारों तरफसे कांय २ होने लगती है और क्रोध कलहरूपी अग्नि प्रज्व- लित होजातीहै सर्व लोगो के प- रिणाम महा संक्लेशरूप हो जातेहैं और धर्म ध्यान पूजा स्वाध्याय आदि में बिघ्न पडजातेहैं अथवा चौधरी पंचोंका भी इसमें क्यादोष है क्योंकि चौधरी और पंचो को बिरादरी संबंधी कार्य अवश्य करने चाहिये परंतु करनेको फुरसत नहीं मिलती और अगर फुरसतभी मि- लतीहै तो वे अकेलेही उस [illegible] को कर नहीं सके सर्व बिरादरी को एकत्र करना चाहिये [illegible] बार २बुलानेसेभी बिरादरी एकत्रहो तीनहीं तबवे लाचार होकर उनसब कामोंको भादोंके वास्ते रख छोडते हैं इसलिये जब भादों में दशल- क्षणीजीके दिनों में बहुत से लोग मंदिरजीमें आतेहैं और शास्त्रजीकी सभा भरतीहै तो उस समय उन को शास्त्रजी का निरादर और अ- विनय कर बिरादरी संबंधी बात छेडनी पडतीहै और अगर सारा भादों खाली चलाजावे तो चला जाओ लेकिन भादों सुदी चौदस जो कलशाढलनी चौदस कहलाती है और सर्व पर्व में बडी समझी गईहै उस दिन तो अवश्यही कलह का झंडा खडा किया जाताहै क्यों कि कलशाढलनी चौदस के दिन ही समस्त श्रावक मंदिरजी में एकत्र होतेहैं अगर यह दिन भी खाली चलाजावे और बिरादरी संबंधी कामोंका फैसला नहीं होवे तो फिर चौधरियों को और कौन

सा दिन मिले उनको फिर एक बर्षतक ठहरना पडे इसलिये उस रोज अवश्य मैदान चेताना पडता है और इसीकारण कलशाढलनी चौदस का नाम कलहकारणी चौदस प्रसिद्ध है होगया है ॥ कितनी बडी शरम और लज्जाकी यह बात है कि जिस दिनको अगले वडे पुरुषों ने महान पवित्र और उत्तम ठहराया था और जिसदिन समस्त जैनी मात्रको अपने गृह संबंधी व्यापारादि रसोई आदि हिंसा आरंभका त्याग कर अनसन तपकरना और पूजा स्वाध्याय आदि धर्म ध्यानसे व्यतीत करना तथा अपने एकवर्षके कियेहुये पुन्य पापका लेखा करना और पापोंकी आलोचना करनी और सर्व जीवों से मैत्रीभाव धारणकर उत्तम क्षमा करनी और औरोंसे अपने अपराध क्षमाकराने परम साम्यभावका अवलंबन करना इत्यादि शुभकार्य्यों के वास्ते नियतकियाथा उसी पवित्र दिनको इस समयके अज्ञानी भाइयोंने कलह लडाई बैर ईर्षा द्वेष गाळीगळोच आदि महानिंदनीक कार्य करनेका सुभीता पाया है ॥ ठीकहै धर्मकी रुचि तो हृदय में हैही नहीं. शास्त्र पढे नहीं. लोकरूढीसे उसदिन उपवास करतेहीहैं व्यापारादि घर संबंधी काम करते नहीं फिर निकम्मे बैठे क्याकरैं ऐसे फुरसतके वक्त में भी लडाई कलह नहींकरै तो फिर कब करेंगे ॥

हे महाशयो यदि आप अपनी इस काररवाई पर जरा ध्यानलगा कर विचारकरो तो आपको निश्चय हो जायगा कि आप कैसा अनुचित कार्य करते हैं आप भली भांति जानते हैं कि दो प्रतिपक्षी पदार्थ एक जगह नहीं रहसक्ते जैसा उजेला और अंधेरा तो इसी तरह धर्म कार्य और लौकिक कार्य

भी जो एक दूसरे के प्रतिपक्षी हैं एक क्षेत्र और एककालमें नहीं होसकतेहैं ! जिन मंदिर धर्मायतन अर्थात् धर्मसाधने का क्षेत्र है इसलिये वहांपर धर्मसाधनही करना चाहिये और बिरादरी के झगडे टंटोंकी पंचायत वहां नहीं होनी चाहिये. अगर मंदिरजी में पंचायतीकीजायगी तो तुम्हारे धर्म का घातहोगा पंचायती करनेका मकान मंदिरजी से दूर किसी और स्थान में बनालेना वाजिब है. बहुत से भाई यह कहेंगे कि पंचायती तो मंदिरजीमेंहीहोनी वाजिबहै क्यों कि मंदिरजी में भगवान के डरसे कोई पंच अन्याय नही करसकेगा. सो उनका यह कहना बिलकुल गलतहै क्यों कि शास्त्रो में चौरासी कामोका जि- गा· से पापका आश्रव होताहै और मंदिर में करनेका निषेध किया है सो जो मंदिरजी में पंचायती करतेहैं उनके भगवान की आज्ञा भंग करनेसे भगवान का डर कहां रहा वे बडे अन्याई है उनसे न्याय करने की कभी आशा नही रखना चाहिये और जो भगवान से डरे है वे तो मंदिर में भी डरतेहैं और मंदिर के बाहिर भी डरतेहैं वे सब जगह न्याय ही करेंगे ! दोयम जब पंचायती होतीहै तोवहां पर क्रोधादिकषाय भी पैदा होते ही हैं और परनिंदा तथा कुबचन आदि से बडा कोलाहल मचजाता है फिर देव गुरू शास्त्रके विनय करनेका किसीको कुछ खयाल नहीं रहताहै अविनय होनेसे दर्शन मोहनी और बडे पापका बंध होताहै तीसरे अपनी पंचायती सियाय बाहरके लोग जो मंदिरमें उससमय धर्म साधनको आतेहैं उनके धर्म में विघ्न और अंतराय डालने से अपने चारित्र मोहनी कर्मका बंध होताहै इस प्रकार बिचार करनेसे

निश्चय करना चाहिये कि मंदिर में पंचायत करना किसीतरह वाजिब नहीं. और जो अपने अज्ञान हठसे यह बात नहींमानें उनकी बात दूसरी है. जैनी भाई जिसके ज़रा भी विवेक होगा वह तो अवश्य समझ जावेगा और आयंदे मंदिर में पंचायती करने नहींजायगा. मंदिरजी में कलह होने और धर्म सेवनमें विघ्न डालनेवाला मुख्य कारण मंदिर जी में पंचायतीकरना है ॥

इस प्रकार दश लक्षणजी अठांई जी आदिपर्व के दिन जो धर्मसाधन करने के मुख्य काल हैं उनमें भी पंचायत नहीं करनी चाहिये ॥

दूसरा कारण मंदिर में कलह होने का यहहै कि पंच और चौधरी जिनके पास मंदिर और पंचायत के हिसाब रहते हैं वे अपने हिसाब को दुरस्त और तैयार नहीं रखते हैं साधारण लोगों को मालूम नहीं पडता कि मंदिर की आमदनी और खर्च क्याहुआ और पंचायती आमदनी और खर्च क्या हुआ. बहुधा सर्व जगहों में मंदिर और पंचायती दोनों द्रव्यों के हिसाब शामिल और एकमेक होरहे हैं इसी सबब हिसाब समझने में बडा बखेडा पडता है और मंदिर जीका निर्माल्य द्रव्य पंचों के अंग लगजाता है यह बडा अनर्थ होता है इसीकारण लडाई और कलह होजाते हैं ॥ हमारी रायमें हिसाब की सफाई रखना बहुतही आवश्यक है और इस कार्यके करने को हरेक जगह तीन २ बहीं खाते न्यारे २ रहने चाहिये ॥

अवल में तो मंदिर [illegible] के भं[illegible]र याने देवद्रव्य का हिसाब र[illegible]ना चाहिये और यह द्रव्य किसी[illegible] के अंग न लगना चाहिये ॥

दूसरी में पंचायती द्रव्य मंदिर

खर्च खाते जैसा मंदिरजी की द-री चांदनी तेलबत्ती नौकरों की तनखा इत्यादि तीसरा पंचायती द्रव्य जाति के उपकार के अर्थ जो गरीब वा बेश अनाथ बालक और आशक्त वृद्धि पाठशाला औषध शाला के काम में आवै ॥

इसप्रकार तीनों हिसाबों के न्यारे २ रहने से लडाई कलह न होगी ॥

हमारा अभिप्राय इस लेख से यह है कि जिन मंदिरों में केवल धर्मसाधन होवे और धर्म के विरोधी कार्य कोई नहीं होने पावें ऐसा प्रबंध करने के वास्ते सर्व भाईयों को चेत कराया है और इसका प्रबंध भी बहुत सुगम है. धर्म के घातक पंचायती वगैरह का करना और हिसाब का दुरुस्त नहीं रखना मुख्य मालूम होते हैं सो सर्व भाईयों को वाजिब है कि इनका प्रबंध शीघ्र करेंगे ॥

॥ प्रयाग श्रीमज्जैन पाठशालीय वार्षिक अवस्था ॥

सम्वत १९४९

इस पाठशालेको स्थापितहुये ज्येष्ठ शुक्ल १३ सं० १९४९ को ४ वर्ष पूर्णहुये २४ लडके दिगाम्बरी पढते हैं. धर्मशास्त्र, संस्कृत, अंग्रेजी और हिसाब विद्यार्थियोंको [illegible] जाता है। इस वार्षिक परीक्षा में २४ में से २० लडकों की [illegible] लीगई और १४ लडके उत्तीर्ण हुये बाकी लडके अक्षर पहिचान[illegible] ४ते हैंमें से २ लडके मोहनलला

और जैकुमार गत बैसाख के अजमेर की प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण हुये और सोहनलाल को ४) रु० इनाम मिला ॥

जमा			खर्च		
	रु०	रु०		रु०	रु०
वार्षिक चन्दा	२२६		२ अध्यापक और १ नौकर की तनख्वाह	२७६	
परदेशी जैन भाई ने दिया	१०		लडकोंको इनामदिया गया	४	
ब्याज	७		फुटकर खर्च	११	
कुल प्राप्त हुआ	——	२४३	कुल खर्च	——	२९१
गत सालकी बची रोकड		१४९	रोकड बाकी रही		१०१
	जोड	३९२		जोड	३९२

२३ रु० माहवारी चन्दा है परन्तु १८ रु० से ज्यादा नहीं प्राप्त होता और २२ रु० माहवारी खर्च है. (१० रु० मास्टर, ८ रु० पण्डित, ३ रु० नौकर की तनख्वा और १ रु० फुटकर) इससाल ४८ रु० बची रोकड में से खर्च हुए और दिनपर दिन चन्दा कम प्राप्त होता है इससे एक साल से ज्यादा पाठशाले के स्थिती की

आशा नहीहै प्रयाग निवासी जैन भाई तन मन धन से इसकी पूर्ण सहायता नहीं करते-अब धर्म्मस्नेही जैन महाशयोंसे यह निवेदन है कि इस पाटशाले से दो लडकों का अजमेरकी प्रथम परीक्षामें उत्तीर्ण होना और धीरे२ द्वितीय परीक्षा के लिये तय्यार होना और इसी तरह जैनधर्म्मकी दिन पर दिन वृद्धता का होना विचारकर तन मन धनसे इस पाठशाले की कृपा कर रक्षा करैं॥

मिती आषाढ वदी २ संं० १९४६ | गुलजरीलाल सेकटरी जैनपाटशाला.

॥ विद्या दान उपदेश प्रकाश ॥

बिद्यादान उपदेश प्रकाश जैनसभा वर्धा से एक चिट्ठी आई है उसमेंलिखाहै कि पाटशालाके वास्ते मकान की बहुत जरूरत थी सो रू: २००) एक जगह मोल लीहै मकानबनाना प्रारंभ कर दिया है लेकिन पैसे की तंगीसे वह काम बंद पडा है पाठशाला का खर्च रू:३०) महावारी का और आमद कम है इससे अडचल है खर्च चलतानही इसलिये सर्व भाइ यों से बिनती है कि बिद्यादान को सर्वो उत्कृष्ठ जान कर इस में अवशय सहायता देवें हमरीभी यही राय है कि जैनी भाईयों को इस शुभ कार्य में अवशय सहायता देनी चाहिये परंतु वर्धा निवासी भाईयों को उचित है कि जितनी आमदनी है उतनाही खर्च करैं ज्यादह खर्च करनेसे यह कार्य कठिन पडजायगा और अरुचि होजायगी और फिर नष्ट होजायगा.

मंदसोर जिला मालवा यहां पर अभी जेष्ठमास में बीस पंथ आम नाय से मंदविर प्रतिष्ठा हुई जिस मेले पर फलटण निवासी इलाके शोलापुर दक्षण के पंडित नानचंदजी साहिब आयेथे ये बडे बिद्वान है. जाति के ब्राह्मण लेकिन जैन धर्म की शुद्धआमनाय के पूरे श्रद्धानी और जैन धर्म सिद्धान्तों के रहस्येक जानकार हैं. उन्हो ने यहां तीन सद्धर्म्मोपदेश व्याख्यान दिये. पहला शहर के मंदिरजी में जिस में संम्यक्त दर्शन का यथावत निरूपण किया जिस के श्रवन करने से कई भाईयों को धर्म में विशेष रुचि हुई दूसरा पुरे के मंदिरजी में हुआ कित नीहीं बिपर्य्य रीती वहां पर नवान मंदिरजी में लोगोंने कीथीया ने केस के चंवर उड़ाना रात्रि में पू[illegible] जा करना नारेयल चढाना (बा[illegible] धारना) फूलों को भगवान की प्रति मानी उपर धरना सो इन कुरीतियों को देखकर उक्त भाइ साहब ने उनसबका यथावत परमागम की आज्ञा अनुसार निरकर्ण किया. तीसरा जो नवीन मंदिर बना है उसमें हुआ तो केस के चंवर व रात्रि पूजन आदि उपरोक्त विषयो पर चर्चा हुई और कई भाईयों ने उनको पूछ किया परंतु जब इन भाई साहब ने उठके व्याख्यान दिया तो इन सब कुरीतियों को प्रथक२ एक२ का खंडन भली प्रकार से कर दिया और सर्व लोगों की संका दूर हुई जो भा[illegible] इन बातों पर दृढथे और उन्हे पुष्ट करतेथे उन के हृदय में भी अच्छी तरह निश्च होगया। उपरोक्त कार्य जैन धर्म से प्रति कू[illegible] और त्याग ने जोग्य है.

[illegible]नकचंदजी सहाब के व्याख्यान [illegible] यहां धर्म का बडा उद्योत हुआ इन में एक बडा भारी गुण यह है

कि वे पक्ष पात रहित कोमल ओर मधुर वाणी से यथोक्त हित रूपी उपदेश देते हैं जिसको लोग भले प्रकार सुनते और गृहणकरते हैं. एसे विद्वान पंडितों का जहां रहना होवे वहां कितने ही भाई सुलटजाते हैं अबवे यहांसे रतलाम होते हुये दक्षण अपने देश को गये ॥

अनुमती मालवा आदि स्थानो में अकसर जिनमंदिरों में केस के चवर अर्थात सुरहगाय की पूंछ के चंवर काम आते हैं सो यह चंवर जिन मंदिरो में लेजाना उचित नही हैं क्यों कि उन में गाय की पूंछ मांस और बाल होते हैं ॥
क्या कोई जैनी मांस पिंड को छू सक्ता है कभी नही ॥
तब मंदिरों में श्रीजी के मस्तक ऊपर मांस पिंड और वालो के चवर उडाना कितना बडा अन्याय और अधर्म का काम है ॥

हमको परम हर्ष हुआ कि पंडित नानकचंदजी साहब ने उसका निषेध किया और अब आशा है कि जैनी भाई सुरह गाय की पूंछ के चंवर मंदिरजी में नही इस्तमाल करें गे किन्तु सोने चांदी गोटा किनारी वा कपडे के चंदन के चंवर जो जैन मंदिरों में सर्व स्थानो में काम आते हैं उन्ही से भगवान पर करेंगे ॥

नहठौर ज़िला बिजनौर से भाई न्यादरसिंहजी ने लिखा है कि यहां पर चार महीने से एक जैन पाटशाला वनी है जिस में अभी विद्यार्थी यों को पंच कल्याणक आदि नित्य नेम के पाठ सिखलाये जाते हैं सिवाय इस के हिन्दी की पहली दूसरी और तीसरी पुस्तक और हिसाब भी सिखलायाजाता है. और इस पाठशाला में जैनी यों की लडकियां भी पढती हैं ॥

अनुमति ॥ बियाबृद्धि की खबर सुन कर हम को अत्यंत हर्ष होता है परंतु लडके और लडकीयों को एक स्थान में भेले पढाना हमको इष्ठ नही है. उन को अलग२ मकानमें रखना ही श्रेष्ट है ॥

आहमद नगर से साधमार्गी हिंदू मल बने चंद का धर्म स्नेह आप को मालूम करताहूं और सिफारस करता हूं के आप मासिक पुस्तक में नीचे लिखे मुजब हगिकत्त आ ये और लेंागों कूं मालम हो वे. ॥ आहमद नगर में श्रीउपाध्याय श्री बालचंद्र सूरी महाराज के आध्यक्ष निचे श्रीजैन धर्म संरक्षणी सभा स्थापित हुई है और इस बदले ज्यादा लिखना आपका मासिक पुस्तक में सर्व विषय बांचकर इस सभा के बारे में लिखणे का प्रसंग आवे गा तो लिखें गे और हम लिखें गे सो आप मेहेर नजर के साथ प्रसिद्ध करेंगे येआशा है सावण बद ३ स. १९४६.

अगर आपके समाचार जैनी भाई यों को हितकार होंगे तो बे शक प्रसिध्द किये जायगे.

जैन पाठशाला अलवरका वार्षिकोत्स

—○—

बिदितहो कि आज आषाढ कृस्न ९ रबिवारको प्रात काल जैन बिरादरीके अखिल प्रतिष्ठत और सभ्यजन पाठशालामें सुशोभित हुए और हर्षपदयहथा कि पंडित चुनीलालजी शर्म्मा साहब इनस्पेक्टरव. अतालीक महाराज साहब बहादुरभी सुशोभितथे

१ इनस्पेक्टर साहबने चन्द बिद्यार्थीयोंसे जैन मत संबन्धी प्रश्न किये और सुनकर अतिप्रसन्न हुए फिर २ पंडित गंगादत्त साहब दर्रिस हाईसकूलने वार्षिक परीक्षाकी रिपोर्ट सुनाई

खुलासारिपोर्ट

मैंनें जो जैन पाठशालाकी परीक्षा लीतो इस समय ५० विद्यार्थी ६खण्डेलवालश्रावक. ११ ओसवाल ४ जैनी अगरवाल वा सेलवाल १५ ब्राह्मण १५ अगरवाल वेश्नव ५ छे श्रेणियोंमें पढते हे प्रथम श्रेणीके विद्यार्थीयोंने लघु कोमुदी शिक्षामजरी श्रुतबोध रत्नकरंड श्रावकाचार हिसाब लेख केश स्तोत्रादि ७ मजमूनोंमें परीक्षा दी जिसमें पूरे नं १७५ मेंसे ऋटषभदास धमण्डीलाल प्रात्येकने १४६ नं पाए ३ रामचद्रनें ९१ पाये अतिरिक्त इसके जैन विद्यालय अजमेरकी १ परीक्षामें धमण्डीलाल नं. ५ ऋटभदास सन ७ में पास हुए और नीचेकी श्रेणियों के छात्रोंनेभी अपनी योग्यतानुसार अच्छा सुनाया ये पाठशाला प्रति दिन उन्नतिके सोपानमें आरोहण करती जातीहै आशाहै कि थोडे ही कालमें इस पाठशालाके विद्यार्थीभी पञ्चनददेशीयप्राज्ञ प्रोफीसेन्सी परीक्षाको उत्साहित होंगे ह-गंगादत्तशर्म्मा पाटक कहाईस्कूल

३ इनस्पेक्टर साहबनें स्पीच धर्म्म विषयक व्याख्यान पढकर अपनी प्रसन्नता प्रकटकी

४ पश्चात सबपञ्चोंकी तरफ से साह कन्हैया लालजी साहबनें धन्यवाद पढा

उलथाधनयवाद जुबांन ऊर्दूका

हमशतशः धन्यबाद अपने इष्ट देवका करतेहैं जिनके अनुग्रह और कृपादृष्टिसे आज हमारी जैन पाठशाला अलवरका पञ्चमवार्षिकोत्सव निर्विघ्न आनन्द पूर्वक समाप्त हुआ इन गतवर्षमें जिस प्रकारकी वृद्धि विद्यार्थियोंने विद्या

प्रासिमेंकी उसका कृतवार्षिक परीक्षा की प्रत्येक रिपोर्टसे प्रकटकहे इस समय उसका कथन केवल पुनरु क्तवा पिष्टपेषणवतहै हमको इस अवसरपर उन महाशयोंकी जिस ़ उद्योग और साहाय्यसे आज क यह पाठशाला स्थिरहै और वेष्यतमेंभी इसीप्रकार स्थिरता की आशाहै अवश्यमेव धन्यबाद देना योग्यहै जब हमारे मान्य सेठ उग्र सेनजी साहब सहारनपुर निवासी जो इस पाठशालाके मुख्य सहा यकहैं तथा मुन्शी रखलालजी साहिब साविक फोजदार अलवर तथा और २ समस्त बिरादरीके भद्रपुरुषभी पाठशालाकी वृद्धिके अभिलाषी होतो उसकी वृद्धि हो ना क्या आश्चर्यहै आज परमेश्वर ने वोदिवस आनन्दका कियाहै कि इस जैन पाठशालामे पंडित चुनी लाल साहिब इन्स्पेक्ट इसकूल तथा अतालीक श्री महाराजा धि राज श्री १०८ टसवाई श्री जयसिं हजी बहादुर दामइक्कवालहुं सुशो भित हुए और इस पाठशालाकी बडी शोभाकी हम उनके शुभा गमनका बहुत धन्यवाद करतेहैं और आशाहै यदि आगामीमें भी जनाब इन्स्पेक्टर साहब इसी प्र कार शुभागमनपूर्वक कृपा दृष्टि करते रहें तो इस पाठशालाकी वृद्धिकी पूर्ण आशाहै

५ विद्यार्थियोंको पारितोषिक पुस्तक मिठाई २५) रुपै बांटगये

६ इन्स्पेकटर साहब नेंरिमार्क लिखा उल्थारिमार्क जवान इंग लिशका मेने आज जैन पाठशाला को पारितोषिक बांटा यह पाठ शाला ५ वर्षसे है—और अलवर जैन सभाही इस की सहायता कर तीहै—इस में कालमें जो तरक्की ़ हुई उस्से अति प्रसन्नहूं ० ़ शमें ५० विद्यार्थी हैं—साधारण हिन्दी और गणित पुस्तकोंके

सिवाय जैन मतके पुस्तकभी लड कोंको पढाये जातेहैं जिससे कि अलवर जैन सभाको बडा उपकार है गंगा प्रसाद और वन्शीलालने अपना काम बहुत अच्छा किया और इनके परिश्रमको देख कर प्रबन्ध कर्त्ता सभाने गंगाप्रसाद का १) रुपेया और बंन्शीलाल के ॥) आने बढाये मैं चाहताहूं कि यह पाठशाला एसी ही उन्नति कर तीरहै ता- १९ जून सन् १८९२ ह. चुनीलाल इन्स्पेकटर इस्कूल राज अलवर ॥

पञ्चोंकी प्रार्थना

आप सर्व महानुभावोंसे साबि नय निवेदनहै किये सब उन्नति आज तक हुईहै ये सब आपके शुभोपयोग और धर्म्मानुरागका प्रभावहै इस लिये आशाहै कि इसी प्रकार आगामी काल सहायता करतेरहैं गेतो इस पाठ शाला रूपधर्म वृक्षके शीघ्र फल लगेंगे और आप कृत कृत्य होंगे क्यों कि चतुवर्ग फलकी (धर्म्म अर्थ काम मोक्ष) प्राप्ति विद्या दानसे ही होतीहै

अपात् सभा विर्जन हुई

आपका हितेच्छुः गंगा पर साद शर्म्मा अध्यापक जैन पाठशाला अलवर ॥

अलबरजैनपाटशालाकी उन्नति देखकर हमको बडा आनंद हुआ यकीनहै कि वहाके पंच इसी प्रकार हमेशह धर्मों उन्नतिमे लगे रहैंगे चिः घमण्डिलाल विद्यार्थीने जैन विद्यालय भंडारमेंसे रु:४) इनाम पायेहैं ॥

छापे खानेवालो की देरी से असाढका पत्र समय पर तैयार नही हुआ इसकारण भेजनेमें देर हुई ॥

जिन भाईयोंने पत्रकी कीमत नही भेजीहै वे कृपाकर सीघ्रभेजे

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासंबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा ने प्रकाश किया

नम्बर ६

मिती भादवा सुदी १ संवत् १९४१ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मनेजरके विक्टोरिया प्रेस अजमेर में छपा

॥विज्ञापन ॥

सर्व भाइयों से जिनके पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावग एकत्र हों पढ कर सुनावें ॥ आप के शहर की जाति और धर्म संबधी नई बार्ता पत्र में छापने को भेजें ॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकार्ड भेज कर मगालें ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ॥=) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपैगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या धन धर्म जात की उन्नति करना इसके उद्देश हैं ३ जिन धर्म बिरुद्ध लेख पोलिटिकल बार्ता मतयतांतर का झगडा इस में नहीं छपैगा ॥

॥ मूल्यप्राप्ति ॥

१) लाला गिरधारीलालजी चिलकाना १) जयलालजी पटवारी अजीतगढ १) सेठ मनालालजी नसीराबाद १) पंडित मवासीलालजी करहल १) लाला पारसदासजी मेरट १) बाबूमुरलीधरजी दोसा १) लाला बिहारीलालजी नरसिंहपुर १) श्री पंचान रतलाम १) लाला मुनसदीलालजी हिसार १) केवलकिसनजी सिरसा १) बिरधीचंदजी सूआलाल नागपुर १) श्री पंचान जैनमंद्र नवा आगरा १) कंवरीलालजी बूंदी १) मंगलचंदजी वोहरा २) लाला रगलालजी बेरिष्टर एटला १) रामचंद्रजी

सर्व चिट्ठी रुपया वगैरह छोगालाल अजमेरा के पास भेजना चाहिये

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ६ } अजमेर भादौं सुदी १ संवत् १९४९ { अंक २

॥ एक शिक्षा ॥

बंबईके प्रधान और नामी सेठ मिष्टर दादाभाई नौरोजी विलायत की प्रधान राज्य सभा पारलीमंट के सभासद नियत हुये हैं ॥ उनके इस प्रधान सभामें जानेसे हमारे देशको क्या २ लाभ होंगे उन पर कुछ लिखनेका हमारा विचार नही हैं परंतु हम उनसे एक शिक्षा निकालदेते है और चाहते हैं कि अगर हमारे सर्ब भाई उस शिक्षा को ग्रहण करें तो बेशक देश जाति धन धर्म सर्बको अत्यंत लाभ पहुचे॥ हमारे देश निवासीयोका यह स्वभाव पडरहा है कि वे हरेक कार्यका प्रारंभ तो वडे उत्साहसे करतेहैं परंतु ज्यों २ दिन वितीत होते हैं उनका उत्साह कमती २ होताजाताहै और यदि बीचमें कोई विघ्न आनपड़े तो बिलकुल कायर और अन्धीर होजाते हैं और तुरंत उसकार्य को बीचमें अधूरा छोडदेते हैं इसी कारण उनका संपूर्ण परिश्रम धन और समय जो उस कार्यमें व्यय हुआ निःरर्थक

जाताहै और और लोगोंको फिर कोई काम करनेकी हिम्मत नही रहती है॥ यही बडाभारी सबब हमें मालूम होताहै कि हमारे देश में किसी कार्यकी उन्नति नही होतीहै॥ मिष्टर दादाभाई नौरोजी ने छः बरस गुजरे पारली मंटमें जानेका कार्य आरंभाथा और इस अरसेमें कैसी २ बडी तकलीफों को कि जिनका काटना हिन्दुस्तानी भाईयोंको अति कठनथा छेदकर इस समय विजय लक्ष्मी प्राप्ति करीहै॥

सचहै जितने पुरुष प्रधान उच्च पदको प्राप्ति हुये हैं वा अब होरहे है या आगे होगे वे इसी एक मुख्य गुणकी सहायता से हुये होते और होगे॥ वह गुण यहीहै कि जिस कार्यका प्रारंभ करना उसको अधूरा नही छोडना हजार तरहकी तकलीफें आंवे लाखों विघ्न आंवे कायर और डरपोकहोपीछे नही फिरना परंतु अपने पुरषार्थ और धीर वीरपने को बहुगुणा वढाना और जबतक विजयलक्ष्मी प्राप्ति नहो वे कार्य सिद्ध नही होवे तब तक अगाडी ही बढे हुये चलेजाना और कार्य सिद्ध करकें दमलेना॥

इस गुणकी हमारे जैनी भाईयोंमें विशेष कमी दिखाई देती है और इसीसे उनके विद्याधन और धर्म उन्नति पर नही है॥ कोई भाई एक सभा नियत करताहै दो चार जलसे धूमधामसे होतेहैं फिर सभा कमती २ होतीजाती है और पांच चार महीने पीछे नामनिसान भी नही रहता॥ कोई पाठशाला नियत करताहै एक दमसे बहुतसे लडके पढने आतहैं खर्चके बंदोबस्तके लिये चिट्ठा बनजाताहै फिर दिन ब दिन लडकेभी कमहो जातेहैं रुपया देने वाले रुपया नही देते बरस छः महीनेमें पाठशाला टूटजातीहै॥ कोई शास्त्र पढना

प्रारंभ करता है दस पंदरह दिन खूब मिहनत करके गाथा श्लोक याद करताहै फिर अरुचि होतीहै क्रम २ कर पढना कमती होजाता है फिर शास्त्रजीकी सूरतभी नही देखता याद किये हुये श्लोकोंको भी भूलजाता है और सर्व परिश्रम वृथाजाता है ॥ इत्यादि ज्यादह लिखनेकी आवश्यकत्तानही सर्व भाई अपने दिलमें बिचार करलें कि आपने अपनी उमरमें कितने कार्य छोडे और कितने पूर्ण किये बिवेकी पुरषोंको थोडा कहना ही बोहतहै और आशा है कि कार्यको अधूरा छोडनेकी बुरी रीत त्याग कर धीर वीरता ग्रहणकर कार्यको पूरा करनेकी अच्छी रीतिको अब ग्रहण करना चाहिये ॥

॥ चिठी ॥

जनाब लाला छोगालालजी व बाबू बैजनाथजी साहब जय जिनेन्द्र : जैन प्रभाकर पत्र नंबर २ को पढकर परम आनंद प्राप्ति हुआ. आपने जो पत्रमें मुद्रि किया कि राय बहादुर सेठजी श्री मूलचंद्र जीने श्री मत्तधवलादि महा सिद्धान्तों की देव नागरी वर्णोमें प्रति उतरवानेका प्रबंध किया है सो बड़ेही हर्षकी बातहै क्यो कि एसे महान ग्रंथोंका देश भाषामें लिख जाना बडा हितकारी और धर्मका उद्योत करनाहै ॥ हम सेठजी साहबको अनेका नेक धन्यवाद देनेके पश्चात प्रार्थना करतेहैं कि जेसे आपने एसे महान ग्रंथोका जीर्णोद्धार और भाषान्तर करानेका प्रबंध किया है वैसाही आप उनके पढने और अर्थ समझनेके लिये जैनियोंको संस्कृत और प्राकृत विद्या पढने पढानेका भी प्रबंध अवश्य करें जिससे कि उन महान ग्रंथ रूपी सूर्योंके अर्थ रूपी किरणो

के प्रकाससे हमारे जैन कुलमे से अज्ञाद अंधकार नाश होवे और स्वर्गमुक्तिका मार्ग प्रकट दिखा देवे और उस मार्गमें गमन करने से सर्व सुख और कल्याणकी प्राप्ति होवे॥

लेकिन उत्तम और श्रेष्ठ कार्य तो हमारी समझमें यह आता है कि जिस तरह सेठ मूलचंद्रजी साहबने श्री मत्धवलादि शास्त्रोके भाषान्तर करानेमें कोशिसकी और प्रति उतरवानेमें रुपया खर्च करेगे उसी प्रकार और और धनबान जैनीयोंकोभी अपने धर्मको उन्नति करनेकी रुचि होनी चाहिये अर्थात् अब उनको उचितहै कि वे अपना धन और परिश्रम विद्यावृद्धि में लगावें॥ एक बडे बोझके उठानेमें जो दस मनुष्य शामिलहो और वे एक दमसे बराबर जोर लगावें तबतो उस बोझको उठालेंगे लेकिन अगर एक मनुष्यतो जोर लगावें और नो नही लगांवे तो वह बोझ हरगिज़ नही उठ सकेगा किंतु उस एक अकेले जोर लगाने वाले का जोर और परिश्रम निरर्थक जायगा और उसको तकलीफ भी पहूचेगी वह दुखी होकर फिर जोर लगानेकी कोशिस नही करैगा॥ यही व्यावस्था संपूर्ण धर्म और परोपकारी कार्य्योंमें जाननी चाहिये इसी लिये लाला उग्रसेनजी लाला रूपचद्रंजी व सेठ फूलचंद्रजी व सेठ इमरतलालजी व सेठ चुन्नीलाल जी आदि महाशयोके जो जिन धर्म प्रभावना करनेमें मुख्य और अग्र णी समझे जातेहैं उचितहै कि प्रभाहद छोडकर विद्या वृद्धि करने का प्रयत्न करैं॥

सबसे पहले लालाउग्रसेनजी साहिबको जो नयेनगरके मेलेमे महा सभाके प्रधानथे और जैन विद्यालय भंडारमे ढाई हजार रुपया देगयेहै वाजिब है कि भंडार

में रुपया जमा करके और २ साधर्मी और धनवानो से भी रुपया एकत्र करै जैन कालेजकी नीम सीघ्रही डाले ॥

२ बडे शोककी बातहै कि लाला गोरीलालजी मेरट निवासी जो बडे विद्वान परोपकारी और साधर्मी सज्जन थे जैन बदरी की जात्रा करके बहुत राजी खुशी आये थे एक दिन बाद अचानक देव लोक प्राप्ति हुये और आयुकाय के क्षणभंगुर विनासीक होने का एक और उदाहरण प्रत्यक्ष बताग ये ॥—सचहै मनुष्यकी आयुकाय धनका कुछ भरोसा नहीं यह सब बिजलीके चमत्कार वत्त चंचल और बिनासी कहै इन से जो कुछ परोपकारदानवासील सयम धारण कर आत्म कल्याण करलेवे सोई अपना है ॥

३ हर्षके समाचार यह हैं कि यहां पर श्री अष्टान्हकाजीके महोच्छव पर मंदिरजीमे तेरह द्वीपका पाठ पूजा भजन बडे आनंद से हुये आठ दिनतक परम आनंद रहा सुवह के वक्त नितनेमकी और पंचमेर अठाईजीकी पूजा और शास्त्रजीका व्याख्यान होताथा बारह बजे से तेरह द्वीपका पाठ और रात्रि को भजन और पद बडे आनंद से होतेथे ॥

आपके कृपाकांक्षी
रामलाल व मंगलसेन
छावनी अंबाल।

॥ रथ जात्राका मेला हांथरस ॥

मिती भादों बदी २ के दिन प्रातकाल हाथरस शहरमें रथजात्रा का मेला बडे आनंद और हर्षसे हुआ ॥ रथकी सवारी बडे मंदिर जीमेसे प्रातकाल निकली और गीतनृत्य वादित्रव मंगल

पाठ और जय २ ध्वनि करते हुये सरे बाजारके मार्ग होते हुये बाहिर बागमें श्रीमंडपमें पधारे. रथ जात्र के समय बाजार की सोभा देखनेके लायक थी, हजारों स्त्री पुरुष नवीन बहुत मोल्य ब-स्रा भरण पहरे हुये जय २ ध्वन करते और मंगल पाठ पढते च-ले आते थे, उधर मेह की झडी लगी हुई थी और इधर आनंद की झडी लगी थी परंतु आनंद की झडी के आगे मेहकी झडी कुछन करसकी सब स्त्री पुरुष भीग ते आनंद में मग्न नंगे पैर रथ के साथ २ चले जाते थे ॥

हुकामलोग हाथी ओर घोडोपर सवार रथके साथ थे, और उच्छव को देखवडे हर्षाय मानथे बंदोवस्त बहुत अछा था. बागमें पूजादि विधान सहित हुये और सर्व प्रजामें क्षेम वर्त्ते देशाधिपति राजा प्रतापी धर्म्मात्मा न्यायमार्गी रहै समय २ पर मेघ बर्षै दुर्भिक्ष और मरी आदि ईतभीत प्रजामें कोई नही व्यापे. अहिंसा धर्मका प्रताप वढे लोग आपसकी बैर ईर्षा छोड परस्पर प्रीत करै इस प्रकार जिनेन्द्रसे प्रार्थनाकर शांति पाठ पढ और फेर उसी प्रकार गीतनृत्य बाजित्र सहित शहरमे आये और श्रीजीको मंदिरमें बिराजमानकर महारानी श्री एमप्रेस कीन विक्टोरिया की जय बोल श्रीमान हेरीसन साहिब बहादुर आदि हाकिम जिलेकोधन्यबाद दिया कि जिनकी सहायता और कृपासे यह मेला निर्विघ्न हुआ सर्व जैनी अपने २ स्थान गये ॥

इस मेलेमें करीब २०००० स्त्री पुरुष एकत्र हुयेथे और हाथरसके पंचोकी तरफसे ठहरनेको मकान वगैरह से खातिरदारी बहुत अछी हुई किसीको किसी प्रकारकी तकलीफ नही हुई ॥

शहरके अन्यमतावलवी भाई भी जिनको लडाई और तकरार हो जानेका शकथा निर्विघ्न मेला होनेसे बहुत खुश हुये और मेला देखनेको आये और अब हमे आशाहै कि वे मेला करनेको कभी उजर नही करैगे परंतु और सब शहरोमें जैसी खुशी और प्रेमप्रांतसे मेले होतेहै वैसेही अब हर साल हाथरसमे भी मेला होतारहै गा और सर्व जैनी और अन्य मतावलवीयोंमे सुलहवनी रहैगी ॥

इस मेले के कराने मे लाला सालिगरामजी साहिब रईस हाथरस को बडा परिश्रम उठाना पडा और रूपया भी उन्होने बहुत खर्च किया सेठजी श्री लछमणदासजी सी. आई. ई रईस आला मथरा और रायबहादुर सेठजी श्री मूलचंद्रजी आनरेरी मजिष्टरेट अजमेर वालोंने इस मेलेके वास्ते बडी २ कोशिसैं और पैरवी की सो इन धर्मानुरागी भाईयोंको धन्यवाद दिया जाताहै ॥

॥श्री जम्बु श्वामीजी का वार्षिक महोच्छब मथरा

यह उच्छब श्रेष्ठि श्री लछमनदासजी आदि मथराके पंचोके प्रबंधसे प्रति बर्ष कार्त्तिक बदी २ से होताहै और चौरासीके बनमें श्री जंबू श्वामीजी महाराजका सिद्ध क्षेत्र तीर्थ स्थान होनेके कारण इस मेलेमें संपूर्ण भारत बर्षके जैनी जात्री आतेहै मेलेके ऊपर हर साल करीब १०००० स्त्री पुरुषो की भीड होतीहै और रथ वेदीभी पांच सात शहरोंसे आतेहैं॥ इस अबसर पर नित्य प्रति प्रातःकाल पूजा और शास्त्रजीका व्याख्यान होताहै फिर मध्यान्ह समय २ बजे तक पूजा होतीहै और तीन बजेसे पाच बजे तक रथकी सवारी बडे

जलूससे निकलतीहै सायंकाल आरती होनेके पश्चात शास्त्रजीका व्याख्यान होताहै और नौ बजे से ग्यारह बजेतक न्टत्य और भजन होते रहतेहैं॥ पिछले साल करहल और जैपुर वाले भाईयोंने नाटक कियेथे उससे जातीयोंका मन वहुत रंजाय मान हुआ था. एक सभा भी हुईथी और जाति व धर्मकी उन्नति करनेको सर्व लोगोकी स मतिसे एक सभा श्री जैन धर्म संर क्षणा सभाके नामसे स्थापित हुई थी जिसका वर्णन हम अपने पिछ ले पत्रमें करचुकेहै॥ यह मेला धर्म प्रभावनामें विशेष उपयोगी होता है और अब इसके होनेका समय नजदीक आया इस लिये हम सर्व भाईयोंकी सेवामें और खासकर उनकी सेवामें जिनका इरादा इस साल मेलेमें जानेका है कुछ निवे दन करना चाहतेहैं आशाहै कि वे कृपाकर इस को ध्यान लगाकर पढें और उचित कार्य करें॥

आप सर्व भाईयोंको बिचार करना चाहिये कि इस जगतमें मनुष्यकी कीर्ति और आदर संसारीक सुख और पर भवमें सुखकी प्राप्ति इन सर्व कार्य्यों की सिद्धि विद्या धन धर्म और उत्तमा चरण से होता है सो इन्ही चारों पदार्थों के सिद्धकर ने की चेष्टा और उपायोंमें आज दिन सर्व जातियोंके मनुष्य लगरहे हैं॥ वे हर साल प्रथक २ स्थानोंमें सभा करतेहैं जिनमें उनकी जातिके प्रतिनिध बेठकर जातिकी उन्नति करनेके प्रबंध करतेहैं पिछले सालकी कार रवाई सुनाते और आगेका इन्तजाम करतेहैं इस प्रकार उनकी उन्नति होती जातीहै फिजूल खर्च और हीनाचार बंद होते और विद्या धन और उत्तमा चारको वढवारी होतीहै॥

परंतु आप जैनी लोग इन विषयो पर बहुत ही कम ध्यानदेतेहैं अगर बिचारकर देखा जावेतो इन चारो पदार्थों अर्थात विद्याधन धर्म और उत्तमाचरणकी वृद्धि करनेकी आवश्यकत्ता आप लोगोंको वहुतही ज्यादहहै॥ परंतु जितनी ज्यादह उन्नति करनेकी आवश्यकताहै उत्तनाही कम आप उपाय करतहैं यह बडी भारी भूलकी वातहै॥ आप सरदार दूर २ से बहुत कुछ रुपया खर्चकर और तकलीफ उठाकर एक स्थानमें मेलोके ऊपर एकत्र होतेहैं आपके साथमें जगह २ के पंचचौधरी मुखियाजातिव्यवहारके जानकार पंडित और विद्वान धर्म शास्त्रके जानकर तथा हुंडी वाल साहुकार आदि व्यापार और धनकी कीमतके जानकर होतेहैं॥ एसा उत्तम अवसर और समूह आपको सहजमें ही बिना परिश्रम किये मिलजाता है और यदि आप चाहैं तो उस समयमें सर्व भाईयोंकी सम्मतिसे अपने जातिमें विद्याधन धर्म और उत्तमाचरणकी वृद्धिकरनेका एसा उत्तम प्रबंध करसक्ते हैं कि जिससे आपकी जातिकी अत्यंत प्रतिष्टा और मानता होवे और आपको और आपकी संतानको और उनकी सन्तानदर सन्तानको इस जन्म सवंधी और पर जनम संवंधी सर्व सुखकी प्राप्ति होवे और आपके धर्मका महान उद्योत होवे परंतु अफसोस है कि आप एसे उत्तम अवसर को कि जिसका एक २ पल बहुमोल्य है ढोल और ताशोकी कड़ कड़ कत्ता नफीरी और अंगरेजी बाजेकी पूंपूं धूधू सुननेमें वालोंमे तेल डाल पट्टे काढने मूछमोडने और आईना देखनेमें तथा हाथ में छडी जेवमें घडी डाल दोस्तोके साथ ठडी हवा खानेमें या दाल बाटीका जगरा फूकने और चूरमा

कूटनमें वृथा गमा देतेहैं परंतु इस जगहोंके विद्वानोंको एकत्र कर धर्म कथा कभी नही करते और न कभी विद्या और धर्मकी वृद्धि करने का उपाय सोचते॥ बडे पश्चातापकी बातहै दिन नीके बीतेजातेहैं जातिके लोग विद्या धन धर्म रहित हुये हीनाचार दलिद्र और अज्ञानके भंवरजाल में गहरे २ डूबे जातेहैं पास खडेहुये विद्वान और धनवान देखते हैं परंतु अपने भाईयोंको दल २ से निकालनेका कुछ उद्योग नही करते सच्चा वात्सल्य और सच्चा धर्म उद्योत नही करते सच्चा वातसल्य तभी होगा कि अपने दीन दुखी दालिद्री भाईयोंको निरापेक्ष होकर खान पानको सामग्रीकी सहायता देवे सो कोई करता नही झूठी नामवरीके वास्ते हजारो रुपये एक दिन ज्योनार करके अवश्य करदेते हैं॥ इसी प्रकार सच्चा धर्मका उद्योत भी अपने आत्माको धर्मात्मा बनाने और और भाईयोंका अज्ञान अंधकार दूरकरनेमें विद्यादान देनेमें तथा व्रत पथ करने पूजा करनेसे होताहै सो ज्ञानकी वृद्धि करनेकी किसीकी रुचिदिखाई देती नही बाहरी बनावट और चमक दमक देखकर मोहित हुये अपने को कृत कृत्य मान फूले वदनमें नही समातेहैं धर्म प्रभावनाके नामसे तबले सरंगी नकारे धौंसेमें और झाड फानूशकी रोशनीमें हजारों रुपये हर साल गंवाते हैं वे भ्रमके भंवरमें पडे हुये हैं यह नही जानते कि जिस तरह यह हमाराभाई और पडोसी अज्ञान दलिद्र और हीनाचारके भंवरमें भ्रमण करता हुआ देखते २ गोते खाकर दुख समुद्रमे डूबेगा उसी प्रकार यह फजूल खर्ची और अज्ञानकी लहर हमको भी दलिद्र अधर्म और हीनाचारके भंवरमें डाल

भवभ्रमण करावेगी और दुख समुद्रमें डुबावेगी॥ इस लिये भाईयों आपसे प्रार्थना कीजाती है कि जब तक अज्ञान और फजूल खर्चीकी लहर आपको नही वहावे उससे पहले धर्म शास्त्र रूपी नावका सहारा लेकर अपना उद्धार करलो अर्थात् इस साल जो आप मथराजीके मेलेमें जांवे तो हरेक शहरके पंचोंकी सम्मतिसे अपनी जातिमें विद्या धन धर्म और उत्तमाचरणकी वृद्धि करनेका प्रबंध अवश्य करें॥

वह प्रबंध किस प्रकारसे करना चाहिये उसकी सूचनका हम अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार आपके वास्ते लिखे देतेहैं इसपर विचार करें वाजिब समझेंतो इसको गृहण कर इसके मुताबिक प्रबंधकरे या और जो आप मुनासिब समझे उस माफिक करे॥ हमारी तरफसे केवल सूचना मात्रहै करना न करना आप बुद्धि वानोकी सम्मति परहै॥

॥ १ सर्व श्रावकोंके लडकोंको विद्या पढानेका प्रबंध होना चाहिये उसमें सबसे पहले श्रावकाचारके पढानेका और जो लडके पढकर तैयारहों उन्हें इनामदेनेका प्रबंध होना चाहिये॥ गरीब भाईयोंके लडकोंको भोजन वस्त्र की सहायता देकर पढावें॥

२. हीनाचार मेटनेके वास्ते प्रासुक दवाईका बंदोबस्त होनाचाहिये

३. फिजूल खर्ची मेटनेके विषयमें यह प्रबंध होना चाहिये कि लडका लडकीके व्याहमें एक साल की आमदनीसे ज्यादह कोई खर्च नही करैं और गमीके खर्चमें तीन महीनेकी आमदसे ज्यादह खर्च नही होवे इसकी शनि भांत अपनी बिरादरी और शहरकी चालके अनुसार हरेक जगहके पंच करलेवे॥

४. मंदिरजी और पंचायती द्रव्यका हिसाब न्यारा २ होनेका प्रबंध इस प्रकारसे कर कि मंदिर यादेव द्रव्य पंचायतीके अंग नही लगे ॥

॥ यह चारो प्रबंध इस साल होना चाहिये और दूसरे सालमें हरेक जगहके समा चार आने चाहिये की इनके अनुसार किस किसने काररवाईकी ॥ आगेके वर्षोंमें और २ प्रबंध होवे परंतु थोडा २ करना चाहिये जिससे काम आसानीसे होवे हमारी सेलीकी खास सम्मति यहहै कि प्रथम धर्म शास्त्र संबंधी विद्या वृद्धिकरना चाहिये क्यो कि ज्ञानकी बढवारी होनेसे और सब काम स्वय होते हुये चले जायगे आशाहै कि श्री जैन धर्म संरक्षणी सभाके कार्याध्यक्ष और मथराके पंच इस लेख पर विचार कर इस साल मेलेमें स्वमतावलंबनी विद्या वृद्धि करनेका प्रबंध अवश्य करेगें ॥

॥ पापनोमी ॥

पापनोमी अर्थात् आसोज सुदी ८-९-१०- के विषयमें पिछले साल हमने एक लेख लिखाथा और हम अब अंडेहर्षसे लिखते हैं कि उसको पढकर कई जगहोंके श्रावक भाईयोंमे दशहरेका मेला देखना और देवी पूजनेका त्याग किया अब नजदीक आतीहैं इस लियें पापनोमी हम उसी लेखके पढनेको आये सर्व भाईयोंसे प्रार्थना करतेहैं और आशा रखतेहैं कि आप इस पापनोमीके स्वरुपको भले प्रकारसे विचार करें और उस दिनको महान हिंसा और पापका दिन जानकर भैंसा बकरा मारनेका और रावण फूंकने जलानेका मेला देखनेका त्याग अवश्य करें ॥ ऐसे मेले जैनी श्रावकोंके

देखने जोग्य नही है इनसे महा पापका बंध होताहे ॥

बहुत से जैनी और खास कर खंडेलवाल ओसवाल श्रावक आसोज सुदी ८-वा ९-१० के दिन अपने २ घरोमें देवीकी पूजा करतेहैं और नारियल बधारतेहैं सो यह कार्य जैन धर्मकी आज्ञाके बिलकुल विरुद्धहे और गृहीत मिथ्यात्त्व का और हिंसाका पुष्ठ करने पापका उपजाने वालाहे सो संपूर्ण जैनीयोंको अवश्य त्यागना चाहिये जैन धर्मका मार्ग दयामईहै इसमें हिंसा करना और मांस मद्य रुधिर खाने पीने वाले हिंसक और रुद्रध्यानी पर पीडा करने वाले देवी देवतोंकी पूजा आराधन करनेका कंही भी उपदेश नही है जो श्रावक हिंसक देवी देवतोंकी पूजा करते वा उनके सामने संकल्प कर नारियल बधारते है वे जैन धर्मसे पतित और वाहर हैं उनके भगवान सर्वज्ञ वीतरागके धर्मका श्रद्धान नही है और वे नर्क निगोदमे अवश्य जांयगे ॥

यह पापनौमीके दिन हिंसक देवी देवोकी पूजा लोक मूढता और पाडपडोसकी देखादेखी श्रावक कुलमें चलपडी है सो बुद्धिवान श्रावक इस कास्वरुप अच्छी तरह बिचार कर इस बुरीरीतको अवश्य अपने घरोंमें बंदकरके अपने तंई और अपनी संतानके तंई पापसे निवृतकर नर्क पतनसे बचावेंगे ॥

मंदिरोंमें शास्त्रजीके उपदेशक व्याख्यान दात और जैन सभाओंके सिकत्तर आदि सर्व भाईयोंसे प्रार्थनाहे कि इस पापनौमीके विषयमें विस्तार सहित व्याख्यान करके इसका यथार्थ स्वरुप सर्व सभा सदभाईयोंको बतावें और पापनौमीमें देवीकी पूजाका त्याग करावें ॥

॥ विज्ञापन ॥

जैन विद्यालय भंडारकी तरफ से प्रथम दुतिप और तृतिय परीक्षा कार्तिक सुदी १२ १३ १४ और १५ को होगी जिन भाईयो ने अपनी पाठशालाओं के विद्यार्थी इन परीक्षा ओंके वास्ते तैयार किये होय वे कृपाकर उन सर्व विद्यार्थीयोंके नाम पिताकानाम उमर जाति और कौनसी परीक्षा देगें यह सब समाचार मेरे पास कार्तिक वदी ८ से पहले भेजदें किसे उनके वास्ते प्रश्न पत्र भेजने का प्रबंध करूं ॥

बैजनाथ बांक लीवाल
सेक्रेटरी जैन विद्यालय भंडार
कार्या धिकारणी सभा
अजमेर

हिसार सभाकी उरदू चिट्ठीका तरजुमा आगेके पत्रमें छपैगा ॥

॥ मुल्प्राप्ति ॥

किसोरीलाल आखी १) चुन्नी लालजी चौधरी दौसा ॥ १) श्री पंचान पिरावा १) लाला चुन्नी लालजी नैठौर १) नथुलालजी १) न्यादरसिंहजी २) सुंदरलाल जी स्योपुरा १) श्री पंचान विजोली १) श्री पंचान आरोली १) श्री पंचान सिंगोली १) लाला किस्तूर चंदजी कपूरचंद भेलसा १) छोगा लालजी १) बाबूजमनालालजी धोलपुर १) श्री पंचान मंदसोर १) लाला भागचंदजी ताराचंद १) सेठ तिलोकचंदजी हुकमचंद इंदोर १) लाला फतेलालजी
१) चंपालालजी
१) पदमचंदजी बंबई
१) इमरतलालजी जोरावरमलजी जबलपुर
१) रूपचंद्रजी सहारनपुर ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा ने
प्रकाश किया

नम्बर ७

मिती आसौज सुदी १ संवत् १९४१ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

सेठ कानमल मनेजरके विक्टोरिया प्रेस अजमेर में छपा

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाइयों से जिनके पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावग एकत्र हों पढ कर सुनावें ॥ आप के शहर की जाति और धर्म संबंधी नई वार्ता पत्र में छापने को भेजें ॥ जो भाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकार्ड भेज कर मगालें ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ॥=) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या धन धर्म जात की उन्नति करना इसके उद्देश हैं ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतातांतर का झगडा इस में नहीं छपैगा ॥

॥ विज्ञापन ॥

में सब साहीबोंको इतला करता हूं के इस कारखानेमें रबडकी मोहारें कागद छापनेकी बोत अछी तयार होतीहै वो बोत मुदत तक रहतीहै और ऐक कलम जिसमें पेनसलभीहै और उसके पीछे रबड में मोहार यानी सील रहतीहै जिसमें अपने नामकी मोर लगाई जावे हिनदी वा अंगरेजी में अछी तयार कीजातीहै कीमत सबसे कम लीजावेगी जिनको मगानेकी जरुरतहो महरबानी कर के नीचे लिखे पतेसे मगावें नमुना ऐक मोहारका इस पत्रमेंभी लगादिया है

सेठ कानमल मनेजर विक्टोरिया प्रेस अजमेर

सर्व चिट्ठी रुपया वगैरह छोगालाल अजमेरा के पास भेजना चाहिये

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ७ } अजमेर आसोज सुदी १ संवत् १९४९ { अंक ३

॥ श्री मद्दशलक्षणाजी सोलह कारणजी रत्नत्रयजीके वृत विधानादि महा महोच्छव यहां बडे आनंद और हर्षसे संपूर्ण हुये॥ भादों सुदी १४ को सब स्त्रीपुरुष बालवृद्धके अनसन वृतथा और प्रभात पूजा और शास्त्रजीके पीछे वार्षिक प्रतिक्रमण कर सायंकाल पूजा और कलशा भिषेकके पश्चात मंदिरजीके बाहिर सर्व भाईयोंने आपसमें उत्तम क्षमाकी और अपने अपराध क्षमा कराये उसी अनुसार आसोज बदी १ कोभी पूजा और कलशा भिषेक आदि महोच्छव हुये हम अपने सर्व भ्रातृगणोंसे विनय प्रणाम सहित उत्तम क्षमा करतेहैं और प्रार्थना करतेहैं कि आप सर्व भाई हमारे अपराधोंको कृपाकर क्षमा करें तथा जैसा धर्म स्नेह वात्सल्य आप रखते आयेहैं उसी प्रकार और उससे ज्यादह हमेशह रखें॥ अपने आत्मामे रत्नत्रयका उद्योत और पूजा दान सील तप और विद्याके अतिशयकर जिन धर्मकी प्रभावना करनेमें सदांकाल सर्व जैनी

भाई प्रवर्तें यही हमारी सर्व भाई योंसे प्रार्थना है॥

——ooo——

दशलक्षणजीके पर्वके दिनोंमें मंदिरजीमें शास्त्रजीका व्याख्यान होरहाथा अष्ट कर्मके बंधके वर्णन में दर्शन मोहका प्रकर्णथा कि देव गुरु धर्मका अपवाद अविनय करनेसे दर्शन मोहका तीव्र वा तीव्रतर बंधहोताहै उस समय अवसर पाकर भाई मोहनलालजी साहबने प्रश्न किया कि मंदिरजी में पंचायत करना वाजिबहै या नही उसके उत्तरमें सेठजी श्री मूलचंद्रजी साहबने कहा कि मंदिर जीमें पंचायती व्याह बिरादरीके झगडे करने बिल्कुल वाजिब नहीं है उससे वडा भारी पापका बंध होताहै इस विषयको विस्तार सहित भलेप्रकार वर्णन किया सभा सदों पर वडा असर हुआ और कई पंचोंने कहा कि बडे अफसोसकी बातहै कि यह बयान हमारे सुननेमें आजतक नही आया नही तो हम मंदिरजीमें पंचायती कभी नहीं होनेदेते अब हम इसका प्रबंध करेंगे और पंचायती कामोंके वास्ते एक अलहदह मकान नियत करदेंगें मंदिरजीमें सिवाय धर्म साधनकरनेके दूसरा लौकिक काम को॰ नही करेंगें॥ आशाहै कि यह प्रबंध शीघ्र होगा और २ देशोंके भाईयोंकोभी इसका प्रबंध करना उचित है॥

हमने मंदिरजीमें कलह लडाई न करनेके बाबत पिछले महीनेमें एक लेख लिखाथा सो उसको आप सर्व भाईयोंने सभामें अवश सुना होगा यदि उसको सुनकर किसी शहर या गामके भाईयोंने मंदिरजीमें कलह लडाई बंदकरने का कुछ प्रबंध किया होयतो कृपा कर समाचार हमें लिखें कि उसको जैन प्रभाकरमें मुद्रित करें ता

कि उसको पढकर और २ जगहों के भाईयोंकोभी इसके बंद करने की रुचि और साहस होवें॥

———ooo———

कई स्थानोके भाइयोंकी लिखावट आईहै कि उनके वहां धर्म प्रभावनाका नामलेकर कितनेही लोक अनेक प्रकारके अनाचार करतेहैं समझानेसे नही समझते जिद करते और लडतेहैं॥ कोई कहताहै कि मंदिरजीमें झाड फानूशोंकी बहुत बडी बडी भारी रोशनी करनेसे प्रभावना होतीहै सो वह बाजारसे विलायती चरबीकी बत्तीयां लाकर मंदिरमें प्रज्वलित करताहै और अपनेको धन्य समझताहै कोई मंदिरजीकी छत पर दविदान करताहै और समझताहै कि मेने अज्ञान अंधकार नाशकर ज्ञानका प्रकाश किया॥ कोई मंदिरजीके सामने आतिश बांजी छुटाताहै और कहता है कि पटाकोंकी पटपट सुनकर पापकर्म डर कर भागजातेहै कोई कुल्लड छुटाताहै और कहताहै कि कुल्लडमें से अग्नि के फुलंगे निकलते हैं सो देवोंके वर्षाये रत्न सुवर्णके फूलोकी शोभा जीत तेहैं कोई भगवानकी प्रतिमाजीको जल दूध दही घी बूरेसे ऐसा स्नान करताहै कि वह सारे मंदिरमे वहा २ फिरताहै और स्त्री पुरुषोंके पैरोंमें पडताहै तथा उसको व्यास माली एकत्र करके नीच लोगोंको बेचकर दाम वसूल करतेहैं॥ कोई भगवानके चर्णोंमें चढी हुई फूलोकी मालाको उच्चस्वरसे नीलाम करताहै कहताहै "बढे सो पावे" कोई धनाढ्य उसे ज्यादह दाम बढाकर मोल लेताहै अपने पुत्रके गलेमें पहराकर मूछ मडोडता मानके सिखिर चढता और और भाईयोंको तुच्छ समझताहै॥ कोई गरीब भाई जिसका दिल पहले माला मोललेने

को हुआथा और उसने अपना सामर्थ प्रमाण कुछ रुपया कीमत का लगायाथा धनाढ्यको बहुत दामोंपर खरीदनेसे बिलखाहो मन नही मन पछताताहै और गरीब निर्धन होनेके दुःखसे मंदिरजीमें बैठा हुआ झूरताहै कोई पंच उस समय खडाहोकर कवित्त सुनाता है कि मंदिरजीमें लाडा कंठी पहर आतेहैं माल पहरके चलेआतेहैं जब पंच दाम मं[illegible] [illegible] रो युक्ती बताते गा[illegible] [illegible] लडनेको सामने आतेहै ए[illegible] [illegible] पहरने वालोंपर धिक्कारहै नाक रखाओ होतो नकद दामदे माल पहर जाओ॥ इत्यादि कितनीही रिपरीते चलपडीहै उनका कुछ बंदोबस्तहोना चाहिये॥

कुरीतीयोंके बंद होनेका प्रबंध अवश्य होना चाहिये॥ परंतु प्रबंध कोन करे क्योंकि पंचचोधरी जिनके हाथमें प्रबंध करनाहै वे तो इन कुरीतियोंको सुरीति समझकर करतेही हैं सो वे तो बंद करनेका प्रबंध क्यों करने लगे और जो दानिसार ज्ञानी धर्मात्माहैं और शास्त्रजीकी आज्ञाके अनुसार इनको कुरीति समझतेहैं उनका इतना बिरादरीमें दबाव नही कि कुछ कर सके सो यह कुरीतियां नो योंही चलती दिखाई देतीहैं परंतु नोभी कुरीतियां बंद अवश्य होना चाहिये और उनके बंद करनेके उद्यममें हरेक ज्ञानी और विवेकी भाईको अपना पुरुषार्थ करना चाहिये॥ हरेक ज्ञानी और विवेकी भाईको उचितहै कि हित मित प्रिय मधुर वचनोंसे अपनी गोष्ठि और सभाके भाईयोंको पक्षपात रहित वस्तुकायथार्थ स्वरूप समझावे कि देखो भाई साहब अपना जैन धर्महै सो हिंसादिक पापों और क्रोधादिकषाय और पांचो इन्द्रीयोंके विषयोंकी

लंपटता रहित है सो जिन कार्य्यों के करनेसे यह तीनो चीजे कम ती होंगी वेही कार्य्य हमारे धर्म की प्रभावना और उद्योत करेंगे और जिन कार्य्योंके करनेसे इन तीनोकी वढवारी होगी वेही कार्य हमारे धर्मको लज्जा अंधकार और कलंक लगाने वाले होगें॥ आप प्रत्यक्ष देखतेहैं कि चरवी पंचेंद्री जीवोंके मारनेसे पैदाहोतीहै चा तुर्मासा वर्षातमें दीपकोंमें कोट्या जीवभस्म होतेंहै आतिशवाजी से कोट्यां जीव मरतेहैं सो यह कार्य बहुत बुरे और पापकर भरेहैं इन में धर्मका लवलेशभी नहीं है। भगवानका चर्णोंदक महापवित्रहै जो देव देवेन्द्रोके मस्तकपर चढ ताहै और जिसे आपभी सर्व भाई बडे विनयसे अपने २ मस्तकपर चढाते और नेत्रोंसे लगातेहै क्या एसे पवित्र और उत्तम पदार्थको आप अपने पैरोसे खूदें और आप के टहलवे नीच लोगोंको बेचैं यह बात आपके धर्मको बढाने वाली है या घटाने और लजाने वालीहै मंदिरजीमें निर्मायल वस्तुका व्या पार करना अपना मान पुष्टकर दूसरे भाईका तिरस्कार करना इससे तो कोई धर्मकी बढवारी दिखाई नही देती केवल धर्मका निरादर होताहै सो आप ज्ञान वानहैं भलेप्रकार विचार लीजिये और अजोग्य और हीना चारका त्याग कीजिये॥ इत्यादि प्रीत पूर्वक मिष्ट वचनोंसे समझाया जावे और मंदिरोंमें नित्य प्रति शास्त्रजीका उपदेश होवे और लो गोंकी शास्त्रजीका स्वाध्याय करने मे रुचिलगाई जावे तो ज्ञानकी वृद्धि होनेसे आशाहै कि सर्व हीना चार कम २ करके थोडे दिनोमें बंदहो जायगे॥ लेकिन जव तक ज्ञानकी वढवारी नही होगी कोई भी अच्छा काम नही होगा अगर

कदाचित कोई अच्छा काम शरमा शरमी बनभी जावे तो उसकी जड नहीं जड बिना शाखा पत्र पुष्प फल कहांसे लगे इस वास्ते हरेक शहरके ज्ञानी विवेकी धर्मात्मा पुरुषोंसे हमारी यही वीनतीहै कि वे अपने २ सामर्थ और पुरुषार्थ अनुसार अपने २ शहरके भाईयोंको धर्म शास्त्रका उपदेश कर ज्ञान वृद्धि करनेका प्रयत्न करैं॥ आप शास्त्रजीका व्याख्यान करैं और औरोंसे स्वाध्याय करावें॥

॥ दिवाली ॥

दिवाली आतीहै और अपने साथ २ कितनोंका दिवाला भी लातीहै॥ बस भाई साहब खबरदार और होशयार होजाईयें कि इस साल दिवाली आपका दिवाला न लेआवे यदि दिवाला मल्ल आपके घरमें घुस आवेगा तो उनकी डरावनी सूरतको देख आपके सर्व सुखदूर भागजावेंगे उस वक्त प्यारी स्त्री और आज्ञाकारी पुत्र तथा विश्वास पात्र मित्र कोई काम नहीं आवेंगे परंतु संभवहै कि सरकारी पुलिस कानिसटबिल पकडकर कारा गारमें लेजावेंगे॥

नहीं मालूम होता कि दिवालीके ऊपर जूआ खेलनेकी रीति कैसे चलपडीहै यह किसी शास्त्रकी आज्ञाहै या बदमाश लोगोने भोले लोगोंके माल ठगनेको एक हीला निकाल लियाहै॥ जोहो सो हो हमारे जैन शास्त्रकी आज्ञानुसार जूआ खेलना महा पाप जूआ सात विसनोका राजाहै जिसने जूआ खेला उसने सर्व पापकाये. जूआ खेलनेसे अनेक लोग नष्ट हुये उनमें पांडवों और राजा नलकी कथा विख्यातहै और जूआ खेलनेसे जो कुछ तकलीफ आतीहै सो सबको मालूमहै ज्यां

वह क्या लिखे सुबुद्धियोंसे यही प्रार्थनाहै कि यदि अपने हितके वांछकहो और अपने कठिन २ कमाये धनकी रक्षा करना चाहते हो तो जूएका खेल जन्म भरके वास्ते त्याग करो न जूआ खेलो न जूआरीयोंकी संगतमे जाओ॥

॥ कोलारस ॥

कौलारससे एक चिठ्ठा आईहै उसमे लिखा कि भाई छोगालाल जी भेलसा वाले यहा आये विद्या अभ्यासके संबंधमें बड़ाही आनंद भई उपदेश किया कि सभासदों ने जो उस समय १५० थे हर्ष से एक जैन पाठशाला नियत करनेका प्रबंध किया रु: १५) माह वारीका बंदो बस्त किया भादों सुदी ५ से महूर्त्तहोगा समचार पांछे लिखेंगे॥ यहा अगरवाल जैनीयो के घर ७० हैं सहेला बड़ा उत्तम औरश्रेष्ठहै सर्व भाई गुणग्राही धर्मानुरागीहै मंदिर बडा प्राचीन पाडासाहका प्रतिष्ठत अतिशय धारी जिसें १० प्रतिबिंब ४ हाथ सेले ८ हाथ पर्यंत महा मनोज्ञहै यहांके भाईयेंकी सज्जनताकी शोभा वर्णनकरनकी मेरी सामर्थ नहीं है में इस सैलीके परमोत्तम गुण और धर्मका विशेष उद्योत देखकर यहा ही रहना चाहताहूं एसे सज्जन सर्व स्थानोके भाई होवे तो कितना अच्छा होवे॥

हिसार जैन सभाकीउर्दू चिठ्ठीके खुलासा समाचार

तारीख १० जूलाई सं १८९२ ई को एक सभा जैन पाठशालाके विद्यार्थीयोंका इनाम देनेके वास्ते हुई जिसमें राय भजनलालजो साहिब सिवजन लाला मूलराज जी साहिब तहसीलदार और डाकद्र उशमा बक्सजी साहब आदि शहरके संपूर्ण जैनी भाई

और और अन्य मतावलंबी भाई भी पधारे प्रथम मुंशी नेतरामजी साहिब सेक्रेटरी सभाने पाठशालाकी वार्षिक रिपोर्ट पढकर सुनाई कि पार सालकी निसबत इस साल पाठशालामें विशेष उन्निति हुईहै॥ पार साल २० विद्यार्थी और सरकारी मदद रु:२४) थे इससाल ४२ विद्यार्थी और ४८) सरकारी ६ मददकेहैं॥ लाला नंदकिशोरजी साहिब डिपटी इन्सपेकटर स्कुल हलकह दहलीने पाठशालाकी परीक्षा लेकर सिफारस लिखीहै कि यहां पर पढाइ बहुत उमदा होतीहै और वे परीक्षा लेकर बहुत खुशहुये उनकी शिफारससे म्यूनी सीपैलीटीने १५।=)॥ की पुस्तके इनामदी सभाकी तरफसे ५७ पुस्तके और मिठाई मुंशी नेतरामकी तरफसे ४ पुस्तके लाला मुतसदी लालजी की तरफसे तीन टोपीयां कलाबत्तूकी लाला सालिगरामजीकी तरफसे २८ रूमाल और एक दुपट्टा विद्यार्थीयोको इनाम दिया गयाहै॥ एक खास इनाम नेक चलनका जगन्नाथको और बराबर हाजिरीका रघुनाथको दिया गया है॥ इस साल पांच दर्जाभी नियत किया गयाहै॥ जैनी और और मतावलंबी योकोभी विद्याका लाभ होताहै पढाई सरकारी मदरसोके मुताबिक होतीहै मगर महावारी फीस कुछ नही लीजातीहै॥ सरकारी मदरसोंमें फीस पढाई की ज्यादह होनेसे गरीब लडकोंका पढना मुशकिल होता जाता है इस लिये सभाका इरादाहै कि संस्कृत और धर्म शास्त्रके सिवाय फारसी अंगरेजी पढावे और सर्व लोगोंको धर्म और परोपकार निमित्त और कौमकी उन्नतिके वास्ते विद्यादानदें इस समय माहवारी खर्च रु ३०) के आसरैहै सभासद

३) माहवारी चंदा रु: ३३) वसूल साल भरका रु २९७॥।=) बाकी लेना १०७) हैं॥ पंडित और सभाकी कोशिस हमेशह विद्या वृद्धिमेंहै और अगर इसी तरह कोशिश जारी रही तो बहुत थोडे समयमें इसका फल मिलेगा कि जिससे सब भाईयोंको बडा हर्ष होगा॥

इसके पीछे लाला शेरसिंहजी साहिबने फिजूल खर्ची पर एक लेचर दिया और फिर राय भजनलालजी साहिब सबजजने एक व्याख्यान विद्या और मैत्रीके विषयमें ऐसा उमदा दिया कि जिसको सुनकर सभासदों पर बडा असर हुआ और सर्व सभासद धन्य २ कहने लगे॥ तथा विद्या और मैत्रीके लाभोको सुनकर कि इनीसे जातिकी उन्नति धन और धर्मका लाभ होताहै सर्व लोग विद्या और मैत्रीकी वृद्धि करनेको तत्पर हुये बाद उक्त राय साहिबने अपने करकमलोंसे एक२ विद्यार्थीको इनाम दिया और हरेकको शिक्षाकी कि पढनेमैं कोशिसकरो और अपने गुरजनकी आज्ञामानो और उनका विनय करो॥ इसके पीछे अंगरेजी बाजे हारमोनियमके साथ भजन गाये जिनके सुननेसे सभाको बडा हर्ष हुआ पश्चात सबजज साहिब और तहसीलदार साहिब आदि सर्वको धन्य वाद दियागया और जयकारा बोलकर सभा विसर्जन

मुरादाबादसे चिट्ठीआईहै उसमें लिखाहै कि पाठशाला और सभाकी तरक्की होती जातीहै सभाके सबब कई हीनाचार त्याग हुये हैं और कुसंगत से अरुचि हुईहै॥ सभामें जैन विद्यालय भंडारके नामसे एक गोलक रखाहै जब किसी भाईका जी चाहताहै तब पैसा दो पैसा उसमें डाला करते

हैं॥ आज तक ५॥) जमा हुये जिनमें से २) पहले ही लाला पर मेसरी दासकी चिठ्ठी द्वारा सेठ जी साहबसे पंडित चुन्नीलालजी ने आपको दिलाये थे सो आपको मिलेहोंगे तुरंत समाचार लिखिये आगे और मनी आरडर भेजेंगे॥ भादों सुदी १० को सभामें यह दिखायाथा कि गोलक स्थापन करने और उसमें पैसा रोज डालनेसे ५।-) सालियानाहोताहै जिसको व्याजदर व्याज लगानेसे सो बर्ष में ६०००००) के आसरे होतेहैं इस लिये जिनको धर्म कार्यके लिये धन इकट्ठा करना होतो अपने २ घरों या दुकानोंमें एक गोलक रखें और घर खरचमेंसे पैसा दो पैसा बचाकर उसमें डाले तो थोडा २ करनेसे बहुत बडी रमक होसक्ती है और वह विद्या वृद्धि तथा प्रासुक औषधदान तथा दीन दुखी अनाथ विधवाओंकी खानपानकी सभालमें खर्च होसक्ती है जिससे जैनियोंमें परस्पर प्रीत और धर्मकी प्रभावना विशेष होसक्तीहै इसलिये हरेक जैनी भाई को एक २ गोलक दान और परोपकारके वास्ते अवश्य रखनी चाहिये जिससे जैन विद्यालय भंडार बढै॥ जैनी धनाढ्यहैं और अगर वे चाहैं तो बहुत जल्दी भंडार भर सकेहै परंतु अफसोसहै कि वे लोग चिठ्ठे लिखदेते है चंदा देनेका वायदा करतेहैं मगर देते नहीं उनसे क्या आशा रखनी चाहिये अन गरीब भाईयों कोही अपने कल्याण के अर्थ थोडा २ कष्ट सहना चाहिये और गोलकमें जमा करके विद्यालय भंडारमें माहवारी भेज देना उचितहै॥ अब किसी धनाढ्य की आशा न राखिये धनाढ्य महाशयों की आशा करते २ पांच बर्ष बीत गये जिनोने फीरोजाबादके मेलेमें तथा बिजनौर सहारनपुर मेरठ आदिके

रहांसोंने जोजो रुपये देने कियेथे उनहोंने आज तक बार २ अर्ज करने पर भी असल तो दूर रहो व्याज तक नही दिया तव अन्य धनाढयोकी जिन्होने अभी तक चंदा देना स्वीकार नही किया कैसे अ सा करैं॥

हमारी पाठशालामें २५ विद्यार्थीहैं उनमें १० बाहरके है और दो तीन आने वालेहै उनके लिये रसोई और मकानका पंडित चुन्नीलालजी और लाला तारा चंदजी की कृपासे पूरा बंदोबस्तहै ॥ अगर कोई तीव्र बुद्धिका धारक आठ दस वर्षकी उमर जैनी लडकोके पिता विद्या पढनेको उसे हमारे पास मुरादाबाद या कासीमें हमारी मारफत भेजें तो गरीब होनेपर पंडित चुन्नीलालजी एक या दो लडकोको खाने पहरने पुस्तक वगैरह खर्च देना स्वीकार करते है जहा कहीके पंच लडका पढनेको भेजा चाहे तो चिठ्ठी उन्हे लिखें

इस चिठ्ठीमें और भी समाचारहे॥ दूसरी चिठ्ठी और आई है उसमें लिखाहै रविवारको सभा हुई जैन प्रभाकर नंबर ६ सुनाया गया॥ मथराजीके मेलेमें जैन धर्म संरक्षणी सभाके प्रबंधके लिये जो ४ नियम आपने लिखे सो अति प्रशंसनीय है इस सभाके सर्व सभासदोंको मंजूरहै॥ यहासे जो लोग मथराजीके मेलेमें जायगें तो यथा जोग्य सभामें अर्जकी जायगी॥ तत्पश्चात पाप नौमीके व्याख्यानको सुनकर यहांके सरावगी चमक गये. फिर लाला श्यामलालजी साहिब रईस आदि कई महाशयों ने पापनौमीका स्वरूप विस्तारसे समझाया तो सब लोगोंको के पाप नौमी दशहरा पूजना वही पर सांथिया निकालना उस दिन दुकान पर खाते वहीयोंका सुगन मनाना इत्यादेसे बिरक्त हुये और २५ सभासदोंने इस पापनौमीके पूज

नका तथा ४ सभासदोंने कुल मिथ्यामर्ता त्यों हारोंके पूजनेका त्याग किया और रजिष्टरमें दस्त खत करादिये॥

आगें कार्तिगकी परीक्षाके वास्ते चारलडके तैयार हुयेहैं उनके नाम रजिष्टरमें चढाकर प्रश्न पत्र भेजना

लाला जमनालालजी सांगाणी हेडक्लार्क धौलपुर एजंसीने रु: ५) जैन वियालय भंडार और रु: ५) अमृत संजीवनी औषधालयके कडीके वास्ते भेजे और लिखा कि वे जैन प्रभाकर नंबर ४ पढकर बहुत प्रसन्न हुये खास कर यह पढकर कि कसबे कठूमर राज अलवरमें खंडेलवालोंकी स्त्रीयों का वाजारमें गीत गालीयां गाना बंद होगया और लिखाहै कि अगर इसी तरह जैपुर अजमेर वगैरे मेंयह शरमिंदारीत धीरे २ बंद होजावे तो बडी उमदा बातहोवे

लाला नोरंग लालाजी साहिव खजानची निधोली वाले लिखेहै कि जिला विजनौर कस्बा धाम पुरमें लाला तुलसी रामजीको मैंने बडा धर्मात्मा पुरुषदेखा एक तो श्री भगवानका बहुत सुंदर सिखर बंध मंदिर बनवाया और प्रतिष्टा सं ४३ मे कराई सो बहुत कुछ द्रव्य खर्च किया अब जैन औषधालय खोला वह चैत बदी २ सं १९४८ से जारीहै ३५ आदमी वीमार आतेहैं वैद्यवर लाला बनवारी लालजी जिनके पुस्त दर पुस्तसे हिकमत चली आतीहै दवाई देतेहैं और पंचपमेष्टी की कृपासे सीघ्र आराम होताहै॥ रात दिन वीमारोंको दवाई बांटी जातीहै भादों सुदी १५ सं १९४९

हम यह समचार पढकर परम आनंदको प्राप्त हुये लाला तुलसी रामजी साहिबको कोट्यां धन्य बाद देतेहैं और २ शहरोंके भी धनवान धर्मात्मा भाईयोंको इन

का अनुकरण करना चाहिये ॥

अलवरके पंचोने लिखाहै कि आपने चि: घमंडी लाल वो चि: रिषभदास विद्यार्थी जैन पाठशाला अलवरके लिये रोकडी रु ४) सिके कलदार और सारटी फिकट भेजे तथा पुस्तके जो पन्नालाल जीने भेजी इस [illegible] बडी खुसी हुई और माफि[illegible] आपके इरसादके सावण वदी १ कू जलसे आममें बाबू रामदयालजी साहबके रोबरू जनाब भाई साहब मुनशी रिशक लालजी साहिब साबिक फौजदार रियास्त अलवरके हाथसे इनाम और सारटी फिकट दोनो विद्यार्थीयोको तकसीम कर दियेगये ॥

यहांसे लाला जीवणरामजी पापडी वालेने जो लडके अबके पास हुये उनको एक रूमाल जा कीका और एक टोपी हरेक विद्यार्थीके लिये इनामदी सो यहा जलसेमें दीने जैपुरके विद्यार्थीयोंको सेठ चांदमलजीकी मारफत भेजी रसीद आगई मुरादाबाद और इलाहाबादके विद्यार्थीयोंको डाक मारफत भेजेंगे ॥ सारटी फिकट छपे हुये होने चाहिये ॥

सरटी फिकट आमदनीकी कमीके सबब नही छपा सके ॥

जैन विद्यालय भंडार

१९४८॥) बैसाख सुदी १५ सं १९४९ तक जमा हुये

२) लाला फौजीलालजी लुहाडा हाथरस

२) लाला लिछमनलालजी जोहर लालजी परवारगोदिया

१॥) छोटमलजी सुखलालजी अजमेरा

१।) दिलसुखजी हजारीमलजी सेठी

१।) मोहनलालजी चंदरभाणजी काला

१) केसरीमलजी पाटणी

१) उमरावसिहजी ओसवाल

१) धनालालजी खरया
१) हजारीमलजी सेठीकीमाजी साहिब
५) मोहनलालजी चंदरभाणजी
२) श्रीपंचान छिंदवाडा मारफत रिषभदासजी
१) हणतरामजी बालमुकंदजी कामटी
१) श्रीपंचान गोंदया खेरांज
५) लाला उदैराजजी महता जोधपुर
२) घासीरामजी रामलालजी कामटी
१) अमरचंदजी लादुरामजीकाला नांदगांव
१) रामलालजी रामचंदजी परवार
१) दयाचंदजी चत्रतेजपाल
१) गोकुलालजी काला कुचामण
१) अरजनदासजी जौधरी
१) चनणमलजी अजमेरा
१) रामचंदजी मांगीलालजी
१) हरसुखदासजी पहाडा
५) पंनालालजी बाकलीवाल

सुजानगढवाला
१४॥) चिमनलालजी व बाबूमल जी जैनी सुलतानपुर जि सहारनपुर
७) भूरामलजी माष्टरदरबार स्कूल बीकानेर
२०११॥) जोड भादों सुदी १५ तक

करोलीमें भादवा सुदी १० के दिन जैन पाठशाला स्थापन हुई लडके पढने शरू हुये॥

जैन प्रभाकरका वार्षिक मूल्य जैन भाईयोंमें बाकीहै कृपाकर भेजदेवें जैन प्रभाकर जो भाई मंगवाना चाहे पेशगी मूल्य भेज देवें मूल्य प्राप्ति जैन प्रभाकरमें आयनंदसे नहीं छापी जावेगी

कैई कारणोंसे जैन प्रभाकरके छपकर पहूचनेमें देरी होजातीहै कृपाकर क्षमाकरें॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी मासिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा ने प्रकाश किया

नम्बर ८

मिती कार्तिक सुदी १ संबत् १९४९ का

अजमेर

बार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मैनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा।

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाइयों से जिनके पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां वहुत से श्रावग एकत्र हों पढ कर सुनावें ॥ आप के शहर की जातिऔर धर्म संबधी नई वार्ता पत्र में छापने को भेजें ॥ जोभाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकार्ड भेज कर मगालें ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ॥=) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का -) है ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या, धन, धर्म, जात कीउन्नति करना इसके उद्देश हैं ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपेगा ॥

सर्व चिठ्ठी रुपया वगैरह लाला छोगालाल कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम से भेजना चाहिये ॥

—— ॥ विज्ञापन ॥ ——

॥ इस यंत्रालय में हिन्दी फारसी उरदु अंगरेजी का टाइप और छापेका सामान सब नया मगायाहै छपाई सब रंग की साई और सुनहरी रुपरी हरफोंमें वहुत शीघ्र शुद्ध और सुंदर होतीहै दर छपाईकी बहुत कम है और हमारेया रबड सील याने मोहोर छापने की और स्याई मोहोर लगाने की सब रंगकी तयार होतीहै जिन महाशयों को कुछ छपानाहो या मोहोरे बनानीहो कृपाकर हमारे पास भेजेंगे ॥

मनेजर विक्टोरीया प्रेस अजमेर ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ८ | अजमेर कार्त्तिक सुदी १ संबत् १९४९ | अंक ३

कायस्थ कानफरेन्स

अर्थात्

कायस्थ महासभा

एक मित्रने कृपाकर पांचवी कायस्थ कानफरेन्सकी रिपोर्टकी एक कापी हमें दीनीहै उसके पढने से बडा आनंद हुआ और उसके कुछ संक्षेप समाचार हम अपने जैनी भाईयोंके पढनेके वास्ते लिखेहैं आशाहै कि वे इसको ध्यान लगाकर पढैगे और अपनी जाति की उन्नति करनेका उपाय उसके अनुसार करैगें कानफरेन्सके वास्ते दूर २ देशोंके कायस्थ प्रति बर्ष एक मध्य स्थानमें एकत्र होतेहै और जाति उन्नतिके अनेक उपाय बिचार करतेहै और उनके अनुसार काररवाई करतेहैं इस प्रकार कर नेसे कितनेही कार्य जैसा विद्या वृद्धि मद्य त्याग बिवाहादिमें खर्च का बंदोबस्त और परस्पर मैत्री आदि शुभ कार्योंका उन्होने अच्छा प्रबंध करलियाहै

हमारे जैनीयोंके [illegible]

मेले हरसाल अनेक स्थानोमें हो तेहैं जिनमें श्री जंबू स्वामीजीका वार्षिक महोच्छव मथरामें प्रसिद्ध है इन मेलोंमें दूर २ स्थानोंके जैनी भाई एकत्र, होतेहैं उनको जाति उन्नति करनेका बडा अच्छा सुवीता मिलताहै परंतु वे सब उस अबसरको वृथा गमादेतेहैं और सर्व भाईयोंकी सम्मतिसे कोई उत्तम कार्य कि जिससे अपनी जातिमें विद्या और धर्मकी वृद्धि होवें हीनाचार और फिजूल खर्ची बंदहोंवें और परस्पर मैत्री और वात्सल्य वृद्धहोंवें जिसका कोई उपाय नहीं करतेहैं, इस कायस्थ कानफरेन्सके समाचार पढ और उनके कायदे करीनोंपर विचारकर वे अब अपनी जाति उन्नति करनेका उपाय अवश्य करेंगे एसी हमारी वीनती है

कायस्थ कानफरेन्सके संक्षेप समाचार

चित्रगुप्त बंशी कायस्थ अपनी जातिकी उन्नति करनेको कई बर्षसे बडा परिश्रम और उद्योग कर रहेहैं उनकी मनुष्य संख्या २२ लाखके अनुमानहै और वे बहुधा पश्चिमोत्तरदेश अवध बिहार राजपूताना मध्यदेश और हैदरावाद दखनमें रहतेहैं और उनका पेशा लिखने पढनेकाहै वे हरसालएक महासभा भेली करतेहै जिसेंमें अनेक देशोंके प्रतिनिध चुने हुये बैठतेहैं पहली कानफरेन्स लखनोमें दूसरी इलाहाबादमें तीसरी बांकीपुर चौथी लाहौर और पांचवी बरेलीमें हुई और छटी इस साल अजमेरमें होने वालीहै इन सभाओंमें वादानुवाद केवल जातिय व्यवस्था और उसकी उन्नति पर होतेहैं धर्म और राज सबंधी

कार्य बिल कुल नही छुअे जातेहै उनके मुख्य प्रयोजन अपनी जातिमे विद्या वृद्धि करना एकत्ता करना सुधार करना और व्यापार आदि न्याय मार्गसे धन और प्रतिष्ठा वृद्धि करनेकाहे

सभासदोंकी सर्व सम्मति तथा बहु सम्मतिसे जो बिचार ठहरते हैं वे जातीय अखबार और पुस्तक तथा उपदेशको करके सर्व जनोको ज्ञातकर दिये जातेहैं उन विचारोके अनुसार सर्व जनोको चलानेके लिये हरशहरमें सभा नियत हैं जो अब ३०० के अनुमानहैं दूसरी सूबेकी सभा जो लखनौ मेरठ आगरा अजमेर हैदराबाद आदि मुख्य स्थानोमेंहैं तीसरी सदर सभा जो कानफरेन्सका सर्व कार्य करतीहै और सर्व छोटोबडी सभाओंमें कार्य वाहीकी एकत्ता रहे एसा प्रबंध करती रहतीहै इन सभाओका परिणाम यह है कि कायस्थ जन अपने अंतरग और सच्चे दिलसे अपनी जातिकी उन्नति करनेमें लगगयेहे

कानफरेन्स करनेका अंकुर प्रथम मुंसी हरगोविंददयालजी एम ए सरकारी वकील लखनौके हृदयमें ऊगा और बाबू श्रीरामजी एम ए बी एल वकील आदि लखनौके सींचनेसे वृद्धिको प्राप्ति हुआ स्वामी सूगनचंदजीकी सूधारकारी वुद्धि और देशाटन करनेसे विस्तारको प्राप्ति हुआ इन सर्व सभ्यजनोके हृदयमे पुरुषार्थ करनेका साहस मुंशी कालीप्रशादजी साहिब वकील लखनौ निवासी के दानसे हूआ कि जिन्होंने अपने जन्म भरकी कमाई जो ऊपर पांच लाख रुपये केथी सन् १८६६ में कायस्थ पाठशालाके निमित्ति कि जिसकी नीम उन्होने सं १८७३ मे लगाईथी अर्पण करदी ये सर्व उद्योग आत्म सहायकी रीतिपर

किये गयेहैं और सरकारसे किसी प्रकारकी सहायताकी याचना नही कीहै तौभी करकारी वेड़ २ अहलकारोंको यह कार्य वाही ज्ञातहो गईहै और उन सबने इस लाभकारीकर्यपर अपनी प्रसन्नमा प्रकट कीहै ॥ और इसी प्रकार अंगरेजी और देशी अखबारोनेभी प्रसंसा कीहै ॥

पहली कानफरेनस तारीख २७ और २८ नंबम्बर सं १८८७ को लखनौमे हुई ॥ २०० परदेशी प्रतिनिध और ६०० लखनौ निवासी सभ्यजन उसमें आये राय ब्रजभूषनलाल बहादुर पेनशनर और हुसैनाबाद एनडौमंटके सिकत्तर सरवराकार कमेटीके प्रधानथे और आनरेबिल राय जैप्रकाशलाल बहादुर सी-आई-ई बंगालके लाठ साहिबकी आईन सभाके साविक सभासद महाराज उमरांवके दीवानने कामफरेनसके सभा पतिका आसन ग्रहणकिया और अपनी सुबुद्धि और दूरदर्शीपनसे कानफरेनसके कार्यको बडी चतुराईसे सिद्ध किया इस सभामे मुख्य बिचारये हुये ॥

१ अपनी जातिमें विद्या और आचर्णकी उन्नति करना ॥

इस कार्यके पूरा करनेके अर्थ कायस्थ पाठशाला इलाहाबादको बडा मदरसा (कालेज) बनानेको उद्यम कियाहै और बहुत से सभ्यजनोंने उस पाठशालाके सभासद होनेके वास्ते उसके भंडारमें रुः १००) रोकडी जमा करायेहैं और कितनोने रुः १२) सालियाना पेशगी चंदा देना स्वीकार कियाहै॥

कितनेही स्थानोमें कायस्थ पाठशाला या स्कूल नियत हुयेहैं जिनमें शिक्षा होतीहै ॥ कितनीही सभा जिनमें मद्यपान आदि हीनाचार रोकनेके व्याख्यान होतेहैं और त्याग कराये जातेहैं ॥ कितनीही

जातिकी उन्नति और सुधार करने के बिषय में पुस्तकें बनाई गईहैं और जगह २ पढाई जाती हैं और मुफ्तमें बांटी जाती हैं कायस्थ बिद्यार्थियों के सुबीते के लिये और आराम के लिये बडे२ शहरोंमें बोर्डिंग हाउस "अर्थात बडे मदरसों के पास रहने के मकान जिनमें परदेसी बिद्यार्थियो के रसोई आदिक और उनकी पढाई और चाल चलन की निगहबानी रहने का आराम मिले बनाये गये है ॥ बिहार की कायस्थ स भा ने बांकेपुर में एक बोर्डिंग हाऊस बनाया है जिसमें रहनेके १००कमरेहैं जिस की इमारत की लागत ५००००) होंगे जिस में १००००) जमा होगये हैं और २होते जातेहैं जबलपुर में १००००) और सागरमें ६०००) लगकर बोरडिंगहाऊस तैयार हो रहेहैं आगरे में भी एक तैयार होरहा है रु०२५००) जमा हो गयेहैं ॥ जोधपुर सिकंदाराबाद मछली शहरमेंभी वहां के लायक हैं ॥ इलाहाबाद और लाहौर के बोरडिंग हाऊस में १४ और ३० बिद्यार्थी आज दिन रहते हैं इत्यादि जातिमें बिद्याकी उन्नति के काम होरहे हैं ॥

२ कायस्थ लोग व्यापार आदि और भी इज्जतके पेशे इख्तियार करें और अकेले लिखने पढनेके पेशे पर नहीं रहें ॥

कायस्थ लोग व्यापार करने से अकसर नफरत करते हैं और मुंशीगीरीको ज्यादह पसन्द करते हैं लेकिन अब इस बिचारके होने से व्यापार में दिल लगाने लगेहैं और कई कोठी और कारखाने जारी होगयेहैं ॥

दूसरी कान्फरेंस १६ वी और १७ वीसितम्बर १८८८ई० को इलाहाबाद में हुईथी। राय

हरसुख रायजी साहब मालिक अखबार कोहनूर लाहौर निवासी सभापति नियत हुए थे । मुंशी रामप्रसाद सरकारी वकील हाई कोर्ट चौधरी महादेव प्रसाद जी तालुकादार बाबू राजबहादूर जी वकील मुंशी रोशनलालजी बेरिस्टर एटला० और मुंशी किशोरी लाल जी साबिक मुनसिफ ने सब कारखाईयां कीथी । ५३५ प्रतिनिधि बाहर शहरों के और १२६ शहरनिवासी सभ्यजन सभा में पधारे थे । और वे इस प्रकार से थे ३१० पश्चिमोत्तर देशके १०७ अवध ४३ मध्य देश ४३ विहार १६ राजपूताना१ १पजाब ३ बगाल और २ बम्बई से आयेथे ॥

मुख्य २ प्रबंध इस सभाके थे हुए—

१ नीचे लिखे रिवाज बन्द करने ॥

(अ) ब्याहमे रुपये कालेन देन (ब) व्याह और २ अवसरोंपर फिजुल खरची ॥

(क) बालविवाह ॥

यह प्रबन्ध अछी तरह जारी हो गया है और खर्च कम करनेके नये २ कायदे बनादिये गये हैं जिसकी सबलोग खुशीसे पैरवी करतेहैं और जो काइदे के खिलाफ करता है वह पंचायत के मुकर्रर कियेहुये दंड खुशी से लेता है । जो कुछ दंडकारु० वसूल होताहै वह सभा या जातीय लाभ के काम में आता है ॥

(२) एक नेशनल फन्ड अर्थात जातीय भंडार नियत करना कि जिसकी आमदनी से गरीब विद्यार्थीयों को सहाता देनी और जो विद्यार्थी यहां हिन्दुस्थान में वा बिलायत आला दरजे की विद्या जिससे जज मजिसट्रेट आदि ऊंची २ सरकारी नौकरी पावे पढें उनको सहायता

देनी, और कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद को बडा मदरसा बनाया ॥

इस भंडार के जमा करनेको नीचे लिखी तरकीबें बताई गई हैं जो देनेवालेकोसुगम दीखेसोकरे ॥

आमदनी के माफिक साला ना वा माहवारी चंदा याएकमुश्त रुपया देना जनम और बिवाहादि उत्सवों पर कुछ देना हररोज एक मुठी आटा भंडारके नामसेअलग घरमें रखना और उसकाकी कीमत भंडारमें जमाकरदेना। यहबडे हर्ष की बातहे कि इनसब बातोंपर बि रादरी ने खुशी से अमल किया है और सभाओं ने इसप्रकार से बहुत कुछ रुपया जमा करलिया है। अवध की देश सभाने दोवर्ष से सात विद्यार्थियोंको उच्च श्रेणी की विद्या पढने को माहवारी तन खा दीनी पंजाब और मध्यदेश की सभाओंने भी इसी प्रकार तनखा और किताबों से विद्यार्थियों की सहायता करीहे। राजपूताने और पश्चिमोत्तरदेश की सभाओं नें बिलायत पढनेगयेहुये बिद्यार्थियों को धनकी सहायतादी और इसी प्रकार आगरा देस सभाने तनखा देकर गरीब बिद्यार्थीयों को सहा यता देने का बिचार कियाहै। कितनेही प्रधान कायस्थोंने सदर सभाके सेक्रेटरीको लिखा है कि वे एक मुश्त रुपया देकर लायक बिद्यार्थियों की रसोई वस्त्र और पुस्तकादि से सहायता करना चाहे दो कायस्थ बिद्यार्थी अपने खर्चसे बिलायत पढनेगये। चार बेरिष्टर बन लोट आयेहै पाच सात निजके खर्चसे जाने वालेहे १०० गरीब वि द्यार्थी और ३५ विधवाओं को पंचा यती भंडारकी आमदनीसे नगर स भाओंकी मारफत रु० की सहायता दीजातीहै मुनशी कालीप्रसाद जी साहब के परोपकार भंडार से काय

स्थ पाठशालाके ट्रस्टी ४१ विद्यार्थी योंको माहवारी तनखा देकर काय स्थ पाठशाला और २ मदरसोंमें प ढाते हैं उक्त मुंशीजी के उसी भंडार में से १९ बिधवावों की परवारिशकी जातीहै और ११७ गरीब लडकोंको पुस्तक और पढाई की सहायतादी जातीहै गरीबलडकियोंके बिवाहमें भी सहायता दीजातीहै मुंशीजीके भंडारमें से इन परोपकारी कार्योंमें ४०००) रु० सालालियाना खर्च होता है।

कितनेही परोपकारी और उदार पुरुषोंने जातिकेसुधारकी पुस्तकें अप नेरूपयेसे छपाकर मुफ्तबांटीहै स्वर्ग बासी राय कन्हैयालालजी साहिब बहादर एक्सीक्यूटिव इनजीनियर लाहौर वालों की पुत्रीने एक मका न कीमत रु० ५०००) का काय स्थ बोरडिंग हाऊस विद्यार्थियोंके रहने पढने और रसोई का मकान के वास्ते देदीयाहै और इसी प्रका र बाबूदेवनाथ सहाय जी ने एक जिमीन रु० ७०००) की कीमत बांकेपुर बोरडिंग हाऊस के वास्ते दीनीहै बाबूराजेस्वरी प्रसादसिंह तालुकेदार सुरजपुरने रु० ६००) सालियाना की आमदनीकी जाय दादबिहारकी देशसभा के सुपुर्द कर दी है और राजा मुरली मनोहर बहादर आसफजाह हैदराबाद द खन ने जो बडे उदार और परोप कारी पुरुष हैं एक जातिके सुधार का भंडार नियत कियाहै जिसमें उन्होंने सबसे पहले १०००)जमा कियाहै॥

(३) चित्रगुप्तबंश कायस्थोंकी एक डाइरेकटरी (एकपुस्ततक जि समें कुल लोंगों के नाम निवास पेशा आदि लिखा हो) बनाने का बंदोबस्त करना॥

इसकाभी प्रबंध होरहाहै और बाजी २ नगर सभाओंने अपने २ इलाके की डाइरेकटरी बना ली

नी है ॥

तीसरी कानफरेंस तारीख ५ और ६ नवबर सं १८८९को बांकेपुर में हुई यहां १६९८ प्रतिनिधि आये उनके आदर सत्कार आदि खर्चके वास्ते बिहार के प्रधान पुरूषोंने १२०००) रू० आपसमें मिलकर जमा कियाथा महाराज दरभंगाने अपने छज्जूबाग की कोठी प्रतिनिधियोंके रहनेको दीनी और डुमरांव के महाराज ने अपना दरबार का बडा डेरा सभा के बैठनें को दिया ॥

इस सभा में मुख्य २ काम यह हुए।

(१) व्याह आदि बिरादरी की जीमनवारों में शरावका पीना मना कियागया ॥

(२) दूसरे स्त्रियों को पढाने की कोशिस की जावे ॥

(३) और कानफरेंसकी सभा के साथ दस्तकारी की चीजों का मीनाबाजार लगाया जावे और कायस्थ विद्यार्थियों के पढने को हुनर के मदरसे स्थापित हों और उनको इनाम और स्कालरशिप दिये जावें ॥

(४) कायस्थों में आपसके सब मुकदमें पंचायती से फैसल करादियो जावे ॥

इसी सभा में कायस्थ जातीय भंडार की नीम लगाई गई और उसके वास्ते सभाके डेरेमें रुपया उघाया गया ॥

बाहरकी शहरों की सभा की आमदनी खर्च के हिसाबभी दिखलायेगये थे ॥

चौथी कानफरेंस २ अकटूबर सं १८९० को लाहौर में हुइ। जिमें बहुत २ लाभदायक कार्य हुए देशीसभा सदरसभा और सालियाना कान्फरेंस के कायदे पंचायती से मुकदमें झगडे वगैरह के फैसला करने के कायदे। बा

दानुवाद करके तयार किये गये

पांचवी कानफरेंस सं १८९१ के वडे दिनोंकी छुटीयों में बरेली में हुई १७२६ प्रतिनिध आयेथे। उनके सत्कारके लिये वडे अच्छे२ बन्दोवस्त किये गयेथे ॥ समाचार दफतर जहां से सवतरह के समाचार मिलसक्ते थे। स्टेशन और कान्फरेंसके दरवाजेपर लेनेको सभासद खडे रहतेथे। रसोई और रसोई का सव सामान एकजगह था। एकजगह कमरे के आरास्ता करनेका सामान और प्रतिनिधियों को डेरा बिस्तर वगेरह देने का समान एकत्र था। सफाई का वंदोवस्त और अस्पताल पुलिस का थाना रोशनीघर और छापाखाना कि जिसमें कान्फरेंस की दिनभर की काररवाई छापकर सबको तकसीम करदी जातीथी इत्यादि सर्व सामग्री सुखचैन की मौजूद कीगई थी ॥

इस सभामे यह मुख्य ठहराव हुये कि द्विजधर्माचरण के सिवाय और कोई धर्म संबंधी और राज संबंधी बातचीत कान्फरेंस और और सभाओंमें कुछ नही होने पावे विवाहादि कार्यों में फिजूल खर्च घटाये जावें खर्च आमदनीके हिसाब से होवे पुत्रके व्याहमें छ महीने की और पुत्री के व्याहमें एकवर्ष की आमदनी से ज्यादा खर्च नहोवे और अव्वल दर्जे की शादी में रु १०००) दूसरे की में ५००) और तीसरे की में २५०) से ज्यादह कोई खर्च नही करने पावे। इन कार्योंको करनेमें पहले धनवान और प्रधान वडेपुरुष अगुआ बने। हरेक सभा कायस्थ पाठशाला प्रयाग की उन्नति मे अपना उधोग करे और एकमुश्त रुपीया १००) अथवा रु १२) सालियाने पर पाठशाला में देने वाले सभासद जितने ज्यादह हों भरती करे वे

जातीय अखबारोंको सब सभा रुपये और खबरों से मदददे।

अछे विद्यार्थियों को चांदी के तगमें (मेडिल) पहनाये गये और मुंशी बलदेव प्रासादजी कान्फरेंस के सिकत्तर और मुंशी संकटाप्रसाद को सभापति ने कीमती खिलत सरोपा पहनाये। इससभा के खर्च के लिये ५१००) जमा हुयेथे॥

अब छठी कान्फरेंस का जलसा यहां अजमेर में तारी २८ २९-३० दिसंबर हाल में होने वाला है और यहांके कायस्थ भाई अपने दिलोजानसे बडी २ कोशिसे कररहे हैं मुंशी गोपी नाथ जी साहिब सिकत्तर हैं और उनकी योग्यता से पूरा भरोसा है कि कानफरेंस का कार्य बडे आनन्द से निर्बिघ्न होजावेगा। हम भी इन सब भाइयों को कि जिन्होंने अपनी जाति में से मद्य मांसका खाना पीना बन्द किया और अपने सनातन अहिंसा रुपी द्विजधर्म को अगीकार करते और हीनाचार छोडते जाते हैं आशीर्वाद देतेहैं और अपने जैनी भाइयों से प्रार्थना करते हैं कि जाति और धर्माचरण के सुधारके तरीके इन से सीखकर अपनी जाति और धर्माचरण की उन्नति करे और सद्विद्या आदि गुणों को अपने जातियें फैलाने की कोशिस करें॥

मथरा का मेला।

इससाल मथरा के मेले में हाथरस, आगरा, खुरजा, कामा-कठूमर, जारखी, जिरानी, राजा-खेडा, के रथ आयेथे और उनके न्यारे २ मन्दिर बने हुये थे जिन की शोभा देखने से परमानन्द होता था, प्रभावना विशेष थी, बाहरी शोभा खुरजे के मंदिरमें ज्यादा थी, प्रतिदिन रथ जात्रा गीत नृत्य बाजित्र आदि सहित होतीथी

बडे पश्चातापकी बात है कि अज्ञान और मिथ्यात्व ने जैनियोंपर एसा असर कर रखा है कि धर्म कार्यों में भी अपने मान पुष्टकरने को अनेक तरह की उपाधियां लाते हैं दो शहरों के भाइयों में ऐसी ईर्षा हुई कि एक जगह के कहते थे हमारा रथ और हमारे भगवान की सवारी पहले निकलेगी, हे भद्र पुरूषो विचारकरो कि जैनधर्म में तो सर्व जिन मंदिर सर्व बिंब आदि सर्व सामिग्री आपकी की ही है इस में मेरा तेरा करके आपस में ईर्षा भाव पैदा करना लडाई और फूटकी नींव डालना यह अज्ञान का महात्म नहींहै तो क्याहै। बेशक आप धर्म प्रभावना का नाम लेकर वहुत कुछ रूपया खर्च करते और तकलीफ उठाते हो परंतु सच्चेधर्म का स्वरूप न जानकर पापही कमातेहो जो एक जिन मंदिररथबिंबको अच्छा समझता है और दूसरे की अवज्ञा तिरस्कार अनादर करताहै वह जैनी नहींहै किंतु महामिथ्याती नर्क का पात्रहै एसा जानकर सर्व जैनी भाइयों को उचित है कि सर्व जिन मंदिर जिन बिंब शास्त्र आदि सर्व धर्म के अंगो की बराबर भक्ति करे और मेरा तेरा करके पाप बंध नहीं करै॥

यहां पर प्रसंग पायकर यह हितोपदेश रूप वर्णन किया गया है कोई भाई इस को पढकर बुरा न माने आगे मेले का वर्णन लिखेंहैं। कार्तिक बदी ७ की रात्रि का एक सभा हुइ सेठ लक्ष्मणदास जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया सभापति की आज्ञा से पंडित छेदालाल जी ने व्याख्यान दिया कि जैनधर्म की उन्नति का उपाय ढूढना चाहिये और चार उपाय बताये प्रथम एक्यता होना, द्वितिय शुद्ध आचरण, तृ

तिय राज चतुर्थ सेवा जैनियों की सख्या करना इन सब का न्यारा न्यारा बिस्तार साहित बर्णन किया उस में श्रावकाचार पढने पढाने और प्रासुक औषध के बांटने पर तथा मेला कराने पर ज्यादह जोर दिया मुंशी छगन लाल जी ने डाईरेकटरी बनाने के बिषय में कहा बाबू रतन चन्द जी वकील हाईकोर्ट ने कहा कि हम जैनी बहुत कम हैं इस कारण सब से पहले इत्फाक की निहायत जरूरत है सो भाइयो उपाय किये बिना कुछ नहीं होसकता सो उपाय हमदर्दी है दूसरे सुद्ध आचरण का शीघ्रही उपाय होना चाहिये दूसरे दिन भी सभा हुई इनी चारों विषयों पर बात चीत हुई सेठ लक्ष्मण दासजी और सेठमूलचंद जी अजमेर वालों ने भी व्याख्या न दिये। व्याख्यानों में बहुत कुछ कहा गया मगर सब बातों काही ढेर था बातें करके अपनें २ डेरे गये जाति और धर्म की उन्नति का कोई प्रबन्ध नही हुआ और अगर कुछ हुआ होगा तो हमारे जानने में नही आया सभा केसेक्रटरी कृपा कर लिखे तो सर्व भाईयों को बिदित किया जावगा।

मेले का बन्दोबस्त मुनीम रतन लाल जी के सुपर्द था और उनकी बुद्धमानी से कुल काररवाई निहायत उमदा हुई सब जात्रियों को डेरा तम्बू वगैरः का आरामथा और पुलिस और सफाई का वदोबस्त अच्छा था खातिर दारी बहुत अच्छी की गई थी अगर इसी प्रकारमेला होता रहेगा तो उमेद होती हैं कि शायद जैनियों को कुछ लाभ होवे ॥

श्री जिन बिंब प्रतिष्ठा खुरई बुंदेलखड। वहां पर माह सुदी १३ की चारप्रतिष्टा हैं ॥

१ सेठ नदलालजी मथरादास जी मोहनलाल जी ।

२ स्वाईसिहजी मोहनलालजी

३ गुरहा कालूराम जी

४ सराफ जादरायजी लक्ष्मी चंदजी ।

इन भाइयों का प्रतिष्ठा कराने में बडा उत्साह है यह प्रतिष्ठा देखने योग्य है इस की सम्पूरण शोभा वही जाने गे जो उत्सब के शामिल होंगे और रायबहादर सेठ मूलचद जी और पंडित झरधर लालजी पन्नालालजी शांतीलाल जी लाला लक्ष्मीचंदजी इत्यादि और अनेक विद्वानों के एकत्र होने की आशा है खुरई खास में स्टेशन है मगसिरि सुदि ५के दिन श्री वेदी जी का महूर्त था ॥

तिजारा राज्य अलवरमें माह सुदी १० शुक्रवार से माह सुदी १४ तक श्री रथयात्रा का उत्सव होगा जो भाइ देखना चाहे पधार कर पुन्य के भडार भरे ।

मुरादबाद से हमारे मित्र पन्ना लाल जी लिखते है कि हमारे पास शास्त्र जी की लिखाई के लिये चार पांच लेखकों की जरुरत है सो जो कोई जैनी भाई शुद्ध स्पष्ट अक्षर लिखने जानता हो और यहांआकर लिखाई करना मंजूर होतो हमारे पास पत्र व्यवहार करे हम बुलवा लेंगे और जिन महशयों को जैनशास्त्र जी लिखाना हो हमको लिखें हम लिखा देवेंगे ।

पत्रव्यहार इस पते से करें ।

पन्नालाल बा० दि० जेन

मुरादाबाद।

आरा और शोलापुरमें बिंब प्रतिष्ठा का मेला माह में है ॥

प्रत्रके छपने में कई कारणोंसे देर हुई आशा है कि फागुन से ठीक मिती पर छप जाया करेगा॥

॥ श्री

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी मासिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा ने प्रकाश किया

नम्बर ९.१०.११.१२.

मिती फागुन सुदी १ संवत् १९४९ का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

सेठ कानमल मैनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा।

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पंहुचै प्रार्थनाहै कि वे इसको संपुर्ण पढकर अपने पुत्रमित्रोंको पढने के वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुत से श्रावग एकत्रहों पढ कर सुनादें ॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संबधी नई बार्ता पत्रमें छापनेको भेजें ॥ जोभाई पत्र लैना चाहै हमें पोस्टकार्ड भेजकर मंगालें ॥

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाहर वालोंसे मय डाक महसूल १) और एक पुस्तकका –) है ॥

१ यह पत्रहर महीने मैं छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जनकी उन्नति करना इसके उद्देशहैं ३ जिन धर्म्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल बार्ता मतमतांतरका झगडा इसमे नहीं छपैगा ॥

हम को निहायत ही रंज है कि पत्र के छपने के इतनी देर हुइ कई भाईयों ने बडी कडी २ चिठ्ठीयों भी ईसी सबब से भेजी मगर हम लाचार हैं छापा खाना हमारा घरू नहीं और जिस जगह हम छपाते थे वह किसी कारण से सुस्ती कर गया चैत का पत्र हमने एक नये छापेखाने में भेजा है वहां भी बदनसीबा से दो महीने हुआ वहां भी तैयार नहीं हुआ मगर हम कोशिस करते हैं और उमेद हैं कि आइंदे माहवारी जारी रहने को जरूर बंदोबस्त हो जायगा. बैसाख सुदी १४. १९५०.

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नं ९ १० ११ १२ } अजमेर फागुन सुदी १ संवत् १९४९ {अंक ३

॥ नदवेनी ॥

बीमारी आदि कितने ही कारणों से जैन प्रभाकर पत्र अपने समयानुसार छपकर आप सज्जनों की सेवा में नहीं पहुच सका इसका हमें बडा अफसोसहै लेकिन अब इसका प्रबंध अच्छा करालिया है और आशाहै कि हर महीने आप के पास पहुचता रहेगा ॥ हमारी यह भी पार्थना है कि जो उत्साही धर्मानुरागी भाई हमें सहायता देते रहें वे कृपाकर इसी प्रकार अब आगे भी सहायता देते रहे। वहुत से भाईयों ने इन तीनवर्ष के अन्दर न तो पत्र की निछावर भेजी और नकभी कोई चिट्ठी भेजी कि वे इस पत्र को मोललेना चाहते हैं या नहीं उनसे यह प्रार्थना है कि कृपाकरि या तो अपना रुपया भेजदे या चिट्ठी द्वारा अपना अभिप्रायसूचित करें ऐसा नहीं करने पर हम अफसोस कर कहतेहैं कि चैत्र सुदी १ से जैनप्रभाकर उनके पास नहीं भेजा जायगा इस लिये जिन साहबों को

जैनप्रभाकर पढना और अपने धर्म तथा जाति की उन्नति करना प्रिय है वे विलंब नही करें और तुरंत ही उचित कार्य करें ॥

॥ जैन चतुर विध दान ॥ ।शाला।

"पहिल्या एक वर्षाका हिसाब" की एक छोटी पुस्तक हमारे पास पहुंची उसका धन्यवाद देने के पश्चात हमविदित करतेहैं कि इस पुस्तक के पढने से हमें अत्यन्तहर्ष प्राप्त हुआ और निश्चय हुआ कि जो राजा चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्नो के फल में श्री भद्र बाहू जी महाराज ने आज्ञा करीथी कि आगे पंचम काल में दक्षिण देश में जैन धर्म रहेगा सो सत्य है इस समय में जैनधर्म दक्षिण में ही दिखाई देता है । शोलापुर निवासी श्रावक भाईयों ने जैन धर्मका प्रकट उद्योत करनेका शास्त्रानुसार चतुर्विधि दान शाला नियत की हैं जिन के खर्च के वास्ते रु० ४३५४१॥=)॥ जमा किया है जिसके व्याज में चार प्रकार का दान दिया जाता है इस साल ५०४१ मनुष्यों को अहार दान दिया जिनमें ९०७ जैनी भाई और बाकी अन्य जाति वाले थे कुल रु० ६८१=)॥ खर्च पढा ॥ औषध दान १४१४ मनुष्यो को दिया गयाहै जिसके खर्च दवाई वैद्यक नौकरों की तनखाह आदि सहित रु० ११५४॥)॥ पडे । अभय दान संबंध में एक पीजरा पोल दो वर्ष से नियत है उसके वास्ते ५००) म जमीन खरीदी गई और ३०) सालियाना इस भंडारमें से दियाजाताहै बाकीखर्च दूसरे जगहसे होताहै ज्ञानदानके वास्ते पाठ शाला भंडार दूसरा है

और इसभंडारमें से गरीब विद्या र्थियों को अहार वस्त्र तथा माह वारी तनखा देनेका प्रबन्धकिया गयाहै ॥

औषधालयमें चौसठ प्रकारकी बढिया दवाईयां शुद्धप्रासुक रसा दिक जैनशास्त्रानुसार इस समय तैयारहै और २ बनाये जाते हैं ॥

इसदानशालाके अध्यक्ष सेठ बालचंद्र श्री रामचंद्रजीऔर व्य वस्थापक सेठ सखाराम नेमचंद्र जी साहबहैं और साह अमीचंद लखचंद । दोसी जोतीचंद नेम चंद । गांधी नानचंद फतेचंद। शाह मोतीचंद खेमचंद । रावजी पानाचंद सभाके पंचहै । इन सर्व सरदारोंकी संमतिसे कार्यबाही हो तीहै ॥

हम उमेद करतेहैं कि इसप्रका र उपर लिखेहुये दानशालाके सं क्षेप समाचार पढनेसे हमारे स्व देशी धनवान भाईयों के हृदयमें भी कुछ धर्मप्रभावना परोपकार तथा प्रासुक दवाइयों के बांटनेसें शुद्ध आचरण स्थिररखनेका कुछ उछाह अवश्य पैदाहोगा और जो भाई किकेवल लंबीचौडी वातें ब नाकरही अपनेको कृतार्थ मानते हैं वे शोलापुर वाले भाईयो का उ द्योग देखकर पुषार्थ करनेमें चित्त लगावेंगे ॥

एकमायाचारी का दृष्टांत

हमको इससमय हमारे भाई यों की कारवाई देखनेसे एक क था जो बचपन में पढीथी यादआ ती है और उसके लिखनेको मन चाहताहै सो सर्वभाईयोंकी आज्ञासे लिखते हैं अगर किसी भाई को बुरामालूम होवे तो हमारा अपरा धक्षमा करे अगले जमानेमें किसी देश में एकबादशाह थे वे राजकाज में बडेकुशल और चतुरथे अपने सर्व दरबारियों को बातोंसे ही प्रसन्नरखते थे ॥

एकसमयकोई कवि एकअत्यन्त ललित और मनोहर रसीली काव्य उनकी स्तुतिमें बनाकर लाया और भरे दरबारमें पढकर सुनाई उसको सुनकर बादशाह सलामत बहुत खुशहुये और वजीरोंने यह मौका देखकर अर्ज की कि इस कविको कुछ इनाम देंना चाहिये जिसे आप की कीर्ति हो। यहसुनकर बादशाह सलामत बहुत देरतक सोच विचारने लगे और दरबारियों को आशा हुई कि अब जाहपनाह इस कवि को कोई बडाभारी इनाम अवश्य देंगे जिससे उस कविका जन्म दलिद्र दूरहोजायगा ॥

बहुतदेर सोचविचारनेके बाद बादशाह सलामत ने फरमाया कि हम को इस कवि ने अपनी कविता से बहुत खुशकिया और हम ने पांचलाख अशरफी इनाम दीनी यहसुनकरसंपूर्ण सभा धन्य है धन्यहै कहने लगी और वहकवि आनन्दके समुद्रमें मग्नहोगया पीछे दरबार बरखास्त होगया और सबलोग बादशाह सलामत की फैयाजी की तारीफ करते २ अपने २ घरगये ॥

आगे वह कवि दो तीन दिन पीछे खजानची के पास गया और कहा कि बादशाह सलामत ने मुझे पांचलाख अशरफी इनाम दीनी सो देवो खजानची बोला कि हुजूर का लिखाहुआ हुक्मनामा लाओ और अशरफियांलेजाओ कवि कहने लगा कि हमको हुजूरने भरे दरबार इनामदिया सबलोगजानते हैं और तुमभी जानते हो लिखे हुये हुक्म नामे की कुछ जरूरत नही तुमअशरफियां फौरन देदो खजांची ने कहा भाई तुमकविहो कवितबनाना जानते हो यहां खजानेमें रुपये काकामहै बिना लिखे हुए हुकमके रूपया नही दियाजाता तुम बादशाह सलामत से अ

न हुकमनामा लिखलाओ और अपनीअशरफियां ले जाओ यह सुनकर कवि खजांची पर बहुत लाल पीला होता हुआ तुरन्त बादशाह के पास चला और उमेदमें भराहुआ था कि बादशाह से फौरन हुकमनामा खजांची के ऊपर लिखाये लाता हू परन्तु अफसोस वहां जानेपर कुछ और ही लीला हुई सो सुनियें ॥

कविने हुजूरसेकहा की खजांची पांचलाख अशरफियां नहीं देता हुजूरका लिखा हुआ हुकमनामां चाहता है सो दे दीजियें ॥ बादशाह बोला पांचलाख अशरफिया कैसी हुजूरने उसरोज मुझे इनाम दीनीथी ॥किस कामके वास्ते ॥ मैने अपनी कविता से हजुरको खुशकि किया था ॥ हमनेभी अपनी कवितासे तुम्हें खुशकरादिया था कहो तुम इनाम का नाम सुनकर खुशहुये थे कि नही हां हुजूर बहुतखुशहुआ था ॥ बस तो तुमने अपनी कवितासे हमें खुश किया हमने इनाम की अपनी कविता से तुम्हें खुशकिया दोनो बराबर होगये ॥ देने का क्याकाम अपने घरजाओ ॥ यहसुन वह कवि अपने घरचला गया ॥

द्रीष्ठातलिखने की कोई आवश्यकता नही हरेक पुरुष समझ सकता है लेकिन अगर कोई न समझे तो साफ २ लिखे देतेहै हमारे यहांमेलों में सभायें होतीहै जातिकी अवनति देखकर उन्नति करने को व्याख्यान देतेहैं धनीलोग सुनकर खुश होतेहैं तब पंडित लोकों को खुश करनेको चिट्ठा लिखाजाता है उसमें कहा जाता है अमुक लाला साहिबने पांच हजार रुपया दीया अमुक सेठजी ने दो हजार रुपया दिया अमुक मुन्शी साहबने हजार रुपया दिया अमुक वकील साहब ने ढाईसौ रुपया यहसुनकर

सभा धन्य२ करती है और चिट्ठा लिखाजाता है सब अपने २ घर चले जातेहैं । जब चिट्ठोंकी उघाई का वक्तआताहै तो वही बात तुम व्याख्यान देकर हमें खुश किया हमने चिट्ठा लिख कर तुम्हें खुश किया दोनो बराबर होगये लेनेदे ने का क्या काम है अपने २ घर खुश रहो ॥

भाईयो विचार करने की जग ह है कि फीरोजाबाद में जब पंडि त पन्नालालजी और छेदालालजी ने शास्त्रार्थ में विजय पाई तो उस समय आनन्दमें मग्न होकर जैन धर्म संबंधी विद्यावृद्ध करनेको पा ठशाला के वास्ते कितने भाई चि ट्ठा लिखगये थे औरकिनने अपना रुपया जमा कराया है जिन्होने नही जमाकराया उसका क्या सबब है ।

इसीप्रकार धामपुर के मेले में चिट्ठा हुआ वहभीवसूल नहीं हो-ताहै ॥ जो साहबान कि नयेनगर के मेलेमें रुपया देने का वायदा करगयेथे उन्होंने भी आज तक रुपया नही भेजाहै ॥ हे विद्वज्जन हो जितना रुपया चिट्ठोमें लिखा हुआहै अगरवह सब जमा होतो कहो उससे अब तक विद्याकी कि तनी उन्नति हुई होती और कैसी धर्म की प्रभाना होती. लेकिन जो वक्त गयासो गया उसका कुछ सोच मतकरो आगेका प्रबंध करो अबआगे कातिक के महीने मथरा में मेलाहोगा और बहुतसे भाई वहांजायगे हमारी समझ में तो यहबात अच्छी मालूम होतीहै कि जिन२ भाईयोंने सरल परिणा मोंसे चिट्ठा लिखाहो (और यकी नतो यहांहै कि सबनेही सरल प्र णामोसे लिखा होगा कुटिल और मायाचार से जैसाकि ऊपरकी क थामें उस बादशाहने मायाचार से इनाम देनाकहा वैसे किसी भाईने

चंदानही लिखाहोगा) वे अपना २ रुपया नकद अपने साथ लेते जावे और मेलेमे सभाकरके सब रुपया जमाकरकें प्रधान पुरषोके सुपर्द करै तथा धर्म्मोंन्नती में लगानेका प्रबंध करै ॥

दोयम जिन भाईयोंने पहले चंदा लिखदियाथा और अब किसी कारण देनेमें असमर्थहै वे सभामे अपनी असमर्थता वर्णन करके क्षमा मागलेवे इस प्रकार समर्थ और असमर्थ दोनोही अपने २ रिणसै उत्तीर्ण होसक्तेहै और किसीके ऊपर नादिहंदीका कलंक नही रह सक्ताहै अतएव जो भाई रिणसे उत्तीर्ण होनाचाहै वे इससाल मेलेमे अवश्य कुछ प्रबंध करै नकरने से यही मालुमहोगा कि उनके परिणाम सरल नहि है और आइंदा को प्रबंध होजाना चाहये कि चिट्ठेन ही लिखे जावें जिसकिसी भाई को धर्म वा परोपकारर्थ कुछदेनाहो वे नकद देवे या अगर उसवक्त रोकड पास नही होवेतो हुडी या सराफी सिरस्ताई चिट्ठी अपनी कोठी वा दूकानपर लिखदे जो साहुकारी दस्तुर माफिक सिकराई जावे ॥

मंदिर प्रतिष्ठा प्रतावगढ.

परतावगढ में तीन नवीन जिन मंदिर बनकर तैयार हूयथे जिनकी प्रतिष्ठा मिती मंगसिर बुदी १३ से मगसिर सुदी १० तक हुई ॥

इस महोत्सव में जैनीभाई करीब ५००० एकत्र हुएथे ॥ मंडल और पूजन तीनलोक के अकीर्तिम जिन चैत्यालयो का बिधान सहित हुआ ॥

श्रीमान महाराजा धिराज प्रतावगढाधीश आप मेले और पूजन में पधारे थे ॥ राजा की तरफ से सर्व प्रकार का इन्तजाम बहुत

अच्छा था॥ इस मेले में ५ सभा हुई प्रथम सभामें पंडित बाबूलाल जी जैनी ब्राह्मण रतलाम निवासी नें प्रतिमा स्थापन और तीर्थयात्रा आदि के विषयमें अत्युतम व्याख्यान और जो आधुनक लोग प्रतिमा पूजन का निषेध करते हैं उनकी कुतर्कों का बुक्तागम से निराकर्ण किया जिसके सुनने से सर्व सभासदों को अति हर्ष प्राप्त हुआ और जिन प्रतिमा पूजन विखे परमश्रद्धा रुचि बढती भई॥ दूसरी और तीसरी सभाओ में भाई बालाबकसजी पाटण निवासी और भाई हुकमचंद्रजी इन्दोर निवासी ने विद्या अध्यन के विषय में वर्णन किये और जैन शास्त्रों के पढने पढाने के लाभ प्रगट कर दिखाये ॥ जैन शास्त्रों के न पढने से जो अज्ञान और हीनाचार कुदेवों की सेवा जैनीयों में प्रचलित हो गई है उन सब को बतलाकर उनके त्याग करने का और शास्त्रजी के स्वाध्याय करने का नियमं गृहण करने का उपदेश दिया.

चौथी सभा में भाई किस्तूरचंद जी वाकलीवाल मन्दसोर निवासी ने रत्नत्रय के विषय में और पांचवीं सभा में भाई किसनलालजी ने पंच पाप के त्याग के अति ललित और मनोहर व्याख्यान दिये जिन के सुनने से जो आनन्द हुआ सो वचन के अगोचर है ॥ रत्नत्रय के स्वरूप का प्रतिपादन करने से भाई साहिबने धर्म्म का बडा उद्योत किया जिसके सुनने से बहुत से सभासदों ने संसार परिभ्रमण से भयभीत होकर मिथ्यात्व हिंसादिपापो का त्याग कर मोक्षमार्ग अंगीकार किया ॥ मेलों के बीच सभाओं में एसेही व्याख्यान होने चाहिये जिन से मिथ्यात्व का अभाव और सम्यक दर्शन का

लाभ सर्व भाईयों को होवे और पंच पापों के त्याग आदि से जिन धर्म की निर्मलता और शुद्धता सर्व स्वमती तथा पर मती जान कर जैन धर्म से रुचि करें ॥

देवल्या प्रतावगढ से तीन कोस पर एक प्राचीन जीर्ण जिन मंदिर है वहां सहश्र कूट चैत्यालय अति मनोज्ञ है सो वहां पर मंदिरजी की मरम्मती वगैरह होकर कलश स्थापन और धुजारोपण बड़े उच्छव से हुआ मेला पांच दिन तक रहा जात्री अनुमान दो हजार के थे स्वंयं श्रीमान प्रतावगढाधीश वहां पधारे और रु. २) श्री जी की भेंट किये बड़ा आनंद हुआ ॥ ईस मंदिरजी के भंडार में भाई किस्तुरचंद जी राठी ने रु. ५०१) भेंट कीये ॥

डिगंवर जैन सभा बंम्बई.

इस समय में धर्म विद्या और उत्तमाचर्ण की अवनति होती हुई देखकर बम्बई शहर निवासी सर्व दिगंवर जैनी भाईयों ने मिल कर एक सभानियत करने का बिचार किया और मिती मगसिर सुदी १४ के दिन सभा भेली करी उस समय प्रबंध कर्त्ता ने सर्व भाईयों से इस प्रकार निवेदन किया.

हे विद्वज्ज नहोंः— इस समय में महाराणी एमप्रेस क्वीन विक्टोरिया के निष्कंटक राज्य शासन में हरेक पुरुष अपने २ धर्म को बे रोकटोक साधने का और अपनी विद्या बुद्धीबल से धनउपार्ज न करने और भोगने का बड़ा अच्छा समय मिला है और भारतवर्ष के सर्व मताव लंबी अपनी २ जाति और धर्म्म की उन्नाति करने में तत्पर हो रहे हैं और यथा जोग्य फल को भी प्राप्ति हो रहे हैं परन्तु बड़े शोक का स्थान है कि जैन लोग अभी तक एसी प्रभाद निद्राके वशीभूत हो रहे हैं कि जिनके धर्म रूपी रन्तों को मिथ्यात्व और अज्ञान

रूपी चोर लूटे लियेजाते हैं और इन को अपनी कुछ खबर नहीं मूर्ख रंक और निर्धन होने पर भी सचेत नहीं होते हैं ॥ यद्यपि कितने ही जाति हितेच्छु भाई पुकार २ कर इन को जगाते हैं तथापि अपनी मूर्खता रूपी नींद को छोड अपनी निज व्यवस्था का विचार नहीं करते हैं दिन पर दिन अज्ञान की खुमरी बढती ही चली जाती है और हीनाचार और दरिद्र फैलते जाते हैं तथापि उद्यम नहीं करते हैं ॥ जब तक पुरुषार्थ नहीं करैंगे धन की राक्ष होना असंभव है ॥ आप सर्व सज्जन अच्छी तरह से जानते हैं कि अन्धकार के नाश करने के वास्ते उस का विरोधी प्रकाश ही उपाशन किया जाता है कि इस द्रीष्ठान्त से यह सिद्ध होता है कि अज्ञान के नाश करने का मुख्य उपाय ज्ञान है ॥ ज्ञान विधा अभ्यास किये बिना अत्यन्त असम्भव है ॥

विद्या के गुण और लाभों का वर्णन करने अवकाश नहीं और आप सर्व सज्जन उन को भले प्रकार जानते है विद्या की महीमा और बडाई को मैं इतना ही कह कर आप सर्व सज्जनों का ध्यान खीचता हू देखो विद्या के गुण और रसके रशिक अंगरेज बहादुर हैं जो कि इतने बडे राज कार्य्यों की चिन्ता होने पर भी विद्या की आधार भूमि मदरसे कालेज और यूनीवरसिटीयों को सदाकाल याद रखते हैं आप अच्छी तरह जानते हैं कि यहां के लार्ड साहिब कमांडर इनचीफ हाईकोर्ट के बडे जज प्रमुख बडे २ अहलकार और जज उनकी बीबीयां मदरसों में जातीं और इनाम बांटती विद्यीर्यो की रुचि बढाने को बडे २ लेकचर देतीं हैं और हजारों रुपये विद्या वृद्धि में दान करते हैं ॥ आप को वृद्धि

मालुम है कि इस शहर के प्रसिद्ध स्वर्गबासी सर मंगलदास नाथूभाई बृदि वृद्धि करने में कितने ही लाख रुपये दे गये तथा और भी पारसी सेठ अनेक हैं जिन सब के नाम वताऊं तो बहुत समय लगेगा परतु मेरा अभिप्राय इतना ही है कि ये लोग विद्या के गुण ग्राहक है और विद्या वृद्धि करने में बडे बडे प्रयत्न करते हैं लाखों रुपये अपने खर्च करते हैं इसी कारण उनके जाति कुल में विद्या वृद्धि हो रही है और उन की जाति के लोग विद्या के फल को प्राप्ति हो कर बडे २ सरकारी ओहदों तथा बडे २ व्यापारी से धन उपार्जन कर लौकिक सुख की प्राप्ति हो रहे हैं और विद्याही के कारण अपने २ धर्मानुसार ज्ञान वैराग्य को स्वीकार कर परलोक सम्बन्धी सुख का उपाय करते जाते हैं ॥

अब जरा अपने लोगों की तरफ दृष्ट पसार कर देखिये कि अव्वल तो ऐसे प्रधान पुरुष जो राज्यमान तथा धनवान एश्वर्यवान हों बहुत थोडे हैं और जो कुछ हैं भी सो अपनी जाति मे विद्या और धर्म की उन्नाति करने का कुछ भी उपाय नहीं करते ॥ अगर उनसे कहा जाता है कि आप कृपा कर यहां कि जैन पाठशाला चल कर देखिये और विद्यार्थीयों ने जो कुछ पढाहो सो सुन कर उन का उछात बढाई तो वे येही कह देते हैं कि हमको फुरसत नहीं हां साहिब धर्म्म और परोपकारी कार्य्यों को फुरसत नहीं मिलतीहै परन्तु मुन्यीसीपेल कमेटी के मेंम्बर हो कर शहर सफाइ के वास्ते गलीयों के गंधे जल के होद और जाजरूओं के देखन की जरूर फुरसत मिल जाती है ॥ हे सजनों हमारे यहां गाडरी प्रवाह की चाल है जो प्रधान पुरुष को काम करते देखत हैं तो उन के पीछे छोटे

लोग भी वैसा करने लगते हैं ॥ इसी रीती से जब कि हमारे जैनी प्रधान धनवान एश्वर्यवान भाई विद्यावृद्धि कर धर्म प्रभावना में चित्त नहीं लगाते और न अपने संतान को धर्म शास्त्र पढाते और तो छोटे भाईयों की इसी कारण हमारे जैनधर्म और जैन जाति की अवनति होरही है और यदि उपाय नही किया जायगा तो आगे अधिक अवनित होने की आशा है ॥

मुझ को आज बडाही आनंद प्राप्ति हुआ है कि आप सर्व सभ्य-जनो ने अपनी जाति और धर्म को अवनति देख कर उनके उन्नति करने को चित्त लगाया और यह सभास्थित करने का विचार किया है ॥ बंबई भारतवर्ष का प्रधान नगर है और यहां पर सब प्रकार की सभाऐं मोजूद हैं एक दिगंबर जैनसभा नहीं थी सो अब अवस्थि-यत हो जायगी सभा का होना अत्यन्त आवशयक कार्य है क्योंकि राजधानी में जो काम होवे हैं उन्हीं का और २ छोटे शहर वाले अनुकर्ण करते है सो यदी आप सर्व बंबई राजधानी निवासी भाई कटिबद्ध होकर विद्या ज्ञान और धर्म की वृद्धि उपाय निरंतर करते रहेंगे तो और शहरों के श्रावक भाई भी आप की देखा देखी प्रभावना में तत्पर होंगे और यदि आप थोडे दिन सभा करके सिथल हो जाओगे और उधम नहीं करोगे तो अत्यंत लज्जा और हास्य के स्थान को प्राप्ति होओगे और अपने इष्ट को सिद्ध नहीं कर सकोगे इस लिये मेरी यही प्रार्थना है कि जिस उत्साह से प्रारंभ करने हो वैसाही उत्साह हमेशा रखते रहोगे इस सभा को मुख्य उद्देश जैन धर्म की और जैनजाति की उन्नति करना होगा. सो उन्नति विद्या की उन्नति से होगी.

पहलेइसकोपढ़िये

विदित होकि भारत वर्ष के कुल विद्यावानों ने निश्चय कर लिया है कि अखबारों का प्रचार करना जाति धर्म की तरक्की करने का मुख्य उपाय है। सो देखनेमेंभी आताहै कि अंग्रेज, ईसाई, दयानंदी, कायस्थआदि जातियों की तरक्की फकत अखबारों के निकालने ही से हुई है। और दिनों दिन होती जाती है। मगर हमारे जैनी भाई अब तक इस लाभ से खबरदार नहीं हैं। मगर कोई २ उद्यमी महापुरुष तन मन धन से अखबारों के जारी करनेमें उद्योग कर रहे हैं। सो हमनें भी उत्तम कार्य समझकर "जैनहितैषी" (मासिकपत्र) निकालना शुरू किया है। बहुतसे विद्वानों की तो यही रायथी कि मातभाषा में (हिन्दी) ही निकालना चाहिये। मगर हमारे बहुतसे जैनी भाई मात्र भाषा के लाभ को न समझते हुए उर्दू फारसी ही के विद्वान होगये हैं। उनके हितार्थ हमनें उर्दू और हिन्दी दोनों में यह पत्र निकालना प्रारंभ किया है। प्रत्येक पृष्ठमें एक कालम हिन्दीऔर दूसरा कालम फारसी का छपा करेगा।

इसमें जिनमत विरुद्ध, राजनैतिक खबर, तथा मत मतांतर का झगड़ा नहीं छपा करेगा। केवल जैनियोंमें विद्या, धन, धर्म, राज्यमान्यता के बढ़ानें वाले उत्तमोत्तम लेख छपा करेंगे। और यह पत्र जैनविद्यालय भंडारके उन्नति का रक उपायों को यथा शक्ति अन्वेषण करता रहेगा।

वार्षिकमूल्य अग्रिम डांक व्यय सहित सर्व साधारण से ३) रूपया। विद्यार्थियों से ॥) धनवालों से ५) रू॰ लिये जायेंगे। आध आनेका टिकट आने से नमूना भेज दिया जायगा।

सर्व जैनी भाइयों का शुभचिंतक
पन्नालाल बा॰ दि॰ जैन।
मैनेजर "जैनहितैषी"

मुरादाबाद

सो यह सभा विद्या की उन्नति के वास्ते एक जैन विद्यालय नियत करने का प्रयत्न करेगी और अपने मनोर्थ सिद्ध क लिये व्याख्यान आदि करती रहेगी.

दोयम सर्व जेनीयों की इक्यता करने को सभा नियत करना तथा एक बडी महासभा स्थापन करना आदि कार्य करेगी. इस प्रकार वर्णन सुनकर सभासदों को बडा आनंद हुआ और सभा ओरकार्य्याध्यक्ष नियत किये.

१. सभापति सेठ हरमुख राय अमोलकचंद खुरजानवाले.

२. उपसभापति सेठ हीराचंदजी नेमीचंदजी हूमड सोलापुरवाले.

३. मंत्री. सेठ माणकचंदजी पानाचंदजी हूमडजोहरी सूरतवाले

४. उपमंत्री लाला गोपालदासजी वरैया जोहरी आगरवाले.

५. कोषाध्यक्ष सेठ गुरमुखरायजी सुखानंद फतेपुरवाले.

६. संपादक लाला भूरामलजी लुहाडा दिल्लीवाले.

७. पुस्तकाध्यक्ष लाला श्री मंदिर दासजी जोहरी सुनपतवाले.

सभा की नियमावली जिस किसी भाई को चाहिये मंत्री के पास पोस्ट कार्ड भेज कर मंगालेवे ठिकाना दूसरा भोइवाडा जैन मंदिर बंबई.

भाई धन्ना लालजी पाटनी ने केकडी से लिखा है कि अमृत संजीवनी औषाधालय केकडी में सेठ जुहारमलजी गंभीरमलजी बंबई वाला की मारफत स्यामलाल जी गोधा दिल्ली वाला के पौस बदी ३ सं १९४९ को रु.६०) साठ कलदार आये हमारी सभा ऐसे साहसी वीरदानी पुरुषों को कोट धन्यवाद देती है कि जिन्हों ने एक साथ अति साहस के साथ साठ रुपये दिये इस तरह संपूर्ण जैनी भाई प्रासुक दवाइयां

बांटन में सहायता देवें तो उत्तमा चरण की कैसी रक्षा और धर्म की कैसी प्रभावना होवे औषधालय और विद्यालय तथा अनाथालय के जारी करने में सर्व भाईयों को अवश्य प्रयत्न करना उचित है.

गांव हमीरपुर परगना टोडा राज जयपुर में फागुन सुदी ३ से सुदी १० तक उच्छ बडाभारी होगा

अमृत संजीवनी औषधालय का काम वहुत उन्नति के साथ चल रहा है.

मुरादाबाद की जैनसभा के सभासदो ने जैन विद्यालय भंडार के वास्ते गोलक रखी और कुछ थोडा २ पैसा दो पैसा डालते रहे सो उस की जमा के रु.१२) जैन विद्यालय भंडार मे आन पहुचे हैं कहनावत है फुंयां फुंयां कर तलाब भरता है पांच स्पात की लकडी एक जने का बोझ अगर इसी प्रकार और २ स्थनो के भाई भी कुछ उद्योग करे तो परोपकारी कार्य्यों में बहुत कुछ रुपया जल्द जमा हो सका है मगर अफसोस है हमारे भाई थोथी नामवरी के वास्ते मुरदे की जेवनार व्याह में आतिश बाजी या रंडी के नाच में हजारों रुपया खर्च करते हैं परन्तु विद्या की उन्नति और धर्म की प्रभावना में मंद उद्यमी है.

जैन हितैषी. इस नाम का मासिक पत्र पहुचा इस को जैन विद्या वर्द्धनी सभा मुरादाबा की आज्ञा से लाला पन्नालालजी वाकली वालने प्रकाशित किया है सालियाना कीमत पेशगी १) और पीछे भेजनेवालों से १॥) है लिखाई लिथो की अच्छा है जैसा नाम वैसा गुण है सर्व जैनी भाईयों सभा का उत्साह वढाने को पत्र का मोल लेना चाहिये ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासम्बन्धी मासिकपत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाइयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया

नम्बर १

मिती चैत सुदी १५ संवत १९५० का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया।

॥ राजपुताना प्रिंटिंग प्रेस कम्पनी लिमिटेड–अजमेर ॥

सन् १८९३ ई०

चिट्ठी—

प्रियवर लाला छोगालालजी जै जिनेन्द्र ॥ लालमनजी का भेजा हुआ आसकरनधन्नालालजी वाला पुस्तक जैनग्रन्थ छापने बाबत मैंने फिर दुबारा पढा और मेरी समझ में देशकालज्ञ राय का कहना सब वितंडावाद इष्ट प्रयोजन रहित मालूम होता है. धर्म-शास्त्र और पूर्वाचार्य्यों की आम्नाय के अविरुद्ध जो देशकाल की योग्यता से अपना लौकिक कार्य करलेना सो देशकालज्ञता है धर्माचरण में देशकाल की योग्यता नहीं चलती वह सर्वदेश और सर्वकाल में एक सा है ॥ जैसा जैनधर्म को अनेक देश और अनेक जाति के लोग पालते हैं वे विवाह की रीति अपने जाति कुल देश की रीति से अनेक प्रकार करलेते हैं परन्तु धर्म शास्त्र की आज्ञानुसार स्वदार संतोष और पतिव्रत में दृढता सब देश और सब जातियों में एक सी है ॥ देशकाल देखकर परस्त्री गमन या विधवा विवाह कोई नहीं करैगा अगर करैगा तो जैन धर्म से पतित होगा ॥ क्या देशकालज्ञ रायजी बंगाल में जाकर मछली खाना स्वीकार करैंगे या दुरभिक्ष के समय मांस भक्षणकर अपना प्राण बचावेंगे ॥

जैनधर्म में देव गुरु शास्त्र का विनय बराबर कहा है सो सर्वदेश और सर्व काल के वास्ते एक सा है ॥ छपे हुये बहुत से पुस्तकों के होने से बिनय कदाचित नहीं बनैगा ॥ तथा जो छपे हुये को मोल लेगा वह उस को अपना माल समझ जिसतिस के हाथ बेचदेगा रुपया वसूल करने में कुछ विनय अविनय का खयाल नहीं करैगा ॥ फिर यह भी निश्चय नहीं है कि बहुत से पुस्तक होने से ही ज्ञान बढैगा. अब भी सैकडों पुस्तक मंदिरों में भंडार में मौजूद हैं मुफ्त पढने को दिये जाते हैं तब भी जैनी नहीं पढते तब मोल लेकर कौन पढैगा. छपे हुओं की बिक्री न होने से भी पुस्तकों की दुर्दशा और अविनय निश्चय सेती होगा॥ बाबालालमनजी को ज्ञान वृद्धि करनी इष्ट है तो जैनियों को जैन शास्त्र पढाने का और पाठशाला नियत करने का उद्योग करैं और जैनशास्त्र छपाने का निरर्थक प्रयत्न छोड दें. समरसी ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह । तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै । सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर १ | अजमेर चैत्र सुदी १५ संवत १९५० | अंक ४

श्रीजिनबिंब प्रतिष्टा महोच्छव खुरई

हमारे एक मित्रजो उपरोक्त महोच्छव में गयेथे उसके समाचार इस भांत लिखते हैं कि इंडियन मिडलेंड रेलवे मे बीनाजंकशन से एक स्टेशन सागर जिले में खुरई नामक एक सुंदर नगर है. यहांपर सिखर बंध अतिरमणीक दोय जिनालय हैं और श्रावक जन बड़े धर्मात्मा और विवेकी हैं. श्रेष्टी मथनदासजी मोहनलालजी यहांके प्रथासरईस हैं. इन्ही श्रेष्टी मोहनलालजी और दूसरे श्रेष्टी मोहनलालजी तीसरे काल्रामजी मुख्या और चैथे जादोरायजी ने मिलकर श्री जिनबिंब प्रतिष्टा महोच्छव का बिचार कियाथा जिस की मंगल पत्रिका देश देश और नगर नगर के श्रावकों के पास भेजदीनीगई थी और सर्व स्थानों के अनेक जात्री स्त्री पुरुष महोच्छव में एकत्र हुये थे ॥ मिती माघ सुदी ९ को गर्भ कल्याणक का उत्सव हुआ जिसमें कुबेर कृत रत्न वृष्टि आदि पंचाश्चर्य और माता को षोडशस्वप्न तथा षट कुमारि का देवी

कृत माता की सेवा और अनेक अंत
रलापका पहलेका आदि देवी कृत
प्रश्न ओर महादेवी के उतर सब का
भाव दिखायागयाथा॥

मिती माघ सुदी १० को भगवान
का जन्म कल्याणक का महोत्सव
हुआ जिस में इन्द्रादिक चतुरनिकाय
के द्रेवों का आगमन ऐरापत हस्ती
पर भगवानको बिठलाय मेरुसिखर पर
जाना और कलशा भिषेक करना इं-
द्राणी प्रभुको सर्व सिंगार कर फेर
नगर में लाना माता पिता को सोप
ताडव नृत्य करना आदि सर्व क्रिया
विधान सहित हुई थी॥ माघ सुदी ११
के दिन राजगद्दी और उसी दिन
भगवान का संसार सरीर भोगों से विरक्त
होना लौकांतिक देवों का आना स्तु
ति कर वैराग्यदृढ़करना भगवान का
मात पिता आदि स्वजनो को संबोध
मोह फंद छुड़ाना इन्द्रादि देवों का
जिनेन्द्र को पालकी मै आरूढ़कर
तपो बन में लेजाना और वहा भग-
वान का वस्त्राभूषण आदि बाह्याभ्यं-
तर परिगृहका त्याग कर जथाजात
जिनलिंग नग्नदिगंबर रूपधर पंचमहा
व्रत पंचसुमित तीनगुप्त मयी तेरह प्रकार
चारित्र धारण करना इस प्रकार तप
कल्याणक का उत्सव हुआ॥ माह
सुदी १२ दिन भगवान के चार घातिया
कर्म के नाशसै अनंत ज्ञान अनंत
दर्शन अनंत सुख अनंतवीर्य का प्रकट
होना चौतीस अतिशय चार अनंत
चतुष्टय अष्टमहा प्राति हार्य आदि अनंत
गुणों का प्रगट होना समत्र सरण
सर्वजीवों के हितार्थ धर्मोपदेश देना
आदि ज्ञान कल्याणक की क्रिया हुई
थी और उसीदिन सर्व कर्म काक्षय
कर अनंतज्ञानादि अव्याबाध प्रमुख
अनंतानंत गुण साहित निर्वाण पद
प्राप्तहोना मोक्ष कल्याणक की क्रिया
हुई थी इस प्रकार पंच कल्याणक के
महोच्छव को प्रतीदिवस हजारों आ-
दमी श्रीमंडप मै बैठकर देख अति
हर्षित होय जय २ कार शब्द उच्चा-
रण कर पुन्यके भंडार भरतेथे॥ माह
सुदी १३ के दिन गजरथ की सवारी

निकली थी जिसमें चार रथ प्रत्येक में दो दो हाथी जुतेहुये थे नवीन चारों प्रतिष्टा कारकों ने बनवाये थे बहुत सुंदर और रमणीक थे उनमे भगवान बिराजमान थे गीत नृत्य वाजित्र ध्वजा पताका चमर छत्र धर्म चक्र आदि वड़ी जलूस मे वहां श्री मंडपमेंही जलेव हुईथी जिसकी शोभा अकथनीय है. मेलेमें स्वमती परमती सर्वका आदर सत्कार किया गया था और सर्व ही वड़े आनंद और हर्ष सहित उच्छव देखते देखते तृप्त नही होते थे. यही चाहते थे कि ऐसा परम हर्ष दायक उच्छव सदाकाल देखाही करें मेले में अनुमान एक लक्ष जैनी भाई एकत्र हुयेथे इस मेलेमें पांच ज्योनार हुई दो सेठ मोहनलालजी की तरफसे और तीन शेष तीनो प्रतिष्टा कारकों की तरफसे ॥ ज्योनार के समय स्त्री पुरुषों के ठठ के ठठ को देखकर सर्व लोक अत्यंत आश्चर्य को प्राप्ति होते थे कि इतने वड़े समूह की ज्योनर करने का इन्तजाम करना इन्हीं महान पुरुषों के धीर्य का काम था. वहुत लिखने कर क्या इसी मेले के आनंदरूपी अमृत के स्वाद को वेही जानते हैं कि जिन्होंने नेत्र रूपी अंजुली करि उसका पान किया ॥

इस महोच्छव में आस पास के ग्राम और नगरों से १७५ वेदी और रथ आये थे सो न्यारे २ डेरों में, मंदिर में बिराजमान थे॥ रायबहादुर सेठ मूलचंदजी अजमेर वाले लाला उग्रसेनजी सहारनपुर वाले सेठ चुन्नी लालाजी इन्दोर वाले आदि वहुत से प्रधान और धनवान जैनी थे जिससे मेले की विशेष शोभाथी. और पंडित पन्नालालजी पंडित वलदेवदासजी, झरगदलालजी, भादोलालजी, गुलजारीलालजी नंदरामजी हकीम शांतीलालजी, लक्ष्मीचंद्रजी, विहारीलालजी, रामदयालजी, आदि अनेक विद्वज्जनो की गोष्टि रूप प्रभाति द्युती को देख कर अज्ञान रूपी अंधकार दूर भागताथा और सज्जनो के चित्त रूपी चकवा सुमति रूपी चकवी को

पाय कर धर्मरूपी सरोवर में जो दया के निरमल और शीतल जल से भरा हुआ है मग्न हो कर मनोवाञ्छित अर्थ की सिद्धि करते थे सभा में पंडित पन्नालालजी श्रीमद्राजवार्त्तिक जी का व्याख्यान करते थे कि सिद्धांत रूपी केहरि का नाद सुनि कुनय करि उद्धति मिथ्यावादी मदमस्त हस्ती के मान गलित होते थे ॥ कितनेही सज्जनों ने अपने अज्ञान वा संशय की निवृत्त के अर्थ प्रश्न किये जिन के उत्तर उक्त पंडितजी ने भले प्रकार दिये. प्रश्न करने वाले सभा में शास्त्रीजी के पास बुला लिये जाते थे और प्रश्न और उत्तर को दो पुरुष सभा में खड़े होकर सर्व भाइयों को सुना देते थे ॥

मिती माघ सुदी ११ को एक सभा हुई जिस में लाला उग्रसेनजी ने एक सुंदर व्याख्यान दिया और जैनियों में विद्या की कमी इस रीति से दिखाई कि सुननेवालों के हृदय में शोक की घटा उमड़ आई और अश्रुपात की मोटी २ बूंदों की वर्षा होने लगीं ॥ पंडित चुन्नीलालजी मुराबाबाद वालों ने उक्त व्याख्यान को पुष्ट किया. फिर भाई गोपालदासजी आगरे वालों ने जो आज दिन बंबई में रहते हैं उसी व्याख्यान का समर्थन करते हुए वर्णन किया कि विद्यावृद्धि का साधक जैनविद्यालय का नियत होना है और उस के खर्च के वास्ते विद्यालयभंडार की अत्यंत आवश्यकता है. भंडार की अपूर्णता का मुख्य कारण परस्पर ऐक्यता का अभाव और जैनी जनों की स्वधर्मावलंबनीविद्या से अरुचि बताई और उन्हों ने वर्णन किया कि यदि देश २ के प्रधान धनवान राज्यमान और विद्वान पुरुषों की एक जैन महासभा नियत हो जावे तो अतिशीघ्र ही विद्यालयभंडार जमा हो जावै और उस की सहायता से विद्यालय नियत होवे विद्या का प्रकाश होवे और हीनाचार आदि अनेक विपरीतियों का जो अज्ञान के कारण जैनियों में प्रचलित होगई हैं नाश होवें. और इस प्रकार विद्या

धन और धर्म तथा जाति की उन्नति होवे इस व्याख्यान का सभासदों पर बड़ा प्रभाव हुआ और सर्व सम्मति से उसी समय महा सभा स्थापन करने में उद्यमवंत हुये इतने ही में सेठ चुन्नीलालजी इंदौर वालों ने कहा कि कल रायबहादुर सेठ मूलचंदजी अजमेर वाले आवेंगे उन के सन्मुख यदि यह सभा नियत की जाय तो बहुत अच्छा होगा. यह बात सब ने मंजूर करी और जयकारा बोल कर सभा विसर्ज्जन हुई इस प्रकार उस रोज महासभा नियत नहीं हुई.

दूसरे दिन मिती माह सुदी १२ को फिर सभा हुई. जिस में लाला उग्रसेनजी ने तथा सेठ मूलचंद जी ने पाठशाला के साधक बहुत मनोहर व्याख्यान दिये परंतु महासभा नियत नहीं हुई.

तीसरे दिन मिती माघ सुदी १३ को फिर सभा हुई जिस में पंडित पन्नालालजी ने सम्यक् ज्ञान के विषय में अत्यंत सुंदर ललित और मनोहर व्याख्यान किया और सम्यक्ज्ञान का साधक विद्या की आवश्यकता दिखाई।

सेठ मूलचन्दजी ने पाठशाला के साधक भण्डार और सभा की आवश्यकता दिखाय सर्व सभा की सम्मति पूर्वक जैन महासभा स्थापन करी और यह भी कहा कि इसी सभा में नये नगर के मेले में जो जैनविद्यालय के अर्थ रुपया एकट्ठा हुआ है शामिल करलिया जायगा फिर इस सभा के कार्य्याध्यक्ष नियत होने की सभा में चर्चा हुई परन्तु सर्व सभा की यह सम्मति ठहरी के हिन्दुस्थान के सर्व मुख्य २ नगरों में महासभा स्थापित होने के समाचार भेजे जांय सर्व जगहों के पञ्च अपने २ नगर मे दो दो तथा चार चार मनुष्य नियत कर दें और वे सर्व नियत किये हुए प्रतिनिधि फिर किसी समय एक स्थान में एकत्र हो कर प्रबन्ध कर लेंगे। इस के पीछे सेठ मूलचन्दजी ने कहा कि अब भण्डार होना चाहिये इस विषय में भी बहुत सी चरचा होकर

यह निश्चय हुआ कि एक एक जिले का अलग अलग चन्दा होय तो ठीक है और बुंदेलखण्ड देश का चन्दा करने के वास्ते सेठ मोहनलालजी खुरई निवासी नियत किये गए। इस के पीछे भाई गोपालदासजी ने कहा कि यद्यपि इस मेले में एकत्र हुए पञ्चों ने जैनधर्म की प्रभावना करने और विद्यावृद्धि करने का बहुत कुछ प्रयत्न किया और बहुत से विचार किये परन्तु मेरी मन्दबुद्धि से मालूम होता है कि महासभा नियत नहीं हुई क्यों कि उस महासभा के अधिपति आदि कोई कार्य्याध्यक्ष और सभासद मुकर्रर नहीं हुए. और न उस सभा के रहने का कोई स्थान नियत हुआ. तो स्थान कार्य्याध्यक्ष और सभासदों के अभाव से सभा का भी अभाव ही रहा—

दोयम जो कि पञ्चों ने यह ठहराया कि हरेक शहर के पञ्च दो२ चार प्रतिनिधि नियत करैं और वे फिर किसी स्थान में सभा करैं सो इस से भी यही सिद्ध होता है कि इस समय सभा नियत नहीं हुई भविष्यत काल में होना ठहरा लेकिन भविष्यत काल में भी उस सभा के मेले होने का संवत मिती और स्थान नियत नहीं हुआ कि सभा कब और किस स्थान में होनी चाहिये ॥ लेकिन इस के सिवाय यह भी निश्चय होता है कि इस मेले के पीछे सब अपने २ घर जाकर निश्चिन्त हो जांयगे और अपने २ घर के धन्धों में लग जांयगे कोई को याद तक भी नहीं रहैगा कि वे खुरई के मेले में क्या बंदोबस्त कर आये हैं क्योंकि तजरुबे से यह सिद्ध है कि जैनियों को प्रमाद ने अपने आधीन कर रक्खा है मेलों के बीच में सभा करने और विद्या तथा धर्मवृद्धि की चरचा और रुपये जमा करने को चिट्ठे लिखे जाते हैं लेकिन घर जा कर सब भूल जाते हैं देखो फीरोजाबाद धामपुर आदि के मेलों की कारवाई अब किसे याद है अगर याद रही होती तो क्या फीरोजाबाद में हरसाल मेला होता है फिर वहां का

लिखा हुआ पैंतीस चालीस हजार रुपये का चिट्ठा वसूल नहीं हो जाता मेला बिछडे पीछे सब अपने २ घर जाकर घर के धंधे में लगते हैं मेले की कारवाई को भूल जाते हैं ऐसे ही इस मेले की काररवाई को भी सब लोग भूल जांयगे और जो कुछ यहां पर प्रयत्न हुआ हैं उस सब की मिहनत और सर्व समय व्यर्थ चला जायगा. सभा का कोई नाम भी नहीं लेगा॥

यह सुनकर पंचों ने सभा की पैरवी के वास्ते इन्हीं को नियत किया. और जो चिट्ठी कि वे [रहने वाले बंबई के] सब नगरों को भेजे उस पर सेठ मूलचन्दजी [रहनेवाले अजमेर के] और लाला उग्रसेनजी [रहने वाले सहारनपुर के] के हस्ताक्षर होने चाहियें इसके अनन्तर जयकारा बोल कर सभा विसर्जन हुई॥

दूसरे दिन बुंदेलखंड का भंडार होना प्रारम्भ हुआ. अपनी २ शक्ति प्रमाण कई भाइयों ने रुपया भंडार में जमा कराया. एक भाई ने एक हजार रुपया १०००) अर्पण किया. परंन्तु उस भाई का नाम और उस ने रुपया नकद उसी समय दे दिया या सिर्फ चिट्ठे में लिख दिया सो हमें जलदी के कारण मालूम नहीं हो सका खुरई की सभा को चाहिये कि उस भाई का नाम जैनप्रभाकर में मुद्रित करा कर जगतविख्यात करैं जिससे और २ भाइयों को भी देने का अनुराग और साहस होवे॥

सेठ मोहनलालजी साहिब को कि जिन्हों ने ऐसा बड़ा भारी मेला और जिन बिंब प्रतिष्ठा करा कर जैनधर्म की प्रभावना की पंचों ने उनसे संतुष्ट हो कर उनको श्रीमंत की उपाधि से सुशोभित किया.

एमरीका में मत वालों की सभा और जैनी—

एमरीका देश की पहले किसी को खबर नहीं थी. चार सो वर्ष हुये कि कुलंबस नामी एक पुरुष ने स्पेन देश की महाराणी इसेबिला की सहायता से

सन् १४९२ ईसवी में उस देश को दरयाफ्त किया इसी से उसे अब नई दुनिया भी कहते हैं ॥ यूरोपियन लोगों ने एमरीका पर अपना अधिकार कर लिया और बहुत से लोग वहां जाबसे ॥ एमरीका के असली बाशिन्दे अब बहुत थोड़े हैं एमरीका के दो बड़े२ खंड एक उत्तर खंड दूसरा दक्षण खंड. दक्षिण खंड में स्पेन पोरचूगाल के लोगों की सन्तान हैं और उत्तरखंड में अंगरेज और फरासीसियों की हैं ॥ केनेडा देश में जो उत्तर एमरीका का उत्तरीय भाग है अंगरेजों का राज्य है परंतु राज्य का सारा काम वहां के निवासियों की चुनी हुई पार्लीमेंट की सलाह से होता है ॥ केनेडा के सिवाय और सब देश स्वतंत्र हैं और रिपबलिक याने पंचायती राज्य हैं ॥ केनेडा के दक्षिण और उत्तर एमरीका के मध्य भाग में यूनाईटेड स्टेट का पंचायती स्वतंत्र राज्य है ॥ यहां भी पहले अंगरेज सरकार का राज्य था. परंतु किसी कारण वहां की प्रजा बागी हो गई और सरकार अंगरेज से सात वर्ष तक लड़ाई लड़ के अपने को स्वाधीन बनाया और अपना पंचायती राज्य नियत कर लिया ॥ इस यूनाईटेड स्टेट में अंगरेजी बोली बोली जाती है और अंगरेजी ही लिखी पढ़ी जाती है यहां के निवासी अंगरेजों के सन्तान और अंगरेजों के समान हैं बल्के विद्या बुद्धि और नई नई कलों के पैदा करने में उन से भी बढ़कर हैं ॥

इन्हीं लोगों ने एमरीका देश के दरयाफ्त होने की चतुर्थ शतवर्षी पूर्ण होने की और पंचम शतवर्षी प्रारम्भ होने की खुशी में शिकागो शहर में बड़ा भारी मेला 'जगतमेला, के नाम से किया है और एक बड़ा भारी मीना बाजार लगाया है जिस में तमाम देशों की अद्‌भुत अद्‌भुत और आश्चर्यकारी पदार्थ लोगों के देखने और बेचने खरीदने के वास्ते एकत्र किये हैं इस शिकागो जगतमेले के बनाने में कई करोड़ रुपया खर्च किया गया है ॥

वहां के लोगों की आशा है कि इस जगतमेले के देखने को जो सम्पूर्ण देश देशान्तरों के अनेक बड़े २ प्रधान पुरुष आवेंगे वे परस्पर मिलें जुलेंगे वार्त्तालाप करेंगे एक दूसरे के अभिप्राय को समझेंगे तो परस्पर प्रीति और मैत्री होगी और बैर विरोध लड़ाई का अभाव होगा ॥

इस मीनाबाजार में अनेक देशों के अनेक कारीगर अपनी २ कारीगरी की चीजें दिखावेंगे और उन का हुनर और नकलों के उत्तर देने को कमेटी उन सब कारीगरों और वस्तुओं की परीक्षा कर के यथा योग्य इनाम देंगे. किसी को सोने के तगमे किसी को चांदी के किसी को तांबे के और किसी को कागज के पर्चे दिये जायेंगे कोई बेचारे मुंह देखते रह जायेंगे परन्तु वे कुछ किसी प्रकार की शिकायत नहीं कर सकेंगे क्योंकि मीनाबाजारों का ऐसा ही दस्तूर है जो वहां के पंच फैसला कर देते हैं उस की अपील या सुनाई नहीं है और पंचों का फैसला वज्र-रेखा के समान अमिट और अचल है ॥ जिन लोगों की कारीगरी को उन्हों ने अच्छा कहा वही अच्छी और जिस को बुरा कहा वही बुरी. जिन की कारीगरी और पदार्थ अच्छे बताये जायेंगे वे लोग अपनी बिक्री में दूना चौगुना पैदा करेंगे ॥

जिस प्रकार कारीगर लोगों को मीनाबाजार में बुलाया है कि आप आओ और अपनी कारीगरी दिखाओ इसी प्रकार वहां के कितने ही मत वालों ने कमेटी कर के सर्व देशों के मत वालों को भी बुलाया है कि आप आइये मीनाबाजार देखिये और इस मीनाबाजार में अपने २ मत के सिद्धान्त का नमूना दिखाइये ॥

इस बुलावे से वहां जाने को कितने ही मत वाले तैयार हुये हैं वे वहां जा कर अपने मत का नमूना दिखावेंगे अर्थात् अपने अपने मतसम्बन्धी एक या दो व्याख्यान देकर मीनाबाजार के मत वालों की कमेटी में

सुना देंगे और उस मत वालों की कमेठी से अपने मत की परीक्षा करावेंगे और फिर यथा योग्य सारटीफिकट या चांदी सोने के तांबे के तगमे पावेंगे ॥

कोई मत वाला अवल दरजे का मत वाला और कोई दूसरे तीसरे चौथे दरजे का मत वाला ठहरैगा. कोई उपांत और कोई अन्त दरजे का मत वाला वहां से बनकर आवेगा ॥

एमरीका देश के लोग बड़े विद्वान गिने जाते हैं परंतु इस प्रकार उपरोक्त मत परीक्षा करने से हमें उन की बुद्धि का सन्देह होता है॥ क्या यह बात मुमकिन है कि दो चार व्याख्यान सुनने पढने से किसी मत का रहस्य मालूम हो जावे और यह मालूम हो जाय कि यह मत अच्छा या बुरा है ? हमारी राय तो यह है कि जब तक दो चार वर्ष तक एक मत के मूल पुस्तकों को उस मतावलंबी से सरल चित्त हो कर न पढें तब तक उस मत के रहस्य का जानकार नहीं हो सक्ता है तो एक दो लेकचर के सुनने से क्या हो सक्ता है ॥

हरेक मतावलंबी अपने मत को ईश्वर कृत सत्य मोक्षदाता मान उस पर विश्वास करता और उस की आज्ञानुसार प्रवर्त्तता है और दूसरे मत को मनुष्य कृत मिथ्या और संसार परिभ्रमण का कारण जान त्याग करता है ॥

वे लोग जो शिकागो मत वालों की कमेटी से अपने मत की परीक्षा करा के अपने मत के सत्यासत्य होने का सारटीफिकट लेने की इच्छा से एमरीका जाने को तैयार हुये हैं उन को अपने मत के सच्चे होने का विश्वास नहीं है बल्के उसे असत्य होने का संसय है और शिकागो मत वालों की कमेटी को शायद सर्वज्ञों की कमेटी जानते हैंगे कि जिस धर्म को वह सत्य कह दें वही धर्म सत्य और जिस को वह मिथ्या कह दें वही मिथ्या है. लेकिन शिकागो मत वालों

की कमेटी सर्वज्ञों की कमेटी नहीं है बल्के अल्पज्ञ रागी द्वेषी मनुष्यों की कमेटी हैं और मनुष्य का स्वभाव है कि जिस मत में उस ने जन्म लिया है वा जिस मत पर उस का विश्वास है उस पुरुष को अपने मत के दोष और दूसरे मत के गुण दिखाई नहीं देते हैं इसी कारण शिकागो मत वालों की कमेटी भी अपने मत के सिवाय दूसरे मत को कभी अच्छा और सत्य नहीं कहैगी ॥

कमेटी में अगर सब लोग एक मत के हुये तो वे निसंदेह अपने मत को सत्य और और सब मतों को झूंठा कहैंगे तब तो उन की आज्ञानुसार सब लोगों को अपने अपने मतों को त्याग उनके मतों को गृहण करना उचित होगा सो क्या उन की आज्ञा से कोई अपने मत को त्याग उन के मत को गृहण करैगा. कोई भी नहीं. तब इस कमेटी का होना और अनेक देशों के मतावलंबीयों का वहा जाना रुपया खर्च करना तकलीफ उठाना सब निरर्थक होगा ॥

लेकिन अगर उस कमेटी के मेम्बर पृथक् २ मतावलंबी हुये तो वे हरेक अपने २ मत को पुष्ट कर के उसे सच्चा ठहराने की कोशिस करैंगे उन की एक सम्मति नहीं हुई तो सम्पूर्ण प्रयास निरर्थक ही हुआ. सर्व मत अब न्यारे २ हैं वैसे ही फिर भी रहैंगे बल्के आपस में ज्यादह विरोध और ईर्षा होने की सम्भावना है क्योंकि अपने मुह आगे और अपने सुनते हुये जो कोई दूसरा मतावलंबी अपने धर्म की निन्दा करै असत्य और बुरा बतावै तो हरेक मनुष्य को रंज और क्रोध पैदा होता है और लड़ाई बैर बंधता है इस वास्ते जो समदर्शी समकज्ञानी हैं वे लडाई वैर विरोध बढने के काम नहीं करते हैं वे न तो अपने मत की निन्दा बुराई सुनना चाहते और न दूसरे के मत की आप निन्दा बुराई करते हैं इस लिये भी शिकागो मत वालों की सभा में जहां कि अपनें मत की बुराई सुननें की और दूसरें मत कें

बुराई करने की सम्भावना है जाना उचित नहीं है ॥ इत्यादि कारणों से शिकागो मत वालों की सभा और वहां का जाना इष्ट प्रयोजन रहित निरर्थक मालूम होता है आगे उस सभा की काररवाई से मालूम होगा कि उस से मत वालों को क्या लाभ हुआ.

बहुत से लोगों का यह कहना है कि उस सभा में जाकर हम अपने मत का सिद्धान्त बतावें और एमरीका और यूरप आदिक विद्वानों को अपने मत मे मिला लेंगे जब विद्वान और प्रधान लोग हमारा धर्म अंगीकार कर लेंगे तो उन की सहायता से उन के सम्पूर्ण देश निवासी साधारण लोग भी हमारा मत ग्रहण करैंगे और इस प्रकार हमारा मत सारी दुनिया में फैल जायगा ॥

हम खयाल करते हैं कि यह कहना भी निःसार है क्योंकि जैसे वे अपने मत में दूसरों को लेना चाहते हैं वैसे ही उन के प्रतिपक्षी उन को अपने धर्म में लेना चाहते तब प्रतिपक्षियों का एक तरह का जुद्ध हुआ. जीत हार दलील पर है दलील का कुछ ठिकाना नहीं सच्चे की दलील न चलै झूठे की चलजाय और वह कहनावत हो जाय के चौबे जी गये छबे जी बनने रह गये दुबेजी— अर्थात् गये थे औरों को मत में मिलाने आप ही अपना मत खो कर दूसरे के मत में मिल गये अगर कहो कि हम नहीं मिलैंगे हम तो दूसरों को मिलावेंगे तो दूसरा तुम्हारे में क्यों मिलैगा.

वे शक इस बात को हम स्वीकार करते हैं कि अपने धर्म की प्रभावना उन्नति करनी चाहिये और लोगों को अपने धर्म का उपदेश देना चाहिये ॥ परन्तु जो अपने से शक्य है सो करना बुधिवानों का कार्य है अशक्य की कोशिश करना मूर्खों का काम है उमर थोडी है और काम बहुत करना है समय को व्यर्थ निकम्मे कामों में गमाना उचित नहीं हैं ॥ शेष आगे.

सब से ज्यादह शक्य और सुगम लाभदायक अपने आत्मा के धर्म की प्रभावना है क्योंकि इस में परसहायता की आवश्यकता नहीं. मनुष्य को उचित है कि प्रथम अपने धर्म शास्त्र की आज्ञानुसार आप अपने धर्म पर पूरा पूरा विश्वास कर के उस की आज्ञानुसार सर्व पापों को और दुराचारों को त्यागे और सर्व-पुण्य और अच्छे कार्य्यों को गृहण करैं अपने तंई अपने धर्म की साक्षात मूर्ति बना लेवें कि देखने वालों को धर्म का स्वरूप दिखाई दे जाय—

इस के बाद अपने स्त्री पुत्र मित्रों को धर्म में दृढ करने का प्रयत्न करैं उस से ज्यादह समय होय तो फिर अपने कुटम्ब परिकर अपनी बिरादरी को धर्मोपदेश देवें इस प्रकार अपने धर्म समूह को ज्यादह २ करैं. परन्तु पास वाले को छोड़ दूर वाले को सुधारने नहीं भागें और जो सुधरता देखे तो प्रयत्न करैं न सुधरता देखे तो खाली माथापच्ची न करै.

हमारे जैनी भाइयों का भी विचार एमरीका देश में जाने का हुआ है ऐसा सुनने में आया है हम को सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ है और उस के निषेध के विषय में हम ने उपरोक्त अपनी सम्मति प्रकाश की हैं आशा है कि इस को सर्व जैनी भाई विचार सहित पढैं और अपनी २ सम्मति लिखें ॥

उन भाइयों से जो एमरीका देश में जा कर धर्म प्रभावना करने के उद्यमी हुये हैं हमारी प्रार्थना है कि आप के धर्म प्रभावना करने के उद्यम और साहस करने के आप को अनेकानेक धन्यवाद दिये जाते हैं सो स्वीकार कीजिये. और एमरीका जाने के अनिष्ट प्रयोजन को छोड़ अपने प्रयत्न को जैनियों की तरफ लगाइये ॥ इस समय जैनियों में अज्ञान और मिथ्यात्व अंधकार ऐसा प्रबल छा रहा है कि वे अपने धर्म कर्म को बिलकुल नहीं जानते अगर आप उन को धर्मोपदेश देने का प्रयत्न करैं तो धर्म की

बड़ी प्रभावना होवे ॥ एमरीकेन और यूरोपीयन लोगों की निसबत जो कि मद्य मांस के आहारी हैं और अन्य मत पर आरूढ है जाति जैनी जिन्होंने जैन जाति और कुल में जन्म लिया है और कुल की रीति से अहिंसा धर्म पर आरूढ है उन को जैन मत धारण कराना बहुत सहल है ॥ हमारी समझ में तो प्रथम जैनियों को धर्मोपदेश देकर सच्चा जैनी बनाकर धर्म प्रभावना करनी लाजिम हैं अगर जितने जैनी आजादिन हैं वे सब अपने धर्म पर सच्चे दिल से विश्वास कर परमागम की आज्ञानुसार अन्याय, अभक्ष हीनाचार हिंसादि पापों का त्याग करें और मैत्री वातसल्य दया क्षमा आदि सत्य धर्म को गृहण करैं तो उन के शुद्धाचरण को देख कर बहुत से आदमी जैनधर्म की प्रशंसा करैंगे और बहुत से उसे गृहण करैंगे लेकिन जब कि जैनी ही जैन धर्म से विमुख है तब अन्य मती उस के सन्मुख क्यों होने लगे. कहनावत है कि हकीमजी पहले अपना इलाज कीजिये ॥ औरों को उपदेश देवे और आप उपदेश को अंगीकार नहीं करै तो दूसरा उस उपदेश को नहीं गृहण करेगा किन्तु वह उपदेश दाता निंदा और हंसी का पात्र होगा ॥

इसलिये हमारी प्रार्थना तो यही है कि पहले अपने घर की दुरुस्ती अर्थात पहले जैनियों को जैन धर्म में लगाने का प्रयत्न करना चाहिये एमरीका जाना और जहाज पर बैठ मद्य मांस के संयोग से अपना धर्म गमाना तथा मद्यमांसाहारियों के संग समय और धन वृथा गंवाना न चाहिये.

यह हम जानते हैं कि जैनधर्म में स्वेच्छाचार उन्नति पर है इसलिये हमारे लिखे पर असर होना मुशकिल है तथापि जहां धर्म विगड़ता होय वहां विना पूछे भी बोलना वाजिब है इस कारण इतना लिखने में आया हमारी मंदबुद्धि से जो भूलचूक हो तो बुधजन क्षमा करैं और जो बात उचित होय सो हमें बतावैं हम उसे स्वीकार करैंगे.

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन सभासबंधी मासिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ छोगालाल अजमेरा ने प्रकाश किया

नम्बर ० २

मिती बैसाख सुदी १ संवत् १९५० का

अजमेर

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

सेठ कानमल मैनेजर के विक्टोरिया प्रेस अजमेरमें छपा।

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पहुंचै प्रार्थनाहै की वे इसको संपूर्ण पढकर अपने पुत्रमित्रोंको पढने के वास्ते देदेवें और मंदिरजा वी सभा आदि स्थानोंमें जहां बहुत से श्रावग एकत्रहों पढ करसुनादें ॥ आपके शहरकी जाति और धर्म संवधी नई बार्ता पत्रमे छापनेको भेजें ॥ जोभाई पत्र लेना चाहे हमें पोस्टकार्ड भेजकर मंगालें ॥

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालोंसे ॥=) बाह वालोंसेमय डाक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है ॥

१ यह पत्रहर महीने मेंछपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जनकी उन्नति करना इसके उद्देशहैं ३ जिनधर्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल वार्ता मतमतांतर का झगडा इसमें नही छपेगा ॥

कितनेही जैनी भाई जैन शास्त्रोंके छपानेका उद्यम कररहे हैं और कई एक छपाभी लियेहैं और औरोंके छपाने की संम्माति मांगते हैं और श्रीकंपिलाजीके मेले में पंचो ने मनाई कर दीनीहै सो सर्व भाईयों को आज्ञा माननी चाहिये जो भाई असंतुष्टहै वे मथरा या और कोई बडे मेले में पंचायत कर के इस विषय में विचार करावे और जो पंचोकी आज्ञा होवे सो करे आज्ञा विरुद्व स्वेच्छाचार प्रवृति करने से मर्यादा भंग होजायगी और जैन धर्म और जैनीयों को बहुत भारी नुकासन होगा इसलिये आज्ञा भंग करना नहीं चाहिये.

॥ श्री ॥

॥ जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश ॥
॥ सुख संपति मैत्री करैं। सुमाति सुज्ञान प्रकाश ॥

नम्बर २ } वैशाख सुदी १५ संवत् १९५०. { अंक ४

प्राति दिन एक पत्र.

इस समय मैं जब कि वीतरागी निर्ग्रंथाचार्यों का समागम लुप्त हो गया है और कालदोष से जिन धर्म मैं भी कितने ही पंथ होगये हैं जो अपने २ पक्ष को पुष्ट करते हैं और अज्ञान अंधकार ने जैनियों को सब तरफ से घेर लिया है तिसपर भेषी पाखंडी खोटी युक्तियों से धूल की मुठी भर २ आंखों में डाल रहे हैं एसै समय मैं मोक्ष का राज मार्ग मिलना अत्यंतही कठिन है ॥ परंतु उन साहसी और वीर पुरुषार्थीयों को जो सच्चे दिल सै मार्ग की खोज करना चाहै उन को मार्ग मिलना कठिन भी नहीं है बल्के बहुत सुगम है इस लिये जो भाई आलस्य और प्रमाद त्याग कर अपने आत्मा के कल्याण करने के और दुर्गति सै बचनें के अर्थी है उन से प्रार्थना की जाती है कि कम से कम प्रतिदिन एक

पत्र एक शास्त्र का प्रारंभ से अंत तक निरंतर ध्यान लगाकर पढें और बाहिरी बातों को छोडकर जो कुछ कि उस शास्त्र में लिखा हुआ है उसी पर विश्वास करें और उसके अनुकूल प्रवर्त्तने का यथा शक्ति प्रयत्न करें तो निश्चय सेती उनको सर्वज्ञ प्रणीत मोक्ष मार्ग पावेगा और वे मोक्ष पुरी के पंथी हो जावेंगे ॥

जोकि अनादि काल से जैनियां में यह मर्य्याद है कि प्रथम स्नान आदि प्रभात क्रिया करके सर्व जैनी पुरुष और स्त्री जिनालय में जिनेन्द्रकी प्रतिमा के दर्शन पूजन करने जाते हैं (अगरचें कि आज दिन कहीं २ देखने में आता है कि बहुत से जैनी भाईयों ने मंदिरजी में दर्शन करने जाना छोड दिया है. यह उनकी बडी भूल है उन को दर्शन करने की प्रतिज्ञा अवश्य करनी चाहिये) और वहां दर्शन करने के पश्चात कुछ काल तक ठहरते हैं और परमेष्ठी का ध्यान स्मर्ण करते हैं तथा स्वाध्याय करते है तथा जो सभा मे शास्त्र जी का व्याख्यान होता है सो सुनते हैं और फिर घर आकर सुपात्रों को भक्ति पुर्वक तथा दुखी दलिद्री रोगीयों को करुणा सहित दान देते और पीछे भोजन कर संसारीक व्यवहारादि न्याय पुर्वक आजीवका धन उपार्जन में लगते हैं यह मर्य्याद हमारे कुलमे अनादि काल से है और आज तक मौजूद है परंतु समय के फेर फार और अज्ञान के विस्तार से यह रीत रिवाज मंद पड गई है इस लिये अब उस प्राचीन मर्य्याद के दृढ करने को यह निवेदन है कि अव्वल तो सर्व जैनी भाईयों को उचित है कि प्रतिदिन मंदिरजी में दर्शन करने को अवश्य जावें दोयम वहां जाकर दर्शन करने के पीछे सभा

के दालान में बैठें और कुछ काल तक शास्त्रजी का स्वाध्याय करें.

दर्शन करने के पश्चात ज्ञानाभ्यास के दालान में बैठना चहिये और अपना बुद्धी शक्ती और थिरता के अनुसार किसी एक शास्त्र का अभ्यास करना चाहिये ॥ अगर कोई भाई कम से कम एक पत्र प्रतिदिन पढे तो एक वर्ष में ३६५ पत्र का शास्त्र संपूर्ण हो जावे ॥ और इसी प्रकार निरंतर दस वर्ष तक एक एक पत्र प्रतिदिन पढता रहे तो तीन हजार छः सौ पच्चास पत्र पढ लेवे ॥ यद्यापि जो कुछ कि पढा जावेगा उस सब को याद रखना कठिन है तथापि जिस तरह पढ़ने का अभ्यास ज्यादा २ होता जायगा उसी तरह धारण शक्ति भी बढती चली जायगी और पूर्वा पेर संबध मिलाने बार २ याद करने तथा आप समान साधर्मीयों स चर्चा और प्रश्नोत्तर करने से ज्ञानाभ्यास दृढ बना रहेगा ॥ वह पुरुष जो तीन हजार छः सौं पच्चास पत्रों का रहस्य जाने है वह सामन्य पुरुष नहीं है बल्के उसकी गणना पंडितों और विद्वानों में हो सक्ती है ॥ लेकिन स्वाध्याय का वडा भारी लाभ यह है कि सम्यक दर्शन का लाभ इस से होता हैं पर्थार्थो का स्वरुप यथावत इससै जाना जाता है. देव गुरु धर्मकी पहचान इस से होती है हेय उपादये छोडने जोग्य और गृहण करने जोग्य का ज्ञान इस से होत है संपेक्ष से यह है कि संपुण व्यवहार और परमार्थ में विचार शील और तीक्षण बुद्धी शास्त्रजी के पढ़ने से होती है वह मनुष्य फिर किसी की ठगाई में नहीं आता है.

एक दिन में एक पत्र पढना कुछ कठिन कार्य नहीं है इतना पढ़ले घर पर जावें और अपनी शक्ति

को फुरसत हर एक आदमी को हो सक्ती है ॥

लेकिन देखने में आता है कि बहुत से भाई निरर्थक बातें करने में बहुत काल व्यर्थ गमाते हैं कितने ही लोग मंदिरजी में आकर शहर की बाजार को अदालत की गप शप कि जिस सेउन का कुछ इसलोक संबंधी धनादिक लाभ भी नहीं होता और धर्म काल मुफ्त जाता है घंटों तक खडे २ किया करते हैं अगरचे विचार करें तो इन विकथाओं को छोडकर धर्म कथा के पढने सुनने में अपना चित्त क्या नहीं लगा सक्के ॥

आज दिन हरेक मनुष्य की जुबानी सुना जाता है कि जाति की उन्नति करो धन की उन्नति करो धर्म की उन्नति करो लेकिन उन्नति करने की जो तरकी वे बताई जाती हैं वे दूसरे के भरोसे और सहारे की हैं परंतु हम निश्चय करते हैं कि उन्नति करने का यह उपाय सब से सुलभ और सुगम है क्योंकि यह अपने स्वाधीन है इस में दूसरे की सहायता की कुछ अपेक्षा नहीं और हमारे श्री गुरुओं की यही आज्ञा है कि अपने आत्मा की प्रभावना करने सेही धर्म की प्रभावना है स्वाध्याय करने से अपने आत्मा की प्रभावना होती है ॥

जब मंदिरजी में दस बीस पचास भाई एक स्थान एक समय में एकत्र होकर स्वाध्याय करें तो उन मे परस्पर मैत्री और प्रीतभी विशेष होती है अगर एक भाई किसी दिन नहीं आवे तो सबको खयाल होगा कि अमुक भाई आज स्वाध्याय करने क्यों नहीं आया क्या कारण है और अगर वह बीमार हो गया हो या उस पर कुछ और आफत आई हुवे तो वे सब उस की खबर पूछने उस के

घर पर जावेंगे और अपनी शक्ती प्रमाण सहायता करेंगे, तथा कोई भाई गरीब या बेरुजगार हो तो वे सब उसे रोजगार से लगावेंगे इस प्रकार परस्पर प्रीत मैत्री वात्सल्य भी इस स्वाध्याय से होते हैं

एक गोट और एक सैली के पुरुषों के आचार भी एक सेही होते हैं ॥ यदि एक सेली सभा के मनुष्य हीनाचारी कुमार्गी हो तो जो उन की संगति में जावेगा वह भी हीनाचारी कुमार्गी हो जायगा और यदि सभा के मनुष्य सुद्धाचारी सुमार्गी हो तो जो उन की संगति में रहेगा वह भी सुद्धाचरण का धारी सुशील हो जावेगा ॥

जैन शास्त्रोमें अन्याय अभक्षादि हीनाचार हिंसा झूठ चोरी परस्त्री और अतितृष्ना तथा जूआ आदि कुविसनों के त्याग का और दया क्षमा सील संतोष आदि गुणों के धारण का जगह २ पर बर्णन है इस लिये उन के पढने वाले अवश्यही गुणों के धारी और दोषो के त्यागी होते होते हैं इस लिये जो स्वाध्याय करने वाली सभा के सभासद है उन की संगती अवस्य ही सुद्धआचर्ण की और धर्म की उन्नीत करेगी ॥

तेयम जब मनुष्य का आचर्ण सुद्ध है और वह अन्याय कार्य नहीं करता वह बिश्वास पात्र होता है और इसी कारण प्रतिष्टा पाता है और व्यवहार नोकरी गुमास्तगीरी तथा और २ व्यापारो से लाभ भी उठालेता है इस प्रकार शास्त्र का स्वाध्याय करने वाला धनवान लक्षमावान प्रतिष्टत पुरुष होता है. शास्त्र पढनसे धन की भी उन्नति होती है ऐसा जानकर सर्व जैनी भाइयों को उचित है कि आलस्य प्रमाद छोड कर नित्य प्रतिही श्री जैन सिद्धान्तों का स्वा-

ध्याय मंदिरजी में बैठ के अवस्य ही करना चाहिये एक पत्र एक दिन कुछ बडी बात नहीं सर्ववाल वृद्ध कर सक्ते हैं ॥

क्या भाई साहब आप भी शास्त्रजी का एक पत्र रोज पढने की प्रतिग्या गृहण करोगे. हमारी प्रार्थना है कि यहप्रतिज्ञा अवश्य लिजिये ॥

मूंगावली.

मूंगावली के पंचो की एक चिट्ठी सेठ मूलचंदजी के नाम से आई उसमें लिखा है कि मिर्ती पोह सुदी १५ सं १९६९ को श्री जैन पाठशाला मुकर्र हो गई है

लड़के नग ३० पढ़ते हैं खर्च के वास्ते रुः २०००) इकट्ठा हो गया है जिन की याद आसामी वार पाछे से भेजेंगे ॥ यह महान सन्मार्ग प्रभावना को कार्य्य पंडित संतीलालजी के उद्योग से हुआ है उन्हों ने बडा भारी उपकार किया जिस का धन्यवाद देते हैं ॥

यहां जैनियों केघर १५० हैं ॥ आगामी वर्ष में यहां श्री बिम्ब प्रतिष्टा होगी गजरथ ३ चलेंगे मंगल पात्रिका समयानुसार सब जगह भेजी जायगी ॥ देखने में आया है कि प्रतिष्टा विध पूर्वक नहीं होती है इस लिये यहां के पंचों का विचार हुआ है कि शास्त्रानुसार विध पूर्वक विवेकी और निर्लौभी शुद्ध श्रद्धानीवृती जैना पंडितों की सहायता से विध पूर्वक प्रतिष्टा करांवे उसका प्रवंध हो रहा है ॥

परतापगढ देवल्या से भाई वगसा सिवलालजी वरद मानजी लिखते हैं कि भाई वेणीचंदजी इन्दोर वाले के लडका खेमचंद का

ब्याह फागुण बदी ५ को था सो ब्याह की सब रीति रिवाज जैन विवाह पद्धति के अनुसार कराई थी और जिस रोज बींद और कन्या की पीठी का मुहूर्त हुआ उस रोज सब सहेली वाले अपने जैनी भाई स्त्री पुरुष एकत्र होकर पूजन की सामग्री लेकर गाजेबाजे सहित सिरे बाजार होते हुए श्री जिन मन्दिरजी मे गये और श्री यंत्रजी को विधिपूर्वक अभिषेक पूजन कर के सिवका में विराजमान करके अपने मकान लाये पवित्र स्थान में बिराजमान किये रात्रि को जिनेन्द्र भक्ति रुप मंगलीक पदवीनती बाजे साहित गाकर जागरण किया ॥ इसी प्रकार मंगलीक कार्य होते रहे ब्याह के रोज बींद को स्नान करा वस्त्र भूषण पहराय तुरंग पर सवार कर जिन मंदिर ले गये और दर्शन कर बींदणी के घर गये वहां तोरण का स्पर्श किया और भीतर मंडफ मै बिराजे वेदी मैं यंत्रराज शास्त्र और मंगलद्रव्य चौसट ऋद्धि का स्थापना कर पंच परमेष्ठी की पूजनकर पाणिगृहण हुआ और सर्व पंचों ने पति और पत्नी के मस्तक पर आशीर्वाद के पुष्प क्षेपण किये कि तुम दोनों जयकुमार सुलोचनी के समान स्वदार संतोषी और पतिव्रत कुशील के त्यागी होओ ॥

जैनधर्म की प्राचीन रीत कितने हो दिनों से अज्ञान के कारण बंद होगई है और जैनी अन्यमताव लंबियों की रीति रिवाज से बिवाह दिलौकिक कार्य करते हैं और इसी कारण उनके देवतों कीपूजन करते हैंऔर जैनधर्म सेपरान्मुख होते हैं इस कारण जैनियों को जैनधर्म में स्थिर और दृढ रखने को यहां के कितनेही साधर्म भाईयों ने बडी कोशिस करके यह बिवाह जैनधर्म की रीति से कराया

इस के देखने से बड़ा आनंद हुआ अब आशा है कि अपने धर्म की रक्षा के वास्ते और २ जैनी भाई भी हठ और लोक मूढ़ता त्याग कर अपनी प्राचीन रीति माफिक लौकिक व्यवहार करेंगे ॥
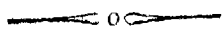
लाला जमनालालजी साहिब सोगाणी हेड क्लारक धोलपुर एजंसी वाले को अमृत संजीवनी औषधालय केकड़ी और जैन विद्यालय भंडार से बड़ा प्रेम और अनुराग है और हमेशह सहायता को रुपया भेजते है हाल में रु:५) औषधालय को और रु:४) विद्यालय को रु:१) जैन प्र[illegible] का आपने भेजा सो पहुंचा ॥ हम को उक्त लाला साहिब की प्रशंसा करने का कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि सुगंध पुष्प की सुगंध और दानी परोपकारी पुरुष कीर्ति स्वयं जगत में फैल जाती है परंतु हमने लिखना वाजिब यों समझा कि इन की काररवाई को पढकर और भी अनेक जैनी जोकि सरकारी अहलकार हैं और इल्मके जरिये से सैंकडों रुपये कमाते हैं वे उसी इल्म की जड़ सींचने में और शुद्ध दवाई बांट सदाचरण दृढ रखने और रोगीयों का दुख दूर करने में तत्पर हो जावें तो अतिश्रेष्ठ होवें ॥ अन्यान्य जातियों के अंगरेजी फारसी पढे हुये लोग अपनी जाति की कैसी तरक्की कर रहे हैं और अपने ऊपर कितने कष्ट उठाते और कितने रुपये खर्च करते हैं यह सर्व समाचारों को रात दिन अखबारों में पढ कर भी हमारे अंगरेजी पढ लिखे जैनी बैरिस्टर वकील कालेज के प्रोफे.र बी. ए. एम. ए. सबजज तहसिलदार इंजीनीयर डाक्टर दफतरों के बाबू आदि सभ्यजन अपनी जाति और धर्म की उन्नति की कुछ कोशिस

नहीं करते हैं

परीक्षा कार्तिक संवत १९४९ का फल।

नामविद्यार्थी व ईनाम	पाठशाला	हिसाब	रत्नकांड	कौमदी	कुल
प्रथम परीक्षा रु: २५)					
फूलचंदविदायका २।)	जयपुर	७५	८५	७०	२३०
गणेशलाल विदायका २)	,,	६०	९८	७०	२२८
रामचरण १॥)	प्रयाग	९०	५१	७०	२११
कनयालाल विदायका १।)	जयपुर	५५	७८	७५	२०८
बालचंद लुहाडा १।)	,,	७२	६६	५७	१९५
अनन्तराम १)	प्रयाग	१००	४४	४३	१८७
शंकरलाल १)	मुरादाबाद	५२	५५	६०	१६७

दुतिय परीक्षा

नामविद्यार्थी व ईनाम	पाठशाला	हिसाब	रत्नकांड	कौमदी	कुल
सुंदरलाल गोधा ३)	जयपुर	७०	७५	२९	१७४
किस्तूरचंद साह ३)	,,	४५	८३	३८	१६६
चंदूलाल पापडीलाल २)	,,	८०	४४	४१	१६५
घमडीलाल २)	अलवर	५०	८३	२८	१६१
छगनलाल १॥)	मुरादाबाद	३५	८१	३३	१४९
रिषभदास १॥)	अलवर	९०	२५	२९	१४४
फूलचंद अजमेरा १।)	जयपुर	४५	४६	४५	१३६
जवाहरलाल भंवसा १)	,,	४०	३८	३९	११७
(फेल) रिषभदास अग्रवाल	,,	२०	६८	६३	१५१
(फेल) सरूपचंद	मुरादाबाद	४०	२२	२६	८८
(फेल) भूरामल लुहाडा	जयपुर	२०	३६	१९	७५

पत्रके नहीं छपने से परीक्षा का फल प्रकाशित नहीं होसका. इस वैसाखमें भी कई कारणोंसे परीक्षा नहीं हुई. लेकिन अगर जैनी पंडित जो विद्याकी उन्नति करना चाहें वे कृपाकर हमें सहायता देवें तो उनकी सहायता से आगे परीक्षाका काम जारी होजायगा. क्योंकि हम खुद संस्कृत नहीं जानते इसलिये संस्कृत शास्त्रों मे परीक्षा लेनेके अधिकारी नहीं होसकतेहैं. परीक्षाकी पुस्तकें और परीक्षक पंडितोकी सम्मतिसे नियतहोनेचाहियें जैसाकि कलकत्ता बंबई आदि विश्व विद्यालयों का कायदाहै । इसलिये प्रार्थनाहैं कि जो जो पंडित विद्वान महाशयइस धर्म कार्य में शामिल हुआचाहै वे कृपाकर अपना नाम ठिकानालिख भजें और आगे परक्षिा किस म होनेमें होनी चाहिये सोभी लिखें धर्म का काम चलाये से चलताहै इस लिये जैनी पंडितोंसे प्रार्थना है कि इस धर्म प्रभावना ज्ञान बृद्धि में प्रमाद छोड अवश्यही उद्यम करेंगे और इस पत्रके पहुंचते ही तुरंत जवाब लिखेंगे ॥

॥ बहुत जरूरी इतला ॥

लाला घासीराम जी पेचवाला नयानगर निवासी की अकाल मृत्यु होनेसे कि जिसका हमको अत्यन्तशोक है जैनविद्यालय कार्याधिकारिणी सभामें एकजगह खाली हुईहै उसजहपर नया सभासदा होना जरूर है जो जैनी भाई उपने अंतरंग हृदयसे विद्यालय भंडार ओर विद्याकी उन्नति चाहतेहों ओर सभासद होकर विद्यालय भंडार की निगहबानी रक्षा उन्नति करै वे कृपा कर अपना नाम ठिकाना और रोजगार वगैरह लिखकर शीघ्र भेजें ।

दुसरा आषाढ वदी ६ सं० १९५०

॥ श्री ॥

अजमेर

अर्थात्

जिन धर्म और जैन स[illegible]संमधो माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ लाला छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश कीया है

नम्बर ४

मिति कार्ती सुदी १ संवत् १९५० का

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

सेठ कानमल लुणीया का अजमेर छापने का कारखाना में छपा ॥

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयोंसे जिनके पास कि जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना हैकि वे इसको संपूर्ण पढकर अपने पुत्र मित्रोंको पढनेके वास्ते देदेवें और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानोंमे जहां बहुतसे श्रावग एकत्र हों पढकरसुना दें॥ आपके शहरकी जाति और धर्म सम्बन्धी नई वार्ता पत्रमें छापनको भेजें॥ जो भाई पत्र लेना चाहें हमें पोस्टकार्ड भेजकर मंगालेवें

जैन प्रभाकरकी सालियाना कीमत शहरवालों से ॥=) बाहरवालोंसे मय डांक महसूल १) और एक पुस्तकका -) है॥

१ यह पत्र हर महीनेमें छपेगा॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैरविरोध मेटना, विद्या धन धर्म जातकी उन्नति करना इसके उद्देश हैं ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल व तो मतमतांतरका झगडा इसमें नहीं छपेगा

॥ विज्ञापन ॥

॥ दी अजमेर प्रिंटिंग वरक्स अजमेर ॥

सर्व साहिबोंको मालूम होकि यह कारखाना थोड़े अरसेसे जारी हुआ है इसमें छपाई अंग्रेजी उर्दू व हिंदी तसवीर व नक्शे हर रंगकी स्याही से होती है और (रबर सील) मोहर कार्ड छापनेकी व स्याही हर रंगकी तय्यार होती है और किताबों की जिल्द बंधाई भी सफाईके साथ कीजाती है और निरख सस्ती और २ जमा के काम कीजायगी में उम्मीद करताहूं के बतौर आजमाइशके एक दफे काम भेजकर देख लेवें ॥

मिनेजर.

समस्त चिट्ठी रुपया वगैरह लाला छोगालाल कोषाध्यक्ष जैनसभा अजमेरके नाम भेजना चाहिये॥

॥ श्री ॥
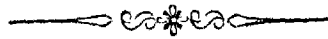
जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह । तम अज्ञान बिनाश
सुख संपति मैत्री करैं । सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ४ { अजमेर मगासिर सुदी १ सवंत् १९५०. { अंक २

॥ बिनती ॥

सर्व साधर्मी सज्जन भाई जो ग मालूमहो कि यहांपर जिस छापेखानेंमें जैनप्रभाकर छपता था वह कारखाना किसी विशेष कारण सै बंद होगया तब दुसरे छापेखाने में प्रवंध किया परंतु वहभी एकमहीने बाद बिगड गया इस कारण जैनप्रभाकर मुद्रित नही होसका हम इसके प्रबंध में लगे हुये थे सो अब छपाने का प्रवंध अछा होगया है और पूर्ण आशाहै कि आगेको यह पत्र बराबर महावारी आप सर्व सज्जनोंकी सेवामें पंहुचता रहैगा

समय पर नहीं पहुचने पर कितनेही भाईयोंने उत्कंठित हो कर चिट्ठीयां हमारे पास भेजी और लिखाकि जैनप्रभाकर के महीनेकी महीने आने औ सभा में पढनेसे धर्मकी बडी प्रभावना होतीहै पत्र बराबर जारीरहना चाहिये इससे हमको बहुत खु-

शी हुईकि हमारा परिश्रम निष्फल नहीं हुआ किन्तु जिस कार्यके वास्ते हमने यहपत्र जारी किया अर्थात जैनीयोंमें अज्ञान और हीनाचारका अभाव होकर ज्ञान और शुद्धाचरणकी बढवारी होवे आपसकी वैरविरोधईर्षा नष्टहो और मैत्री वात्सल्य वृद्धि को प्राप्तिहो हमारे भाई इसलोक में धन और प्रतिष्ठा कीर्ति और राजमान होवे दयाक्षमा आदि गुणोंसे भूषित होकर परलोकमें स्वर्गके अभ्युदय सुखपावें सो हमारा मनोर्थ सिद्ध होताहुआ मालूमहोताहै और हम सब भाईयोंकी सेवामें हरवक्त हाजिरहैं ओर आप सर्वभाई हमें सहायता और उत्साह देतेरहेंगे तोयह जैनियोंकी जाति विद्या धन और धर्मउन्नति करनेका महान कार्य हमने आरंभाहै सोनिश्चय कर सिद्धहोगा॥

कितनेही भाई पत्रनहीं पंहुचनेसे हमपर नाराजहुये और कई चिठी भेजी सोहम उन भाइयोंसे क्षमा करातेहैं॥

जाति की उन्नति

यहतो हमारे सर्वभाईयोंको भलेप्रकार निश्चय होगयाहै की इस समयमें हमारी जाति की बहुत न्यूनदशा होरहीहै॥ क्या विद्यामें औरक्या धनमें, क्या राजप्रतिष्ठामें, क्या धर्मधारण करनेमें और क्या शुद्धआचारण करनेमें, जिस काममें देखो उसमें न्यूनदशा दिखाई देतीहै अगर बढवारी हैतो अज्ञान की या अधर्म की, वैर विरोध की या कलहकी फिजूल खर्ची की या दलिद्रकी है॥

यह अवस्था देखकर कितने

ही स्वधर्मानुरागी स्वजाति हिते च्छुभाई ज्ञाति और धर्मकी उन्नति करनेमें तत्परभी होरहेहैं परन्तु वसब अपनी २ समझके मुआ फिक अकसर अकेले कारस्वाई करतेहैं उनको और भाईयोंकी सहायता नमिलनेसे उछाह कम होजाताहै इसलिये जोकुछ परि श्रम वे करतेहैं वह वृथा जाताहै अगर सर्वभाई मिलकर कार रवाई उन्नतिकी करें तो निश्चय होताहैकि कार्य बहुतसीघ्र सिद्ध होवे इसविषयमें एक दृष्टांत लिखतेहैंः-

चित्रग्रीव कपोत राज की कथा

एक समय एक व्याधा बन में गया और वहां चांमलके कण फैलाकर जाल बिछाकर एक वृक्ष के नीचे बैठगया कि कोई पक्षी आवे और जालमें फसै

इतनेही में चित्रग्रीव कपोत राज अपने परिवार और प्रजा वर्ग सहित आकाशमें उडतेहुए उधर आनिकले

चांमलोंको बिखरेहुए देखके उनके साथी चुगनेको नीचेउतर नेलगे तव कपोत राजने कहा कि इस निर्जन वनमें तंदुल कहांसे आये यह अवश्य शंका करनेका स्थानहै साथीयोंमेंसे एक बोला कि खाने पीनेमें सर्व जगह शंकाहै अगर शंकाही कर ते रहेंतो पेट कैसे भरें आज प्रभातही घरसे निकलतेही भो जन मिला सो अब हमतो यहां ही जीवका करेंगे यह सुनके वे सर्व कपोत चित्रग्रीव के मने करने पर भी नमान कर वहां उतरे और चामल चुगते चलते हुए उनके पंजे जालमे फसे तब वह व्याधा बहुत हर्षित हुआ-

आगे अपने तई जालमें बंध

हुए देखकर वे सर्व कपोत उस अगवानी कपोत पर जिस की सलाहसे चांवल चुगने उतरे थे और जालमें फसे बहुत क्रोधाय मान हुए और उसको बुरा भला कहनेलगे तब चित्रग्रीव कहने लगेकि देखो दुनियाकी कैसी रीति हैकि एक अगवानीके कहे से सर्वजन कार्य करतेहैं लाभ होनेसे सर्व बराबरके सीरी होते हैं और अपना भ्याग्य मानते हैं और कार्य बिगडनेसे अगवानी का अपराध बतातेहैं और उससे द्वेष करतेहैं हे मित्रों यह उलटी रीति छोडो और तुमजो दुःखकी अवस्थाको प्राप्ति भयेहो सो अप नाही दोष समझो और इस दुःख से छुटनेका उपाय चिंतवनकरो

तबंव सर्व कपोत सांति होय कर चित्रग्रीव की प्रसंसा क के कहनेलगेकि इस दुःखसे छुटाने का उपाय हे कपोतराज आपही बताओ

चित्रग्रीवने कुछ देर बिचार के कहाकि हे मित्रों उपायतो मैंने सोचा परंतु कठिनहै इसमें आप सर्वकी पूर्ण बलकर सहायताकी आवश्यकताहै तब उन्होंने कहा कि हम आपकी आज्ञा प्रमाण करेंगे आप हमें इस कष्टसे बचा कर जीवदान दीजिये

चित्रग्रीवने कहाकि हम सब बलहीन निर्बल हैं एकका किया कुछ नहीं होसक्ता इसलिये तुम सब एकसाथ एकसमयमें जोर लगाकर उडो तो इस जालको यहांसे ले उडो आगे में अपने मित्रोंसे बंधन कटाऊंगा यह सुन वसब कपोत एकसाथ जोर लगा कर उडे और जाल को उठा के लेगये और चित्रग्रीवके मित्र मूपककी सहायतासे निर्बंधन होय

सुःखको प्राप्तिहुए॥

हे जैनी भाईयों जैसाकि वे कपोत व्याधाके जालमें फसेहुए दुखी थे वैसेही आपभी अज्ञान हीनाचार आदिके जालमें फसे दुःखी होरहेहो और उस फंदसे छुटनेका उपायभी करतेहो परंतु जैसे उनकपोतोंने परस्पर एक्यता करके एकवारगी जोर लगाया वैसे आप एक वारगी एक साथ एक्यता करके अपनी शक्ती नहीं संभालते इसी कारण आपका उद्यम विफल होताहै सो अब आप एक्यता करके अपनी

२ शक्तिप्रमाण शक्तिको नछिपाकर विद्या और धर्मकी उन्नतिका उद्यम करो तो जैसे वे कपोत अपने दुःखसे छुटे वैसे आपभी अवनतिसे छुट ज्ञान धन और धर्मलाभको पाओगे

जैनियोंमें एक्यताकी अत्यंत आवश्यकता है सो सर्व भाईयों को करके उन्नतिका उद्यम अवश्य करना चाहिये

जैनो छात्र गणो की परीक्षा

हमारे पत्र नछपने से एक बडा भारी नुकसान यह हुआ कि जैनविद्यालय भंडारकी तरफ से जो परीक्षा होती थी वह नही हुई इसका हमको वडा पश्चाताप है अब नये सिर से यह प्रबंध किया जाताहै कि परीक्षा सालियांना हुआ करैगी और सालभर में जो कुछ व्याजकी आमदनी होगी वह इनाम में बांटी जायगी परीक्षाके वास्ते निम्नलिखित विषयहै इनको अगर कोइ भाई कठिन समझेंकि इतनी पढाई वर्षदिनमें लडका नहीं पढसक्ता तो हमको कृपाकर जलदी पत्र

भेजें वाजिव समझी जायगी तो उनकी सम्मति अनुसार पढाई कम करदी जायगी

हमारी सर्व जैन पाठशाला ओंके अधिकारी और अध्यक्षो से यह प्रार्थनाहै कि अपनी २ पाठशालाओंमें जो लडके पढने के लाइक हों उनको इसी मा फिक पढाना शुरू करदें और हमको पत्र द्वारा इतला देवें ताकि हमको जरूरत होतो हम उनसे पत्र व्यवहार करैं

पढाई एक वर्षकी परीक्षा कार्तिग सं १९५१ में होगी प रीक्षा की मिती पीछे नियत की जायगी

प्रथम कक्षा

रत्न करंड श्रावका चार सं स्कृत श्लोक भाषा अर्थ सहित कंठस्थ संपूण

द्रव्य संगृह प्राकृत गाथा भाषा अर्थ सहित संपूर्ण कंठस्थ दोनोंकी श्लोक संख्या २२५

लघु कौमदी अजंतनपुंसक लिंग संपूर्ण साधनका, अर्थ सहित

दुतिय कक्षा

तत्वार्थ सुत्र दशों अध्याय सामान्य अर्थ सहित कंठस्थ

सिन्दूर प्रकर्ण अर्थ सहित श्लोके कंठस्थ

लघु कौमदी भुआदि गण संपूर्ण

हिसाब दोनों कक्षाके वास्ते अगले महीने के पत्रमें लिखेंगे

तीसरी कक्षाके वास्ते इससे ऊंचे दरजेकी पढाइ क्या होनी सो हमारी अर्ज पंडित बलदेव दासजी नंदरामजी छेदालालजी पनालालजी गुलाबरायजी से है कृपा कर जल्दी लिखें सो आपकी सम्मति अनुसार नि

यत की जाय तीसरी कक्षामें कौमुदी संपूर्ण करनी यह हमारी सम्मति है

हमारे परम मित्र लाला वालमुकंदजी गोधा कामटी निवासी हम पर बडी कृपा रखते हैं ह[illegible]शह पत्र भेजते रहतेहैं [illegible] पश्चाताप हैकि उन[illegible] जैन प्रभाकरमें नहीं [illegible] अब हालमें उनका पत्र [illegible] से आवा उसमें लिखाहै कि वहां पर २० घर जेनियोंके हैं करीब २५ आस पासके ग्रामोंमेंहैं अज्ञानका प्रस्तार तो सर्व जेनीयों में हैही यहभी भाई उससे नहीं बचे हुय थे और धर्म शास्त्र से अज्ञान थे

इस साल भादवामें मैं वहां रहा और धर्मोपदेश दिया तो इनको धर्ममें रुचिहुई और कुदेव कुवार का पूजना मानना रात्रि भोजन कंद मूल सहत आदि अभक्ष का त्याग किया कई स्त्रीयोंने भी वृतलिये शास्त्र जी सुनने और स्वाध्याय करने की प्रतिज्ञा गृहण की और सब से उत्तम कार्य यह हुआ कि यहां पर कोई जिन मंदिर नहीं था जिन मंदिर बिना धर्म सेवन करना भी मुशकल था सो सर्व भाईयोंने मिलकर मंदिर बनाना स्वीकार किया है मंदिरजी के वास्ते जगह मुनशीलालजी पारसदासजीने दीहै और अग्रेश्वर होकर नीम लगाने का भार अपने ऊपर लियाहै देखरेखभी इन्हीं के सिरपर है सर्व भाईयों की सहायता से मंदिर बहुत जलदी तयार होजायगा और धर्म की बडी प्रभावना होगी

हम यह समाचार पढकर

बहुत खुशहुये लाला वालमुकंद जी और मुंशलिालजी पारसदास जी की धर्म प्रभावना रूपवृति अधिक प्रसंस नीयहै रायपुर के सकल जैनी पंच धन्यहै जिन्हों ने श्रीजिनमंदिर वनानेका उद्यम किया मंदिर है सोई एक अकेला इस समयमें धर्म सेवन करनेका ठिकानाहै मंदिर में अनेक जन पूजा शास्त्र जप तप ध्यान जिनेन्द्रगुनगान आदि श्रेष्ट कार्य करके पुन्यके भंडार भरेंगे जब तक मंदिर रहगा धर्मामृत का अखंड प्रवाह बहता रहगा जिसका सेवनकर अनेक उत्तम जन आत्मकल्याण करते रहगे इस परम उपकारके करनेवाले मंदिर के वनाने वाले होंगे

इस जगह हम यहभी लिखना वाजिब समझते हैं कि कितनेही भोले शास्त्रज्ञान रहित भाई मंदिरमें पंचायत आदि लोकिक कार्य कलह क्रोधादि धर्मविरुध कार्य करके मंदिर में पाप बंधकरते हैं सो यह बहुत बुरी बातहै त्यागनी चाहिये रायपुरके भाई प्रारंभसेही एसा प्रवंध करें कि जिससे मंदिरजीमें पंचायत आदि क्रोध कलहकारी पाप बंधकारी धर्मविरुद्ध कोई कार्य नहीं होने पावे मंदिर में फकत एक अकेले धर्म सेवनके कार्य होवे

जो प्रबंध प्रारंभमें होताहै सोई हमेशह जारी रहताहै इसलिये प्रारंभ में सर्व अच्छे प्रवंध होने चाहिये

इस लेख को पढकर अगर और शहरों के भाई भी अपने अपने मंदिर मेंसे पंचायती कलह आदि पापोपार्जक कार्य उठा देंगे और इस शुभ समा

चारकी चिट्ठी हमें लिखेंगे तो हम कृतार्थ करेंगे उनकी चिट्ठी मुद्रित कीजायगी जिससे धर्म प्रभावना होवे

हम इन्दोरके पंचोंकी चिट्ठी बडे हर्ष से सर्व भाईयों के आनंदार्थ मुद्रित करतेहैं

यहां नरह पंथानके मंदिर में पाठशालामें शिष्य जन ३५ पढे छे जिनों की परीक्षा भादों बदी ३ के दिन भई परीक्षा श्री भाईजी साहिब झग्गडलालजी ने लीनी कन्हैयालालकी उत्तम परीक्षा भई व्याकर्ण तथा सज्जन चित्तवल्लभ गोमटसारजी और सिन्दूर प्रकर्ण में सो जानना और हजारीलाल गुलाबचंदकी छंद शास्त्र तथा नित्य नैमित्तक पूजनमें उत्तम परीक्षा दीनी तथा कुंदनलाल मगनीराम फतेलाल चंपालाल कीं सारस्वत भक्तामर चारित्र सूत्रपाठ पूजन में परीक्षा उत्तम भई अन्य शिष्यजनकी पूजन दर्शन मंगल पाठ पृभृत में परीक्षा भई उस वक्त श्री महाराज हुलकर साहके मास्टर आला आये थे सो देखकर बडे राजी भये और श्री पाठशाला अध्यक्ष पंडित राज श्री जीवनरामजी के तनखा रु: २०) तरक्की जादा करी और सिरोपाव दिया और जो विद्वान महाराज के मदरसाके मास्टर लोग आयेथे उनको फी आदमी रु: १) और श्रीफल फूलमाला सहित सन्मान किया गया और छात्रगण ३५ को मिठाई पेडा लड्डू दिये गये और एक काम बडा अद्भुत भया श्री चंपालाल जी झांझरीने पाठशाला में रु: २०००) दो हजार हमेशा कूं

दिये जिनोंके व्याजका उत्पन्न पाठशाला के खर्चमें लगे और ऊपर जो खर्च रुपया अध्यापक वगैरह कूं भया लिखा है सो सर्व श्री चंपालालजी झांझरीनें दीया-

नृत्यसाला नियत की गईहै और मारवाड में रवासाग्राम है सीकरसे कोस ५ है वहांपर भी विंव प्रतिष्ठा फागुन सुदी २ की श्री रामचंदजी सोलालजी करावेंगे

अनुमति श्री चंपालाल जी झांझरी ने पाठशाला में रु २०००) देकर विद्या की जड पुष्ट करी और विद्या दातारों में अग्रेश्वर हुये जैन धर्मकी महान प्रभावना करनेका प्रारंभ किया इन की कीर्ति जगत में विस्तरेगी

जैन महा सभा

बंबई जैन दिगंबर सभाकी तरफसे जो जैन महा सभा के बाबत सर्व देशों के जैनियों को चिठ्ठी भेजी गई थी उसके अनुसार जैन महा सभा इस साल मथराके मेलेमें एकत्र हुई और उस के कार्य्याध्यक्ष और सभासद नियत होगये ॥

लाला मूलचंदजी वकील मथरा निवासी पंडित प्यारेलाल जी अलीगढ निवासी और बाबू भैरवप्रसादजी इलाहबाद निवासी सेक्रेटरी नियत हुये और सभाका सदर दफतर मथरा में सेठ साहिब श्री लछमणदासजी जो इस सभाके प्रधानहैं उनकी निगहवानी में रहेगा

हमारी रायमें यह काररवाइ दुरस्त मालूम होती है लेकिन

अगर इसमें लाला गोपालदास जीको भी कि जिन्होंने बडे परिश्रमसे यह सभा नियत कराई और जो खुरईके मेलेके समय में इस सभाके वास्ते अनेक प्रकारके उद्योग कर रहेथे उनको भी सैक्रटरी बनाये रखा होता तो औरभी श्रेष्ट होता क्योंकि पंडित प्यारेलालजी और बाबु भैरवप्रसादजी नये अध्यक्ष होने के कारण सभाके कामसे इतने वाकिफकार नहीं होसक्ते हैं जितने लाला गोपालदासजी थे॥

हम खयाल करते हैंकि अगर सभाके सैक्रटरी अबभी चिठ्ठी द्वारा लाला गोपालदासजी से सलाह मशवरा करते रहेंगे तो सभाको लाभ दायक होगा

इस प्रसंगमें हम यहभी लिखना चाहते हैं कि आगेको पुराने कारिंदों को दूरकर सब नये कारिंदे नियत करना नहीं चाहिये अगर पुराने कारिंदोंकी जगह नये कारिंदे किये जायेंगे तो सभा को पुराने कारिंदों के तजरुबे के नहोने से नुकसान पहुंचेगा और वह धारा प्रवाह कार्य पुराने कारिंदों के नहोनेसे बंद होजायगा, नये २ कारिंदे नई २ रीतसे कारखाई करेंगे कोईभी काम फल देनेके समय तक नहीं पहुंच सकेगा और फल नमिलने से सर्व लोगोंको सभा से अरुचि होजयगी इस प्रकार अंत में सभा भी नष्ट हो जायगी इसलिये हमारी रायमें पुराने कारिंदों से काम लेने में उनके ऊपर बोझ पडताहै और कामका जिम्मेवार होना पडता बे सिलसिले वार धारा प्रवाह कारखाई करते चले जाते हैं और जो कुछ काम उठाते हैं

उसको प्रारंभ से अंत तक सिखिर को पहुंचाकर कलश चढा देतेहैं

महा सभा के सम्बंन्ध में एक भंडार भी नियत हुआ है इस भंडार से क्या क्या काम लियेजायंगे और क्या क्या उपकार किये जायेंगे इन सब का पूरा पूरा हाल हमको उस समय नहीं मालूम होसका सभा की रिपोर्टसे जाना जायगा हम उस समय इस विषय में कुछ कहना भी चाहते थे परंतु अवकाश नमिला और दोयम मेले के भीड और भड भड में हमारा कहा हुआ बहुत लाभकारीभी नहीं होना इस कारण हमने विचार किया कि भंडार का काम बडा भारी महान कार्य है इस विषय में सुवीते से जैन प्रभाकर द्वार सर्व भाईयों से निवेदन करेंगे सो अब कुछ संक्षेप सा लिखते हैं विशेष सभा की तरफ से ठीक ठीक समाचार मिलेंगे तब विस्तार सहित लिखेंगे

प्रथम इस भंडार का नाम जैनोपकारक भंडार रखना चाहिये और इसके मूल द्रव्य को खर्च नहीं करना किन्तु व्याज से जैनियोंका सर्व प्रकार का उपकार करना चाहिये

व्याज के हर १००) रु: के पांच विभाग करने उन में से रुपया २०) बीस जिन धर्म सम्बन्धी विद्या वृद्धि करने में रु: २०) प्रासुक औषध बांटने में रु २०) गरीब विधवा अनाथ और दुर्बल बाल वृद्धि जिनकी परवरिश करनेवाला कोई नहीं हो उनकी अन्न पान वस्त्रादि से

सहायता करने में २०) ऐसे ग रीब सद गृहस्थी जो धन हीन होने के कारण जीवका रोजगार रहित हो गये हैं और अपने कुटंब का पालन अति कष्ट से करते हैं उनको पूंजी की सहा यता देकर रोजगारसे लगा देने मे खर्च होना चाहिये॥

यह सहायता दो प्रकार से दी जासक्ती है अवल जो भाई दान पेटे में लेना चाहैं उनको उस तरह देकर खर्च खाते में डाल देना और जो भाई सहा यता पेटे में लेना चाहे उनको उधार की तौर पर व्याजू या बे व्याजू दे देना और फिर अ सल रकम वसूल कर लेना अ गर लेने वाला भाई किसी का रण वापिस देने मे असमर्थ हो जाय तो उस पर अदालत या पंचायतीमें नालिश नहीं करनी किन्तु उस रकम को दान पेटे में डाल खर्च खाते मांडनी क्योंकि यह भंडार उपकारार्थ बनाया जाता है दुख देना इस का काम नहीं होगा

पांचवा हिस्सा जो रु: २०) सहायक भंडार के वृद्धि करने और दफतर चिट्ठी चपाटी आदि के खर्चमें आनेके लायक समझा जावे

इस के सिवाय अगर भाई इन पांचों पेटोंमेसे किसी खास पेटे में अपना रुपय जमा करा ना चाहे तो उसी खास पेटे मे जमा करके उस कुल रकम का व्याज उसी एक पेटे में खर्च करना ऐसाभी होसक्ता है परंतु इसमें काम बढ जायगा हिसाब न्यारा न्यारा रखना पडेगा और मुमकिन है कि कोई पेटा बढ जायगा कोई घट जायगा इस

कारण हमारी राय में तो बिह तर यही मालूम होताहै कि कुल रुपया एक जगह जैनोपकारक भंडारके नामसे जमा होवे और व्याज का विभाग ऊपर लिखे क्रम से अथवा न्यूनाधिक जैसा सर्व भाईयों की सम्मती ठहर जाय उस हिसाबसे खर्च किया जाय

हमारा लिखना एसा नहीं समझनाकि हमारे लिखे प्रमाण ही करना चाहिये लेकिन हमारा लिखना केवल समस्या मात्र है और इस समस्या पर सर्व भाई अपनी अपनी बुद्धि अनुसार विचार कर सम्मती देवें और भंडार के सैक्रटरी लाला मूलचंद जी प्यारेलालजी भैरवप्रसादजी सर्व सम्मती अनूसार काररवाई करें

बाबू रत्नचंदजी वकील हाई कोर्ट की सम्मती से जैन विद्यालय भंडार के नियमों में कुछ न्यूनाधिक हुआ है और उनकी राय हैकि जैन विद्यालय भंडार को जैनोपकारक भंडार कर देना चाहिये एसा होने से भंडार से गरीव जैनियों को वडा लाभ होगा और प्रत्यक्ष अपनी जाति को लाभ और उसकी उन्नति देखकर दातार लोगों का दिल देने को भी उमगेगा इस तरह भंडार की आमदनी भी वढजायगी लेकिन इस विषय में हम अभी कुछ नहीं राय दे सक्ते हैं जोकि मथरा में भंडार हुआ उस को जैनोपकारक भंडार का यम अवश्य करना एसी हमारी सम्मती है और वह नियमावली अगर सैक्रीटरी साहिवान चाहेंगे तो उनकी चिठ्ठी आने से हम भेजदेंगे

श्री

जैन प्रभाकर

अजमेर

अर्थात्

जैन धर्म और जैन सभा संमधी माशिक पत्र

जिसको

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ लाला छोगालाल

अजमेरा ने प्रकाश किया है

नम्बर ५

मिती पौष सुदी १ संवत १९५० का

वार्षिक मुल्य १) एक रूपया

भार्गव प्रेस अजमेर में छपा

विज्ञापन

सर्व भाईयों से जिन के पास जैनप्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र और मित्रों को पढने के वास्ते देदेवैं और मंदिरजी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावग एकत्र पढकर सुना दें ॥ आप के शहर की जाति और धर्म सम्बन्धी नई वार्ता पत्र में छपाने को भेजें ॥ जो भाई पत्र लेनाचाहें हमें पोस्टकारड भेजकर मंगालेवें

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहरवालों से ॥≈) बाहरवालों से मय डांक महसूल १) और एक पुस्तक का ८) है ॥

यह पत्र हर महीने में छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करन वैर विरोध मेटना, विद्या धन धर्म जाति की उन्नति करना इस के उपदेश हैं ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलीटीकिल वार्ता मतमतान्तर का झगडा इस में नहीं छपेगा

विज्ञापन

॥ सस्तादाम और अच्छाकाम ॥

सब सज्जन महाशयो से साविनय निवेदन है यहा लोग बहुधा कहाकरते कि इस राजपूताना देश में ऐसा कोई उत्तम छापाखाना नहीं है जहां कि सब प्रकार की छपाई उत्तमरीति से होती हो और प्रबंध अच्छा तथा संपादक प्रामाणिक और प्रष्ठित हों काम अच्छा और नियत समय पर तैयार होजाय इस अभाव के दूर करने के लिये हम लोगो ने प्रेस खोला है इस मे सब तरह की छपाई उत्तम रीती से होती है मूल्य उचित लिया जाता है सामान सब उत्तम है अब जादा तारीफ कर हम अपने मूह से मिया मिठ्बनना अच्छा नहीं समझते जो महाशय हमारे यहां काम भेजैगे वह आप देख लैंगे क्योंकि इतर वह जो अपना गुन आप कहै न कि गंधी जिन महाशयों को कुछ छपवाना हो वह नीचे लिखे पते से भेजैं

भार्गव प्रेस घास कटला अजमेर

समस्त चिट्ठी रुपया वगैरह लाला छोगालाल कोषाध्यक्ष जैनसभा के नाम भेजना चाहिये ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ४ | अजमेर जनवरी सं० १८९४ | संख्या १

सर्व प्राणी अपनें इष्ट बंधु और परिवार सहित सुखी रहना चाहते हैं। यहां सुख की कक्षा स्वभाव जनित है. और बहुधा करके यह सिद्ध भी हो सक्ती है अगर इस का अनुष्ठान यथावत होवे तो॥ लेकिन हमारे भाई बहुधा विपरीत कार्य करने में आशक्त हैं और इसी कारण वे अपने कुमार काल से ले मर्ण परयंत अपनी संपूर्ण आयु अति संक्लेश और फिकर से व्यतीत करते हैं और मरने के पिछे अपने दुखों का भार अपनी संतान के सिर पर छोड जाते हैं. कि जिन के बोझ के नीचे वे ऐसे दबे रहते हैं कि उन से अपने इस लोक तथा पर लोक संबंधी कल्याण निमित कोई भी अच्छी क्रिया नहीं होसक्ती है॥ इस दुख अवस्था में प्राप्ति होने के अनेक कारण हैं लेकिन उन सब में बढ के हम खयाल करते हैं कि अपव्यय याने फिजूल खरची है जब अपने बुरे आचर्णों के कारण दुखी होजाते हैं और छुटकारा नहीं पाते तो कहते है कि हमारे द्रवोपार्जित अशुभ कर्म्मों का फल है कितने ही लोग सरकार

का दूषन बताते हैं कि सरकार ने बहुत टेक्स लगा दीयें, इस से हम दुखी हैं और कितने ही कहते हैं कि व्योपार की कमी होगई इस से रोजगार नहीं रहा इस से वे दुखी होगये हैं ॥ लेकिन विचार कर देखा जाय तो निश्चय होजायगा कि हमारा सुख दुख हमारे ही हाथ में है अगर हम अपने हाथों अपने पैर में कुल्हाडी मार कर अपने दुख पैदा करैं तो इस में किस का दोष कहा जावेगा यह दोष हमारा ही समझा जायगा पशु और ममुष्य में इतना ही भेद है कि मनुष्य ज्ञानवान और विचार शील होने के कारण अपने सर्व कार्य आगा पीछा सोच कर करता है वरना खाना सोना लड़ना विषय करना और संतान को पालना दोनो का समान है ॥ पहले अपने घर की दुरस्ती करनी चाहिये और एक समाज के सर्व जन अपनी २ दुरस्ती करैं तो कुल समाज की दुरस्ती और उन्नती स्वय मेव होजायगी जब कभी बुखार आदि की बीमारीयोंका अधिक फैलाव होना है और घर के घर और बस्ती और शहर के सब लोग उस में पडजाते हैं तो ऐसे समयों में अथवा सर्वदा बुद्धिमानों का यह कहना है कि बीमारी हुये पीछे इलाज कराकर आराम करने से यह बिहतर है कि बीमारी को पैदाही नहीं होने देना ॥ और इसी प्रकार से नई विद्या सीखने से बिहतर यह है कि पुरानी सीखी हुई नहीं भूलना और इसी प्रकार नये धन उपार्जन करने से पुराने धन को नहीं विगडने देना । बहुत से लोग बालबुद्धी हैं. वे वर्त्तमान काल का सोच करते और भविष्यति का कुछ विचार नहीं करते है ॥ जो कुछ वे आज कमाते हैं तो नबाब जादे बन जाते हैं और सर्व खर्च कर दूसरे दिन कर्ज़ लेते या भीक मांगते फिरते हैं ॥ बुद्धमान लोग अपने यशकीर्त्ति का विचार करने वाले दूर दर्शी होते हैं. और इसी लिये वे अगामी काल के वास्ते सर्व प्रकार का बंदोबस्त कररखते है अगामी काल का बंदोबस्त नहीं करने के कारण

जब कोई ज़रूरी काम जैसे पुत्र का जन्म वा पुत्री का विवाह या पिता का औसर आन पडता है तब अवश्य कर्ज लेना पडता है उस में भी दो प्रकार के मनुष्य है एक तो वे जो अपनी हैसियत के माफिक खर्च करते है और दूसरे वे जो अपनी हैसियत से अधिक करदेते हैं परंतु कर्ज़ लेकर खर्च करने के विशय में वे दोनो समान और निर्बुद्धी है. क्योंकि कर्ज लेकर अपने गले में एक बडा भारी पत्थर बांध दुख के समुद्र में डूबना है जिस में से निकलना अत्यंत कठिन है अगर आप बाजार में कपडा खरीद ने जावें और अगर एक बजाज की दुकान पर एक कपडा रुपये गज मिले और वोही कपडा दूसरा साढे पंद्रह आने गज देवे तो यकीन है कि आप साडे पंद्रह आने में खरीदेंगें रुपये में हरगिज नहीं खरीदेंगे और अगर आप साडे पंद्रह आने गज मिलते संतेरुपये गज खरीद लेजावोगे तो आप के मित्र आप को बेवकूफ और निर्बुद्धी बतावेगें और यकीन है कि आपकी स्त्री तोइस बात को सुनकर बहुत ही नाराज होगी और लडेगी और आप को भी शरमिंदा होनापडेगा और अपनी बेवकूफी पर पछताना पडेगा इस बात को सब लोग जानते हैं कि विवाहादि कार्य्यों मे हैसियत से ज्यादह खर्च करने को कोई न्यात बिरादरी का जबर्दस्ती कर के ज्यादह खर्च नहीं करवाता या कम खर्च करने वालों को बिरादरी कुछ दंड नहीं देती है परंतु तो भी अपनी उठी प्रतिष्ठा को बढाने के वास्ते या अपने को अधिक धनवान जाहिर करने को कर्ज लेकर भी ज्यादह खर्च करते हैं यह उन लोगों की मूर्खता है ॥ जो ब्याह या कारिज एक हजार रुपये में आप करै और वही ब्याह या कारज पांच सौ में भी आप करसकें तो वाजिब है कि आप पांच सौ में कर के पांच सौ की किफायत करैं अगर पांच सौ रुपये में होते हुये कार्य में एक हजार रुपया खर्च करदेंव तो निर्बुद्धि आपके बराबर दुनिया में कोई भी नहीं होगा जैसा कि ऊपर दृष्टांत दिखाया गया है कि साडे पंदरह आने

में मिलती हुई वस्तु को जो एक रुपये में खरीदता है वह बडा मुर्ख समझा जाता है और उस के पुत्र स्त्री और मित्र सब उस की निंदा करते हैं तो विचार करो कि दो पैसे मुफ्त खर्च करने से इतना मूर्ख बनना और पश्चाताप करना पडता है तो पांच सौ रुपये मुफ्त खर्च करने से और सोभी कर्ज़ लेकर या जिमी जायदद जेवर वेच खर्च करने से कितना बडा मूर्ख और कितना गुना ज्यादह पश्च-ताप नहीं करना होगा. भाईयों जरा इस बात पर विचार करो और अपना धन खर्च करके आप मूर्ख और दुखी मत बनो ॥ लेकिन इस विषय में एक वडे शोक की बात यह है कि दो पैसे मुफ्त खर्च करने से घर के स्त्री पुत्र और मित्र वडे नाराज होते है परंतु वेही स्त्री पुत्र और मित्र विवाहादि कार्य्यों में दवा दवा कर हजारों रुपये मुफ्त लुटवाते हैं बल्के अगर वह शख्स खर्च नहीं करना चाहै थवा उसके पास खर्च करने को नहीं होवे तो जो मित्र कहलाते है वे अकसर अपने पास से रुपया देकर और चीते की तरह बढावादेकर कि तुम्हारे बाप दादा वडे नामी हुये उन्हों ने बडे बडे भारी नुकते किये और हजारों रुपये मुफ्त लुटाये अब तुम थोडासा लोभ करके उन के नाम को दाग मत लगाओ अगर तुम्हारे पास नहीं है तो यह लो और खर्च करके दुनिया में जस लो एसा कहकर उस के सिर कर्ज़ का भार चढा देते हैं ॥ कोई २ एसा करते हैं कि जब वे देखते है कि यह मनुष्य ज्यादह खर्च करना नहीं चाहता तो उस की भोली स्त्री को जाकर फुस-लाते और बहकाते हैं तब वह आ-कर अपने धनी से लडती और ताने तिसने देती है कि तुम बाप दादा के नाम को डुबोने वाले अच्छे पैदा हुये बेटी का ब्याह क्या बार २ करोगे क्या ये ब्याही संबंधी तुम्हारे दरवाजे बार २ आवगें लो यहमेरी माला करन फूल और झेले लेजाओ और गिरवी रखकर सेठजी के से रुपया लेआओ और खर्च करो जिस से बात न जाय तब उस बेचारे गरीब को जा और और बेजा कर्ज़ लेना और अपनी सामर्थ से ज्यादह खर्च करना पडता है

लेकिन इस का क्या परिणाम होता है सो अकसर बहुत लोग जानते हैं तथा जो नहीं जानते हैं उन के जानने के वास्ते हम लिखदेते हैं और उमेद करते हैं कि वे आइंदे कर्ज़ नहीं लेवें गे ॥

हमारे पड़ोस में एक भलेमानस रहते थे उन की दुकान दारी अच्छी चलती थी हजार दो एक रुपया उन्हीं ने कमाया था उस से अपनी धिरानी के वास्ते कुछ जेवर भी बनवादियाथा वे मंदिरजी में भी आते थे और पूजा शास्त्र में लगा कर दो घड़ी निश्चिंताई से धर्म ध्यान भी करते थे उन के एक लड़का और एक लडकी थी दोनों की सगाईयां बचपन में ही करदीगई थी पहले और अब वे व्याह जोग हुये. लडके का व्याह हुआ लगन आई नाई कमीनों की विदा में रुपया १५०) पूरे हुये यद्यपी बहन और लडके की माकी भायली आदि रिशतेदारों को रोज़ खिचडी जिमाने और घी बहाने लगे हररोज़ बिंदोरी धूमधाम से आधीरात को निकलती थी सैकडों मसालें जलती थीं और आतिश बाज़ी छूटती थी रंडी नाच करती थी शोरे पुश्त लुंगाडे नाच का मज़ा उड़ाते थे बींद के बाप और उस के साथियों को नाच देखने के बजाय धक्के खाने पडते थे. गरज़ इसी तरह मने बज़ार में धूमधाम कर घर को लोट आते थे ॥ फिर ज्योनार में पांच पकवान की तैयारी हुई और बरातियों को खूब खिचडी खिलाई बरात की निकासी में तोरण के वक्त खूब फूलवाडी लुटाई और आतिशबाज़ी खूब दिल खोल कर छुटाई बेटी वाले के दरवाजे पर बतासे और सुपारियां खूब बांटीं बहू को लेकर घर आये बहन बेटी भायलीयों को वेस देदे कर बिदा किया व्याह के खर्च का हिसाब लगाया तो रु० २०००) खर्च पडे एक वक्त रात को धनी धिरानी बातें करने लगे कि रुपया हमारी हैसियत से ज्यादह खर्च पड़ा परन्तु नामवरी बहुत हुई ॥ अब इधर दुकान में से पूंजी निकल जाने के सबब से बज़ार का रुपया उधार रखना पड़ा दिल को फिक्र

पैदा हुआ धर्म ध्यान में चित्त नहीं लगनेलगा और अब छे महीने पीछे ही बेटी का व्याह भी करना पड़ा पूंजी तो रही ही नहीं थी बाहर का रुपया जो दुकान में लगताथा सो खर्च होने लगा और खांड घी उधार मंगाया सो माथे कर्ज़ हुआ आगे पहरावनी देने को रुपया पास नहीं रहा और दो चार पंच चोधरी दबाने लगे तब रु० २००) एक दोस्त ने हाथ उधारे दिये पहरावनी अच्छी होगई लड़की सासरे गई और फिर वापिस आगई व्याह बहुत अच्छा होगया अब सेठजी दुकान पर बैठे और लेनदारों के तकाज़े आने सुरू हुये. पहले तो वे मित्र जिन्होंने पहरावनी के वक्त दोसो रुपय दिये थे सो आन कर छाती पर चढने लगे एक दो दिन टालम टोला की आखिरकार सेठानी के करनफूल झेले गिरवी रख कर उनको चुकया और बाकी खांड वाले को दीने फिर घी वाला तकाज़ा करने लगा तब लड़की का जेवर गिरवी रखकर कुछ चकाया और कुछ पीछे देने का वादा किया. दुकान में माल नहीं होने से बिक्री कम हुई थोकबंदी माल बेचने वाले दुकानदार माल देने से इनकार करने लगे उधर बोहरे ने भी रुपया न पहुच ने से तकाज़ा किया घर में खर्च जियादा हुआ आमदनी बंद हुई. एक रोज बोहरे ने नालिश कर डिगरी हासिल की थी उसे जारी करवाकर दुकान का माल कुर्क करवालिया अब दुकान भी बंद हुई पर देना माथे रहा अब दो चार महीने घर में बैठारहना पड़ा सो जेवर बेच २ कर खाने लगे लोगों की नालिशें दायर होकर डिगरियें होगई सेठजी घर में छुपे हुये बैठे रहै लेनदार हवेली के बाहर अदालत के चपरासी को साथ लिये खड़े राह देखते हैं कि कब बाहर निकलें कब हाथ पकड़कर जेलखाने भेज देंर ॥ कुछ दिनो के बाद सब फैसला होगया. मगर घर की सब पूंजी बरबाद हुइ दुकान उठगई जेवर बिकगया लड़की की सुसराल का जेवर गिरवी पड़ा है मुकलावे का वक्त क़रीब आताजाता है और सेठजी रोजगारकी तलाश में फिरते हैं परंतु को-

ई बात नही पुछता पास वैठ ने नहीं देता मारे २ फिरते हैं सो देखो भाईयो यह सब आफतें और मुसिवतें भोग ने का कारण यही है कि अपने पदस्थ और सामर्थ से ज्यादह खर्च किया ॥ अगर वह साहिब लडकी लडके के व्याह में थोडा रुपया खर्च करते तो क्या व्याह नहीं हो सक्ते थे वेशक होसक्ते थे हे भाईयो इसी प्रकार सेकडो सद गृस्थ खराब होगये जिन को आप अपने २ शहरों में देखसक्ते हो और कितने ही अब उसी रास्ते में खराब और बरबाद होने की कोशीस करते है इस वास्ते हम बार २ आपकी सेवामें अर्ज करते हैं कि आप कबतक वेचेत सोते रहो गे और कबतक इन बुरी रीतियों का सुधार नहीं करो गे हे भाईयो उठो जागो और अपने भाई और संबंधियों को कर्ज़ और वरवादी के अंधे कूये में पडने से थांमो क्यों निरदई हुये उन को और उनकी संतान को दुःख में डालते हो इस में विरादरी का कुसूर भी है परंतु बडा कुसूर उन लोगों का है जो आप अपने गले में पत्थर याने कर्ज बांधकर दुःख के समुद्र में डूवते है उन से हमारी प्रार्थना है कि दो दिन की नामवरी या वदनामी की कुछ परवाह मत करो परंतु हमेशा के सुख की तर्फ खयाल करो और अपनी आमदनी और हैसियत से ज्यादह खर्च मत करो लडडू खाने में तुम्हारे साथी सब हैं परंतु तुम्हरे कर्ज़ चुकाने के वास्ते कोई एक पाई भी नहीं देवेगा या भूखे प्यासे घर में वैठ रहोगे तब कोई भाई बंधु या व्याहीसगा विरादरी का आकर तुम्हें एक गिलास पानी का भी नहीं पिलावेगा सो प्रत्यक्ष देखने में आता है ज्यादह प्रलाप करने से क्या जिन्हैं अपना सुख इष्ट है वे फिजूल खर्ची और कर्ज़ लेने का त्याग करें

रथ जात्रा केकड़ी.

केकडी कसवा छावनी नसीरावाद से १८ कोस पर है व्योपार खास करके रुई का अधिकतर होता है वस्ती अच्छी है ॥ यहां पर दो जैन मंदिर और जैन सभा पाठशाला और अमृत संजीवनी जैन औषधालय है ॥ यहां के भाईयों की दान और धर्म में रुचि विशप है ॥ मेला रथ जात्रा का मंगसिर वदी ९ से ११ तक हुआ. रथ ३ थे सवारी बडे जलूस और धूमधाम से हुइ. मंडप की रचना अति उत्तम थी जिस में स्त्री पुरुषों के बैठने के स्थान न्यारे २ वने हुये थे जात्री करीव पांच हजार के जमा हुये मेले में मुन्शी हरनामदासजी साहिव डीपटी मजिस्ट्रेट की पूरी २ मदद रही और उन के अच्छे इन्तिजाम से मेले में किसी तरह का हर्ज या नुकसान नहीं हुआ. ॥ केकडी में एक यह वात निहायत उमदा थी कि वहा के सर्व अन्य मतावलंबी भाई वडी खुशी से आते थे और जैनीयों को प्रीत सहित हर तरह की मदद देते और जात्रीयों की खातिर करते थे ॥ अगर इसी प्रकार से और २ शहरों के जैनी और वैश्नव आदि भाईयों में एक्यता और दृढ प्रीत वनी हुई रहे तो अत्यंत हर्ष की वात होवे ॥

हमने केकडी का इस्कूल देखा. इस में हमारे मित्र वावू लाडलीप्रसादजी हेडमास्टर है पढाई अच्छी है और मुन्शी हरनामदासजी साहिव की इस पर पूरी तवज्जह है. मुन्शीजी साहिव विद्या वृद्धि करने में सव से ज्यादह कोशीस करते हैं और अपनी जाति की उन्नति करने में भी अग्रणीय हैं सेठ मूलचंदजी ने इस्कूल में मिठाई वाटी थी ॥

॥ सच्चा दान ॥

हैदराबाद दाखिन निवासी सेठ पूरनमलजी हनुमंतरामजी नामी कोठी वाले हैं सेठ हनुमंतरामजी की वहू जात्रा करती हुई यहां आई थी ॥ जैन प्रभाकर उन के वहां जाता है उस से उन्हें जैन विद्यालय का हाल मालूम था. उन्होंने अपना गुमाश्ता भेजकर रु० १००) रोकडी जमा कराया. और पुछवाया कि और कोई स्थान देने के लायक होय सो बताओ सो हमारे बता ने पर रु० ५० जैपुर जैनपाठशाला. ५०) केकडी औषधालय. २५) अजमेर जैन पाठशाला और १५०) मंदिरों में अपनी खुशी से दीने ॥ देखो भाई स्त्री जनो को भी धर्म प्रभावना ज्ञान दान करने में रुचि है तो मनुष्यों को तो अवश्य होनी चाहिये ॥

सालिगरामजी जवाहरलालजी जयनगर वालों ने भी अपने अंतरंग हृदय के उछाह से ज्ञान दान के वास्ते रु० १०१) की हूंडी जैन विद्यालय में भेजी है उन को भी धन्यवाद दियाजाता है और जिस प्रकार इन उदारचित श्रावका और श्रावकों ने अज्ञान अंधकार को मेट धर्म प्रभावना करने का मार्ग प्रघटकर दिखाया इसी प्रकार और २ भाई भी इन का अनुकरण करैं तो निःसंदेह जैन धर्म की सच्ची प्रभावना जैसी कि पूर्वा चार्यों ने वर्णन करी है होजावे ॥

जैन हितैषी पवित्र औषधालय मुरादाबाद के नियत होने की खबर सुने से हम अत्यंत प्रसन्न हुये हैं ॥

इलाहाबाद और सोनागढजी के स्टेशनों पर धर्मशाला बनगई हैं

जैनी जाती वहांजाकर ठहरें गे तो बहुत आराम पावेंगे ॥

कोमार व्याकरण जो अवतक पाठशालाओं में सिद्धों के नाम से पढाई जाती है लड्कों के पढाने योग्य वहुत सरल और सूगम है इस की प्रक्रिया बंबई जैन दिगंवर सभा की तर्फ से तैयार होरही है जिन भाईयों को खरीदना होवे उन को चिठी द्वारा सूचित करें ॥

ठिकाणा

जैन मंदिर दूसरा भोई वाडा बंबई

जैन शास्त्र नहीं छपाना

मथुरा की सभा में यह निश्चय हुआ कि जैन शास्त्र छपने नहीं चाहियें और न छपे हुये शास्त्रों को कोई जैनी पढने के वास्ते लेवें और कोई जैनी शास्त्रों को न छपावे ॥ आशा है कि इस महासभा की आज्ञा का पालन सर्व भ्रातृगण निःसङ्क होकर करें गे और जो भाई कि शास्त्रों को छपाना चाहते थे वे अब नहीं छपावेंगे हमारे भाईयों को यह भी याद रखना चाहिये कि जैन धर्म की रीत रिवाज सब से भिन्न और प्रथक है और जैनी संख्या में भी सर्व अन्य मतानु याइयों से थोडे है परंतु इतने थोडे होने पर भी वे आज तक अपने धर्म में थिर रहे और जैन धर्म प्रथक सब से भिन्न अवतक स्थिर है उसका मूल कारण यही है कि जैनी आज्ञा प्रधानी होने के कारण अपने शास्त्रों की और अपने गुरुओं की अपनी पंचायत के प्रधान पुरुषों की आज्ञा का अखंड पालते रहे और अब भी आज्ञा पालें गे तो आगे जैन धर्म और जैनी वने रहें गे यदि कोई भाई अपने हट या

मूर्ख पन से आज्ञा विरुद्ध करेंगे तो वह अपने धर्म की जड काट ने में कुल्हाडी मारने वाले होंगे क्योंकि जिस समाज के लोग समाज की आज्ञा विरुद्ध करते हैं उनमें फूट होने के कारण पहले न्यारे २ बहुत से थोक होजाते हैं मगर फूट की वेलें फैलती है आज्ञा प्रवर्त्ता ने वालों और आज्ञा पालने वालों के अभाव से इसी प्रकार अंत में खड २ होते २ एक २ मनुष्य अलग २ हो-जाता है उस पहले समाज का नाम निशान भी नहीं रहता इस लिये हमारे जैनी भाईयों को वहुत हौंसि-यारी और सोच विचार करना चाहिये और जिस तरह संघ की एकता और धर्म की दृढता रहै वैसे संघ की आज्ञा प्रमाण वरताव करना चाहिये

एक उत्तम कार्य

मथुरा के मेलै में जो एक उत्तम कार्य हूआ वह यह है कि रायवहादुर मूल-चंदजी ने स्रावक धर्म का व्याख्यान विस्तार सहित किया और व्याख्या-न के पीछे सभास्थ स्रावकों को शास्त्र जी का नित्य प्रति स्वाध्याय करनेका नियम कराया और यह बडे आनंद की बात है कि उस समय अनुमान पांचसौ भाईयों ने यह प्रतिज्ञा रुचि-सहित करी ॥ निश्चय विचार कर देखये तो इस समय में स्वाध्याय के समान इस जीव का हित कर्ता और दूसरा कोइ नहीं है इस कारण हमारी भी हमेशह सर्व भाईयों से यही प्राथना रहती है की वे जैसे वनै वैसे गृह का-यों में से थोडा वहुत समय वचाकर और खासकर प्रातःकाल श्री मंदिर जी में वैठकर शास्त्रजी का स्वाध्याय अवश्य कियाकरें ॥

जैन विद्यालय भंडार

पत्र के नही छपने के कारण जैन विद्यालय भंडार के समाचार भी हम अपने भाईयों को नहीं दे सके लेकिन हमें उमेद है कि हमारे भ्रातगण इस को भूले नही होंगे और अब अपने मनके सच्चे प्रेमसे इस भंडार को धर्म प्रभावना का एक प्रधान कारण जानकर इसमें अपनी शक्ति प्रमाण देने का उद्यम करेंगे भंडार की आमदनी इस प्रकार जानना

२०११।।) भादों सुदी १५ संवत् १९४९ तक जमा हुये आसोज ४९ के पत्र में मुद्रित हुये

२५) बाबू जमनालालजी हेडक्लरक एजेंसी धोलपुर

४) बाबू मूलचंदजी संघी तहसीलदार-भोपालपटन

२) बाबू नेतराम असिसटेन्ट मास्टर म्युनीसीपेलइस्कूल हिसार

१) गवदूलालजी लछमीचंदजी पर वार कामटी की छावनी

१०) श्रीपंचान कोलासर जिला नरबर मारफत किसनचंद खूबचंद

५) अगरचंदजी ठोलानीमाजवालामार फत मागीलाल जी खजानची टाटगढ

२) सेठरामलालजी चुन्नीलालजी विनायका सीवनी छपरा

२) रामलालजी किसतूरचंदजी रामका

१) स्योलालपन्नालाल चादीवाड

१) जुगलकिसोर जी जीवनरामजी सेठी

१) सर्वसुखजी पहाडा

१) मगनलिलजी वाकलीवाल

१) चौथमलजी चैनसुखजी छावडा

१) तनसुखदासजी वैद्यकुचामन वाला

१।) पिरथीराजजी जवाहरमलजी चांदी वाड़ व सदासुखजी सीवनी छपरा

१०) जैनविद्यावर्द्धनी सभा मुरादावाद

२) जैन पाठशाला विद्यार्थी मुरादा-वाद

५) रामगोपाल जी वोकलीवाल धारा-शिव वाला

१) मोतीचंदजी आनंदीलालजी परतापगढ

१) बाबू जमना लालजी हेड कलरक एजंसी धौलपुर

१०॥~) जैन विद्या वर्द्धनी सभा मुरादाबाद

१) पूरण मलजी हनुमंत रामजी हैदराबाद दखन हस्ते हनूमंत रामजी की बहुके

१०) हजारीलालजी सुलतानमलजी मंडावर रियासत कोटा मारफत कुंदनलालजी झालरापाटन वाले

१॥) इमरतलालजी पाटोदी जोधपुर

कुंदनलालजी सभापती झालरापाटन

१) सुखलालजी प्यारजी चौधरी अगरवाला

१) नानूलालजी श्रावक रोकड़िया दुकान हंसराज धमीरमल

१) लखमीचंदजी अजमेरा

१) भूरामलजी श्रीमाल

१) हीरालालजी श्रावगी कोषाध्यक्ष झालरापाटन

१०१) सालगरामजी जवाहरलालजी जयनगर

१) बाबू मुरलीधरजी तार बाबू अजमेर

४॥।~)॥। श्री पंचान झालरापाटन की छावनी वाला

५) ईसरलालजी राणा जैपुर वाला मारफत साह मोहरीलालजी

२३१३॥।)॥। जोड पोह सुदी १ संवत १९५० तक

हमारे पांच प्रश्न

वैसाख सुदी १५ संवत १९४७ के पत्र में हमने नीचे लिखेहुये पांच प्रश्न लिखे थे

प्रश्न १ इस समय में जैनीयों की अवनाति और न्यून दशा होती जाती है वा नही

प्रश्न २ यदि न्यून दशा होती जाती है और विद्याधन और धर्म की हानि है तो इस का क्य कारण है

प्रश्न ३- विद्याधन धर्म और जाति की

उन्नति होने का और अवनति रोकनेका कोई उपाय है वा नहीं

प्रश्न ४ वह उपाय सुसाध्य है अथवा कष्टसाध्य है अगर वह उपाय सुसाध्य है तो क्यों नहीं करते ढील करने से बीमारी बढ जायगी और यदि वह उपाय कष्ट साध्य है तो बताओ कि वे कौन से कष्ट हैं उन को नष्ट करने काउपाय शीघ्र करो: और यदि वह उपाय असाध्य वा असक्य हैं तो उसका हितु बताना चाहिये वैरी और रोग को छोटा नहीं समझना चाहिये उन का इलाज सीघ्र करना चाहिये अगर ढील की तो वे बलवान हो जांयगे और समय पाकर प्राणनाश करेंगे

प्रश्न ५- (१) जैनियों को अपनी प्रथमउत्कृष्ट अवस्था पर पहुचने का- (२) एकता मैत्री और वात सूल्य करने का (३) वैर विरोध मेटने का [४] कुरीति हीनाचार फिजूल खर्ची बंद करने का (५) सुरीति और सदाचार प्रवृत्त कराने का (६) विद्याधन और धर्म बढाने का प्रबंध किस प्रकार और कौन रीति से करना चाहिये

५ प्रश्न हमने लिखे थे इन के उत्तर अभी तक हमारे पास नहीं आये लेकिन इतनी वरसो मे इन विषयो पर सब जगह चर्चा होने लगी है और कहीं २ कुछ २ प्रबंध भी हुये हैं परंतु जो होना आवश्यक था सो नही हुआ मालूम होता है इसवास्ते एहांप्रश्न फिर दोवार लिखने में आये हैं और सर्व भाईयो से प्रार्थना है कि इन प्रश्नो का अपनी २ सभा या पंचायती सम्मति से विचार कर उत्तर सीघ्र लिखे हमारे यहां अजमेर में चैत के महीने मे मेला होने की खबर है अगर हुआ तो और यदि आप सर्व भाईयों की सहायता हुई तो हम विचार करते हैं कि इस मेले में एक सभा करके इन प्रश्नों के उत्तर निर्णय करैं और फिर उन उत्तरों के अनुसार उपाय भी करने का उद्यम किया जावे इन प्रश्नों के सिवाय और भाईयो को जो कुछ प्रश्न करने होवे कृपा कर लिखें तो सब प्रश्नो की याद दास्त बना कर छापेगे जिस में सब भाई उन पर थिरता से विचार और निर्णय वादानुवाद सहित अपने २ शहरों की सभा में पहले उत्तर तैयार कर रक्खे जो सभा में उन विषयों पर विचार भले प्रकार होजावे और देर भी नहीं लगे

श्री

जैन प्रभाकर

अजमेर

अर्थात्

जैन धर्म और जैन सभा सम्बंधी माशिक पत्र

जिसे

जैनी श्रावग भाईयों के हितार्थ लाला छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया है

नम्बर

फागुन सुदी १ सम्वत १९५० मारच सं १८९४ का

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

भार्गब प्रेस अजमेर में छपा

जैन सभा बम्बई की ओर से समाचार

एक वडे ही हर्ष की वात है कि दिंगवर जैन शाकटायनाचार्य जिनको कि श्रुतकवलि देशिय पदवी है जिन मत में वडे प्रशंसनीय और प्राचीन आचार्य हुये उनों का वनाया हुआ व्याकरण इस देश में अभी तक प्रसिद्ध नहीं था. परन्तु मंद्रास वाले ओपर्ट साहेव के परिश्रम से छप कर प्रसिद्ध हुआ है और मूल सूत्रों के ऊपर छ हजार श्लोकों में भी अभय चंद्र सूरि ने प्रक्रिया संग्रह टीका रचा है उस के पढ़ने से वोध अत्यंत शीघ्र ही होजाता है और सिद्धांतकोमदी से भी वहुत ज्यादह मतलव है प्रक्रया अति सुगम है पाणिनिय ने भी शाकटायन का प्रमाण अपने कुल सूत्रों मे दिया है तथा शुक्ल यजुर्वेद में और यास्क निरुक्तादि जैसे अन्य मत के वडे २ सिद्धांत है उनों में भी शाकटायन का प्रमाण लिया है और पाणिनय के सूत्र के महा भाष्यकार पातंजलि नें शाकटायन को शब्द शास्त्र का धातुज कहा है इस की कीमत १०) है जिस किसी भाइ को खरीदने की इच्छा होय तो एक पोष्ट कार्ड हम को लिख भेजें व्हेल्युपेविल भिजवादेंगें. आप से भी प्रार्थना है कि आप अपनी परिक्षा मे कोमदी की जगे शाकटायन को ही प्रचलित करें यह जैन विद्यान्नति का मुख्य कारण है और लिजिये सोमदेव आचार्य कृतिनका मृतनका ग्रंथ प्रसिद्ध हुआ है यह कोई शास्त्र नहीं है जो कि छापे के भय से उल्लगता होय परन्तु जैसे लोकिक में चाणिक्य भर्तरि आदि के वनाये शास्त्र लोकिक चातुर्यता के प्रसिद्ध है ऐसे यह भी है जैन आचार्य की नीति लोकिक विषय के लिये है कीमत अनुमान एक रुपाया. सो पाठशाळायों में राज नीति जो चाणक्य पढाई जाती है उस जगह यह पढाया जाय तो वहुत ही फायदा कारी है जरूर प्रचलित करना चाहिये यह समाचार आगामी पत्र में कृपाकर जरूर प्रकाश करदेना भूलना नहीं. ज्यादह शुभ मिति माहा वदी ७ सं १९५०.

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह । तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करे । सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ५ | अजमेर फरवरी सं० १८९४ | संख्या १

संपादकीय टिप्पणिका

हमारे यहां अजमेर में जोकि नवीन श्री जिन मंद्र वनरहा था सो अव वनकर तैयार होगया है उसकी प्रतिष्ठा और सिखिर पर कलशा चढा ना आदि महोच्छव वैसाख वदी १० से शुदी २ तक होने की खवर है (प के समाचार मंगल पत्र का से जान ना. ॥

आशा है कि इस मेले में सर्व देशों के जैनी भाई अवश्य पधारेंगे इसलिये हम विचार करते हैं कि अगर कम से कम १०० भाईयो की लिखी हुई सम्मति (और वे अपनी सम्मति एक पैसे के पोष्टकार्ड पर लिख कर भेज सक्ते हैं) चैत्र सुदी ५ मी से पहले हमारे पास आवे कि वे जैन धर्म सवंधी विद्या और जैन धर्म की प्रभावना तथा श्रावक कुल की उन्नति करने में अपनी २ शक्ति प्रमाण कोई तन से कोई धन से कोई मन से कोई तन धन से कोई तन

मन से कोई धन मन से और कोई तन मन धन से राजी है और इन परोपकारी काय्यों के करने में अपनी शक्ति नही छिपावेगे और प्रारंभ से अंत तक बराबर निरंतर उद्यम करते रहेंगे इस माफिक अगर १०० भाई अपनी सम्मति भेजें और मेले में हाजिर होवे तो उनकी सहायता और मदत से हम अपनी तुच्छ बुद्धि और अल्प पराक्रम से जैन धर्म सबधी विद्या और जैन धर्म की प्रभावना तथा श्रावक कुल की उन्नति रूप तीनों महत् काय्यों का उन भाईयों की सम्मति और सहायता से अंकुरारोपण करने की आशा करते हैं तथा इन काय्यों की बृद्धि और रक्षा के जो २ उपाय हमने सोचे हैं वे सब सभा में प्रगट करें और वादानुवाद सहित सर्व सम्मति से निश्चय होने के पश्चात उन विचारों के अनुकूल कारवाई करने का प्रयत्न किया जावे.

यह भी याद रहे कि कोई भाई यह ख्याल न करे कि हम किसी कारण से अशक्ति हैं हमारा किया क्या हो सक्ता है अमुक २ करैं तो कुछ होय ऐसा ख्याल करके पहले से ही ढीळा और कायर नहीं होना चाहिये परन्तु अपना पुर्षार्थ संभाल गाढी कमर बांध आगे बढ़ना चाहिये अगर हिम्मत बांध कर सौ भाई एक मन होकर काम करें तो वह कार्य निस्संदेह सिद्ध होगा.

हम को हिम्मतवर धीर वीर पुरुषार्थी भाईयों की सम्मति और सहायता की ही जरूरत है.

सो क्या ऐसे सौ भाईयों का मिलना मुशकिल है ? कुछ भी मुशकिल नहीं है.

जैन विद्यालय भंडार के वही खाते हमारे पास हैं हमारी प्रार्थना है कि मेले में आये हुये सर्व भाई उन को देख और जांच कर अपनी सम्मति एक पुस्तक पर जो इसी काम के वास्ते रक्खी जायगी लिख देवें जो भाई ऐसा करेंगे वह हम पर तथा जैन विद्यालय कार्य्याधिकारिणी सभापर बडा अहसान करेंगे.

फागुन के महीने में होली होती है तब लोग भांग पीके और माजूम खाके नशे में मद मस्त होजाते है और अनेक प्रकार की गाली गलौच बकते धूल उडाते खाक फांकते अग उपंग से खोटी क्रिया करते गदहों पर चढे निर्लज्ज हुये गली कूचों में फिरते हैं.

हमारे जैनी भाई भी अकसर पाड पडोस के लोगों की देखा देखी ऐसा ही करते हैं यह बडी शरम की बात है.

हर एक जैनी को विचार करना चाहिये कि होली से जैनियों का कुछ संबंध नहीं है

यह होली श्रावकाचार को बिगाडने वाली दुर्गति की पोली है.

भांग पीना नशा करना गालियां देना बे शरम होना लडके होली से ही सीखते हैं.

जो लोग इन दुराचारों से अपने लडकों को बचाना चाहे उन्हें उचित है कि वे न तो आप होली में जावें और न अपने लडकों को होली के ख्याल में जाने देवें और होली से तबियत रोकने को अपनी तबियत किसी दूसरे कार्य में लगाना चाहिये.

वह कार्य यह है कि फागुन में श्री अष्टान्हकाजी का महोच्छव होता है उसमें जिन पूजा करना महा पुन्य का कार्य है इसलिये सर्व जैनी भाईयों को उचित है कि होली की १४ - १५ और १ तीनों दिनों में अपने पुत्र मित्र कलित्र आदि परिवार सहित अपने २ घरों से पवित्र अष्टद्रव्य लेजाकर श्री जी की पूजा करें तथा स्वाध्याय और भजन रात्रि जागरण करें. ऐसा करने से उन्हें दुगुण लाभ होगा प्रथम तो होली के हीनाचार पाप से बचेंगे और दोयम पूजा आदि शुभ कार्य्यों से पुन्य का संचय करेंगे आशा है कि ऊपर लिखे प्रमाण सब भाई करें तो हीनाचार कुविसनका अभाव होने शुद्ध श्रावकाचार की वृद्धि होने और मंदिरों में पूजा आदि उच्छवों के होनेसे धर्म कीबडी प्रभावना

होवे.

हम चाहते हैं कि जैन प्रभाकर के पढने वाले इसकी कोशिश करें और जो उनकी कोशिश का फल होवे सो हमें चिट्ठी में लिखें.

भाई गजा धर जी तामिया ने एक पत्र में कई बातें जैनी भाईयों के विचार करने के वास्ते लिखी हैं सो नीचे लिखते हैं.

(१) जिन मंदिरों में मोमवत्ती (याने विलायती चरवी की वत्तीयां) नहीं जलाना चाहियें.

हमारी सम्मति वेशक नहीं जलानी चाहियें. मंदिरो में ही नहीं वल्कि श्रावकों को अपने घरो में भी नहीं जलानी चाहियें क्योंकि मद्य मांस और उनसे उतपन्न भई चीजों से श्रावकों को कुछ संबंध नहीं रखना चाहिये.

(२) क्या सवब जीरन मंदिर व सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्रों में समर्थ पुरुष द्रव्य नहीं लगाते जैसे और धर्मांगों में लगाते हैं वेसे इस तरफ भी ख्याल करना चाहिये देखिये अजुध्या जी की इस समय क्या हालत है निश्चय है आप की कलम चले गी अवश्य नेत्र खुलेंगे वह लेखनी ऐसी ही है.

हमारी सम्मतिः अजुध्या जी की हालत हमें मालूम नहीं है कृपाकर उसका खुलासा हाल लिखना चाहिये.

जीरन मंदिरों में और सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्रों में हर एक जैनी भाई को अपनी २ सामर्थ प्रमाण अवश्य धन खर्चना चाहिये नवीन मंदिर वनाने से जीरन मंदिर की मरम्मत कराना विशेष पुन्य का कार्य है.

समर्थ पुरुष धन नहीं लगाते इस का सवव हमें यह मालूम होता है कि वे इन को निकम्मे काम ख्याल करते होंगे.

(३) किसी भारी जैन पाठशाला में ये भी वंदोवस्त सरकारी कालेज के माफिक होना चाहिये यदि कोई दूर का विद्यार्थी पढना

चाहे व आजीवका की स्थिरता से न पढ सके तो स्थिरता करके पढाया जावे.

हम अंतःकरण से आप के सहमत हैं और जैनियों में विद्या बृद्धि करना ही एक हमारा मुख्य प्रयोजन है क्योंकि विद्या की बृद्धि से सब अच्छे कार्य्यों की बृद्धि है परन्तु अफसोस यह है कि इन सब कामों के वास्ते रूपये की जरूरत है सो धनवान भाई तो इस काम को निःप्रयोजन समझ कर इस में रूपया खर्च करना चाहते नहीं क्योंकि वे अपने लडकों को अपने घर में अपने रूपये से बखूवी पढा सक्ते हैं दूसरों के लडकों के पढाने में रूपया खर्च करने से उन्हें लाभ ही क्या हो सक्ता है इस कारण वे तो अपना रूपया देना चाहते नहीं.

और गरीब भाईयों के पास रूपया है ही नहीं वे देवें कहां से लेकिन उनके लडकों के पढ़ने की बडी जरूरत है क्योंकि अगर गरीबों के लडके पढ लिखकर होशयार हो जावें तो रोजगार व्योपार आदि अच्छी तरह करने से अपने कुटंब और जाति की उन्नति करें तथा विद्या के जरिये नेक चलन शुद्ध आचरण और धर्म के धारी होवें तो धर्म प्रभावना भी होवे.

गरीबों के लडकों को अच्छी शिक्षा न मिलने से गरीब भाईयों के खानदान कुटंब दिन पर दिन बुरी अवस्था को प्राप्ति होते जाते है बाप से बेटे की अवस्था बुरी हुई और बेटे से पोते की ज्यादह बुरी हुई चली जाती है सो हर एक भाई अगर अनुभव करना चाहे तो अपने २ नगर और ग्राम में यह अवस्था देख सक्ता और विचार कर सक्ता है अब रहे मध्य श्रेणी के भाई सो यह काम उनके फायदे का है और वे इसे करने के लायक भी हैं लेकिन अकेले करने की उनकी सामर्थ नहीं है परन्तु हजार पांच सौ भाई एकत्र होकर करना चाहें तो बहुत सुगम रीति से कर सक्ते हैं.

अवल यह कि अपने लडकों

को विद्या पढाना मध्य श्रेणीवालों को वडे फायदे का काम है.

विद्या पढने से हिताहित का विचार जानने से उनके लडके उनके धन और इज्जत की रक्षा कर सक्के और उन्हें वढ़ा सक्के हैं इस तरह अपने वाप दादे की नामवरी और इज्जत स्थिर रखने वाले होंगे और आप भी सुखी भोगी और धर्मात्मा रह सकेंगे.

परन्तु उच्च श्रेणी की विद्या पढ़ाने में रूपया ज्यादह खर्च पडता है और सामान्य आदमी ज्यादह रूपया खर्च कर नहीं सक्ता इसी कारण वहुतसों को एकत्र एक दिल होने की जरूरत है. ऐसा होने से सव के लडके उच्च श्रेणी की विद्या पढ़ सक्के. हैं और उन के साथ में कहना चाहिये कि रूक झूक में गरीव भाईयों के लडके भी पढ सक्के हैं.॥

अव यह कि अगर मध्य श्रेणी के भाई रूपया जमा करके वालकों की शिक्षा का वंदोवस्त करना चाहें तो हम एक ऐसी तरकीव वता सक्के हैंजिस में किसी को तकलीफ नहीं पहुंचे और रूपया वड़ी आसानी से जमा होजावे लेकिन शर्त्त इस में यह है कि सव भाई एक दिल होकर एक ही वक्त में और एक ही स्थान में रूपया जमा करें.

फर्ज करो कि इस लेख का कुछ असर हमारे भाईयों पर हुआ और उनमें से एक हजार मध्य श्रेणी के श्रावक धर्म प्रभावना और कुल की उन्नति करने को उद्यत हुये सो इस भांत रूपया देने लगे.

२००) ४०० भाई दर ॥) माहवारी
३००) ३०० भाई दर १) माहवारी
३००) २०० भाई दर १॥) माहवारी
२००) १०० भाई दर २) माहवारी
१००० हजार भाईयों का हजार रूपया जमा होवे तो १ वर्ष में १२०००) जमा होजावे और अगर दस हजार भाई इसी हिसाव से जमा करावे तो एक वर्ष में एक लाख वीस हजार रूपया जमा होजावे अव कहो कि इस प्रकार करने से किसी को ज्यादह तकलीफ हुई या

नहीं हुई और इस प्रकार देने वाले जैनी मिल सक्ते हैं या नहीं और एक लाख वीस हजार रूपये सा. लयाना से जैनीयों को कितना लाभ होवे सो सब विचार लीजिये.

अब भी हजारों श्रावक एसे हैं जो हजारों रूपया हर साल अपनी नामवरी के वास्ते खर्च करते हैं अगर वे भाई इस तरफ अपना ध्यान देवें तो इस काम का होना कुछ मुसकिल नहीं है परन्तु प्रमाद अज्ञान और ईर्षा ये इस काम के बाधक हैं इनका त्यागना सब से पहले चाहिये.

हम उमेद करते हैं कि अगर हमारे लिखे माफिक १ हजार भाई धर्म्मोन्नति करने के वास्ते कमर बांधें तो धर्म उन्नति और जाति की उन्नति का होना कोई मुशकिल काम नहीं है.

हम यह भी फिर दुबारह लिखते हैं कि मध्य श्रेणी के श्रावकों को अपनी रक्षा करने के वास्ते जलदी सचेत होना चाहिये क्यों कि अब यह बात देखने में आती है कि बहुत से मध्य श्रेणी के श्रावकों के लड़के अज्ञान और हीनाचारी होने के कारण खराब खस्ता हुये चले जाते हैं और यही हाल जारी रहा तो मध्य श्रेणी के घराने सब नष्ट होजायेंगे इससे श्रावक कुल और श्रावक धर्म की बड़ी अवज्ञा होगी इसलिये हमारी बार २ अर्ज यही है कि अपनी उन्नति का प्रबंध शीघ्र करना वाजिब है.

(४) दरजा बदरजा कोई सभा कायम हो जो कि शास्त्रों में का प्रश्न यदि अच्छी तरह समाधान करना चाहे उस सभा को पत्र भेजने से उत्तर मिले यह बंदोबस्त जरूर चाहिये. ॥

उत्तर ॥- इस बात को सब जैनी भाई जानते हैं कि जैन धर्मीयों के समूह का नाम जैनचतुर्विध संघ है इस में मुनि अर्जका श्रावक श्रावका होते हैं. ॥

संघ की थिरता करना रक्षा

और बृद्धि करना संघ से प्रीति करना संघ की भक्ति और टहल चाकरी करना दान सन्मान करना यह जैनीयों का परम धर्म है क्योंकि संघ की थिरता होने से धर्म की थिरता और संघ की रक्षा होने से धर्म की रक्षा है आगे निर्ग्रंथ जैनाचार्य संघ के नायक और धर्म मार्ग के चलाने वाले थे उनकी आज्ञा सर्व के मस्तक पर विराजती थी और सर्व संघ के लोग श्री गुर की आज्ञा विनय सहित अमृत की तरह सर्व दुःख की नाशने वाली जान वडे आदर से पान करते थे. ॥

अब काल दोष से निर्ग्रंथ मुनि और अर्जिकाओं का संघ लोप हो गया और अनेक भेष धारी अपने को गुर कहकर अपनी पूजा कराने लगे परन्तु वे धर्म विरुद्ध होने से संघ के रक्षक नहीं हो सक्ते हैं इसलिये संघ की रक्षा का भार श्राव को को अपने ऊपर लेना अति आवश्यक है परन्तु हम को इस वात के लिखने से अत्यंत शोक होता है कि जो लोग कि धर्म शास्त्र के ज्ञाता और एश्वर्यवान धनवान होने से धर्म और संघ की रक्षा करसक्ते हैं तथा संघ को सुद्ध निर्मल मार्ग चला सक्ते हैं वे इस परम इष्ट प्रयोजन से एसे विरक्त या उदास होरहे हैं कि संघ की रक्षा का कुछ भी फिक्र नहीं करते है और संघ नायक न होने से संघ में स्वछंदता प्रवर्त्त रही है सो निश्चय कर संघ का अपकार करेगी इसालिये जैसा कि आपने लिखा है कि एक सभा होनी चाहिये कि जिसमें धर्म संबंधी हर एक वात का निर्णय होजावे और उस सभा की आज्ञानुसार सब जैनी प्रवर्त्तें होना वहुत जरूर है. ॥ और हम ख्याल करते हैं कि हर एक भाई जो अपने धर्म की रक्षा और उन्नति करना चाहता है वह इस वात पर सहमति होगा.

हम यह भी कह सक्ते हैं कि वहुत से भाई सभा कायम करने की कोशिस करते हैं जैसा मुथरा के मेले में हुई थी परन्तु उनकी कार

रवाई ठीक २ नहीं होती इसलिये अव सर्व भाईयों को विचार करना चाहिये कि जो कारण सभा के विगाडने वाले हैं और उसकी सिद्धि में बाधक हैं उन को भले प्रकार विचार उन बाधक कारणों को नाश कर सभा को जरूर नियत करना चाहिये. ॥

जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं अगर एक सौ भाई पत्र द्वारा अपनी सम्मति दें और यहां मेले में पधारें तो उनकी सम्मति और सहायता से सभा नियत करने का उद्योग करेंगे और यह सभा सर्व संघ का हित जैसे होय वैसे कारवाई करेगी. ॥

भाई मंगल सैन जी साहिब चिलकाना निवासी की चिट्ठी आई पढकर परम आनंद प्राप्ति हुआ. और आपने १००) जो कि जैन विद्यालय भंडार के वास्ते पंचायती से उघाई करके मनीआरडर भेजा सो आन पहुचा. ॥

आप ने लिखा कि हमेशह जमा रहे विगडने न पावे सिरफ व्याज ज्ञान वृद्धि में काम आवे सो आप के लिखे माफिक आप का रूपया भंडार के मूल द्रव्य में जमा किया गया और उसकी रसीद नंबर ८४३ आप के पास भेज दीनी सो पहुची होगी सर्व पंचों को दिखा देना जी. और हमेशह जैन धर्म संबंधी विद्या का इसी प्रकार उद्योग करते रहना जी. ॥

जैसा उद्योग अपने धर्म की प्रभावना करने में आप करते हैं उसी माफिक अगर और भाई भी अपने २ ग्राम और नगर में करैं तो धर्म का उद्योग बहुत शीघ्र होवे. ॥

सर्व भाईयों को यह बात हमेशह याद रखनी चाहिये कि जिस वक्त यह जैन विद्यालय खोला गया था उस से पहले ही यह घोषणा दीगई थी कि " जैन विद्यालय भंडार के मूल द्रव्य के खर्च करने का किसी पु-

रूप सभा या पंचायत को किसी काल में भी अधिकार न होगा " इसी नियम के अनुसार कारवाई की जाती है सो जो कोई भाई अगर एक पैसा भी देगा तो वह पैसा भी हमेशह जमा रहेगा. इसलिये यह भंडार अविनाशी है. ॥

पचेंवर ग्राम राज सवाई जेपुर में जैपुर अजमेर के बीच नरेना स्टेशन से १० कोस है चैत्र सुदी ५ से १३ तक मंद्र प्रतिष्टा का बड़ा भारी मेला होने वाला है. ॥

इसी अवसर पर कंपला जी मे भी मेला होगा. ॥

॥ विज्ञापन ॥

सर्व भाईयों से जिन के पास जैन प्रभाकर पहुचें प्रार्थना है कि वे इस को संपूरण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देवें और मंदिर जी व सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावक एकत्र हों पढ कर सुना दें ॥ आप के शहर की जाति और धर्म संबंधी नई वार्ता पत्र में छपने को भजें. ॥ जो भाई पत्र लेना चाहें हमें पोस्ट कार्ड भेजकर मगा लें. ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहर वालों से ॥≈) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का ≈) है. ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपेगा ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या, धन, धर्म, जात की उन्नति करना इस के उद्देश हैं. ३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपे गा. ॥

सर्व चिट्ठी रूपया वगैरह लाला छोगा लाल कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम से भेजना चाहिये.

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अजमेर

अर्थात्

जैन धर्म और जैन सभा सम्बंधी मासिक पत्र

जिसे

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ लाला छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया है

नम्बर ६

चैत्र सुदी १ सम्वत १९५१ अपरैल सं १८९४ का

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

भार्गव प्रेस अजमेर मे छपा

विज्ञापन

सर्वे भाईयों से जिन के पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिर जी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावक एकत्र हों पढकर सुनादें. ॥ आप के शहर की जाति और धर्म्म संबंधी नई वार्ता पत्र मे छापने को भेजें. ॥ जो भाई पत्र लेना चाहें हमे पोस्टकार्ड भेजकर मगालें. ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहरवालों से ॥≈) वाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का ≠) है. ॥

१ यह पत्र हर महीने मे छपेगा. ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या, धन, धर्म, जात की उन्नति करना इस के उद्देश हैं

३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपेगा

सर्व चिट्ठी रुपया लाला छोगा लाल कोषाधक्ष जैन सभा अजमेर के नाम से भेजना चाहिये. ॥

॥ सस्तादाम और अच्छाकाम ॥

सब सज्जन महाशयों से साविनय निवेदन है यहां लोग बहुधा कहाकरते कि इस राजपूताना देश में ऐसा कोई उत्तम छापाखाना नहीं है जहां कि सब प्रकार की छपाई उत्तमरीति से होती हो और प्रबंध अच्छा तथा संपादक प्रामाणिक और प्रतिष्ठित हों काम अच्छा और नियत समय पर तैयार होजाय इस अभाव के दूर करने के लिये हम लोगों ने प्रेस खोला है इस मे सब तरह की छपाई उत्तम रीति से होती है मूल्य उचित लिया जाता है सामान सब उत्तम है अब जादा तारीफ कर हम अपने मुह से मिया मिठ्ठूबनना अच्छा नहीं समझते जो महाशय हमारे यहां काम भेजेंगे वह आप देख लेंगे क्योंकि इतर वह जो अपना गुन आप कहै न कि गंधी जिन महाशयों को कुछ छपवाना हो वह नीचे लिखे पते से भेजें

भार्गव प्रेस घास कटला अजमेर

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह । तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करैं । सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर १ | अजमेर अपरैल सं० १८९४ | संख्या १

हिसार जैन पाठशाला का वार्षिकोच्छव

तारीख ११ दिसम्बर १८९२ को पाठशाला का वार्षिकोच्छव किया गया था उस में पंडित महरचंद जी साहिब सुनपत वाले लाला अमानसिंह जी दहली वाले लाला शालिगराम जी हासी वाले जती नैनसुखजी आदि सज्जन पधारे थे ॥

प्रथम प्रातःकाल से जलयात्रका उच्छव हुआ. हिसार निवासी और २ बाहर के आये हुये सर्व श्रावक भाई इस में मौजूद थे. ॥ राय सांझीमल जी साहिब सबजज राय मूलराज जी साहिब तहसीलदार लाला जमैयत राय जी जैनी सुपरिंटेंडेंट डिपटी कमिश्नर साहिब के दफतर के भी पधारे थे जलयात्रा की जलेब बडे जलूस से सरे बाजार होते हुये भजन और नृत्य होते हुये पाठ-

शाळा में आये. ॥

नगर निवासी सर्व भाईयों को इस के देखने से वडा आनंद हुआ.

दोपहर को पाठशाला का जलसा हुआ मुंशी नेतराम जी साहिव ने पाठशाळा की कुल काररवाई पढकर सुनाई. ॥

यह पाठशाळा २ वर्ष ५ महीने से जारी है विद्यार्थी इस समय ३४ हैं पिछळे साळ में ईसपेकटर साहिब वहादुर की सिफारश से २४) म्यनासापलकमेटी ने दिये थे अव की साल में ४०॥।) अता किये. ॥ इस साल में २५ विद्यार्थियों ने परीक्षा दीनी था उन में से १९ पास हुये याने चाकस निकले. ॥ इन विद्यार्थियों को रू.१६) की पुस्तकें और रुमाल शीरना कमेटी की तर्फ से इनाम के वास्ते दी गई है. ॥

इस पाठशाला में पढाई की फीस नहीं ली जाती है वल्के पुस्तकें भी सभा की तर्फ से पढने को दीजाता हैं और धर्म शास्त्र में शिक्षा देने की वडी कोशिस की जाती है ॥

जैन सभा के सभासद विद्यावृद्धि करने का वडा उद्योग करते हैं और यकीन है इस माफिक हमेशह करते रहेंगे तो ज्ञान की वडी उन्नति होगी. ॥

इस के पश्चात पंडित मिहरचंद जी साहव ने ज्ञान के विषय में, जती नैनसुख जी ने धर्म के विषय में अति मनोहर व्याख्यान दिये कि जिन के सुनने से सर्व सभा को अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ. ॥

राय सांझीमल जी साहव सवजज ने फरमाया कि वे सभा और पाठशाळा की काररवाई से वहुत खुश हुये और सभा की वहुत तारीफ की इस के वाद उन्होंने पुस्तकें रुमाल और मिठाई विद्यार्थियों को वांटी. ॥ पंडित मिहरचंद जी ने अपनी तर्फ से पुस्तकें और लाला शालिगराम जी ने रुमाळ वांटे. ॥

मुंशी नेतराम जी ने राय सांझीमल जी साहिव व पंडित मिहरचंद जी लाला सालिगराम जी आदि जो भाई वाहर से पधारे थे उनको धन्यवाद

दिये और फिर जयकरा बोलकर सभा विसर्जन हुई

दो जैनीयों के ब्याह

हमारे एक मित्र ने झालावाड से बडे खेद से लिखा है कि मुझ को एक बडा ही फिक्र पैदा हुआ है जिस का उत्तर लिखो गे यानि आप लोग या भाई पन्नालाल जी मुरादाबाद निवासी जो जिन धर्म संबंधी विद्या वृद्धि करने फिजूल खर्ची हीनाचार बंद करने का उद्यम करते हैं और आप ने जैन विद्यालय में द्वार नियत किया है सोयह मनोरथ कब सिद्ध होंगे क्योंकि आयु नजीक आती जाती है सो उन महत्कार्य्यों का पूरा होना बहुत कठिन मालूम होता है क्योंकि जैनी भाई उनकी सहायता करने की इच्छा नहीं करते हां अलबत्ता सेठ हनुमंत राम जी हैदराबाद निवासी की सेठानी सरीखे उदार चित्त और धर्म प्रभावना करने वाले दो चार भी मनुष्य होयें तो आप का मनोर्थ पूरा हो सक्ता है परन्तु इस समय के मनुष्य धर्म कार्य्यों से राजी नहीं हैं वे आतिशबाजी छुटाने रंडी का नाच कराने से खुश होते हैं

अभी हमारे शहर में एक बडे सेठ के ब्याह था जो बडी धूम धाम से हुआ आतिशबाजी का देखना नोबतबाजा सुनना रंडी का नाच देखना हर रोज नाना प्रकार की मिठाई का खाना इन कामों में बडी खुशी से रुपया ६५०००) पैसठ हजार के आसरे लगगया. ॥

ऐसी खुशी और ऐसे बडे खर्च को देखकर भाई कुन्दन लाल जी ने उन से कहा कि पाठशाला के वास्ते भी कुछ देना वाजिब है जब कि हजारों आदिमियों को जिमाते हो और हजारों रुपयों को आतिशबाजी मे फूंक कर उडाते हो तो दस बीस रुपया पाठशाला में भी दो कि धर्मोन्नति होवे इस प्रकार बहुत कुछ कहा परन्तु उन्हों ने कुछ नहीं दिया और ऐसे ही चौ

घरीयों ने कहा कि नई लाग नहीं लगाना चाहते. ॥

अब हमें यह मालूम नहीं कि पंचों ने नहीं देने दिया या खुद लडका लडकी के पिताओं ने नहीं दिया परन्तु जो साठ पैंसठ हजार रुपया व्याह में खर्च कर सक्ते है उन्हें पाठशाला के वास्ते देना अगर उन की तबीयत देना चाहे तो कुछ मुशकिल नहीं था और पंच चौधरी जो बिरादरी का हजारों रुपया निरर्थक नई नई रीति निकालकर और नई २ लागें लगाकर अपने हाथों खर्च करते और कराते हैं उन को भी पाठशाला के वास्ते एक नई लाग लगाना कुछ मुशकिल नहीं था. ॥

सो हे भाई मेरे को बडा फिक्र और रंज है कि पाठशाला के वास्ते रुपया न देना और न दिलाना इस का क्या कारण होसक्ता है. ॥

हमारे मित्र को कुछ फिक्र नहीं करना चाहिये बल्के धीरज रखना चाहिये. ॥

उन को यह याद रखना चाहिये कि जो काम जितना ज्यादह बडा और ज्यादह लाभ दायक होता है वह उतनी ही मुशकिल और देर से सिद्ध होता है. ॥

जैन विद्यालय भंडार और जैन धर्म संबंधी विद्या की बृद्धि होना तथा फिजूल खर्ची आतिशबाजी रंडी का नाच आदि हीनाचार का बंद होना ये बडे महत्कार्य है और बहुत देर और मुशकिल से सिद्ध होंगे लेकिन यह अवश्य निश्चय करके सिद्ध होंगे यह हमें पूर्ण आशा है. ॥

कोई को उपदेश जलदी लगता है और कोई को देर से लगता है और किसी को नहीं भी लगता है परन्तु उपदेशदाता सबको उपदेश देते हैं अगर कोई आदमी जहर खाजावे तो वैद्य उस के जहर उतारने का इलाज करता है परन्तु कर्म वश जहर न उतरे या वह मनुष्य

उस वैद्य की दवाई नहीं खावे तो वैद्य आप तो जहर नहीं खावे और खावे तो उस की बराबर मुर्ख नहीं है. ॥

स्वधर्माभिमानी जातिहितेच्छु भाईयों का काम यही है कि अपनी जाति का सुधार और अपने धर्म की सच्ची प्रभावना याने अज्ञान का नाश कर जैन सिद्धान्तों का अर्थ जैसे प्रकाश होय तैसे करने की सर्व भाईयों से प्रार्थना और उपदेश करें अगर वे उन का उपदेश सुनें और धर्म का उद्योत करें तो धन्यवाद देवें अगर वे उपदेश नहीं सुनें तो संतोष ग्रहण करे फिर किसी दुसरे समय उपदेश करे और इसी प्रकार करतेरहे कालादि सामग्री मिलने से उपदेश लगे ही गा और उन का मनोर्थ सिद्ध होगा. ॥

जैन विद्यालत भंडार हमारी ही उमर में अवश्य भरेगा और जैन सिद्धान्तों का उद्योत होगा फिजूल खर्ची हीनाचार भी वंद होंगे और हमारे जैनी भाई अपने सुद्ध धर्म ही में आरूढ होकर निर्मल मार्ग में गमन करेंगे ऐसी हम को पुर्ण आशा है और हमारी आशा के पुर्ण होने के प्रमाण में एक चिट्ठी जो हमारे पास आई है बडे हर्ष से नीचे लिखते हैं. ॥

धर्मोपदेशक पंडित छोगालाल जी साहिब जैजिनेन्द्र. आप को पहले से मालूम होगा कि कस्बे नकूड़ जिला सहारन पुर में फिजूल खर्ची और बुरी रस्मियात को दूर कर दिया है और रंडी वगैरह का नाच बिलकुल वंद करादिया है. ॥

पर सो यहां पर एक बरात अंवाले से लाला किरचीमल रईस छावनी अंवाले की लाला हींगनलाल किशोरी लाल के यहां आईथी लाला किरची मल ने इस इन्तजाम को बहुत पसंद किया और रंडी आतिशवाजी वगैरह नहीं लाये और कुल काररवाई यहां के वंदोवस्त के मुवाफिक करी. ॥

विवाह और पूजन जिन सेनाचार्य कृत विवाह पद्धति के अनुसार

हुआ जिस से दोनों तरफ के भाई-यों को अद्भुत आनन्द रहा फेरों के पीछे लाला किरचीमल जी ने लाला रिषभ दास जी साकिन चिलकाने के उपदेश से कि जिन्हों नें उक्त पूजन कराया था १०) जैन विद्यालय भंडार के वास्ते बड़ी खुशी से दान दिये जिन को धन्यवाद से स्वीकार किया और जो आप के पास भेजे जाते हैं इन को भंडार में जमा कर-के रसीद लाला किरचीमल जी के पास भेज देवें ॥

वारात आने से अगले रोज ला-ला किरचीमल जी ने सभा कराई जिस में कुल वराती और यहां के भाई शामिल थे ॥

सभा में लाला ऋषभदास जी नें रंडी के नाच और सीठने (गा-ली) गाने की बुराई मे, बाबू सूरज भान जी वकील देववंद निवासी ने फिजूल खर्ची की बुराई में, और वाबु बुलन्द राय जी वकील सहारन पुर निवासी नें वरातों में इसी प्र-कार सभा करने के लाभों में अति ललित व्याख्यान कहे जिन का अ-सर एसा हुआ कि सब सुनने वालों नें उन व्याख्यानों के छपने की ख्वा-हिश जाहिर करी यह कैसे आनंद की वात है अगर सव जगह विवाह के समय जैन विद्यालय भंडार के वास्ते दान और नाच की जगह स-भा और धर्म्म उपदेश होने लगें तो कैसी उमदियत होवे आशा है कि इस पत्र को जैन प्रभाकर में जरूर छापेंगे और एक कापी लाला किर-चीमल के पास भेजेंगे ॥

सबसे ज्यादह खुशी की बात यह है कि सभा में लाला बेनीप्रसाद दुलहा नें भी एक व्याख्यान अति सुन्दर कहा और व्याख्यान करना-ओं को धन्यवाद दिया. ॥

सूरजभान ऋषभदास

नकुड जिला सहारनपुर

८. ३. ९४

यह चिट्ठी लिखते समय रु.८) लाला हीरानलाल बेटी वाले ने जैन विद्यालय भंडार के वास्ते अपनी

खुशी से दिये जिस से अपूर्व हर्ष होता है यह भी आप के पास भेजे जाते हैं इन की रसीद लाला हीगनलाल के पास नकूड भेज देवे. ॥

होली के समाचार

जो कि यह होली धर्म और शुद्ध क्रिया की जड काटने वाली है भांग पीना और गाली देना सिखाने वाली आदि पाप करम में प्रवर्त्तावने वाली है इसलिये कितने ही विवेकी पुरुष इस को श्रावक कुल में से वाहिर निकालना चाहते हैं उन्हीं की सम्मति से हमने पिछले पत्र में इस विषय में कुछ लिखा था और उम्मेद की थी कि आप सर्व भाई भी इस बुरी कुरीत के दूर करने में अवश्य उद्यम करेंगे सो यकीन है कि आप ने किया होगा कृपाकर उस के समाचार अवश्य लिखना जी. ॥

आगे हम लोगों ने इस विषय में यहां क्या किया सो आप को लिखते हैं. ॥

प्रथम फागुन सुदी १३ के दिन एक एक विज्ञापन लिखकर मंदिर जी के द्वार पर लगा दिया था उस में लिखा था कि होली के विषय में व्याख्यान होगे सर्व भाई मंदिर जी में रात के ७॥ वजे अवश्य पधारें

इस विज्ञापन के अनुसार त्रयोदशी की रात को सभा हुई और वहुत से भाई व्याख्यान सुनने को पधारे व्याख्यान दाता वावू वैजनाथ जी वाकला वाले नें एक छोटा सा ललित और मनोहर व्याख्यान होली के स्वरूप में दिया ॥

उन्होंने कहा कि होली का जैनी और जैन धर्म्म से कुछ संबंध नहीं है पाड पडोस की देखा देखी जो लोग होली के ख्याल में जाते हैं वे प्रथम तो अपने धर्म्म को दोयम शुद्ध आचर्ण को विगाडते हैं क्योंकि होली में जो खाक और पानी सिरमें पडते हैं तथा मुंह और नाक में घुसते हैं उनका कुछ ठिकाना नहीं होली में छः काय के जीवों की

हिंसा होती है जिमीन खोदने और उस पर आग जलाने से धरती के जीवों की अन छाना वहुत पानी फैलाने से पानी के जीवों की वहुत अग्नि प्रज्वलित करने से अग्नि और हवा के जीवों की और हरी लकडीयां जलाने तथा बूंट और जो भुनने से वनस्पति के जीवों की तथा बूंट (छोला) के पत्तों में मोटी २ हरी २ लटें होती है उन सब की बुटों को होली की झल में भुनने से हिंसा होती है ॥

फिर इस होली के वास्ते लडक पन से चोरी करना और धाडा मारना सीखना और करना पडता है. ॥

घर २ में उपले ईंधन चुराते फिरते हैं गली बाजार में जाते हुये के माल को जबरदस्ती छीनते हैं ॥ और झूट वचन बोलना गाली बकना यह तो होली का श्रृंगार है होली के अवसर मे जो लडके अपने मा वाप के सामने निर्लज्ज हुये गाली बकते है वे जन्म भर नहीं भूलते और वे ही सारी उमर माता पिता को गालीयां देते रहते है फिर कुसील और व्यभचार से तो होली की उत्पत्ती ही है.

मन से वचन से हाथ से काय से संपूर्ण काम पर स्त्रियों से प्रति निर्लज्ज हुये करते हैं यहां तक कि काकी भोजाई मामी सास साली सलेज आदि पुज्य रिस्तेदारों से भी अयुक्त क्रिया करते नहीं शरमाते हैं और इसी सवब से पर वस्तु की चाहना रूप अति तृश्ना भी इस होली मे होती है सो पाचों पापों की जड यह होली है. ॥

फिर उन्होंने कहा कि मद्यका त्यागकरना यह जैन धर्म्म की पहली सीढी है जो होली के ख्याल में जाता है वह अवश्य मद्य याने भांग पीता है और जन्म भर पीता रहता है इस कारण जैनी कहलाने पर भी जैन धर्म्म के बाहर ही रहता है और होली के ख्याल से कोई प्रयोजन भी सिद्ध नहीं होता है हर तरह से अपना नुकसान ही होता

है जैनीयों के वास्ते वडा भारी नुकसान इस में यह है कि फागुन में अष्टान्हकाजी का महा पर्व वृतों का अवसर है सो होली का खेलने वाला व्रतों का भंग कर अति तीव्र पाप उपार्जन करता है इसलिये भाईयों यह श्रावक कुल अष्टान्हकाजी का पर्व पुन्य उपार्जन करने का समय है सो पाप कार्य में खोना उचित नहीं है इस समय में धर्म्म सेवन करना वाजिव है. ॥

इस के पश्चात उन्होंनें होली से वचने और धर्म्म सेवन का उपाय भी वतलाया उस के अनुसार चतुरदशी (याने होली वालेदिन) और पूनम (याने छारंडी के दिन इस प्रकार काररवाई की गई. ॥

चोदस के दिन में तो अष्टान्हकाजी की पूजन हुई और रात्रि को ७॥ वजे से ११ वजे तक श्री धर्मोपदेश सिद्धान्त रत्नमाला का व्याख्यान भजन मंदिर जी में हुये और जिन भाईयों को होली से अरुची हुई वे मंदिर जी में वैठ धर्म्म ध्यान में लीन रहे होली में नहीं गये. ॥ पूनम के दिन प्रातःकाल तो नित्यनेम की पूजा और शास्त्र जी हुये. ॥ पीछे रसोई जीम कर १० वजे के करीव मंदिर जी में सव आये वहां साज वाज से भजन हुये १२ से ४ वजे तक पूजा साज वाजे से गाय कर हुई. इस में सर्व भाईयों को जो मंदिर जी मे थे वडा ही आनंद आया जो लेखनी के सामर्थ से वाहिर है. ॥

इस प्रकार करने से अनुमान दो सौ स्त्री पुरषों के दोनों दिनों पुन्य का संचय और पाप का नाश हुआ. ॥

अष्टान्हकाजी के वृत में संवर सहित धर्म्म ध्यान में लगे रहें ॥ और इसी कारण से वे होली में भी नहीं गये और न वे लंगूर वंदर वने. ॥

होली के ख्याल में जाने से क्या होता है और मंदिर जी में रहने से क्या होता है इस को वे भाई भले प्रकार जान सके और कह

सक्ते हैं जो होली में न जाकर मंदिर जी में रहे होली के अवसर में दूकान वगैरह गृह कारज से छुट्टी रहती है विना काम मन विश्राम पावे नहीं तब जैसा होली के ख्याल में पाड़ पड़ोस के लोगों को देख कर उन्हीं के माफिक आप भी हीनाचार में प्रवर्त्तने लग जाय सो उस हीनाचार पाप रूपी प्रवृत से बचने का एक यही उत्तम उपाय है उस रोज मंदिर जी में उच्छव पूजा और भजन और धर्म्मोपदेश होना चाहिये इन कारणों से इन में मन लगेगा और उधर नहीं जायगा. ॥

होली राक्षसी का दौड दौडा सब जगह में है परन्तु जिन मंदिर के द्वार में भी घुसने की उस की सामर्थ नहीं है इस लिये जो इस होली राक्षसी से बचना चाहें उन को जिन मंदिर का सरण गृहण करना उचित है. ॥

जिन भाईयों ने हमारे लिखे माफिक होली से बचने का कुछ उद्यम इस साल किया होय तो वे कृपा कर जरूर चिट्ठी लिखें और हमेशह इसी प्रकार करते रहें जिन्होंने इस साल प्रमाद वस कुछ नहीं किया होय तो उन से प्रार्थना है कि आगे के साल से अपने २ मंदिरों में उपर लिखे प्रमाण उद्यम करें. ॥

सागर में होली बंद

भाई बालचन्द्र जी संघई सागर से लिखे हैं कि हम अत्यन्त हर्ष पूर्वक धन्यवाद देकर उन महाशयों प्रति स्तुति गोचर होते हैं कि जिन्हों ने जैन प्रभाकर में छप वाने के कारण से हमारे शहर सागर में होली की कुरीति मिटा कर इसी साल से सुरीति चलाई याने हमारे यहां के श्रावकन ने होली के समय श्री मज्जैन मंदिर में जाकर दिन को श्री

शेष आगे

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अजमेर

अर्थात

जैन धर्म और जैनसभा सम्बंधी माशिक पत्र

जिसे

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ लाला छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया है

नम्बर ७

जेठ सुदी १ सम्वत १९५१ मई सं १८९४ का

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

भार्गव प्रेस अजमेर में छपा

विज्ञापन

सर्व भाईयों से जिन के पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिर जी वा सभा आदि स्थानों में जहां वहुत से श्रावक एकत्र हों पढकर सुनादें. ॥ आप के शहर की जाति और धर्म संबंधी नई वार्ता पत्र में छापने को भेजें. ॥ जो भाई पत्र लेना चाहें हमे पोस्टकार्ड भेजकर मगालें. ॥

जैन प्रभकार की सालियाना कीमत शहरवालों मे ॥॰) वाहर वालोंसे मय डाक महसूल १) ओ एक पुस्तक का ॰) है. ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपेगा.॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या, धन, धर्म, ज्ञान की उन्नति करना इस के उद्देश हैं

३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपेगा

सर्व चिट्ठी रुपया लाला छोगा लाल कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम से भेजना चाहिये. ॥

॥ विज्ञापन ॥

श्री जैन विद्यालय भंडार

यह भंडार जैन धर्म संबंधी विद्या वृद्धि करने निमित्त नये नगर के श्री जिन बिंब प्रतिष्ठा महोच्छव में सं १९४७ में नियत हुआ है इस के प्रधान सेठ चांद मल जी सोगरणी मुन्तजिम सायरात राज जैपुर के हैं जो भाई रुपया जमा कराते हैं उन को रसीद दी जाती है रुपये की हुंडी खरीद कर व्याज उगाया जाता है और विद्या वृद्धि में लगाया जाता है ज्ञान दान शास्त्र दानदेने की आप को इच्छा होय तो रुपया इस भंडार में जमा कराईये.

छोगा लाल अजमेरा

कोषाध्यक्ष जैन विद्यालय भंडार अजमेर

श्री

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ५ | अजमेर मई सं० १८९४ | संख्या १

जैन विद्यालय की परीक्षा

श्रीयुत भाई पंडित भोली लाल जी सेठी जैपुर निवासी ने हमारी चिट्ठी के जवाब में लिखा है कि वैसाख वदी १४ को पाठशाला में कमेटी हुई जब कुल पढाई पाठशाला का हाल देखकर कार्तिक शुदी १५ की परीक्षा होनेके वास्ते ऐसा तजवीज किया गया

अवल दरजे में
प्रथम श्रेणी
कौमुदी लघुसिद्धान्त समग्र
धर्मसर्माभ्युदय काव्य २ सर्ग
जुबानी हिसाब किताब

दूसरी श्रेणी
गणान्तकौमुदी
चंद्र प्रभ काव्य ३ सर्ग
हिसाब पंचराशिक

तीसरी श्रेणी

कौमुदी लघुभुवादि गण
तथा अदादि गण पर्यन्त
चंद्रप्रभ काव्य १ सर्ग
हिसाव त्रैराशिक

दूसरे दरजे में

प्रथम श्रेणी

कालाय व्याकरण भुवादि गण संपूर्ण
रत्नकरंड श्रावकाचार और
द्रव्य संग्रह संपूर्ण
हिसाव त्रैराशिक

दूसरी श्रेणी

कालाय व्याकरण षटलिंग
रत्नकरंड श्रावकाचार सम्पूर्ण
हिसाब त्रैराशिक

तीसरे दरजे में

लघुकौमुदी पंच संधि साधनिका सहित.
रत्नकरंड श्रावकाचार के २ अधिकार(सम्यक् ज्ञान तक) अर्थ सहित
हिसाव आना पाई का भागतक

चौथे दरजे में

कौमुदी पंचसंधि साधनिका सहित
अमरकोष २ कांड सवनोषधि वर्गतक
हिसाव आना पाई की वाकी तक
सूत्र जी मूल

इस तरह चारों दरजे मे कार्तिक की परीक्षा के वास्ते पढाई कायम कीगई है सो आप भी विचार लेवें और जैन प्रभाकर पत्र में छाप देवें कि इसी माफिक पढाई जारी होजावे और फिर कार्तिक के महीने में जो जो लडके तैयार होगें उन के नाम लिखे जावेंगे फिर जो आप परीक्षा के पत्र भेजेंगे उनकी परीक्षा कराई जावेगी और आइंदे से साल भर मे एक परीक्षा लेना तजवीज किया है वो ठीक है.

इस चिठी में और भी समाचार हैं वह इस विषय से अलग हैं इस कारण यहां नहीं लिखे गयेहै.॥

जोकि इस समय में जैन धर्म्म संबंधी विद्या की अति हानी देखकर हम को निहायत खेद होता है क्यों कि धर्म्म का मूल ज्ञान है और ज्ञान शास्त्राभ्यास किये विना होता ही नहीं इसलिये जैनी बालको को शास्त्राभ्यास के सन्मुख कराना यही हमारा परम इष्ट प्रयोजन है और जिन जैनियों को अपने धर्म्म से रुचि है और अपने धर्म्म में प्रतीत और दृढ श्रद्धा है उन्हें अपने धर्म्म की उन्नति वा प्रभावना अवश्य करनी चाहिये.

धर्म प्रभावना करने के समर्थ दो पुरुष है एक तो जैनी पंडित दूसरे जैनी धनाढ्य परन्तु खेद की बात यह है वे दोनों ही विद्या बृद्धि करने में आलसी और प्रमादी हैं .॥

हे भाईयो अपने शरीर और शरीर के संबधी स्त्री पुत्रादि की सेवा चाकरी करने में बहुधा दिन रात के चौवीसो घंटा को लगाते हो परन्तु अपने आत्मा और अपने धर्म की सेवा में एक मिनट भी नहीं लगाते सो बडी भारी भूल की बात है इसलिये आप से वारंवार सविनय प्रार्थना की जाती है कि गृह कार्यों में से कुछ थोडा सा समय बचाकर अपने आत्मा के हित और धर्म की बृद्धि निमित्त अवश्य लगाओ तो जैसे एक एक मेंह की बूंद कर तालाव नदी नाळे भर जाते हैं वैसे ही थोडा २ करने से पुन्य का संचय और धर्म की प्रभावना बृद्धि को प्राप्ति होंगे. ॥ और जैसे कि बडे लोगों को करते हुये देखते है वैसे ही सामान्य भी करते है इस न्याय से जब पंडित और धनवानों को ज्ञान और विद्या की बृद्धि में उद्यम करते समय और धन लगाते हुये सामान्य सर्व जैनी देखेंगे तब वे भी इसी प्रकार करने लगेंगे इस वास्ते पंडित और धनाढ्यों को अब आलस छोडना उचित है और जैसे ज्ञान की बृद्धि और जिन धर्म की प्रभावना हो वैसा उद्यम शीघ्र ही करना योग्य है

भाई भोली लाल जी ने जो जैपुर के पंडितों की सम्मति से पढाई लिखी है उसे हम स्वीकार करते हैं और आशा है कि जहां २ पर जैन पाठशाला हैं वहां के कार्य्याध्यक्ष इसी प्रकार की पढाई अपनी पाठशालाओं मे नियत कर के कार्तिक की परीक्षा के वास्ते विद्यार्थियों को तैयार करें सब शहरों के विद्यार्थियों की परीक्षा लीजायगी और उन में जो अच्छे निकलें गे उनको जैन विद्यालय भंडार के ब्याज में से इनाम दिये जायंगे

जैनी विद्वज्जनों से यह प्रार्थना है कि सर्व विद्वज्जनों की एक कौनसल (सभा) बननी चाहिये और सब मिलकर हरएक दरजे की परीक्षा निमित्त अपने में से परीक्षक नियत करें वा परीक्षक प्रश्न करे और उत्तर जांच कर निर्णय करे कि कौन २ से विद्यार्थियों के उत्तर ठीक और इनाम पाने के लायक हैं यदि सर्व देशों के पंडित एक सम्मति होकर इस प्रकार नहीं करेंगे तो यह परीक्षा लेना इनाम बांटना आदि जो जैन धर्म संबंधी विद्या बृद्धि करने के उपाय जारी कियेगये हैं फलदायक न होंगे. ॥

पंडितों की कौनसल की बडी आवश्यक्ता है. ॥

जो भाई इस लेख को पढकर विद्या बृद्धि करने के अभिलाषी और रुचिवान होय वे कृपाकर अपना २ नाम एक कार्ड पर लिखकर हमारे पास भेजें वह सब नाम अगले पत्र में प्रकाश किये जावेंगे और विद्या बृद्धि करने का थोडा २ भार उन के सुपर्द किया जायगा. ॥

और धनाढ्य भाईयों को भी इसी कौन्सल में शामिल होना और विद्या बृद्धि करने में जो कुछ खर्च पडे उसका थोडा २ विभाग अपने जिम्मे लेना वाजिब है अर्थात जैन विद्यालय भंडार के बृद्धि करने में उद्यम करना उचित है. ॥

जैन विद्यालय से आगामी काल में बडे २ लाभ होंगे क्योंकि इस

का मूलके द्रव्य अविनाशी होने के कारण सदा काल स्थिर रहेगा और व्याज से धर्म संवधी विद्या की निरंतर वृद्धि करता रहेगा. ॥

जैनी पंडितों और धनाढ्यों के नाम आने पर उन की कौनसल नियत की जायगी और कौनसल से क्या २ काम लिये जावेंगे. वह सब आगे के पत्र में खुलासा लिखेंगे

अजमेर में मेला

यहां पर मेले का उच्छव वहुत अच्छा हुआ गरमी और विवाहादि गृह कार्य्यों के निमित्त परदेशी भाई वहुत कम आये थे लेकिन मंडप की रचना वाजार में रथ की सवारी पूजा का उच्छव नृत्य और भजन से जिनेन्द्र की भक्ति आदि वडा आनंद रहा वडे हर्ष की वात यह थी कि श्री युत पंडित शिरोमणी पंडित वळदेव दास जी साहिब आगरा निवासी यहां पधारे और सभा में शास्त्र जी का व्याख्यान करते थे भाई केदार मळ जी वागडिया जिन्हे वागड देश में धर्म की धुरा कहना चाहिये कि जिन के उपदेश और शुद्ध आचरण से उसदेश में उद्योत होरहा है वे भी पधारे थे और भाई गोपाल दास जी मुनीम रत्नलाल जी मथुरा वाले भी आये थे दिनरात धर्म कथा होती थी और सर्व सज्जन भळे प्रकार सुनते थे. ॥

हमने पहले लिखा था कि कम से कम सौ भाईयों की चिट्ठी आवेगी तो सभा करेंगे और जो कुछ कि श्रावक कुल की उन्नति और धर्म प्रभावना करने के उपाय हमने सोचे है सो निवेदन करेंगे हमारे पास सिर्फ एक भाई केदार मळ जी की चिट्ठी इस विषय में आई और कोई जैनी भाई ने इस पर ध्यान नहीं दिया और न अपनी सम्मति की चिट्ठी भेजी मालूम नहीं होता कि चिट्ठी न भेजने का क्या कारण हुआ

हमारी समझ में दो कारण आते हैं अव्वल तो यह कि श्रावक कुल की उन्नति और धर्म प्रभावना करने की उन की इच्छा नहीं हो उनको यह कार्य्य ही अनिष्ठ प्रयोजन अर्थात निकम्मा और बे मतलब हो और दूसरे यह कि चिट्ठी भेजने में प्रमाद हो. ॥

लेकिन ज्यादह विचार करने से निश्चय होता है कि पहला कारण तो नहीं है क्योंकि अपने कुल की उन्नति आरै और धर्म की प्रभावना कौन नहीं चाहता सर्व ही चाहते हैं और जैनी तो विशेष चाहते हैं सो सर्व के प्रत्यक्ष है हर साल धर्म प्रभावना में लाखों रुपये खरच करते और अनेक सीत उष्न वर्षा की बाधा सहकर और धन खरच कर दूर २ देशों के जिन विम्ब प्रतिष्ठादि उच्छवों मे जाते तीर्थ यात्रा करते पूजा करते हैं. ॥

जैनियों को अपने धर्म की प्रभावना करना अति प्रिय और इ-

धर्म प्रभावना सभा निमित्त हमारे पास चिट्ठियां न आने का मुख्य कारण प्रमाद ही मालूम होता है. ॥

जैनियों का प्रमाद भी जगत में विख्यात है. ॥

गरज यह है कि हमारे भाईयों के प्रमाद के वश से सभा नहीं हो सकी और यह भी एक सुअवसर हाथ मे से जाता रहा सो अब आ नहीं सक्ता. ॥

हम ने जो बातें सोची थीं और उन एक २ के साथ सभा में विस्तार सहित व्याख्यान करना चाहा था और सभा के वादानुवाद सहित निर्णय कराना चाहा था वह बात मन की मन में ही रही कागज पर सब को लिख नहीं सक्ते परन्तु अब भी आशा है कि अगर आप सर्व भाई मददगार और सहाई होवें तो हम मथुरा में श्री जंबु स्वामी जी के मेळे में आवें और आप की सेवा में अर्ज करें. ॥

अब आगे इस अभिप्राय से

कि आप सर्व भाई उन वार्तों के जानकर पहले से हो जाओ और उन मे जो कुछ न्यूनाधिक करने की आवश्यक्ता समझो तो करके हमारे पास भेज दो हम उन वार्तों को नीचे लिखते हैं हमारी समझ में ये सर्व श्रावक कुल और श्रावक धर्म की उन्नति और प्रभावना करने वाली है इन पर आप भले प्रकार विचार करके अपनी सम्मति बाबू बैज नाथ आडिट ओफिस अजमेर के पास चिट्ठी में भेज दीजिये. ॥

॥ श्री ॥

श्री मत् जैन धर्म की प्रभावना और श्रावक कुल की उन्नति होने के उपाय. ॥

१ सर्व श्रावक पुरुष और स्त्री बाल वृद्ध तरुण प्रमाद त्याग करके प्रथम प्रात काल मंदिर जी में दर्शन करने को आवें क्योंकि दर्शन ही धर्म का मूल और सुखका दाता सर्व उत्तम गुण रत्नों का कोष है. ॥

२ मंदिर जी में प्रति दिन शास्त्र जी का व्याख्यान होना चाहिये और सर्व श्रावकों को निराकुल चित्त शास्त्र जी का उपदेश सुनना चाहिये. ॥

क्योंकि जिन वाणी ही एक अद्वितिय सर्व पदार्थों के प्रकाश करने वाली और अज्ञान अंधकार के नाश करने वाली दीपक की शिखा है. ॥

३ सर्व श्रावक भाई अपने ज्ञान और विवेक की वृद्धि करने निमित्त प्रति दिन शास्त्र जी का स्वाध्याय मंदिर जी में करै. ॥

४ हरएक श्रावक भाई को उचित है कि अपने वित्तानुसार कम से कम एक महीने मे एक बार अपने निज के अष्ट द्रव्य से श्री जिनेंद्र की पूजा करैं क्योंकि भगवान की पूजा परम पुन्य उपार्जन का हेतु और संपूर्ण विघ्न की नाश करने वाली परम मंगल की करने वाली

है. ॥

५ महीने में कम से कम एक वार किसी खास मंदिर में जो उस शहर के मध्यस्थान में हो और जहां सर्व स्त्री पुरुष एकत्र हो सकें उस मंदिर में दिन को मंडल मांढकर उच्छव सहित पूजा करैं और रात्रि को शास्त्र जी के द्वारा अथवा मुख से धर्मोपदेश सभा में होवें इन दोनों अवसरों पर शहर निवासी सर्व स्त्री पुरुष उसी मंदिर में भेले होवें और पूजा और धर्मोपदेश श्रवण करें. सभा के पीछे नृत्य और भजन सहित रात्रि जागरण होवे.

६ जैनी वालकों को धर्मशास्त्र श्रावकाचार आदि पढाने का वंदोवस्त पाठशाळादि किया जावे और जो भाई अपने वालकों को श्रावकाचार आदि धर्म शास्त्र पढाने में प्रमादी हो उन्हें पंचायत और सभा से ओलमा मिलना चाहिये. ॥

७ जैनी विद्यार्थियों की हर महीने में एक वार परीक्षा होनी चाहिये और तीसरे महीने उपरोक्त सभा में परीक्षा होवे और इनाम पारितोषिक दिये जावें. ॥

८ जिन लडकों के माता पिता ने स्वर्गवास किया हो अथवा जिन के माता पिता दलिद्र के कारण पढाने में असमर्थ हो तो ऐसे लडकों को उस शहर का रईस धनाढ्य पुरुष या पंच मिलकर अपनी रक्षा में ले लेवें और उन के भोजन वस्त्र का वंदोवस्त करके विद्या पढावे रोजगार से लगावें सुमार्ग में चलावें. ॥

९ जैनियों में शुद्ध आचरण की मुख्यता है बीमारी मे दुख के कारण धीर्य जाता रहता है अशुद्ध दवाई खाने से आचरण विगडता है इसलिये शुद्ध आचरण की रक्षा के वास्ते सर्व स्रावकों को मिलकर शुद्ध प्रासुक औषध के वाटने का वंदोवस्त अवश्य करना चाहिये. ॥

१० वहुत से श्रावक भाई धन हीन और दलिद्री होने के कारण स्रावक कुल के अयोग्य हीना

चार करने लग गये हैं इस से जगत में श्रावक कुल की बडी निंदा और अपमान होता हैं और वे भाई धर्म सेवन भी नहीं करसक्ते हैं इसलिये उन को धर्म में स्थिर रखने और श्रावक कुल की श्रेष्ठता स्थिर करने को उन भाईयों को यथायोग्य धन आजीवका असन पान की सहायता करने का वंदोवस्त होना चाहिये. ॥

११ जो कि धन हीन दलिद्री होने के कारण संक्लेश परिणाम होते हैं जिन से मनुष्य धर्म और शुद्ध आचरण से च्युत होजाते हैं इसलिये हर एक भाई को अपने धर्म में दृढ आरूढ रहने और आरत रौद्र ध्यान के मेटने के वास्ते अपव्यय (फिजूळ खरची) न करना चाहिये और न अपने माथे कर्जे (ऋण करना चाहिये. ॥

१२ श्रावकाचार की रीति के माफिक अपने उपार्जे धन के यथा संभव इस माफिक विभाग करने चाहिये. ॥

१ रसोई कपडा आदि मामूली खर्च. ॥

२ पूजा दान यात्रा खरच. ॥

३ विवाहादि खर्च गैर मामूली खर्च. ॥

४ रोग जरा दुर्भिक्ष आदि अकस्मात खर्च. ॥

५ वृद्धि भंडार. ॥

और हर एक खर्च को उसी के विभाग माफिक खर्च करें. ॥

१३ वृद्ध वा रोगी स्त्री पुरुष तथा विधवा और अनाथ बालकों की भोजन वस्त्र से सहायता करने का वंदोवस्त होना चाहिये. ॥

१४ हर एक शहर में एक २ श्रावकापकारक भंडार नियत होना चाहिये कि जिस का मूल द्रव्य अविनाशी रहे और व्याज से विद्य पढाना प्रासुक दवाई बाटना विधवा अनाथ रोगी बाल वृद्ध की सहायता आदि जो कार्य ऊपर वर्णन किये हैं किये जावें. ॥

१५ भंडार के नियत करने की तरकीब यह है कि प्रारंभ में हर एक

शहर के रहने वाले सर्व जैनी भाई मिलकर अपनी २ शक्ति प्रमाण नकद रुपया एक दिन सभा करके एक थाल में जमा करदें उस को संभालकर एक कमेटी के सुपुर्द करें और वह कमेटी उस का हिसाब किताबरक्खे. ॥

फिर हर एक जैनी पुरुष अपनी २ सामर्थ प्रमाण हर रोज उस भंडार निमित्त अपने २ घरों में एक गोलक में जमा करें और जो कुछ महीने में जमा हो जावे उस सब को एक रूमाल में बांधकर माहवारी सभा में एक थाळ में धरदें इस प्रकार सब भाई अपना द्रव्य रक्खें और सभा सभाल कर भंडार की कमेटी के सुपुर्द करे इस प्रकार थोडे काल में भंडार बढजायगा. ॥

१६ इसी प्रकार श्रावकाओं को भी उचित है कि हर रोज कम से कम एक मुट्ठी धान भंडार निमित्त अपने घर में अलग रखती जावें और महीने के अंत में अपने धनी व पुत्र के हस्ते सभा में भेज दें. ॥

१७ हर एक शहर में छटे महीने व सालियाना रथ यात्रा का उच्छव होना चाहिये इस में धर्मोपदेश होने चाहिये और सभा पाठशाला औषधालय परोपकारक भंडार आदि जो कुछ काम उस समय में हुये हों भंडर की आमदनी खर्च का आंकडा आदि सबे काररवाई वता दी जावे और आगे के वर्ष का नया बंदोवस्त-जो कुछ आवश्यकहो करलेना चाहिये

इस वार्षिक उच्छव पर आस पासके श्रावकों को भी बुलानाचाहिये

१८ सर्व श्रावकों की एक महा सभा हर साल किसी मध्य स्थान में होनी चाहिये उस महा सभा में हर एक शहर के प्रतिनिधि आवें और विचार कर धर्म प्रभावना श्रावक कुल की उन्नति का प्रयत्न आदि आवश्यक कार्य करें ॥

१९ एक २ मध्य स्थान में एक जैन विद्यालय नियत हो कि जहां उच्च श्रेणी की धर्म संवधी संस्कृप्राकृत और लोकिक विद्या पढाई जावे.

२०एक जैनियों का माहवारीअखवार

श्री
जैन प्रभाकर

अजमेर

अर्थात

जैन धर्म और जैन सभा सम्बंधी माशिक पत्र

जिसे

जैनी श्रावक भाइयों के हितार्थ लाला छोगालाल
अजमेरी ने प्रकाश किया है

नम्बर ६

फरवरी सं १८९४ का

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

भार्गव प्रेस अजमेर मे छपा

श्री सम्पादक जैन प्रभाकर जी महाशय समीपेषु एक लेख भेजता हूं कृपा कर अपने धर्महितकारी पत्र में शीघ्र स्थान दीजिये.॥

आप का कृपा कांक्षी
द: भैरव प्रसाद

मिती माघ सुदी १
सम्वत १९५०

जैन ग्रंथों के छपने की मनाई ॥

—o—

अब की दफ़े मथुरा जी के मेले में मिती कातक बदी ७ सम्वत १९५० को आम सभा में यह बात निश्चय हो गई कि जैन ग्रंथों का छपना बहुत अनुचित है और कदाचित नहीं छपना चाहिये अगर कोई साहिब छपवा कर छपावें तो छपा हुआ ग्रंथ मुफ्त मिलने पर भी नहीं पढना न औरों को पढाना चाहिये और जो चिट्ठीयां मेला व प्रतिष्ठा आदि की हर शहरों में भेजी जाती हैं उन में भी ग्रंथो के श्लोक कवित दोहा आदि नहीं छपना चाहिये क्योंकि यह भी तो ग्रंथ ही का अंश है और अखबारों में भी ग्रंथों की चरचायें नहीं छपनी चाहियें अगर कोई साहिब छापे तो उस अखबार को कोई नहीं लेवे हम को आशा है कि समस्त धर्मात्मा महाशय इस पर ध्यान दे कर अवश्य छापे की प्रवृत्ति रोकने में पूरा २ उद्यम करेंगे और अपने आस पास के शहर कसबा व गाओं में भी खबर कर देवेंगे.॥

शुभ चिन्तक

इलाहाबाद
कातक सुदी १ सं १९५०

—o—

सब चिट्ठीयां मनी आरडर छोगा लाल अजमेरा घसीटी बाजार अजमेर के नाम से भेजना चाहिये. ॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह । तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै । सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ५ | अजमेर फरवरी सं० १८९४ | संख्या १

सम्पादकीय टिप्पणिका

—o—

हमारे जैनी भाईयों को अपने पुण्य कर्म का वडा धन्यवाद करना चाहिये कि जिसके सबब से उन्हों ने जैनकुल में जन्म पाया है

सर्व उत्तम धर्म कर्म सुद्धाचर्ण और ज्ञानादि गुणों को घातकर आत्मा का नाश करनेवाला मद्य मांस पनि खाना है सो जैनियों को अपने कुलकी मर्य्यादा से जन्म दिवस से ही त्यागना होता है यहां तक कि जैनी मद्य मांस से दूर रहने को भांग तमाखू अफीम आदि नशे करने वाली चीजों को भी इस्तेमाल नहीं करते हैं और चर्म जल घी तेल हींग आदि का खाना भी त्याग करते हैं ॥

हमारे श्री गुरुओं की अज्ञा यही है कि मद्य मांस मधु को त्यागेगा वही पुरूष जितेन्द्र की आज्ञा और धर्म गृहण करने का पात्र होगा.

आज दिन यूरुप एमेरीका आ-

दि_देशों के विद्वान पुरुषों ने भले प्रकार निश्चय किया है कि मद्य मांस आत्मा के बड़े शत्रु हैं और वे मद्य मांस के पीने खाने के रोकने के वास्ते बड़े २ उपाय भी करते जाते हैं ॥

उन्होंने मद्य (शराब) पीने की मनाही करने को जगह २ पर सभायें नियत की हैं और बड़े २ विद्वान धनवान प्रसिद्ध पुरुष अनेक देशों में मद्य के दोषों को और उस के त्याग के गुणों को उपदेश देते परिभ्रमण करते हैं इसी प्रकार मांस भक्षण करने के त्याग पर भी व्याख्यान होते हैं और पमफ्लेट यानि छोटी २ पुस्त कें जिनमें मद्य मांस के त्याग का वर्णन है छाप २ कर मुफ्त बांटी जाती हैं और बहुत से अखबार इन्हीं विषयों पर छप कर प्रकाश होते हैं और यह बड़ी खुशी की बात है कि हजारों मनुष्योंने उनके उद्योग से मद्य मांस का पीना खाना छोड़ दिया है और छोड़ते जाते हैं ॥

कायस्थ लोगों में मद्य मांस का प्रचार अधिक था यह सब जानते हैं परन्तु उन्होंने भी इनकी बुराइयां जानकर अब त्याग की तरफ नजर की है और सभायों और अखबारों के द्वारे इनके त्याग के उपदेश होते हैं खुशी की बात है कि नई सर्की के बहुत से लोगों ने त्याग किया है ॥

स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य्य समाज स्थापन किया था और वैदिक धर्म को नये सिरसे प्रचार किया था तो उन्होंने कहा था कि वेद में मांस भक्षण का उपदेश नहीं है और उन्होंने जो वेदभाष्य बनाया है उसमें वेद मंत्रों के ऐसे ही अर्थ किये हैं कि जिन में अश्वमेधादि जीव हिंसा के जग्य और सोम (एक तरह का मदिरा) पीने का निषेद है वे वेदके अर्थ सही हैं या गलत हैं इस विषय में हमको कुछ कहना नहीं है उनका यह जीव दया और मद्य मांस के निषेद का

प्रयत्न अति सराहने योग्य है और उनके जो मतानुभाई इस सिद्धान्त पर चलते हैं सो भी धन्य हैं ॥

शोक और आश्चर्य की वात है कि आर्य्य समाज के कई सन्यासी और पंडित उपदेशक स्वामी दयानन्द के प्रतिकूल मांस भक्षण का उपदेश खुल्ला खुल्ला करने लगगये हैं और शर्त बांध कर कहते हैं कि वेदों में मांस भक्षण और सुरापान स्पष्ट रीति से वर्णन किया है और कि मांस खाना वैदिक धर्म है ॥

बडे शोक की बात है कि योरुप अमेरीका के निवासी जिनको अनार्य बतलाते हैं वह तो मद्य मांस पीने खाने के त्याग का उद्यम करें और जो अपने को आर्य्य बतावें वे मद्य मांस पीने खाने का सभाओं में उपदेशकर उन्हें पुष्ट करें ॥

हमारे कुछ भोले भाले अज्ञानी लडके, उनकी माता पिता के प्रमाद के कारण से कि उन्होंने उनको श्रावकाचार नहीं पढाया अंगरेजी के मार्ग में बन्धन से डालदिया वे लडके आर्य्य समाजों में भरती होगये है उनकी तरफ का हमको वडा फिक्र है कि क्या वे आर्य्य समाज के नये सिद्धांतों के और वैदिक धर्म की आज्ञानुसार मद्य मांस का खाना पीना स्वीकार करेंगे अगर ऐसा हुआ तो वडा भारी अनर्थ होजायगा इसलिये हम जैनी माता पिताओं से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने लडकों को आर्य्य समाजों में जाने से रोकें ॥

लेकिन यह भी याद रखना चाहिये कि लडके कहने या धमकाने से नहीं मान सकेंगे क्योंकि धर्म विषय में कोई किसी का अधिकारी नहीं है जिसको जो धर्म रुचे वह उसको गृहण करसक्ता है इसलिये मिथ्या मार्ग से रोकने का उपाय शास्त्र ही का पढना है इसवास्ते जो चाहते हैं कि उनकी सन्तान उनके धर्म मार्ग में चले तो उनको उचित है कि वालपन से ही उन्हे अपने धर्म शास्त्र पढावें और यही रीति प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर भी है अंगरेज अपने ल-

डकों को बाईबिल पढाते हैं मुसलमान कुरान पढाते हैं यहूदी तौरेत पढाते हैं वैश्नव भगवत विश्नुसहस्रनाम पढाते हैं इत्यदि सब अपने २ धर्म शास्त्र पढाते हैं परन्तु श्रावक अपने लडकों को श्रावकाचार नहीं पढाते सो यह उनकी बडी भारी भूळ है ॥

जो श्रावकाचार नहीं पढा वह कैसा श्रावक ॥

उसको क्योंकर माळूम हो सक्ता है कि उसके देव गुरू धर्म का क्या स्वरूप होगा जब लडके श्रावकाचार नहीं पढते और बचपन से अंगरेजी फारसी पढने को मदरसों में जाते हैं तो मदरसों के लडकों के साथ उनके धर्म को भी सीख जाते हैं बस अपने धर्म से उन्हें अरुचि होती है क्योंकि उसे तो वे जनाते ही नहीं और, और और धर्मों का जिनका मदरसों में चर्चा रहती है उन पर विश्वास होजाता है

हमारे देखने में एफ ए बी ए पास किये हुये जैनी आये हैं जो कि जैन धर्म का एक अक्षर भी नहीं जानते ॥

इसका क्या सबब है ॥

इसका यही सबब है कि उनके पितादि गुरूजनोंने उनकी धर्म शिक्षा पर कुछ परवाह नहीं की अगर वे कुछ थोडा सा भी उद्योग धर्म शिक्षा का करते तो जिस प्रकार उन्हों नें एम ए और बी ए पास किये उसी प्रकार अपने श्रावकाचार आदि कुल धर्म की पुस्तकों को भले प्रकार थोडे काल में देख और जान सक्तेथे और अपने धर्म के दृढश्रद्धानी भी हो जा सक्ते थे ॥

लडकों को धर्म शास्त्र की शिक्षा नहीं मिली वह उनके पितादि गुरू जनों का कसूर है और अब उनको धर्म मार्ग में लाना अति कठिन कार्य है क्योंकि कुशास्त्र की कुयुक्तियां और खोटे उपदेश उनके मगज़ में भरगये हैं तो भी हर एक विद्वान पंडित और शास्त्र उपदेशक तथा उन लोगों के गुरू जनों को उचित है कि

उनको जिस तरह हो सके सत्यार्थ धर्मोपदेश देकर सत्य सनातन जैन धर्म पर श्रद्धान कराना चाहिये इस से धर्म का वडा उद्योग होगा.॥

यह भी हमारी अर्ज सर्व जैनी भाईयों से है कि अब गाफिल और प्रमादी नहीं रहना चाहिये बल्कि जिस तिस तरह से लडकों को लडकपन से ही श्रावकाचार पढने पढाने का पूरा २ बंदोबस्त करना चाहिये इसी से जैन धर्म की रक्षा और जैन धर्म की प्रभावन होगी क्योंकि जो अब लडके हैं वेही दस पंदरह वर्ष पीछे जवान पुरुष होंगे और जो अब के जुवान और अधवुढे हैं वे वुढे होकर परलोक सिधारेंगे एसाही परी वर्त्तन है.॥

तो अगर इस समय के लडकों को श्रावकाचार की शिक्षा मिलेगी तो वे श्रावक धर्म के सच्चे श्रद्धानी और श्रावकाचार के शुद्ध आचर्ण के धारी होंगे जिससे आगामी पंदरवे वर्ष में जैन जाति के सर्व मनुष्य जैन धर्मी होंगे और अगर अब के लडकों को जैन धर्म श्रावकाचार के शास्त्रों की शिक्षा नहीं दी गई तो आगामी पंदरवें वर्ष में जैन जाति के सर्व मनुष्य जिन धर्म रहित नाम मात्र के जैनी रहजायंगे और अगर यही रिवाज जारी रहा तो अब से पचास वर्ष में जैनयों का नाम निशान भी नही रहेगा.॥

हम जानते है कि हमारे इस लिखनेपर वहुत से भाई नाराज होंगे परन्तु क्या करें जो हमारे विचार में आता है सो लिखना पडता है.॥

जैनीयों की जाति जन्म से नहीं है वल्के धर्म शास्त्र के श्रद्धान और उसकी आज्ञानुसार चलने पर है तो जब धर्म शास्त्र ज्ञान नष्ट हुआ तो जैन कुळ भी नष्ट हुआ. यथा बीज के अभाव से वृक्ष और दपिक के अभाव से प्रकास वेसे ही श्रावकाचार के पढने के अभाव से श्रावकों का भी अभाव निश्चय करना. और जब श्रावकों का ही अभाव हुआ तो हर

साल नये बिंब प्रतिष्ठा होते हैं और नये मंदिर बनते हैं उनके पूजनेवालों के अभाव से उनकी और जो पुराने मंदिर और बिम्ब हैं उन सब की क्या अवस्था होगी इस का विचार करने से सरीर कांपता है और शोक की अंधेरी काली घटा दिल को डरानेवाली उठती है आंसूओं की धार बहती है जुबान बंद होजाती है लेकिन एक आशा से जिससे साहस बंध जाता है वह यह है कि अब भी जैनीयों में धर्म प्रभावना करनेवाले और अपने धर्म की रक्षा के वास्ते अपने धन और जीतब्य को तुच्छ जाननेवाले अनेक पुरुष विद्यमान हैं वे हर साल धर्म प्रभावना के वास्ते हजारों रुपये खर्च करते हैं लेकिन उनका बहुतसा रुपया धर्म प्रभावना के नाम से उन कामों में लगता है जो धर्म प्रभावना के काम नहीं है अगर हमारे जैनी पंडित और धर्मोपदेशक उनको ठीक ठीक सत्यार्थ उपदेश देवें और बतावें कि शास्त्रों में प्रभावना का क्या स्वरुप लिखा है और सन्मार्ग प्रभावना किस रीति से होती है तो वुह यकीन है कि पदार्थ के यतार्थ ज्ञान होने से क्रया भी यथार्थ करेंगे और सन्मार्ग प्रभावना यथावत होने से जैन धर्म का उद्योत और जैनीयों की जाति की उन्नति भी होगी. और जैनी लोग इस संसार में सुख सहित काल व्यतीत करके स्वर्ग के विविध प्रकार उत्तम सुख भोग अविनासी सुख संपत्ति प्राप्त करेंगे.॥

मेलों में क्या होता है

—o—

हमारे यहां हर साल नगर २ में और ग्राम २ में मेले होते हैं जैसा कि मंगल पत्र का पढने से सर्व लोगों को मालूम है. ॥

कहीं तो रथ जात्रा होती है और कहीं मंदिर प्रतिष्ठा और कहीं बिम्ब प्रतिष्ठा का महा महोत्छव होता है और यह सब सुबीता मेले करने का अवसर महाराणी एमप्रेस

विकटोरिया कैसर हिन्द के राज्य सासन और उनके आफिसरों के सुप्रबंध से हम जैनीयों को प्राप्ति हुआ है इस के कोटयां धन्यवाद प्रति दिन देने चाहियें और उनके राज्य के अचल और बृद्धि होने की प्रार्थना हमेशह करनी चाहिये क्यों कि धर्म साधन में मुख्य निमित्त न्याय मार्गी धर्मात्मा राजा का राज्य कहा है जिस में धन और जीनव्य दोनों की रक्षा होने से निश्चल और संकेस रहने से चित्त धर्म में लता है ॥

दोयम जो भाई मेला कराते है उनको भी धन्यवाद देना उचित है क्योंकि कारण से कार्य की उत्पत्ति है. मेले धर्म साधन करने के कारण हैं और धर्म साधन पुन्य संचय होना उनका कार्य और फल है. ॥

इसी प्रकार से मेलों की मंगल पत्रिकाओं में भी लिखा हुआ आता है अर्थात''यहां मेले में अनेक देशो के साधर्मीजन आवेंगे और सामायक पूजा शास्त्र श्रवण गीत नृत्य भजन कर पुन्य के भंडार भरेंगे सो आप भी सर्व भाई कोटि गृह का छोड परिवार सहित अवश्य पधारिये आप के आने से धर्म की विशेष प्रभावना होगी'' इस प्रकार से मंगल पत्रिकाओ में हर्ष जनिक समाचार लिखे आते हैं और उन को पढकर बहुत से गृहस्थी अनेक गृह कार्य छोड सरदी गरमी की बाधा सहते हुये पुत्र कलित्र परिवार सहित धर्म की डोरी से खिचे हुये चलेजाते हैं ॥

लेकिन वहां मेलों में जाकर व धर्म का साधन कर पुन्य के भंडार भरते हैं या खाली हाथों रहते या गांठ का नुकसान कर घर चले आते हैं इस का विचार करना हरएक जैनी भाई को उचित हैं.॥

हम ख्याल करते है कि इस समय की रीत रिवाजों से मेलों में धर्म साधन होना दुर्लभ और अति कठन होगया है और इस में दोष मेला करानेवालों का और जात्रीयों का दोनो का मालूम हो

ता है. ॥

प्रथम मेला कराने वाले धर्म साधन के वास्ते परदेसी भाईयों को बुलाते है परन्तु धर्म साधन करने के पूरा २ सामान मुहैया नहीं करते है. ॥

वे लोग क्या करते है.एक श्री मंडप बनाते हैं. और एक नोवत खाना खडा करदेते है ध्वजा पता का जगह २ खडी करदेते है और रात्रि में अनेक दीवों की रोशनी करदेते हैं ॥ दिन में श्री मंडप में कुछ देर पूजा और भजन भी होते हैं और तीसरे पहर को रथकी सवारी निकल जाती है. रात कुछ देरतक सास्त्रजी का व्याख्यान भी होता है परन्तु दो चार पंडित जो वहां होते है सो होले २ आपसमें कोई एक एसी सूक्ष्म चरचा करते हैं या आपस में वाद विवाद करने लगते हैं कि जिनकी आवाज अव्वल तो सभासदों तक नहीं पहुचती और जो लोग नजदीक बेठे हुये कुछ सुनते भी है तो समझते नहीं लाचार या तो सभा में सोने लगजाते है या आपस में लोकीक विकथा करने लगते है या सभा में से उठकर डेरे चले जाते है. ॥

जात्रियों की यह कैफियत है कि अव्वल तो देर से सोते उठते हैं फिर दिसा बाधा न्हाने धोने में लगजाते हैं दस बजादेते हैं फिर कुछ जल्दी २ जाकर दर्शन कर आते है और फिर रसोई की तैयारी की फिक्र में लगजाते हैं दाल बाटी की तैयारी होती है बाटी का जगरा फूंकने में और चूरमा कूटने में चार घंटे होजाते हैं दो बजे मुशकिल से रसोई मिलती है फिर जेसा ऊपर लिखा हाथ मुंह धो बालों में तेल डाल छैले बन कर रथ देखने का मिसकर इधर विधर टहल ने लगते या बाजे की कडक झट सुनने लगते हैं या कुछ थोडी देर थोडी दूर तक रथ के साथ आपस मे गप्पें मारते हुये चलते हैं सायं काल फिर व्यालू की फिक्र में व्यतीत होती है इसी तरह

पांच छे दिन व्यतीत होते हैं धर्म किस समय और किस कारण से साधते हैं और पुन्य के भंडार किस वक्त भरते हैं सो हमे मालूम नहीं हुआ. ॥

हम बडा अहसान मानेंगे अगर कोई मेला करानेवाले भाई कृपा कर हमें बतावें कि उनके मेले में आये हुए भाईयों ने किस समय कौन कारण से पुन्य का भंडार भरा और जो भाई की मेले में से पुन्य के भंडार भरकर लगये वे भी कृपा कर लिखें कि उन्होने भी किस समय और कोन २ से कारणों से धर्म संचय करके पुन्य का भंडार भरा क्योंकि अगर वे लिखेंगे तो हम अपने पत्र में उनका लिखा हुआ छापकर प्रसिद्ध करेंगे उसके पढने से और भाईयों को भी लाभ होगा क्योंकि वे भी जब मेलों में जावेंगे तब उसी रीत से पुन्य के भंडार भरेंगे सो हम को यकीन है कि मेलों में पुन्य भंडार भरने की तरकीब बताने में कोई भाई उजर नहीं करेंगे परन्तु यह परोपकारी कार्ज के करने में तुरंत सहाई होंगे. ॥

भाईयो इस समय के मेलों की काररवाई देखने से हमारा तो विश्वास यह है कि न तो मेला कराने वाले की तरफ से धर्म साधन करने की सर्व सामग्री यथावत तैयार होती हैं और न पंडित धर्मोपदेशक जन जो मेला कराने में अग्रणीय होते हैं वे जात्रीयों को धर्म साधन करने में सहायक होते हैं और न जात्री लोग अंत रंग हृदय के उछाह से धर्म साधन करने का प्रयत्न करते है और इन्ही कारणों से बहुदा सर्व लोग खाली हाथों बल्के गांठ का खोके घर को लोट आते हैं.॥

हमारी सर्व भाईयों से जो मेलों में गये हैं प्रार्थना हैं कि कृपाकर निश्चल चित्त होकर विचार कीजिये कि आप मेलों में से पुन्य का भंडार भरकर लाये या खाली हाथों आये या गिरह का भी खो आये मेले धर्म साधन करने के मुख्य

कारण है इस में किसी प्रकार का संदेह नहीं है और जो धर्म प्रभावना धर्म का उद्योत मेलो में हो सक्ता है वह अन्य कार्यों से नहीं होता इस में भी कुछ संदेह नहीं है परन्तु मेलों की काररवाई यथावत नहीं होती इसी सबब से पुन्य संचय और धर्म प्रभावना नहीं होती है और इसी कारण से जो कि अपने घरों में पूजा आदि शुभ कार्य करने से और शास्त्र जी के सुन्ने से जो कुछ पुन्य उपार्जन होताथा उसका भी नुकसान मेलों में जाने से हो जाता है.॥

हमारा लिखना इस वास्ते है कि आप सर्व भाई इसपर विचार करें और यदि आप की विचार तुला में यह निश्चय हो जावे कि दरहकीकत इस समय की काररवाई के अनुसार मेलों में धर्म वृद्धि पुन्य का संचय नहीं होता है तो मेलों मे जिस प्रकार से धर्म प्रभावना धर्म का उद्योत और पुन्य का संचय हो वैसा उपाय अवश्य करना चाहिये

आगे के पत्र में इस विषय पर और लिखा जायगा दरमियान में आशा है कि आप भी अपनी २ सम्मति लिखें.॥

गलती

जनवरी के पत्र के १३ में सफे की सातवीं सतर में पूरण मल्ल जी हनुमंतरामजी के १००) रूपये की जगह छापे की गलती से १)छप गया सो अपने २ पत्र में सर्व भाई ठीक करलेना. ॥

हमारे पांच प्रश्न

पिछले महीने के पत्र में जो हम ने पांच प्रश्न लिख कर भेजे उनपर आप सर्व भाइयों ने अवश्य विचार किया होगा परन्तु उन के उत्तर हमारे पास अभी तक नहीं भेजे इसलिये आप का चित्त उन प्रश्नों की तरफ फिर खींचते हैं कि अगर आपने उन पर अभी तक विचार न किया हो तो कृपाकर इस पत्र के पहुंचने पर उन प्रश्नोंको फिर पढ और विचार कर उन का उत्तर सीघ्र ही भेजेंगे.॥

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अजमेर

अर्थात

जैन धर्म और जैन सभा सम्बंधी माशिक पत्र

जिसे

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ लाला छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया है

नम्बर ६

चैत सुदी १ सम्वत १९५१ अपरैल सं १८९४ का

वार्षिक मूल्य १) एक रूपया

भार्गव प्रेस अजमेर मे छपा

विज्ञापन

सर्व भाईयों से जिन के पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्रार्थना है कि वे इस को संपूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिर जी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावक एकत्र हों पढकर सुनादें. ॥ आप के शहर की जाति और धर्म्म संबंधी नई वार्ता पत्र मे छापने को भेजें. ॥ जो भाई पत्र लेना चाहें हमें पोस्टकार्ड भेजकर मगालें. ॥

जैन प्रभाकर की सालियाना कीमत शहरवालों से ॥) बाहर वालों से मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का ~) है. ॥

१ यह पत्र हर महीने मे छपेगा. ॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैर विरोध मेटना, विद्या, धन, धर्म, ज्ञान की उन्नति करना इस के उद्देश हैं

३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पोलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपेगा

सर्व चिट्ठी रुपया लाला छोगा लाल कोषाध्यक्ष जैन सभा अजमेर के नाम से भेजना चाहिये. ॥

॥ सस्ताद्राम और अच्छाकाम ॥

सब सज्जन महाशयों से सविनय निवेदन है यहां लोग बहुधा कहाकरते कि इस राजपूताना देश में ऐसा कोई उत्तम छापाखाना नहीं है जहां कि सब प्रकार की छपाई उत्तमरीति से होती हो और प्रबंध अच्छा तथा संपादक प्रामाणिक और प्रतिष्ठित हो काम अच्छा और नियत समय पर तयार होजाय इस अभाव को दूर करने के लिये हम लोगों ने प्रेस खोला है इस में सब तरह की छपाई उत्तम रीति से होती है मूल्य उचित लिया जाता है सामान सब उत्तम है अब ज्यादा तारीफ कर हम अपने मुह से मियां मिठ्ठूबनना अच्छा नहीं समझते जो महाशय हमारे यहां काम भेजेंगे वह आप देख लेंगे क्योंकि इत्र वह जो अपना गुन आप कहे न कि गन्धी जिन महाशयो को कुछ छपवाना हो वह नीचे लिखे पते मे भेजें

भार्गव प्रेस घास कटला अजमेर

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह । तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै । सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ६ } अजमेर अपरैल सं० १८९४ { संख्या १

हिसार जैन पाठशाला का वार्षिकोच्छव

तारीख ११ दिसम्बर १८९२ को पाठशाला का वार्षिकोच्छव किया गया था उस में पंडित महरचंद जी साहिब सुनपत वाले लाला अमानसिंह जी दहली वाले लाला शालिगराम जी हासी वाले जती नेसुखजी आदि सज्जन पधारे थे ॥

प्रथम प्रातःकाल से जलयात्रा का उच्छव हुआ. हिसार निवासी और २ बाहर के आये हुये सर्व श्रावक भाई इस में मौजूद थे. ॥ राय सांझीमल जी साहिब सबजज राय मूलराज जी साहिब तहसीलदार लाला जमैयत राय जी जर्नी सुपरिंटेंडेंट डिपटी कमिश्नर साहिब के दफतर के भी पधारे थे जलयात्रा की जलेब बडे जलूस से सर्व बाजार होते हुये भजन और नृत्य होते हुये पाठ-

श्रा॰गा में आये ॥

नगर निवासी सर्व भाईयों को स॒रा के देखने से बड़ा आनंद हुआ.

दोपहर को पाठशाला का जलसा हुआ मुंशी नेतराम जी साहिब ने पाठशाळा की कुल काररवाइ पढ़कर सुनाई. ॥

यह पाठशाळा २ वर्ष ५ महीने से जारी है विद्यार्थी इस समय ३४ हैं पिछळे साळ में इंसपेकटर साहिब बहादुर की सिफारश से २४) म्यनासापलकमेटी ने दिये अब की साल में ७०॥) अता किये. ॥ इस साल में जो विद्यार्थियों ने परीक्षा दीनी थी उन में से १९ पास हुये यानि चाकस निकले. ॥ इन विद्यार्थियों को रू.१६) की पुस्तकें और रुमाल शीरना कमेटी की तर्फ से इनाम के वास्ते दा गई है. ॥

इस पाठशाला में पढाई की फीस नहीं ली जाती है बल्के पुस्तकें भी सभा की तर्फ से पढने को दीजाती हैं और धर्म शास्त्र में शिक्षा देने की बडी कोशिस की जाती है ॥

जैन सभा के सभासद विद्या वृद्धि करने का बड़ा उद्योग करते हैं और यकीन है इस मुवाफिक हमेशह करते रहेंगे तो ज्ञान की बडी उन्नति होगी. ॥

इस के पश्चात पंडित मिहरचंद जी साहब ने ज्ञान के विषय में, जती नैनसुख जी ने धर्म के विषय में अति मनोहर व्याख्यान दिये कि जिन के सुनने से सर्व सभा को अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ. ॥

राय सांझीमल्ल जी साहब सब-जज ने फरमाया कि वे सभा और पाठशाला की काररवाई से बहुत खुश हुये और सभा की बहुत तारीफ की इस के बाद उन्होंने पुस्तकें रूमाल और मिठाई विद्यार्थियों को बांटी. ॥ पंडित मिहरचंद जी ने अपनी तर्फ से पुस्तकें और लाला शालिगराम जी ने रूमाल बांटे. ॥

मुंशी नेतराम जी ने राय सांझीमल जी साहिब व पंडित मिहरचंद जी लाला सालिगराम जी आदि जो भाई बाहर से पधारे थे उनको धन्यवाद

द्दिये ओर फिर जयकरा वोलकर सभा विसर्जन हुई

दो जैनीयों के व्याह

हमारे एक मित्र ने झालावाड से वडे खेद से लिखा है कि मुझ को एक वडा ही फिक्र पैदा हुआ है तिस का उत्तर लिखो गे याने आप लोग या भाई पन्नालाल जी मुरादाबाद निवासी जो जिन धर्म संवंधी विद्या वृद्धि करने फिजूल खर्ची हीनाचार वंद करने का उद्यम करते हैं और आप ने जैन विद्यालय भंडार नियत किया है सो यह मनोरथ कव सिद्ध होगे क्योंकि आयु नजीक आती जाती है सो उन महत्कार्य्यो का पूरा होना वहुत कठिन मालूम होता है क्योंकि जैनी भाई उनकी सहायता करने की इच्छा नहीं करते हो अलवत्ता सेठ हनुमंत राम जी हैदरावाद निवासी को सेठानी सरी से उदार चित्त और धर्म प्रभावना करने वाले दा चार भी मनुष्य होयें तो आप का मनोर्थ पूरा हो सक्ता है परन्तु इस समय के मनुष्य धर्म कार्य्यो से राजी नहीं हैं वे आतिशवाजी छुटाने रंडी का नाच कराने से खुश होते हैं

अभी हमारे शहर में एक वडे सेठ के व्याह था सो वडी धूम धाम से हुआ आतिशवाजी का देखना नोवतवाजा सुनना रंडी का नाच देखना हर रोज नाना प्रकार की मिठाई का खाना इन कामों में वडी खुशी से रुपया ६५०००) पैसठ हजार के आसरे लगगया. ॥

ऐसी खुशी और ऐसे वडे खर्चे को देखकर भाई कुन्दन लाल जी ने उन से कहा कि पाठशाला के वास्ते भी कुछ देना वाजिव है जब कि हजारों आदमियों को जिमाते हो और हजारों रुपयों को आतिशवाजी मे फूक कर उडाते हो तो दस वीस रुपया पाठशाला में भी दो कि धर्मोन्नति होवे इस प्रकार वहुत कुछ कहा परन्तु उन्हों ने कुछ नहीं दिया और ऐसे ही चौ

घरीयों ने कहा कि नई लाग नहीं लगाना चाहते. ॥

अब हमें यह मालूम नहीं कि पंचों ने नहीं देने दिया था खुद लडका लडकी के पिताओं ने नहीं दिया परन्तु जो साठ पैंसठ हजार रुपया ब्याह में खर्च कर सक्ते है उन्हें पाठशाला के वास्ते देना अगर उन की तबीयत देना चाहे तो कुछ मुशकिल नहीं था और पंच चौधरी जो बिरादरी का हजारों रुपया निरर्थक नई नई रीति निकालकर और नई २ लागें लगा कर अपने हाथों खर्च करते और कराते हैं उन को भी पाठशाला के वास्ते एक नई लाग लगाना कुछ मुशकिल नहीं था. ॥

सो हे भाई मेरे को वडा फिक्र और रंज है कि पाठशाला के वास्ते रुपया न देना और न दिलाना इस का क्या कारण होसक्ता है. ॥

हमारे मित्र को कुछ फिक्र नहीं करना चाहिये बल्के धीरज रखना चाहिये. ॥

उन को यह याद रखना चाहिये कि जो काम जितना ज्यादह वडा और ज्यादह लाभ दायक होता है वह उतनी ही मुशकिल और देर से सिद्ध होता है. ॥

जैन विद्यालय भंडार और जैन धर्म संबंधी विद्या की वृद्धि होना तथा फिजूल खर्ची आतिशबाजी रंडी का नाच आदि हीनाचार का बंद होना ये वडे महत्कार्य है और वहुत देर और मुशकिल से सिद्ध होंगे लेकिन यह अवश्य निश्चय करके सिद्ध होंगे यह हमें पूर्ण आशा है. ॥

कोई को उपदेश जलदी लगता है और कोई को देर से लगता है और किसी को नहीं भी लगता है परन्तु उपदेशदाता सबको उपदेश देते हैं अगर कोई आदमी जहर खाजावे तो वैद्य उस के जहर उत्तारने का इलाज करता है परन्तु कर्म वश जहर न उतरे या वह मनुष्य

उस वैद्य की दवाई नहीं खावे तो वैद्य आप तो जहर नहीं खावे और खावे तो उस की बराबर मुर्ख नहीं है. ॥

स्वधर्माभिमानी जातिहितेच्छु भाईयों का काम यही है कि अपनी जाति का सुधार और अपने धर्म की सच्ची प्रभावना याने अज्ञान का नाश कर जैन सिद्धान्तों का अर्थ जैसे प्रकाश होय तैसे करने की सर्व भाईयों से प्रार्थना और उपदेश करें अगर वे उन का उपदेश सुनें और धर्म का उद्योत करैं तो धन्यवाद देवें अगर वे उपदेश नहीं सुनें तो संतोष गृहण करे फिर किसी दुसरे समय उपदेश करे और इसी प्रकार करतेरहैं कालादि सामग्री मिलने से उपदेश लगे ही गा और उन का मनोर्थ सिद्ध होगा. ॥

जैन विद्यालत भंडार हमारी ही उमर में अवश्य भरेगा और जैन सिद्धान्तों का उद्योत होगा फिज़ूल खर्ची हीनाचार भी वंद होंगे और हमारे जैनी भाई अपने शुद्ध धर्म ही में आरूढ होकर निर्मल मार्ग में गमन करेंगे ऐसी हम को पुर्ण आशा है और हमारी आशा के पुर्ण होने के प्रमाण में एक चिट्ठी जो हमारे पास आई है बडे हर्ष से नीचे लिखते हैं. ॥

धर्मोपदेशक पंडित छोगालाल जी साहिब जैजिनेन्द्र. आप को पहले से मालूम होगा कि कस्बे नकूड़ जिला सहारन पुर में फिजूल खर्ची और बुरी रस्मियात को दूर कर दिया है और रंडी वगैरह का नाच विलकुल वंद करादिया है. ॥

पर सों यहां पर एक वरात अंवाले से लाला किरचीमल रईस छावनी अंवाले की लाला हींगनलाल किशोरी लाल के यहां आईथी लाला किरची मल ने इस इन्तजाम को वहुत पसंद किया और रंडी आतिशवाजी वगैरह नहीं लाये और कुल काररवाई यहां के वंदोवस्त के मुवाफिक करी. ॥

विवाह और पूजन जिन सेनाचार्य कृत विवाह पद्धति के अनुसार

हुआ जिस से दोनों तरफ के भाई-यों को अद्भुत आमन्द रहा फेरों के पीछे लाला किरचीमल जी ने लाला रिषभ दास जी साकिन चिलकाने के उपदेश से कि जिन्हों ने उक्त पूजन कराया था १०) जैन विद्यालय भंडार के वास्ते बड़ी खुशी से दान दिये जिन को धन्यवाद से स्वीकार किया और जो आप के पास भेजे जाते हैं इन को भंडार में जमा कर-के रसीद लाला किरचीमल जी के पास भेज देवें ॥

बारात आने से अगले रोज ला ला किरचीमल जी ने सभा कराई जिस में कुल बराती और यहां के भाई शामिल थे ॥

सभा में लाला ऋषभदास जी नें रंडी के नाच और सीठने (गा-ली) गाने की बुराई में, बाबू सूरज भान जी वकील देवबंद निवासी ने फिजूल खर्ची की बुराई में, और बाबु बुलन्द राय जी वकील सहारन पुर निवासी नें बरातों में इसी प-कार सभा करने के लाभों में अति ललित व्याख्यान कहे जिन का अ-सर ऐसा हुआ कि सब सुनने वालों नें उन व्याख्यानों के छपने की ख्वा-हिश जाहिर करी यह कैसे आनंद की बात है अगर सब जगह विवाह के समय जैन विद्यालय भंडार के वास्ते दान और नाच की जगह स-भा और धर्म्म उपदेश होने लगें तो कैसी उमदियत होवे आशा है कि इस पत्र को जैन प्रभाकर में जरूर छापेंगे और एक कापी लाला किर-चीमल के पास भेजेंगे ॥

सबसे ज्यादह खुशी की बात यह है कि सभा में लाला बेनीप्रसाद दुलहा नें भी एक व्याख्यान अति सुन्दर कहा और व्याख्यान करता-ओं को धन्यवाद दिया. ॥

सूरजभान ऋषभदास
नकुड जिला सहारनपुर

८. ३. ९४

यह चिट्ठी लिखते समय रु.५) लाला हीरानलाल बेटी वाले ने जैन विद्यालय भंडार के वास्ते अपनी

खुशी से दिये जिस से अपूर्व हर्ष होता है यह भी आप के पास भेजे जाते हैं इन की रसीद लाला हीरन-लाल के पास नकूड भेज देवें. ॥

होली के समाचार

जो कि यह होली धर्म और शुद्ध क्रिया की जड काटने वाली है भांग पीना और गाली देना सिखाने वाली आदि पाप करम में प्रवर्त्तावने वाली है इसलिये कितने ही विवेकी पुरूष इस को श्रावक कुल में से बाहिर निकालना चाहते हैं उन्हीं की सम्मति से हमने पिछले पत्र में इस विषय में कुछ लिखा था और उम्मेद की थी किआप सर्व भाई भी इस बुरी कुरीत के दूर करने में अवश्य उद्यमकरेंगे सो यकीन है कि आप ने किया होगा कृपाकर उस के समाचार अवश्य लिखना जी. ॥

आगे हम लोगों नें इस विषय में यहां क्या किया सो आप को लिखते हैं. ॥

प्रथम फागुन सुदी १३ के दिन एक एक विज्ञापन लिखकर मंदिर जी के द्वार पर लगा दिया था उस में लिखा था कि होली के विषय में व्याख्यान होंगे सर्व भाई मंदिर जी में रात के ७॥ बजे अवश्य पधारें

इस विज्ञापन के अनुसार त्रयोदशी की रात को सभा हुई और बहुत से भाई व्याख्यान सुनने को पधारे व्याख्यानदाता बाबू बैजनाथ जी बाकला वाले नें एक छोटा सा ललित और मनोहर व्याख्यान होली के स्वरूप में दिया ॥

उन्होंने कहा कि होली का जैनी और जैन धर्म्म से कुछ संबंध नहीं है पाड पडोस की देखा देखी जो लोग होली के ख्याल में जाते हैं वे प्रथम तो अपने धर्म्म को दोयम शुद्ध आचर्ण को बिगाडते हैं क्योंकि होली में जो खाक और पानी सिरमें पडते हैं तथा मुंह और नाक में घुसते हैं उनका कुछ ठिकाना नहीं होली में छः काय के जीवों की

हिंसा होती है जिमीन खोदने और उस पर आग जलाने से धरती के जीवों की अन छाना वहुत पानी फैलाने से पानी के जोवों की वहुत अग्नि प्रज्वलित करने से अग्नि और हवा के जीवों की और हरी लकडीयां जलाने तथा वूंट और जो भुनने से वनस्पति के जीवो की तथा वूंट (छोला) के पत्तों में मोटी २ हरी २ लटें होती है उन सव की वुटों को होली की झल में भुनने से हिंसा होती है ॥

फिर इस होली के वास्ते लडक पन से चोरी करना और धाडा मारना सीखना और करना पडता है. ॥

घर २ में उपले ईंधन चुराते फिरते हैं गली वाजार में जाते हुये के माल को जवरदस्ती छीनते हैं ॥ और झूंट वचन वोलना गाली वकना यह तो होली का श्रगार है होली के अवसर मे जो लडके अपने मा वाप के सामने निर्लज्ज हुये गाली वकते है वे जन्म भर नहीं भूलते और वे ही सारी उमर माता पिता को गालीयां देते रहते हैं फिर कुसील और व्यभचार से तो होली की उत्पत्ती ही है.

मन से वचन से हाथ से काय से संपूर्ण काम पर स्त्रियों से प्रति निर्लज्ज हुये करते हैं यहां तक कि काकी भोजाई मामी सास साली सलेज आदि पुज्य रिश्तदारों से भी अयुक्त क्रिया करते नही शरमाते हैं और इसी सवव से पर वस्तु की चाहना रूप अति तृश्ना भी इस होली मे होती है सो पाचों पापों की जड यह होली है. ॥

फिर उन्होंने कहा कि मद्यका त्यागकरना यह जैन धर्म्म की पहली सीढी है जो होली के ख्याल में जाता है वह अवश्य मद्य याने भांग पीता है और जन्म भर पीता रहता है इस कारण जैनी कहलाने पर भी जैन धर्म्म के वाहर ही रहता है और होली के ख्याल से कोई प्रयोजन भी सिद्ध नहीं होता है हर तरह से अपना नुकसान ही होता

है जैनीयों के वास्ते वडा भारी नुकसान इस में यह है कि फागुन में अष्टान्हकाजी का महा पर्व व्रतों का अवसर है सो होली का खेलने वाला व्रतों का भंग कर अति तीव्र पाप उपार्जन करता है इसलिये भाईयों यह श्रावक कुल अष्टान्हकाजी का पर्व पुन्य उपार्जन करने का समय है सो पाप कार्य में खोना उचित नहीं है इस समय में धर्म्म सेवन करना वाजिब है. ॥

इस के पश्चात उन्होंने होली से वचने और धर्म्म सेवन का उपाय भी वतलाया उस के अनुसार चतुरदशी (याने होली वालेदिन) और पूनम (याने छारंडी के दिन इस प्रकार कारखाई की गई. ॥

चोदस के दिन में तो अष्टान्हकाजी की पूजन हुई और रात्रि को ७॥ बजे से ११ बजे तक श्री धर्मोपदेश सिद्धान्त रत्नमाला का व्याख्यान भजन मंदिर जी में हुये और जिन भाईयों को होली से अरुची हुई वे मंदिर जी में बैठ धर्म्म ध्यान में लीन रहे होली में नहीं गये. ॥ पूनम के दिन प्रातःकाल तो नित्यनेम की पूजा और शास्त्र जी हुये. ॥ पीछे रसोई जीम कर १० बजे के करीब मंदिर जी में सब आये वहां साज वाज से भजन हुये १२ से ४ बजे तक पूजा साज बाजे से गाय कर हुई. इस में सर्व भाईयों को जो मंदिर जी में थे बड़ा ही आनंद आया जो के रवनी के सामर्थ से बाहिर है. ॥

इस प्रकार करने से अनुमान दो सौ स्त्री पुरषों के दोनों दिन पुन्य का संचय और पाप का नाश हुआ. ॥

अष्टान्हकाजी के व्रत में संवर सहित धर्म ध्यान में लगे रहे ॥ और इसी कारण से वे होली में भी नहीं गये और न वे लंगूर बंदर बने. ॥

होली के ख्याल में जाने से क्या होता है और मंदिर जी में रहने से क्या होता है इस को वे भाई भले प्रकार जान सके और कह

सके हैं जो होली में न जाकर मंदि जी में रहे होली के अवसर में दूकान वगैरह गृह कारज से छुट्टी रहती है विना काम मन विश्राम पावे नहीं तव जैसा होली के ख्याल में पास पड़ोस के लोगों को देख कर उन्हीं के माफिक आप भी हीनाचार में प्रवर्तने लग जाय सो उस हीनाचार पाप रूपी प्रवृत से वचने का एक यही उत्तम उपाय है उस रोज मंदिर जी में उच्छव पूजा और भजन और धर्म्मोपदेश होना चाहिये इन कारणों से इन में मन लगेगा और उधर नहीं जायगा. ॥

होली राक्षसी का दौड दौडा सब जगह में है परन्तु जिन मंदिर के द्वार में भी घुसने की उस की सामर्थ नहीं है इस लिये जो इस होली राक्षसी से वचना चाहें उन को जिन मंदिर का शरण गृहण करना उचित है. ॥

जिन भाईयों नें हमारे लिखे माफिक होली से वचने का कुछ उद्यम इस साल किया होय तो वे कृपा कर जरूर चिट्ठी लिखें और हमेशह इसी प्रकार करते रहैं जिन्होंने इस साल प्रमाद वस कुछ नहीं किया होय तो उन से प्रार्थना है कि आगे के साल से अपने २ मंदिरों में उपर लिखे प्रमाण उद्यम करें. ॥

सागर में होली वंद

भाई वालचन्द्र जी संघई सागर में लिखे हैं कि हम अत्यन्त हर्ष पूर्वक धन्यवाद देकर उन महाशयों प्रति स्तुति गोचर होते है कि जिन्हों नें जैन प्रभाकर में छप वाने के कारण से हमारे शहर सागर में होली की कुरीति मिटा कर इसी साल से सुरीति चलाई याने हमारे यहां के श्रावकन ने होली के समय श्री मज्जेन मंदिर में जाकर दिन को श्री

शेष आगे

॥ श्री ॥

जैन प्रभाकर

अजमेर

अर्थात्

जैन धर्म और जैन सभा सम्बंधी मासिक पत्र

जिसे

जैनी श्रावक भाईयों के हितार्थ लाला छोगालाल अजमेरा

ने प्रकाश किया है

नम्बर ७

जेठ सुदी १ सम्वत १९५१ मई सं १८९४ का

वार्षिक मूल्य १) एक रुपया

भार्गव प्रेस अजमेर में छपा

विज्ञापन

सर्व भाईयों से जिन के पास जैन प्रभाकर पहुंचे प्राथना है कि वे इस को पूर्ण पढ कर अपने पुत्र मित्रों को पढने के वास्ते देदेवें और मंदिर जी वा सभा आदि स्थानों में जहां बहुत से श्रावक एकत्र हों पढकर सुनादें. ॥ आप के शहर की जाति और धर्म्म संबंधी नई वार्ता पत्र में छापने को भेजें. ॥ जो भाई पत्र लेना चाहें हमे पोस्टकार्ड भेजकर मगालें. ॥

जैन प्रभकार की सालियाना कीमत शहरवालों मे ॥=) बाहर वालोंसे मय डाक महसूल १) और एक पुस्तक का ~) है. ॥

१ यह पत्र हर महीने में छपेगा.॥ २ वात्सल्य और धर्म प्रभावना करना वैय विरोध मेटना, विद्या, धन, धर्म, ज्ञान की उन्नति करना इस के उद्देश हैं

३ जिन धर्म विरुद्ध लेख पॉलिटिकल वार्ता मतमतांतर का झगडा इस में नहीं छपेगा

सर्व चिट्ठी रुपया लाला छोगा लाल कोषाधक्ष जैन सभा अजमेर के नाम से भेजना चाहिये. ॥

॥ विज्ञापन ॥

श्री जैन विद्यालय भंडार

यह भंडार जैन धर्म संबंधी विद्या वृद्धि करने निमित्त नये नगर के श्री जिन बिंब प्रतिष्ठा महोच्छव में सं १९४७ में नियत हुआ है इस के प्रधान सेठ चांद मल जी सोगरणी मुन्तजिम सायरात राज जैपुर के हैं जो भाई रुपया जमा कराते हैं उन को रसीद दी जाती है रुपये की हुंडी खरीद कर व्याज उगाया जाता है और विद्या वृद्धि में लगाया जाता है ज्ञान दान शास्त्र दान देने की आप को इच्छा होय तो रुपया इस भंडार में जमा कराईये.

छोगा लाल अजमेरा

कोषाध्यक्ष जैन विद्यालय भंडार अजमेर

श्री

जैन प्रभाकर

जैन प्रभाकर पत्र यह। तम अज्ञान विनाश
सुख संपति मैत्री करै। सुमति सुज्ञान प्रकाश

नम्बर ५ | अजमेर मई सं० १८९४ | संख्या १

जैन विद्यालय की परीक्षा

श्रीयुत भाई पंडित भोलीलाल जी सेठी जैपुर निवासी ने हमारी चिट्ठी के जवाब में लिखा है कि वैसाख वदी १४ को पाठशाला में कमेटी हुई जब कुछ पढाई पाठशाला का हाल देखकर कार्तिक शुदी १५ की परीक्षा होनेके वास्ते ऐसा तजवीज किया गया

अवल दरजे में
प्रथम श्रेणी
कौमुदी लघुसिद्धान्त समग्र
धर्मसर्माभ्युदय काव्य २ सर्ग
जुवानी हिसाब किताब

दूसरी श्रेणी
गणान्तकौमुदी
चंद्र प्रभ काव्य ३ सर्ग
हिसाब पंचराशिक

तीसरी श्रेणी

कौमुदी लघुभुवादि गण
तथा अदादि गण पर्यन्त
चंद्रप्रभ काव्य १ सर्ग
हिसाव त्रैराशिक

दूसरे दरजे में

प्रथम श्रेणी

कालाय व्याकरण भुवादि गण
संपूर्ण
रत्नकरंड श्रावकाचार और
द्रव्य सग्रह संपूर्ण
हिसाव त्रैराशिक

दूसरी श्रेणी
कालाय व्याकरण षटलिंग
रत्नकरंड श्रावकाचार सम्पूर्ण
हिसाब त्रैराशिक

तीसरे दरजे में
लघुकौमुदी पंच संधि साधनिका
सहित.
रत्नकरंड श्रावकाचार के २
अधिकार(सम्यक ज्ञान तक) अर्थ
सहित

हिसाव आना पाई का भागतक
चौथे दरजे मे
कौमुदी पंचसंधि साधनिका
सहित
अमरकोष २ कांड सवनौषधि
वर्गतक
हिसाव आना पाई की वाकी तक
सूत्र जी मूल

इस तरह चारों दरजे में कार्तिक की परीक्षा के वास्ते पढाई कायम कीगई है सो आप भी विचार लेवें और जैन प्रभाकर पत्र में छाप देवें कि इसी माफिक पढाई जारी होजावे और फिर कार्तिक के महीने में जो जो लडके तैयार होंगे उन के नाम लिखे जावेंगे फिर जो आप परीक्षा के पत्र भेजेंगे उनकी परीक्षा कराई जावेगी और आइंदे से साल भर में एक परीक्षा लेना तजवीज किया है वो ठीक है.

इस चिट्ठी में और भी समाचार हैं वह इस विषय से अलग हैं इस कारण यहां नहीं लिखे गयेहैं.॥

जोकि इस समय में जैन धर्म्म संबंधी विद्या की अति हानी देखकर हम को निहायत खेद होता है क्यों कि धर्म्म का मूल ज्ञान है और ज्ञान शास्त्राभ्यास किये बिना होता ही नहीं इसलिये जैनी बालकों को शास्त्राभ्यास के सन्मुख कराना यही हमारा परम इष्ट प्रयोजन है और जिन जैनियों को अपने धर्म्म से रुचि है और अपने धर्म्म में प्रतीत और दृढ श्रद्धा है उन्हें अपने धर्म्म की उन्नति वा प्रभावना अवश्य करनी चाहिये.

धर्म प्रभावना करने के समर्थ दो पुरुष हैं एक तो जैनी पंडित दूसरे जैनी धनाढ्य परन्तु खेद की बात यह है वे दोनों ही विद्या बृद्धि करने मे आलसी और प्रमादी हैं ॥

हे भाईयो अपने शरीर और शरीर के संबधी स्त्री पुत्रादि की सेवा चाकरी करने में बहुधा दिन रात के चौवीसो घंटा को लगाते हो परन्तु अपने आत्मा और अपने धर्म की सेवा में एक मिनट भी नहीं लगाते सो बडी भारी भूल की बात है इसलिये आप से बारंबार सविनय प्रार्थना की जाती है कि गृह कार्यों में से कुछ थोडा सा समय बचाकर अपने आत्मा के हित और धर्म की बृद्धि निमित्त अवश्य लगाओ तो जैसे एक एक मेह की बूंद कर ताळाव नदी नाळे भर जाते हैं वैसे ही थोडा २ करने से पुन्य का संचय और धर्म की प्रभावना बृद्धि को प्राप्ति होगी. ॥ और जैसे कि बडे लोगों को करते हुये देखते हैं वैसे ही सामान्य भी करते है इस न्याय से जब पंडित और धनवानों को ज्ञान और विद्या की बृद्धि में उद्यम करते समय और धन लगाते हुये सामान्य सर्व जैनी देखेंगे तब वे भी इसी प्रकार करने लगेंगे इस वास्ते पंडित और धनाढ्यों को अब आलस छोडना उचित है ओर जैसे ज्ञान की बृद्धि और जिन धर्म की प्रभावना हो वैसा उद्यम शीघ्र ही करना योग्य है

भाई भोली लाल जी ने जो जैपुर के पंडितो की सम्मति से पढाई लिखी है उसे हम स्वीकार करते हैं और आशा है कि जहां २ पर जैन पाठशाला हैं वहां के कार्य्याध्यक्ष इसी प्रकार की पढाई अपनी पाठशालाओं मे नियत कर के कार्तिक की परीक्षा के वास्ते विद्यार्थियों को तैयार करें सब शहरों के विद्यार्थियों की परीक्षा लीजायगी और उन में जो अच्छे निकलेंगे उनको जैन विद्यालय भंडार के ब्याज में से इनाम दिये जायेंगे

जैनी विद्वज्जनों से यह प्रार्थना है कि सर्व विद्वज्जनों की एक कौंनसल (सभा) बननी चाहिये और सब मिलकर हरएक दरजे की परीक्षा निमित्त अपने में से परीक्षक नियत करें जो परीक्षक प्रश्न करें और उत्तर को जांच कर निर्णय करें कि कौन २ से विद्यार्थियों क उत्तर ठीक और इनाम पाने के लायक है यदि सर्व देशों के पंडित एक सम्मति होकर इस प्रकार नहीं करेंगे तो यह परीक्षा लेना इनाम बांटना आदि जो जैन धर्म संबंधी विद्या बृद्धि करने के उपाय जारी कियेगये हैं फलदायक न होंगे.॥

पंडितों की कौंनसल की बडी आवश्यक्ता है.॥

जो भाई इस लेख को पढकर विद्या बृद्धि करने के अभिलाषी और रुचिवान होय वे कृपाकर अपना २ नाम एक कार्ड पर लिखकर हमारे पास भेजें वह सब नाम अगले पत्र में प्रकाश किये जावेंगे और विद्या वृद्धि करने का थोडा २ भार उन के सुपुर्द किया जायगा.॥

और धनाढ्य भाईयों को भी इसी कौंसळ में शामिल होना और विद्या बृद्धि करने में जो कुछ खर्च पडे उस का थोडा २ विभाग अपने जिम्मे लेना वाजिब है अर्थात उन को जैन विद्यालय भंडार के बृद्धि करने में उद्यम करना उचित है.॥

जैन विद्यालय से आगामी काल में बडे २ लाभ होंगे क्योंकि इस

का मूल्कके द्रव्य अविनाशी होने के कारण सदा काल स्थिर रहेगा और व्याज से धर्म संबधी विद्या की निरंतर वृद्धि करता रहेगा. ॥

जैनी पंडितों और धनाढ्यों के नाम आने पर उन की कौनसल नियत की जायगी और कौनसल से क्या २ काम लिये जावेंगे. वह सब आगे के पत्र मे खुलासा लिखेंगे

अजमेर में मेला

यहां पर मेले का उच्छव वहुत अच्छा हुआ गरमी और विवाहादि गृह कार्य्यों के निमित्त परदेशी भाई वहुत कम आये थे लेकिन मंडप की रचना वाजार में रथ की सवारी पुजा का उच्छव नृत्य और भजन से जिनेन्द्र की भक्ति आदि वडा आनंद रहा वडे हर्ष की वात यह थी कि श्री युत पंडित शिरोमणी पंडित वलदेव दास जी साहिव आगरा निवासी यहां पधारे और सभा में शास्त्र जी का व्याख्यान करते थे भाई केदार मल्ल जी वागडिया जिन्हे वागड देश में धर्म की धुरा कहना चाहिये कि जिन के उपदेश और शुद्ध आचरण से उसदेश में उद्योत होरहा है वे भी पधारे थे और भाई गोपाल दास जी मुनीम रत्नलाल जी मथुरा वाले भी आये थे दिनरात धर्म कथा होती थी और सर्व सज्जन भले प्रकार सुनते थे. ॥

हमने पहले लिखा था कि कम से कम सौ भाईयों की चिट्ठी आवेगी तो सभा करेंगे और जो कुछ कि श्रावक कुल की उन्नति और धर्म प्रभावना करने के उपाय हमने सोचे है सो निवेदन करेंगे हमारे पास सिर्फ एक भाई केदार मल्ल जी की चिट्ठी इस विषय में आई और कोई जैनी भाई ने इस पर ध्यान नहीं दिया और न अपनी सम्मति की चिट्ठी भेजी मालूम नहीं होता कि चिट्ठी न भेजने का क्या कारण हुआ

मारी समझ में दो कारण आते है अव्वल तो यह कि श्रावक कुल की उन्नति और धर्म प्रभावना करने की उन की इच्छा नहीं हो उनको यह कार्य्य ही अनिष्ठ प्रयोजन अर्थात निकम्मा और बे मतलब हो और दूसरे यह कि चिट्ठी भेजने में प्रमाद हो. ॥

लेकिन ज्यादह विचार करने से निश्चय होता है कि पहला कारण तो नहीं है क्योंकि अपने कुल की उन्नति और और धर्म की प्रभावना कौन नहीं चाहता सर्व ही चाहते हैं और जैनी तो विशेष ते हैं सो सर्व के प्रत्यक्ष है हर ल धर्म प्रभावना में लाखों रुपये खरच करते और अनेक सीत उश्न वर्षा की बाधा सहकर और धन खरच कर दूर २ देशों के जिन बिंब प्रतिष्ठादि उच्छवों में जाते तीर्थ यात्रा करते पूजा करते हैं. ॥

जैनियों को अपने धर्म की प्रभावना करना अति प्रिय और इष्ट है. ॥

धर्म प्रभावना सभा निमित्त हमारे पास चिठ्ठियां न आने का मुख्य कारण प्रमाद ही मालूम होता है. ॥

जैनियों का प्रमाद भी जगत में विख्यात है. ॥

गरज यह है कि हमारे भाईयों के प्रमाद के वश से सभा नहीं हो सकी और यह भी एक सुअवसर हाथ मे से जाता रहा सो अब आ नहीं सक्ता. ॥

हम ने जो बातें सोची थीं और उन एक २ के साथ सभा में विस्तार सहित व्याख्यान करना चाहा था और सभा के वादानुवाद सहित निर्णय कराना चाहा था वह बात मन की मन में ही रही कागज पर सब को लिख नहीं सक्ते परन्तु अब भी आशा है कि अगर आप सर्व भाई मददगार और सहाई होवें तो हम मथुरा में श्री जंबु स्वामी जी के मेळे में आवें और आप की सेवा में अर्ज करें. ॥

अब आगे इस अभिप्राय से

कि आप सर्व भाई उन वार्तों के जानकर पहले से हो जाओ और उन मे जो कुछ न्यूनाधिक करने की आवश्यक्ता समझों तो करके हमारे पास भेज दो हम उन वार्तों को नीचे लिखते हैं हमारी समझ में ये सर्व श्रावक कुल और श्रावक धर्म की उन्नति और प्रभावना करने वाली है इन पर आप भले प्रकार विचार करके अपनी सम्मति बाबू वैज नाथ आडिट ऑफिस अजमेर के पास चिठी में भेज दीजिये. ॥

॥ श्री ॥

श्री मत् जैन धर्म की प्रभावना और श्रावक कुल की उन्नति होने के उपाय. ॥

१ सर्व श्रावक पुरुष और स्त्री वाल वृद्ध तरुण प्रमाद त्याग करके प्रथम प्रातःकाल मंदिर जी में दर्शन करने को आवें क्योंकि दर्शन ही धर्म का मुल और सुखका दाता सर्व उत्तम गुण रत्नों का कोष है. ॥

२ मंदिर जी में प्रति दिन शास्त्र जी का व्याख्यान होना चाहिये और सर्व श्रावकों को निराकूल चित्त शास्त्र जी का उपदेश सुनना चाहिये. ॥

क्योंकि जिन वाणी ही एक अद्वितिय सर्व पदार्थों के प्रकाश करने वाली और अज्ञान अंधकार के नाश करने वाली दीपक की शिखा है. ॥

३ सर्व श्रावक भाई अपने ज्ञान और विवेक की वृद्धि करने निमित्त प्रति दिन शास्त्र जी का स्वाध्याय मंदिर जी मे करे. ॥

४ हरएक श्रावक भाई को उचित है कि अपने वित्तानुसार कम से कम एक महीने मे एक वार अपने निज के अष्ट द्रव्य से श्री जिनेंद्र की पूजा करैं क्योंकि भगवान की पुजा परम पुन्य उपार्जन का हेतु और संपूर्ण विघ्न की नाश करने वाली परम मंगल की करने वाली

॥

५ महीने में कम से कम एक बार किसी खास मंदिर में जो उस शहर के मध्यस्थान में हो और जहां सर्व स्त्री पुरुष एकत्र हो सकें उस [illegible] में दिन को मंडल मांडकर उच्छव सहित पूजा करें और रात्रि को शास्त्र जी के द्वारा अथवा मु-ख से धर्मोपदेश सभा में होवें इन दोनों अवसरों पर शहर निवासी सर्व स्त्री पुरुष उसी मंदिर में भेले होवें और पूजा और धर्मोपदेश श्र-वण करें. सभा के पीछे नृत्य और भजन सहित रात्रि जागरण होवे.

६ जैनी बालकों को धर्मशास्त्र श्रावकाचार आदि पढाने का वं-दोवस्त पाठशालादि किया जावे औ-र जो भाई अपने बालकों को श्रा-वकाचार आदि धर्म शास्त्र पढाने में असमर्थ हों [illegible] पंचायत और स-भा से [illegible] करना चाहिये. ॥

७ जैनी विद्यार्थियों की हर [illegible] में एक बार परीक्षा होनी चा-हिये और जिसमें अधीन [illegible] सभा में परीक्षा होवे और इनाम पा-रितोषिक दिये जावें. ॥

८ जिन लडकों के माता पि-ता ने स्वर्गवास किया हो अथवा जिन के माता पिता दलिद्र के कारण पढाने में असमर्थ हो तो ऐसे लडकों को उस शहर का रईस धनाढ्य पुरुष या पंच मिलकर अपनी रक्षा में ले लेवें और उन के भोजन वस्त्र का वंदोवस्त करके विद्या पढावें रोजगार से लगावें सुमार्ग में च-लावें. ॥

९ जैनियों में शुद्ध आचरण की मुख्यता है बीमारी से दुख के कारण धीर्य जाता रहता है अशु-द्ध दवाई खाने से आचरण विग-डता है इसलिये शुद्ध आचरण की रक्षा के वास्ते सर्व श्रावकों को मि-लकर शुद्ध प्रासुक औषध के बांट-ने का वंदोवस्त अवश्य करना चा-हिये. ॥

१० बहुत से श्रावक भाई धन हीन और दलिद्री होने के का-रण [illegible] के [illegible] होना

चार करने लग गये हैं इस से जगत में श्रावक कुल की वडी निंदा और अपमान होता हैं और वे भाई धर्म सेवन भी नहीं करसक्ते हैं इसलिये उन को धर्म में स्थिर रखने और श्रावक कुल की श्रेष्ठता स्थिर करने को उन भाईयों को यथायोग्य धन आजीवका असन पान की सहायता करने का वंदोवस्त होना चाहिये. ॥

११ जो कि धन हीन दलिद्री होने के कारण संक्लेश परिणाम होते है जिन से मनुष्य धर्म और शुद्ध आचरण से च्युत होजाते है इसलिये हर एक भाई को अपने धर्म में दृढ आरूढ रहने और आरत रौद्र ध्यान के मेटने के वास्ते अपव्यय (फिजूल खरची) न करना चाहिये और न अपने माथे कर्ज (ऋण करना चाहिये. ॥

१२ श्रावकाचार की रीति के माफिक अपने उपार्जे धन के यथा संभव इस माफिक विभाग करने चाहिये. ॥

१ रसोई कपडा आदि म खर्च. ॥

२ पूजा दान यात्रा खरच. ॥

३ विवाहादि खर्च गैर मामूल खर्च. ॥

४ रोग जरा दुर्भिक्ष आदि स्मात खर्च. ॥

५ वृद्धि भंडार. ॥

और हर एक खर्च को उसी विभाग माफिक खर्च करें. ॥

१३ वृद्ध वा रोगी स्त्री पुरुष था विधवा और अनाथ वालकों भोजन वस्त्र से सहायता करने वंदोवस्त होना चाहिये. ॥

१४ हर एक शहर में एक श्रावकापकारक भंडार नियत होन चाहिये कि जिस का मूल द्रव्य विनाशी रहे और पढाना प्रासुक दवाई व. अनाथ रोगी वाल वृद्ध को यता आदि जो कार्य ऊपर वर्णन किये हैं किये जावें. ॥

१५ भंडार के नियत करने तरकीब यह है कि प्रारंभ में हर

शहर के रहने वाले सर्व जैनी भाई ...ठकर अपनी २ शक्ति प्रमाण न-...र रुपया एक दिन सभा करके एक थाल में जमा करदें उस को संभालकर एक कमेटी के सुपुर्द करें और वह कमेटी उस का हिसाब किताबरक्खे. ॥

फिर हर एक जैनी पुरुष अपनी २ सामर्थ प्रमाण हर रोज ...भंडार निमित्त अपने २ घरों में ...क गोलक में जमा करें और जो ...छ महीने में जमा हो जावे उस ...उ को एक रूमाल में बांधकर माह...री सभा में एक थाळ में धरदें ...त प्रकार सर्व भाई अपना द्रव्य रक्खें और सभा सभाल कर भंडार की कमेटी के सुपुर्द करे इस प्रकार थो...भंडार बढजायगा. ॥

...र जो भाई ...प्रकार श्रावकाओं को ...वत है कि हर रोज कम से कम एक मुट्ठी धान भंडार निमित्त अपने घर में अलग रखती जावें और महीने के अंत में अपने धनी ...त्र के हस्ते सभा में भेज दें. ॥

१७ हर एक शहर में छटे महीने व सालियाना रथ यात्रा का उच्छव होना चाहिये इस में धर्मोपदेश होने चाहिये और सभा पाठशाला औषधालय परोपकारक भंडार आदि जो कुछ काम उस समय में ...ये हों भंडार की आमदनी खर्च का आंकडा आदि सर्व काररवाई बता दी जावे और आगे के वर्ष का नया बंदोबस्त-जो कुछ आवश्यकहो करलेना चाहिये

इस वार्षिक उच्छव पर आस पासके श्रावकों को भी बुलानाचाहिये

१८ सर्व श्रावकों की एक महा सभा हर साल किसी मध्य स्थान में होनी चाहिये उस महा सभा में हर एक शहर के प्रतिनिधि आवें और विचार कर धर्म प्रभावना श्रावक कुल की उन्नति का प्रयत्न आदि आवश्यक कार्य ...रें ॥

१९ एक २ मध्य स्थान में एक जैन विद्यालय नियत हो कि जहां उच्च श्रेणी की धर्म संबंधी संस्कृप्राकृत और लौकिक विद्या पढाई जावे.

२०एक जैनियों का माहवारीअखबार